Pariksha Saathi — हिंदी भाषा नोट्स

7 टॉपिक • 48 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल हिंदी भाषा के टॉपिक: SSC GD Constable, UP Police Constable, Bihar Police Constable, Rajasthan Patwari, Haryana CET (Group C), DSSSB TGT। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

हिंदी व्याकरण
हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियाँ
हिंदी: अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
हिंदी गद्यांश (रिक्त स्थान और बोध)
हिंदी वाक्य शुद्धि और वर्तनी
हिंदी पर्यायवाची और विलोम शब्द
हिंदी: उपयुक्त शब्द और रिक्त स्थान
दोहराव पत्रक

हिंदी व्याकरण

हिंदी व्याकरण: मुख्य नियम

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: व्याकरण के प्रश्न सीधे भी आते हैं, जैसे 'विद्यालय का संधि-विच्छेद क्या है' या 'दशानन में कौन-सा समास है', और वाक्य शुद्धि, रिक्त स्थान तथा गद्यांश वाले प्रश्नों के भीतर छिपे हुए भी। शब्द भेद, लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य, संधि, समास, उपसर्ग-प्रत्यय और तत्सम-तद्भव, ये इस भाग की मुख्य इकाइयाँ हैं। इस पाठ में हर इकाई के मुख्य नियम और भरोसेमंद उदाहरण दिए गए हैं।

शब्द भेद: रूप बदलने के आधार पर शब्द दो प्रकार के हैं। विकारी शब्द, जिनका रूप लिंग, वचन, कारक या काल से बदलता है: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया। अविकारी शब्द या अव्यय, जिनका रूप नहीं बदलता: क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक; 'ही', 'भी', 'तो', 'तक' जैसे निपात भी अव्यय माने जाते हैं।

संज्ञा के मुख्य तीन भेद हैं: व्यक्तिवाचक (राम, गंगा, दिल्ली), जातिवाचक (लड़का, नदी, शहर) और भाववाचक (मिठास, बचपन, ईमानदारी)। कुछ पुस्तकें समूहवाचक (सेना, भीड़, कक्षा) और द्रव्यवाचक (सोना, दूध, पानी) को अलग मानकर पाँच भेद गिनाती हैं। सर्वनाम के छह भेद हैं: पुरुषवाचक (मैं, तुम, वह), निश्चयवाचक (यह, वह), अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ), संबंधवाचक (जो, सो), प्रश्नवाचक (कौन, क्या) और निजवाचक (आप, स्वयं, खुद)।

विशेषण के चार भेद हैं: गुणवाचक (अच्छा, लाल, ईमानदार), संख्यावाचक (पाँच, पहला, दुगुना), परिमाणवाचक (दो लीटर दूध, थोड़ा पानी) और सार्वनामिक (यह पुस्तक, वह लड़का; सर्वनाम जब संज्ञा से पहले आकर विशेषण का काम करे)। तुलना की तीन अवस्थाएँ हैं: लघु, लघुतर, लघुतम; अधिक, अधिकतर, अधिकतम।

क्रिया कर्म के आधार पर दो प्रकार की है। सकर्मक क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है: 'राम पत्र लिखता है'; पहचान के लिए क्रिया से 'क्या' या 'किसे/किसको' पूछिए, उत्तर मिले तो सकर्मक। अकर्मक क्रिया का फल कर्ता पर ही रहता है: 'बच्चा सोता है'। जिस क्रिया के दो कर्म हों वह द्विकर्मक है: 'अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई'। प्रेरणार्थक क्रियाएँ मूल क्रिया से बनती हैं: पढ़ना से पढ़ाना (प्रथम प्रेरणार्थक) और पढ़वाना (द्वितीय प्रेरणार्थक)। संज्ञा या विशेषण से बनी क्रिया नामधातु कहलाती है: 'बात' से बतियाना, 'हाथ' से हथियाना। अव्यय के उदाहरण: क्रियाविशेषण (आज, यहाँ, धीरे-धीरे, बहुत), संबंधबोधक (के पास, के बाद, की ओर), समुच्चयबोधक (और, परंतु, क्योंकि), विस्मयादिबोधक (अरे!, वाह!, हाय!)।

लिंग: हिंदी में दो लिंग हैं, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। सामान्य संकेत: '-ता', '-आई', '-आवट', '-आहट' से बनी भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं (सुंदरता, अच्छाई, सजावट, घबराहट); '-पन', '-पा', '-त्व' वाली पुल्लिंग (बचपन, बुढ़ापा, महत्त्व)। दिनों, हिंदी महीनों, पर्वतों, देशों और अधिकतर धातुओं के नाम पुल्लिंग हैं (सोमवार, सावन, हिमालय, भारत, सोना, लोहा), पर 'चाँदी' स्त्रीलिंग है। भाषाओं, नदियों और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग हैं (हिंदी, गंगा, पूर्णिमा); 'ब्रह्मपुत्र' को नद मानकर पुल्लिंग माना जाता है। '-ई' अंत वाले कई शब्द पुल्लिंग हैं: पानी, घी, मोती, हाथी। तत्सम '-आ' अंत वाले कई शब्द स्त्रीलिंग हैं: लता, दया, कृपा, विद्या।

लिंग परिवर्तन के भरोसेमंद जोड़े: कवि-कवयित्री, विद्वान-विदुषी, साधु-साध्वी, श्रीमान-श्रीमती, नायक-नायिका, लेखक-लेखिका, सेवक-सेविका, युवक-युवती, बाघ-बाघिन, शेर-शेरनी, मोर-मोरनी, हाथी-हथिनी, तपस्वी-तपस्विनी।

वचन: एकवचन और बहुवचन। '-आ' अंत वाले पुल्लिंग शब्द '-ए' बनते हैं (लड़का-लड़के); '-ई' अंत वाले स्त्रीलिंग '-इयाँ' (लड़की-लड़कियाँ, नदी-नदियाँ); '-इया' अंत वाले '-इयाँ' (चिड़िया-चिड़ियाँ); अकारांत स्त्रीलिंग '-एँ' (पुस्तक-पुस्तकें, बात-बातें); '-आ' अंत वाले स्त्रीलिंग '-एँ' जोड़कर (लता-लताएँ, माता-माताएँ); '-उ/-ऊ' अंत वाले स्त्रीलिंग '-उएँ' (वस्तु-वस्तुएँ, बहू-बहुएँ)। प्राण, दर्शन, होश प्रायः बहुवचन में आते हैं; जनता एकवचन है। 'गण', 'वृंद', 'जन' जोड़कर भी बहुवचन बनता है: छात्रगण, गुरुजन।

कारक आठ हैं, अपने चिह्नों के साथ: कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से, के द्वारा), संप्रदान (को, के लिए), अपादान (से, अलग होने के अर्थ में), संबंध (का, की, के; रा, री, रे), अधिकरण (में, पर) और संबोधन (हे, अरे)। सबसे अधिक भ्रम 'से' और 'को' में होता है। 'वह कलम से लिखता है' में 'से' साधन बताता है, इसलिए करण; 'पेड़ से पत्ता गिरा' में अलग होना है, इसलिए अपादान। 'राम ने श्याम को पीटा' में 'को' कर्म है; 'गरीब को भोजन दो' में देने का भाव है, इसलिए संप्रदान।

काल तीन हैं: वर्तमान, भूत और भविष्य। भूतकाल के छह भेद प्रायः पढ़ाए जाते हैं: सामान्य (वह गया), आसन्न (वह गया है), पूर्ण (वह गया था), अपूर्ण (वह जा रहा था), संदिग्ध (वह गया होगा) और हेतुहेतुमद् (यदि वह आता तो मैं जाता)। वर्तमान के मुख्य रूप: सामान्य (वह जाता है), अपूर्ण या तात्कालिक (वह जा रहा है), संदिग्ध (वह जाता होगा); भविष्य के: सामान्य (वह जाएगा) और संभाव्य (शायद वह जाए)। वर्तमान और भविष्य के उपभेदों की संख्या पुस्तकों में अलग-अलग मिलती है।

वाच्य तीन हैं। कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार: 'राम पत्र लिखता है'। कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है और कर्ता के साथ 'से' या 'द्वारा' आता है: 'राम द्वारा पत्र लिखा गया'। भाववाच्य में भाव प्रधान होता है, क्रिया अकर्मक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है और वाक्य प्रायः असमर्थता बताता है: 'मुझसे चला नहीं जाता'।

संधि दो वर्णों के मेल से होने वाला परिवर्तन है। स्वर संधि के पाँच भेद हैं। दीर्घ: विद्या + आलय = विद्यालय, रवि + इंद्र = रवींद्र, भानु + उदय = भानूदय। गुण: देव + इंद्र = देवेंद्र, महा + उत्सव = महोत्सव, महा + ऋषि = महर्षि। वृद्धि: सदा + एव = सदैव, वन + औषधि = वनौषधि। यण: इति + आदि = इत्यादि, सु + आगत = स्वागत, अति + अधिक = अत्यधिक। अयादि: ने + अन = नयन, पो + अन = पवन, नै + अक = नायक, पौ + अक = पावक।

व्यंजन संधि: वाक् + ईश = वागीश, दिक् + गज = दिग्गज, सत् + जन = सज्जन, उत् + लास = उल्लास, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + हार = उद्धार, सम् + कल्प = संकल्प, सत् + आचार = सदाचार। विसर्ग संधि: निः + चल = निश्चल, दुः + कर = दुष्कर, मनः + योग = मनोयोग, निः + आशा = निराशा, निः + धन = निर्धन, नमः + ते = नमस्ते, निः + रस = नीरस।

समास में दो या अधिक शब्द बीच की विभक्ति या शब्द हटाकर जुड़ते हैं, और उन्हें फिर से अलग करना विग्रह कहलाता है। छह भेद: अव्ययीभाव, जिसमें पहला पद अव्यय और प्रधान होता है (यथाशक्ति: शक्ति के अनुसार; प्रतिदिन: हर दिन; आजीवन: जीवन भर)। तत्पुरुष, जिसमें दूसरा पद प्रधान होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त होता है (राजपुत्र: राजा का पुत्र; रसोईघर: रसोई के लिए घर; देशनिकाला: देश से निकाला; हस्तलिखित: हाथ से लिखा हुआ)। कर्मधारय, जिसमें विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है (नीलकमल: नीला है जो कमल; चरणकमल: कमल के समान चरण)।

बाकी तीन भेद: द्विगु, जिसमें पहला पद संख्या हो और समूह का बोध हो (त्रिलोक: तीन लोकों का समाहार; चौराहा: चार राहों का समाहार)। द्वंद्व, जिसमें दोनों पद प्रधान हों (माता-पिता: माता और पिता; पाप-पुण्य)। बहुव्रीहि, जिसमें कोई पद प्रधान नहीं होता और पूरा शब्द किसी तीसरे का बोध कराता है (दशानन: दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण; लंबोदर: लंबा है उदर जिसका, अर्थात् गणेश; चक्रपाणि: चक्र है हाथ में जिसके, अर्थात् विष्णु)। कुछ पुस्तकें कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष के ही उपभेद मानती हैं।

एक ही शब्द में विग्रह के अनुसार समास बदल जाता है: 'नीलकंठ' का विग्रह 'नीला कंठ' हो तो कर्मधारय, और 'नीला है कंठ जिसका, अर्थात् शिव' हो तो बहुव्रीहि। 'पीतांबर' (पीला वस्त्र या श्रीकृष्ण) और 'त्रिनेत्र' (तीन नेत्रों का समाहार या शिव) में भी यही बात है। इसलिए विकल्पों में दिया गया विग्रह ध्यान से पढ़िए।

उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़कर अर्थ बदलते हैं। संस्कृत के: अति (अत्यंत), अनु (अनुज), अप (अपमान), अभि (अभिमान), अव (अवगुण), आ (आजीवन), उत् (उत्थान), उप (उपवन), दुर् (दुर्जन), निर् (निर्धन), परा (पराजय), परि (परिश्रम), प्र (प्रगति), प्रति (प्रतिदिन), वि (विज्ञान), सम् (संयोग), सु (सुगम)। हिंदी के: अन (अनपढ़), अध (अधमरा), भर (भरपेट), नि (निडर)। उर्दू के: बे (बेईमान), ना (नालायक), बद (बदनाम), ला (लापरवाह), ग़ैर (ग़ैरहाज़िर)।

प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़ते हैं। क्रिया के मूल रूप (धातु) से जुड़ने वाले कृत् प्रत्यय: पढ़ + आई = पढ़ाई, लिख + आवट = लिखावट, तैर + आक = तैराक, लूट + एरा = लुटेरा। संज्ञा या विशेषण से जुड़ने वाले तद्धित प्रत्यय: मीठा + आस = मिठास, अपना + पन = अपनापन, धन + वान = धनवान, दया + लु = दयालु, समाज + इक = सामाजिक, सुंदर + ता = सुंदरता।

तत्सम शब्द संस्कृत से बिना बदले आए हैं, तद्भव शब्द उन्हीं से बदलकर बने हैं। भरोसेमंद जोड़े (तत्सम-तद्भव): अग्नि-आग, दुग्ध-दूध, कर्म-काम, हस्त-हाथ, मुख-मुँह, सूर्य-सूरज, ग्राम-गाँव, क्षेत्र-खेत, कर्ण-कान, दंत-दाँत, सर्प-साँप, उष्ट्र-ऊँट, रात्रि-रात, दधि-दही, घृत-घी, मयूर-मोर, अश्रु-आँसू, आम्र-आम, कूप-कुआँ, निद्रा-नींद, जिह्वा-जीभ, सप्त-सात, शत-सौ।

जाल: (1) संधि और समास में भ्रम: संधि वर्णों का मेल है (विद्या + आलय), समास शब्दों का (विद्या के लिए आलय); (2) बहुव्रीहि को कर्मधारय या द्विगु समझ लेना, जबकि बहुव्रीहि में अर्थ किसी तीसरे व्यक्ति या वस्तु की ओर जाता है; (3) करण 'से' और अपादान 'से', कर्म 'को' और संप्रदान 'को' में भ्रम; (4) 'पानी', 'घी', 'मोती' को '-ई' अंत के कारण स्त्रीलिंग मान लेना; (5) गुण और वृद्धि संधि में उलझना: ए, ओ, अर् बने तो गुण, ऐ, औ बने तो वृद्धि; (6) तत्सम-तद्भव जोड़े को उलटा पढ़ना, यानी 'आग' को तत्सम मान लेना; (7) 'सार्वनामिक विशेषण' को सर्वनाम मान लेना, जबकि वह संज्ञा से पहले आता है।

उदाहरण

- विद्यालय: संधि-विच्छेद विद्या + आलय (दीर्घ संधि); समास-विग्रह विद्या के लिए आलय (तत्पुरुष)।
- गुण बनाम वृद्धि: देव + इंद्र = देवेंद्र (ए, गुण); सदा + एव = सदैव (ऐ, वृद्धि)।
- यण: इति + आदि = इत्यादि; अति + अधिक = अत्यधिक। अयादि: ने + अन = नयन; पौ + अक = पावक।
- विसर्ग: निः + चल = निश्चल; मनः + योग = मनोयोग; निः + रस = नीरस।
- दशानन = दस हैं आनन जिसके (रावण) → बहुव्रीहि; त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार → द्विगु।
- नीलकंठ: 'नीला कंठ' → कर्मधारय; 'नीला है कंठ जिसका (शिव)' → बहुव्रीहि।

- यथाशक्ति, प्रतिदिन, आजीवन → अव्ययीभाव; माता-पिता, पाप-पुण्य → द्वंद्व।
- करण बनाम अपादान: 'कलम से लिखता है' (साधन, करण); 'पेड़ से पत्ता गिरा' (अलगाव, अपादान)।
- कर्म बनाम संप्रदान: 'श्याम को पीटा' (कर्म); 'गरीब को भोजन दो' (संप्रदान)।
- वाच्य: 'राम पत्र लिखता है' (कर्तृ); 'राम द्वारा पत्र लिखा गया' (कर्म); 'मुझसे चला नहीं जाता' (भाव)।
- लिंग: पानी, घी, मोती पुल्लिंग; लता, दया, कृपा स्त्रीलिंग; कवि-कवयित्री, विद्वान-विदुषी, साधु-साध्वी।
- भूतकाल: वह गया (सामान्य), गया है (आसन्न), गया था (पूर्ण), जा रहा था (अपूर्ण), गया होगा (संदिग्ध)।
- तत्सम-तद्भव: अग्नि-आग, दुग्ध-दूध, हस्त-हाथ, क्षेत्र-खेत, उष्ट्र-ऊँट, घृत-घी, अश्रु-आँसू।
- उपसर्ग: अति, अनु, अप, अभि, उप, प्र, वि (संस्कृत); अन, अध, भर (हिंदी); बे, ना, बद, ग़ैर (उर्दू)।

> **त्वरित दोहराव:** विकारी शब्द: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया; अव्यय: क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात; सर्वनाम छह, विशेषण चार भेद; सकर्मक की पहचान 'क्या/किसे' से; कारक आठ: ने, को, से, को/के लिए, से (अलगाव), का/की/के, में/पर, हे; करण 'से' साधन, अपादान 'से' अलगाव; वाच्य तीन; स्वर संधि पाँच: दीर्घ, गुण (ए, ओ, अर्), वृद्धि (ऐ, औ), यण, अयादि; समास छह: अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व, बहुव्रीहि (तीसरे का बोध); विग्रह से समास बदलता है (नीलकंठ); पानी, घी, मोती पुल्लिंग; तत्सम-तद्भव: अग्नि-आग, हस्त-हाथ, क्षेत्र-खेत।

वर्ण-विचार: स्वर, व्यंजन, उच्चारण स्थान, अनुस्वार-अनुनासिक और संयुक्त व्यंजन

वर्ण और वर्णमाला: भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि, जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है; 'कमल' में क्, अ, म्, अ, ल्, अ छह ध्वनियाँ हैं। वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। वर्ण के दो भेद हैं: स्वर और व्यंजन। कुल संख्या पर पुस्तकें एकमत नहीं हैं: 11 स्वर और 33 मूल व्यंजन मिलाकर 44; अयोगवाह अं, अः जोड़कर 46; उत्क्षिप्त ड़, ढ़ जोड़कर 48; और संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र भी गिनें तो 52। इसलिए प्रश्न में गिनती का आधार ध्यान से पढ़िए।

स्वर और उनके भेद: जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के होता है, वे स्वर हैं: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। उच्चारण-काल (मात्रा) के आधार पर ह्रस्व स्वर एक मात्रा के हैं (अ, इ, उ, ऋ), दीर्घ स्वर दो मात्रा के (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ), और प्लुत स्वर तीन मात्रा तक खींचा जाता है (ओ३म्, पुकारते समय 'हे रा३म'); हिंदी लेखन में प्लुत प्रायः नहीं आता। बनावट के आधार पर अ, इ, उ, ऋ मूल स्वर हैं; आ, ई, ऊ एक जैसे स्वरों के मेल से बने हैं, और ए (अ + इ), ऐ (अ + ए), ओ (अ + उ), औ (अ + ओ) भिन्न स्वरों के मेल से बने संयुक्त स्वर हैं। ओठों की आकृति से उ, ऊ, ओ, औ वृत्ताकार हैं; जीभ के भाग से इ, ई, ए, ऐ अग्र, अ मध्य और आ, उ, ऊ, ओ, औ पश्च स्वर माने जाते हैं। 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती, क्योंकि वह हर व्यंजन में मिला रहता है (क = क् + अ)। 'ऋ' लिखने में स्वर है, पर हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' जैसा होता है और यह केवल तत्सम शब्दों में आता है: ऋषि, कृपा, गृह। अंग्रेज़ी शब्दों के लिए आगत स्वर 'ऑ' लिखा जाता है: डॉक्टर, कॉलेज।

व्यंजन और उनके भेद: जिन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है, वे व्यंजन हैं। 33 मूल व्यंजनों में 25 स्पर्श व्यंजन हैं, जिनमें जीभ या ओठ मुख के किसी भाग को छूते हैं (प-वर्ग में दोनों ओठ मिलते हैं): क-वर्ग, च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग और प-वर्ग, हर वर्ग में पाँच वर्ण। अंतःस्थ व्यंजन चार हैं: य, र, ल, व; इनमें य और व अर्धस्वर, र लुंठित या प्रकंपित (जीभ के कंपन से) और ल पार्श्विक (हवा जीभ के दोनों ओर से) है। ऊष्म या संघर्षी व्यंजन चार हैं: श, ष, स, ह। हर वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) नासिक्य है। ड़ और ढ़ उत्क्षिप्त या द्विगुण व्यंजन हैं, जिनमें जीभ ऊपर उठकर झटके से गिरती है; ये शब्द के आरंभ में नहीं आते (सड़क, पेड़, पढ़ना), आरंभ में ड, ढ ही आते हैं (डाल, ढोल)। ङ और ञ से भी कोई शब्द आरंभ नहीं होता। अरबी-फ़ारसी और अंग्रेज़ी की क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ध्वनियाँ दिखाने के लिए नुक्ता लगता है (क़लम, ख़बर, ग़रीब, ज़मीन, फ़ौज); केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अनुसार हिंदी में घुल-मिल गए शब्द बिना नुक्ते के भी लिखे जा सकते हैं (कलम, खबर, गरीब), पर जहाँ उच्चारण-भेद से अर्थ बदले वहाँ नुक्ता आवश्यक है: ज़रा (थोड़ा) और जरा (बुढ़ापा)।

प्राण और घोष के आधार पर: साँस की मात्रा के आधार पर अल्पप्राण व्यंजनों में कम साँस निकलती है: हर वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण तथा य, र, ल, व। महाप्राण में अधिक साँस और 'ह' जैसी ध्वनि होती है: हर वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण, तथा ऊष्म श, ष, स, ह, जिन्हें अधिकतर पुस्तकें महाप्राण मानती हैं। स्वरतंत्रियों में कंपन के आधार पर अघोष में कंपन नहीं होता: हर वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण और श, ष, स। सघोष में कंपन होता है: हर वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण, य, र, ल, व, ह और सभी स्वर। एक वर्ग में चारों भेद देखिए: क अल्पप्राण अघोष, ख महाप्राण अघोष, ग अल्पप्राण सघोष, घ महाप्राण सघोष। 'ह' कंठ्य, सघोष और महाप्राण तीनों है।

उच्चारण स्थान: मुख का जो भाग किसी वर्ण को बोलने में काम आता है, वह उसका उच्चारण स्थान है। कंठ्य: अ, आ, क-वर्ग, ह, विसर्ग (संस्कृत सूत्र 'अकुहविसर्जनीयानां कंठः')। तालव्य: इ, ई, च-वर्ग, य, श। मूर्धन्य: ऋ, ट-वर्ग, र, ष। दंत्य: त-वर्ग, ल, स। ओष्ठ्य: उ, ऊ, प-वर्ग। नासिक्य: ङ, ञ, ण, न, म अपने वर्ग के स्थान के साथ नाक से भी बोले जाते हैं; अनुस्वार का स्थान भी नासिका है। दो स्थानों वाले वर्ण सबसे अधिक पूछे जाते हैं: ए, ऐ कंठ-तालव्य; ओ, औ कंठोष्ठ्य; व दंतोष्ठ्य (ऊपर के दाँत और निचला ओठ)। आधुनिक ध्वनि-विज्ञान र, ल, स, न को वर्त्स्य (मसूड़े से) मानता है, पर परीक्षा में पारंपरिक तालिका से ही उत्तर दिया जाता है।

अनुस्वार और अनुनासिक: अनुस्वार (ं) स्वर के बाद आने वाली नासिक्य व्यंजन ध्वनि है, जिसमें हवा केवल नाक से निकलती है और जो अगले वर्ग के पंचम वर्ण की तरह बोली जाती है: गंगा (गङ्गा), ठंडा (ठण्डा), संत (सन्त), संपादक (सम्पादक)। अनुनासिक (ँ) स्वर का गुण है, जिसमें हवा मुख और नाक दोनों से निकलती है: चाँद, आँख, हँसना, माँ। भ्रम से अर्थ बदलता है: हंस (पक्षी) और हँस (हँसना), अंगना (स्त्री) और अँगना (आँगन)। शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो चंद्रबिंदु की जगह बिंदु लगता है, पर उच्चारण अनुनासिक रहता है: नहीं, मैं, में, गोंद। मानक वर्तनी में पंचम वर्ण अपने वर्ग के वर्ण से पहले अनुस्वार बनता है (पंकज, कंठ, अंत), पर द्वित्व में या दूसरे वर्ग के वर्ण के साथ नहीं: सम्मान, उन्नति, जन्म, वाङ्मय, चिन्मय। य, र, ल, व, श, स, ह से पहले अनुस्वार ही लगता है:

संयम, संरक्षण, संवाद, संसार, संहार। अं और अः न स्वर हैं न व्यंजन, इसलिए अयोगवाह कहलाते हैं। विसर्ग (ः) ‘ह’ जैसी ध्वनि है और तत्सम शब्दों में आता है: अतः, प्रातः, पुनः।

संयुक्त व्यंजन और द्वित्व: स्वर-रहित व्यंजन हलंत (्) से दिखाया जाता है: क्, जगत्। दो भिन्न व्यंजनों के बीच स्वर न हो तो संयुक्त व्यंजन बनता है: प्यार, स्वर, विद्या। वर्णमाला के चार संयुक्त व्यंजन हैं: क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र); ज्ञ बोला ‘ग्य’ जैसा जाता है, पर उसमें ज और ञ हैं। एक ही व्यंजन दो बार आए तो द्वित्व: पक्का, बिल्ली, कुत्ता। महाप्राण का द्वित्व नहीं होता, उससे पहले उसी वर्ग का अल्पप्राण आता है: मक्खन, पत्थर, अच्छा, बुड्ढा। स्वर-रहित र् अगले व्यंजन के ऊपर रेफ बनता है: कर्म, पूर्व, निर्णय, आशीर्वाद; इसलिए ‘आर्शीवाद’ अशुद्ध है। व्यंजन के बाद आया र नीचे पदेन बनता है: प्रकार, क्रम, ग्राम; ट, ड के साथ ट्र, ड्र (ट्रक, राष्ट्र)। र के साथ उ, ऊ के रूप भी अलग हैं: रु (गुरु, रुपया), रू (रूप)।

परीक्षा के जाल: ऋ स्वर है, व्यंजन नहीं। अं, अः अयोगवाह हैं। व दंतोष्ठ्य है, ओष्ठ्य नहीं; ए, ऐ कंठ-तालव्य और ओ, औ कंठोष्ठ्य हैं। श, ष, स अघोष हैं, पर ह सघोष है। अनुस्वार व्यंजन है और अनुनासिक स्वर का गुण, इसलिए ‘हंस’ और ‘हँस’ अलग शब्द हैं।

उदाहरण

- हिंदी के 11 स्वर: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ; ह्रस्व चार (अ, इ, उ, ऋ), दीर्घ सात, प्लुत का उदाहरण ओ३म्।
- 33 मूल व्यंजन: 25 स्पर्श (क से म), 4 अंतःस्थ (य, र, ल, व), 4 ऊष्म (श, ष, स, ह); उत्क्षिप्त ड़, ढ़; संयुक्त क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
- उच्चारण स्थान: कंठ्य (अ, आ, क-वर्ग, ह, विसर्ग); तालव्य (इ, ई, च-वर्ग, य, श); मूर्धन्य (ऋ, ट-वर्ग, र, ष); दंत्य (त-वर्ग, ल, स); ओष्ठ्य (उ, ऊ, प-वर्ग)।
- दो स्थानों वाले वर्ण: ए, ऐ कंठ-तालव्य; ओ, औ कंठोष्ठ्य; व दंतोष्ठ्य; ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य।
- अल्पप्राण: वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण और य, र, ल, व; महाप्राण: वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण और श, ष, स, ह।
- अघोष: वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण और श, ष, स; सघोष: वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण, य, र, ल, व, ह और सभी स्वर।
- अनुस्वार बनाम अनुनासिक: हंस (पक्षी) और हँस (हँसना); अंगना (स्त्री) और अँगना (आँगन); मैं, नहीं, में में बिंदु है पर उच्चारण अनुनासिक।
- पंचम वर्ण का नियम: गङ्गा = गंगा, सन्त = संत, सम्पादक = संपादक; पर सम्मान, उन्नति, जन्म, वाङ्मय, चिन्मय में अनुस्वार नहीं लगता।
- रेफ और द्वित्व: आशीर्वाद शुद्ध (आर्शीवाद अशुद्ध); महाप्राण के द्वित्व में पहले अल्पप्राण आता है: मक्खन, पत्थर, अच्छा, बुड्ढा।

> **त्वरित दोहराव:** वर्ण सबसे छोटी ध्वनि; 11 स्वर और 33 मूल व्यंजन (44), अयोगवाह अं-अः, उत्क्षिप्त ड़-ढ़, संयुक्त क्ष-त्र-ज्ञ-श्र (कुल गिनती 44/46/48/52, पुस्तक अनुसार); ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ; ए-ऐ कंठ-तालव्य, ओ-औ कंठोष्ठ्य, व दंतोष्ठ्य; महाप्राण वर्ग के 2, 4 वर्ण और श, ष, स, ह; अघोष वर्ग के 1, 2 वर्ण और श, ष, स; अनुस्वार व्यंजन, अनुनासिक स्वर-गुण (हंस-हँस); ड़, ढ़, ङ, ञ से शब्द आरंभ नहीं होता।

शब्द-भेद: तत्सम-तद्भव, देशज-विदेशज, रूढ़-यौगिक-योगरूढ़ और विकारी-अविकारी

शब्द और उसके वर्गीकरण: एक या अधिक वर्णों का स्वतंत्र और सार्थक समूह शब्द कहलाता है; ‘कमल’ शब्द है, पर ‘लमक’ नहीं, क्योंकि उसका कोई अर्थ नहीं। वाक्य में प्रयुक्त होकर विभक्ति या प्रत्यय से जुड़ा शब्द ‘पद’ कहलाता है। शब्दों को चार आधारों पर बाँटा जाता है: उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज), रचना या बनावट के आधार पर (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़), प्रयोग या रूपांतर के आधार पर (विकारी, अविकारी) और अर्थ के आधार पर (एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची, विलोम)। परीक्षा में पहले तीन आधार सबसे अधिक पूछे जाते हैं।

तत्सम और तद्भव: तत्सम (तत् + सम, अर्थात् उसके समान) वे शब्द हैं जो संस्कृत से बिना बदले हिंदी में आए हैं: अग्नि, सूर्य, क्षेत्र, दुग्ध, हस्त, कर्म, ग्राम। तद्भव (तत् + भव, अर्थात् उससे उत्पन्न) वे शब्द हैं जो संस्कृत से पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए बदले रूप में आए: आग, सूरज, खेत, दूध, हाथ, काम, गाँव। कुछ पुस्तकें बीच की अवस्था को अर्धतत्सम कहती हैं, जैसे अग्नि से अगिन और फिर आग। तत्सम पहचानने के संकेत: ऋ, ष, क्ष, ज्ञ, श्र और संयुक्ताक्षर प्रायः तत्सम में मिलते हैं, और तद्भव में ये सरल हो जाते हैं। व से ब (वन से बन), य से ज (यमुना से जमुना, यश से जस), क्ष से ख या छ (क्षेत्र से खेत, अक्षि से आँख), श से स (शिक्षा से सीख) बनते हैं; संयुक्त व्यंजन टूटकर पहला स्वर दीर्घ हो जाता है (हस्त से हाथ, कर्म से काम, सप्त से सात)।

भरोसेमंद तत्सम-तद्भव जोड़े: घृत-घी, दधि-दही, उष्ट्र-ऊँट, गृह-घर, भ्रातृ-भाई, ओष्ठ-होंठ, काष्ठ-काठ, शय्या-सेज, आश्चर्य-अचरज, कोकिल-कोयल, पक्षी-पंछी, वधू-बहू, शृगाल-सियार, धैर्य-धीरज, मक्षिका-मक्खी, ज्येष्ठ-जेठ, भिक्षा-भीख, हरिद्रा-हल्दी, श्वश्रू-सास, श्वसुर-ससुर, चतुर्थ-चौथा, षष्ठ-छठा, दीपावली-दीवाली, मयूर-मोर, अंधकार-अँधेरा। जाल यह है कि जोड़े उलटे दिए जाते हैं और पूछा जाता है ‘तत्सम कौन-सा है’; ऊपर के हर जोड़े में पहला शब्द तत्सम है। जल, फल, वन, कमल, पवन जैसे शब्द तत्सम ही हैं, भले ही वे सरल लगें।

देशज, विदेशज और संकर: देशज वे शब्द हैं जो लोक-व्यवहार में अपने-आप बने और जिनका स्रोत संस्कृत या किसी विदेशी भाषा में नहीं मिलता: लोटा, पगड़ी, खिड़की, जूता, डिबिया, तेंदुआ, झाड़ू; किसी विशेष शब्द को देशज मानने पर पुस्तकों में कुछ मतभेद भी मिलता है। विदेशज वे शब्द हैं जो दूसरी भाषाओं से आए। अरबी से: अदालत, किताब, कानून, कलम, तारीख, मुकदमा। फ़ारसी से: आराम, दरवाज़ा, गुलाब, चश्मा, ज़मीन। तुर्की से: तोप, चाकू, कैंची, बेगम, बहादुर, उर्दू। पुर्तगाली से: अलमारी, बाल्टी, चाबी, तौलिया, अनानास, पादरी, गिरजा। कुछ शब्दों के स्रोत पर पुस्तकें एकमत नहीं हैं: ‘लाश’ को कई परीक्षा-पुस्तकें तुर्की बताती हैं, पर शब्दकोश इसे फ़ारसी मानते हैं, और ‘गोभी’ को कुछ पुस्तकें पुर्तगाली बताती हैं, जबकि इसका स्रोत अनिश्चित है। अंग्रेज़ी से: स्कूल, डॉक्टर, टिकट, रेल, बटन, स्टेशन। फ्रांसीसी से कारतूस और कूपन, चीनी से चाय और लीची, जापानी से रिक्शा। दो भिन्न स्रोतों के शब्दों से बने शब्द संकर कहलाते हैं: रेलगाड़ी (अंग्रेज़ी + हिंदी), टिकटघर, बेढंगा (फ़ारसी ‘बे’ + हिंदी ‘ढंग’)।

रचना के आधार पर: रूढ़ शब्द वे हैं जिनके खंड करने पर खंडों का कोई अर्थ नहीं निकलता और जो परंपरा से एक अर्थ में चलते हैं: घर, पेड़, जल, दिन, पानी, घोड़ा। ‘घर’ को घ + र में तोड़ें तो कोई अर्थ नहीं बचता। यौगिक शब्द दो या अधिक सार्थक खंडों से बनते हैं और उनका अर्थ उन्हीं खंडों के जोड़ से निकलता है: विद्यालय (विद्या + आलय), पाठशाला, पुस्तकालय, घुड़सवार, सुपुत्र, दूधवाला, प्रतिदिन। योगरूढ़ शब्द यौगिक की तरह सार्थक खंडों से बनते हैं, पर किसी

एक विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं: पंकज (पंक में जन्मा) केवल कमल के लिए आता है, कीचड़ में जन्मे मेंढक या कीड़े के लिए नहीं। ऐसे ही जलज, नीलकंठ (शिव), लंबोदर (गणेश), दशानन (रावण), गिरिधर (कृष्ण), चक्रपाणि (विष्णु), वीणापाणि (सरस्वती), चारपाई। ध्यान दें कि बहुव्रीहि समास के अधिकतर उदाहरण योगरूढ़ शब्द होते हैं।

प्रयोग के आधार पर विकारी: जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक या काल के कारण बदलता है, वे विकारी हैं। ये चार हैं: संज्ञा (लड़का, लड़के, लड़कों), सर्वनाम (मैं, मुझे, मेरा), विशेषण (अच्छा, अच्छी, अच्छे) और क्रिया (पढ़ता, पढ़ी, पढ़ेंगे)। ध्यान दें कि हर विशेषण नहीं बदलता; आकारांत विशेषण बदलते हैं (काला घोड़ा, काली घोड़ी), पर सुंदर, लाल, ईमानदार जैसे विशेषण नहीं बदलते, फिर भी वे विकारी वर्ग में गिने जाते हैं, क्योंकि यह वर्ग पूरे शब्द-भेद का है।

प्रयोग के आधार पर अविकारी: जिन शब्दों का रूप कभी नहीं बदलता, वे अविकारी या अव्यय हैं: 'लड़का धीरे चलता है', 'लड़कियाँ धीरे चलती हैं' में 'धीरे' वैसा ही रहता है। अव्यय के भेद हैं: क्रियाविशेषण (आज, यहाँ, धीरे), संबंधबोधक (के पास, के बिना, की ओर), समुच्चयबोधक (और, परंतु, क्योंकि, कि), विस्मयादिबोधक (अरे!, वाह!, हाय!) और निपात (ही, भी, तो, तक, मात्र)। एक ही शब्द प्रयोग के अनुसार अलग भेद का हो सकता है: 'पास आओ' में 'पास' क्रियाविशेषण है, पर 'घर के पास' में संबंधबोधक; 'तेज़ घोड़ा' में 'तेज़' विशेषण है, पर 'घोड़ा तेज़ दौड़ता है' में क्रियाविशेषण। इसलिए शब्द-भेद का उत्तर वाक्य में उसका काम देखकर दीजिए।

परीक्षा के जाल: (1) तत्सम-तद्भव जोड़े में संस्कृत रूप ही तत्सम है; 'आग', 'हाथ', 'खेत' तद्भव हैं। (2) 'पंकज', 'जलज', 'नीलकंठ' योगरूढ़ हैं, यौगिक नहीं; 'विद्यालय', 'पाठशाला' यौगिक हैं। (3) 'अलमारी', 'चाबी', 'बाल्टी' पुर्तगाली और 'तोप', 'चाकू', 'कैंची' तुर्की हैं, अंग्रेज़ी नहीं। (4) अविकारी शब्द कभी रूप नहीं बदलते; 'धीरे', 'और', 'के पास' इसी वर्ग में हैं। (5) शब्द-भेद वाक्य में प्रयोग से तय होता है, अकेले शब्द से नहीं।

उदाहरण

- उत्पत्ति के आधार पर चार भेद: तत्सम (अग्नि), तद्भव (आग), देशज (लोटा, पगड़ी), विदेशज (किताब, स्कूल); दो स्रोतों से बने शब्द संकर (रेलगाड़ी)।
- तत्सम-तद्भव: घृत-घी, दधि-दही, उष्ट्र-ऊँट, गृह-घर, भ्रातृ-भाई, शृगाल-सियार, श्वश्रू-सास, हरिद्रा-हल्दी, मयूर-मोर।
- तद्भव बनने के संकेत: व से ब (वन-बन), य से ज (यमुना-जमुना), क्ष से ख (क्षेत्र-खेत), श से स (शिक्षा-सीख), संयुक्ताक्षर सरल (हस्त-हाथ)।
- विदेशज: अरबी (अदालत, कानून, कलम), फ़ारसी (आराम, दरवाज़ा, चश्मा), तुर्की (तोप, चाकू, कैंची), पुर्तगाली (अलमारी, बाल्टी, चाबी, तौलिया)।
- रूढ़: घर, पेड़, जल; यौगिक: विद्यालय, पाठशाला, पुस्तकालय; योगरूढ़: पंकज (कमल), जलज, दशानन (रावण), लंबोदर (गणेश)।
- विकारी चार: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया; अविकारी (अव्यय): क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात।
- प्रयोग से भेद बदलता है: 'पास आओ' (क्रियाविशेषण), 'घर के पास' (संबंधबोधक); 'तेज़ घोड़ा' (विशेषण), 'तेज़ दौड़ता है' (क्रियाविशेषण)।
- योगरूढ़ की पहचान: खंड सार्थक हों पर अर्थ एक विशेष वस्तु या व्यक्ति तक सीमित हो; पंकज कीचड़ में जन्मे हर जीव के लिए नहीं, केवल कमल के लिए।

> **त्वरित दोहराव:** उत्पत्ति से: तत्सम (संस्कृत ज्यों का त्यों: अग्नि, क्षेत्र), तद्भव (बदला रूप: आग, खेत), देशज (लोटा, पगड़ी, खिड़की), विदेशज (अरबी कलम, फ़ारसी चश्मा, तुर्की तोप, पुर्तगाली अलमारी, अंग्रेज़ी स्टेशन), संकर (रेलगाड़ी); रचना से: रूढ़ (घर), यौगिक (विद्यालय), योगरूढ़ (पंकज, दशानन); प्रयोग से: विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया), अविकारी (अव्यय); भेद वाक्य में प्रयोग से तय होता है।

संधि: स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि के नियम, अपवाद और संधि-विच्छेद

संधि क्या है: दो वर्णों (ध्वनियों) के पास-पास आने से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं, और संधि से बने शब्द को फिर से उसके मूल खंडों में तोड़ना संधि-विच्छेद कहलाता है। संधि वर्णों का मेल है, जबकि समास शब्दों का; 'विद्यालय' का संधि-विच्छेद 'विद्या + आलय' है और समास-विग्रह 'विद्या के लिए आलय'। संधि के तीन भेद हैं: स्वर संधि (स्वर + स्वर), व्यंजन संधि (व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन) और विसर्ग संधि (विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन)। स्वर संधि के पाँच भेद हैं: दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि।

दीर्घ और गुण संधि: दीर्घ संधि में दो सवर्ण (एक जैसे) स्वर मिलकर दीर्घ बनते हैं। अ/आ + अ/आ = आ: धर्मार्थ (धर्म + अर्थ), हिमालय (हिम + आलय)। इ/ई + इ/ई = ई: गिरीश (गिरि + ईश), मुनींद्र (मुनि + इंद्र)। उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ: भानूदय (भानु + उदय), सूक्ति (सु + उक्ति)। गुण संधि में अ/आ के बाद इ/ई आए तो ए, उ/ऊ आए तो ओ, और ऋ आए तो अर् बनता है: नरेंद्र (नर + इंद्र), रमेश (रमा + ईश), उपेक्षा (उप + ईक्षा); सूर्योदय (सूर्य + उदय), महोत्सव (महा + उत्सव); देवर्षि (देव + ऋषि), महर्षि (महा + ऋषि)।

वृद्धि, यण और अयादि: वृद्धि संधि में अ/आ के बाद ए/ऐ आए तो ऐ, और ओ/औ आए तो औ बनता है: सदैव (सदा + एव), मतैक्य (मत + ऐक्य); वनौषधि (वन + औषधि)। यण संधि में इ/ई, उ/ऊ, ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो वे क्रमशः य्, व्, र् बन जाते हैं: इत्यादि (इति + आदि), यद्यपि (यदि + अपि), प्रत्येक (प्रति + एक), व्यर्थ (वि + अर्थ); स्वागत (सु + आगत), अन्वय (अनु + अय), अन्वेषण (अनु + एषण); पित्राज्ञा (पितृ + आज्ञा)। अयादि संधि में ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आए तो वे क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् बनते हैं: नयन (ने + अन); नायक (नै + अक), गायक (गै + अक); पवन (पो + अन), पवित्र (पो + इत्र); पावक (पौ + अक), भावुक (भौ + उक)।

स्वर संधि पहचानने की युक्ति: जोड़ पर दीर्घ स्वर दिखे (आ, ई, ऊ) तो दीर्घ; ए, ओ या अर् दिखे तो गुण; ऐ या औ दिखे तो वृद्धि। जोड़ पर आधा य्, व् या र् किसी व्यंजन के साथ दिखे (त्य, द्य, स्व, न्व, त्र) तो यण; और य, व पूरे वर्ण के रूप में अ/आ के बाद दिखें (नयन, नायक, पवन, पावक) तो अयादि। संस्कृत से आए कुछ अपवाद याद रखिए, जहाँ गुण की जगह वृद्धि होती है: अक्षौहिणी (अक्ष + ऊहिनी), प्रौढ़ (प्र + ऊढ़), स्वैर (स्व + ईर)।

व्यंजन संधि के नियम: (1) वर्ग का पहला वर्ण किसी स्वर या वर्ग के तीसरे-चौथे वर्ण, य, र, ल, व से पहले आए तो उसी वर्ग का तीसरा वर्ण बन जाता है: दिगंबर (दिक् + अंबर), वागीश (वाक् + ईश), सदाचार (सत् + आचार), जगदीश (जगत् + ईश), उद्घाटन (उत् + घाटन)। (2) पहला वर्ण न या म से पहले आए तो पाँचवाँ बनता है: वाङ्मय (वाक् + मय), जगन्नाथ (जगत् + नाथ), उन्नति (उत् + नति), चिन्मय (चित् + मय)। (3) त्/द् के बाद च, ज, ट, ड, ल आएँ तो त् भी

वही बन जाता है: उच्चारण (उत् + चारण), सज्जन (सत् + जन), उज्ज्वल (उत् + ज्वल), उल्लास (उत् + लास), तल्लीन (तत् + लीन)। त् + श = च्छ: उच्छ्वास (उत् + श्वास); त् + ह = द्ध: उद्धार (उत् + हार), तद्धित (तत् + हित)। (4) म् के बाद स्पर्श व्यंजन आए तो अनुस्वार या उसी वर्ग का पंचम वर्ण: संकल्प (सम् + कल्प), संतोष (सम् + तोष), संपूर्ण (सम् + पूर्ण); म् + म = म्म: सम्मान; य, र, ल, व, श, स, ह से पहले अनुस्वार: संयम, संसार, संहार, संवाद; अपवाद: सम्राट (सम् + राट)। (5) स्वर के बाद छ आए तो च्छ: विच्छेद (वि + छेद), अनुच्छेद, स्वच्छंद, आच्छादन। (6) ऋ, र, ष के बाद न हो तो ण बनता है: परिणाम (परि + नाम), प्रमाण (प्र + मान), रामायण (राम + अयन); बीच में च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग या श, स आ जाएँ तो नहीं: अर्जुन, दर्शन, रचना। (7) अ, आ के अलावा किसी स्वर के बाद स प्रायः ष बनता है: अभिषेक (अभि + सेक), विषम (वि + सम), निषिद्ध (नि + सिद्ध); अनुसरण, विसर्ग जैसे अपवाद भी हैं।

विसर्ग संधि के नियम: (1) विसर्ग के बाद च/छ हो तो श्, ट/ठ हो तो ष्, त/थ हो तो स्: निश्चय (निः + चय), निश्छल (निः + छल), धनुष्टंकार (धनुः + टंकार), नमस्ते (नमः + ते)। (2) अ + विसर्ग के बाद अ या कोई सघोष व्यंजन हो तो ओ: मनोयोग (मनः + योग), यशोदा (यशः + दा), मनोबल (मनः + बल), तपोभूमि (तपः + भूमि), मनोनुकूल (मनः + अनुकूल; यहाँ बाद वाला अ लुप्त हो जाता है)। (3) अ, आ के अलावा किसी स्वर + विसर्ग के बाद स्वर या सघोष व्यंजन हो तो र्: निराशा (निः + आशा), निर्धन (निः + धन), दुर्गुण (दुः + गुण), आशीर्वाद (आशीः + वाद), दुरुपयोग (दुः + उपयोग)। (4) इ/उ + विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग लुप्त और पहला स्वर दीर्घ: नीरस (निः + रस), नीरोग (निः + रोग)। (5) इ/उ + विसर्ग के बाद क, प, फ हो तो ष्: निष्कपट (निः + कपट), दुष्कर्म (दुः + कर्म), निष्फल (निः + फल)। (6) अ + विसर्ग के बाद क, प हो तो प्रायः विसर्ग बना रहता है: प्रातःकाल, अंतःकरण; अपवाद, जिनमें विसर्ग स् बनता है: नमस्कार (नमः + कार), पुरस्कार (पुरः + कार), तिरस्कार (तिरः + कार), और आ + विसर्ग वाला भास्कर (भाः + कर)। (7) अ + विसर्ग के बाद अ के अलावा कोई स्वर हो तो विसर्ग लुप्त होता है और आगे संधि नहीं होती: अतएव (अतः + एव)। (8) श, स से पहले विसर्ग बना भी रह सकता है: दुःशासन/दुश्शासन, निःसंदेह/निस्संदेह, दोनों रूप मान्य हैं।

विसर्ग के विशेष अपवाद: पुनः और अंतः का विसर्ग मूल रूप से र् से बना है, इसलिए ये अ + विसर्ग होते हुए भी र् बनाते हैं: पुनर्जन्म (पुनः + जन्म), पुनरपि (पुनः + अपि), अंतरात्मा (अंतः + आत्मा)। इसी तरह 'उदाहरण' का विच्छेद उत् + हरण नहीं, उत् + आहरण है (कुछ पुस्तकें उद् + आहरण लिखती हैं); उत् + हरण से 'उद्धरण' बनता है। 'उपेक्षा' गुण संधि है, यण नहीं; 'स्वागत' यण है, गुण नहीं; 'सदैव' वृद्धि है, दीर्घ नहीं।

अभ्यास के लिए संधि-विच्छेद: परमेश्वर (परम + ईश्वर, गुण), अत्यधिक (अति + अधिक, यण), पावन (पौ + अन, अयादि), उल्लेख (उत् + लेख, व्यंजन), सन्मार्ग (सत् + मार्ग, व्यंजन), दुर्दशा (दुः + दशा, विसर्ग), निश्चल (निः + चल, विसर्ग), मनोरथ (मनः + रथ, विसर्ग), नीरोग (निः + रोग, विसर्ग)। संधि का भेद पूछा जाए तो पहले देखिए कि जोड़ पर दोनों ओर क्या है: दो स्वर हों तो स्वर संधि, कहीं व्यंजन हो तो व्यंजन संधि, और पहले खंड के अंत में विसर्ग हो तो विसर्ग संधि।

उदाहरण

- दीर्घ: हिमालय (हिम + आलय), गिरीश (गिरि + ईश), भानूदय (भानु + उदय); गुण: नरेंद्र (नर + इंद्र), सूर्योदय (सूर्य + उदय), महर्षि (महा + ऋषि)।
- वृद्धि: सदैव (सदा + एव), मतैक्य (मत + ऐक्य), वनौषधि (वन + औषधि); अपवाद में वृद्धि: अक्षौहिणी, प्रौढ़, स्वैर।
- यण: इत्यादि (इति + आदि), यद्यपि (यदि + अपि), स्वागत (सु + आगत), अन्वेषण (अनु + एषण), पित्राज्ञा (पितृ + आज्ञा)।
- अयादि: नयन (ने + अन), नायक (नै + अक), पवन (पो + अन), पवित्र (पो + इत्र), पावक (पौ + अक), भावुक (भौ + उक)।
- व्यंजन संधि: दिगंबर (दिक् + अंबर), जगन्नाथ (जगत् + नाथ), सज्जन (सत् + जन), उद्धार (उत् + हार), विच्छेद (वि + छेद); अपवाद सम्राट (सम् + राट)।
- विसर्ग से ओ: मनोयोग, यशोदा, तपोभूमि; विसर्ग से र्: निराशा, दुर्गुण, आशीर्वाद; दीर्घ होकर लोप: नीरस, नीरोग, नीरव।
- विसर्ग से स् अपवाद: नमस्कार (नमः + कार), पुरस्कार (पुरः + कार), भास्कर (भाः + कर); अतएव (अतः + एव) में आगे संधि नहीं।
- पुनः, अंतः का विसर्ग र् बनता है: पुनर्जन्म, पुनरपि, अंतरात्मा; उदाहरण = उत् + आहरण, पर उद्धरण = उत् + हरण।
- पहचान: जोड़ पर ए/ओ/अर् = गुण; ऐ/औ = वृद्धि; आधा य्/व्/र् = यण; पूरा य/व (नयन, पवन) = अयादि।

> **त्वरित दोहराव:** संधि वर्णों का मेल, समास शब्दों का; स्वर संधि पाँच: दीर्घ (आ, ई, ऊ), गुण (ए, ओ, अर्: नरेंद्र, महर्षि), वृद्धि (ऐ, औ: सदैव, वनौषधि), यण (य्, व्, र्: इत्यादि, स्वागत), अयादि (अय्, आय्, अव्, आव्: नयन, नायक, पवन, पावक); व्यंजन: वाक् + ईश = वागीश, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, सम् + राट = सम्राट; विसर्ग: मनोयोग, निराशा, निश्चय, नीरस, नमस्कार, अतएव; पुनः-अंतः में र्।

समास: छह भेद, समास-विग्रह और कर्मधारय-बहुव्रीहि का अंतर

समास और विग्रह: दो या अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति या संबंध बताने वाले शब्द हटाकर बनाया गया नया छोटा शब्द समस्त पद या सामासिक पद कहलाता है, और यह प्रक्रिया समास। समस्त पद के पहले खंड को पूर्वपद और दूसरे को उत्तरपद कहते हैं। समस्त पद को फिर से खोलकर लिखना समास-विग्रह है: 'राजपुत्र' का विग्रह 'राजा का पुत्र'। समास का भेद इस बात से तय होता है कि कौन-सा पद प्रधान है: अव्ययीभाव में पूर्वपद, तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु में उत्तरपद, द्वंद्व में दोनों पद और बहुव्रीहि में कोई अन्य (तीसरा) पद। हिंदी की अधिकतर पुस्तकें छह भेद पढ़ाती हैं; संस्कृत परंपरा और कामताप्रसाद गुरु जैसे वैयाकरण कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष के ही उपभेद मानकर चार मुख्य भेद (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वंद्व, बहुव्रीहि) गिनाते हैं; गुरु कर्मधारय को 'समानाधिकरण तत्पुरुष' और द्विगु को 'संख्यापूर्व कर्मधारय' कहते हैं।

अव्ययीभाव समास: जिसमें पहला पद अव्यय और प्रधान हो, और पूरा समस्त पद अव्यय की तरह (प्रायः क्रियाविशेषण बनकर) प्रयुक्त हो। उदाहरण: यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), यथासंभव (जितना संभव हो), प्रतिदिन (हर दिन), प्रत्येक (हर एक), आजीवन (जीवन भर), आजन्म (जन्म से लेकर), भरपेट (पेट भरकर), निडर (बिना डर के), बेखटके (बिना खटके के), अनुरूप (रूप के योग्य)। संज्ञा की पुनरुक्ति से बने क्रियाविशेषण भी अव्ययीभाव माने जाते हैं: घर-घर, हाथोंहाथ, दिनोंदिन, रातोंरात, बीचोंबीच। पहचान: यथा, प्रति, आ, भर, नि, बे जैसे अव्यय पहले हों और शब्द 'कैसे, कब, कितना' का उत्तर दे।

तत्पुरुष समास:
जिसमें उत्तरपद प्रधान हो और बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो। कर्ता और संबोधन को छोड़कर छह कारकों के आधार पर इसके छह भेद हैं। कर्म तत्पुरुष (को): स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग को प्राप्त), गगनचुंबी (गगन को चूमने वाला), यशप्राप्त। करण तत्पुरुष (से, के द्वारा): हस्तलिखित (हाथ से लिखा), तुलसीकृत (तुलसी द्वारा रचित), रेखांकित, शोकाकुल, रोगग्रस्त। संप्रदान तत्पुरुष (के लिए): रसोईघर (रसोई के लिए घर), गौशाला, विद्यालय, देवालय, हथकड़ी। अपादान तत्पुरुष (से, अलग होने में): देशनिकाला (देश से निकाला), धनहीन, पथभ्रष्ट, ऋणमुक्त, जन्मांध (जन्म से अंधा)। संबंध तत्पुरुष (का, की, के): राजपुत्र, गंगाजल, राष्ट्रपति, सेनापति, देशभक्ति। अधिकरण तत्पुरुष (में, पर): आपबीती (आप पर बीती), घुड़सवार (घोड़े पर सवार), शरणागत (शरण में आया), कलानिपुण, पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम)। 'विद्यालय' और 'देवालय' को कुछ पुस्तकें संबंध तत्पुरुष (विद्या का आलय) मानती हैं; विकल्पों में जो विग्रह दिया हो, उसी से भेद तय कीजिए।

तत्पुरुष के अन्य भेद: नञ् तत्पुरुष में पहला पद निषेध (अ, अन, न, ना) बताता है: असभ्य (न सभ्य), अधर्म, अज्ञान, अनादर, असंभव, अनपढ़, नापसंद। उपपद तत्पुरुष में उत्तरपद ऐसा कृदंत होता है जो अकेले प्रयुक्त नहीं होता: जलचर (जल में चरने वाला), नभचर, कुंभकार (कुंभ बनाने वाला), स्वर्णकार, चर्मकार, सर्वज्ञ (सब जानने वाला), जलद (जल देने वाला)। मध्यमपदलोपी (लुप्तपद) समास में बीच का पूरा पद लुप्त होता है: दहीबड़ा (दही में डूबा बड़ा), पनचक्की (पानी से चलने वाली चक्की), बैलगाड़ी (बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी); कुछ पुस्तकें इसे तत्पुरुष में और कुछ कर्मधारय में रखती हैं। अलुक् तत्पुरुष में विभक्ति लुप्त नहीं होती: युधिष्ठिर (युद्ध में स्थिर), मनसिज, खेचर।

कर्मधारय और द्विगु: कर्मधारय में उत्तरपद प्रधान होता है और दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है। विशेषण-विशेष्य: नीलकमल (नीला है जो कमल), महात्मा (महान है जो आत्मा), सद्गुण, नवयुवक, परमात्मा, पीतांबर (पीला है जो अंबर)। उपमान-उपमेय: चंद्रमुख (चंद्र के समान मुख), घनश्याम (घन के समान श्याम), कमलनयन (कमल के समान नयन)। रूपक वाला कर्मधारय: विद्याधन (विद्या रूपी धन), चरणकमल (कमल रूपी चरण), क्रोधाग्नि (क्रोध रूपी अग्नि), भवसागर (भव रूपी सागर)। द्विगु में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और पूरा पद किसी समूह या समाहार का बोध कराता है: त्रिभुवन (तीन भुवनों का समाहार), चौराहा (चार राहों का समाहार), नवरत्न, सप्तर्षि, पंचवटी, सप्ताह (सात दिनों का समूह), शताब्दी, त्रिफला, चौमासा, दोपहर, सतसई (सात सौ दोहों का समाहार)। संख्यावाचक विशेषण होने के कारण कुछ पुस्तकें द्विगु को कर्मधारय का उपभेद भी मानती हैं।

द्वंद्व और बहुव्रीहि: द्वंद्व में दोनों पद प्रधान होते हैं और विग्रह में 'और', 'या' अथवा 'आदि' लगता है; समस्त पद में प्रायः योजक चिह्न लगता है। इतरेतर द्वंद्व (और): माता-पिता, भाई-बहन, राधा-कृष्ण, सीता-राम, अन्न-जल। वैकल्पिक द्वंद्व (या): भला-बुरा, ठंडा-गरम, थोड़ा-बहुत, लाभ-हानि। समाहार द्वंद्व (आदि, पूरे समूह का बोध): दाल-रोटी (दाल, रोटी आदि, अर्थात् भोजन), हाथ-पाँव, नहाया-धोया। बहुव्रीहि में कोई भी पद प्रधान नहीं होता; दोनों मिलकर किसी तीसरे का बोध कराते हैं, और विग्रह में 'जिसका, जिसकी, जिसके, जो' आता है: दशानन (दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण), लंबोदर (गणेश), चक्रपाणि (चक्र है पाणि में जिसके, अर्थात् विष्णु), पीतांबर (पीले हैं वस्त्र जिसके, अर्थात् कृष्ण), गजानन, चंद्रशेखर (शिव), गिरिधर, वीणापाणि (सरस्वती), चतुर्भुज (विष्णु), त्रिनेत्र (शिव), दिगंबर।

कर्मधारय और बहुव्रीहि का अंतर: कर्मधारय में दोनों पदों का संबंध आपस में ही रहता है, अर्थात् पहला पद दूसरे की विशेषता बताता है और अर्थ उन्हीं दो पदों तक सीमित रहता है; बहुव्रीहि में यही दोनों पद मिलकर किसी तीसरे व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं। इसलिए एक ही शब्द दोनों हो सकता है: नीलकंठ (नीला कंठ: कर्मधारय; नीला है कंठ जिसका, अर्थात् शिव: बहुव्रीहि), पीतांबर (पीला वस्त्र: कर्मधारय; श्रीकृष्ण: बहुव्रीहि), लंबोदर (लंबा उदर: कर्मधारय; गणेश: बहुव्रीहि), कमलनयन (कमल के समान नयन: कर्मधारय; विष्णु या राम: बहुव्रीहि)। यही बात द्विगु और बहुव्रीहि में है: त्रिलोचन, चतुर्भुज, पंचानन, चतुर्मुख; संख्या के समूह का अर्थ हो तो द्विगु, देवता का अर्थ हो तो बहुव्रीहि। गुरु का उदाहरण है: 'त्रिनेत्र' 'तीन नेत्रों' के अर्थ में द्विगु है, पर 'महादेव' के अर्थ में बहुव्रीहि; इसी तरह 'चतुर्भुज' 'चार भुजाओं का समाहार' के विग्रह से द्विगु और 'चार हैं भुजाएँ जिसकी, अर्थात् विष्णु' के विग्रह से बहुव्रीहि है।

परीक्षा के जाल: (1) प्रश्न में दिया गया विग्रह ही भेद तय करता है; विग्रह न हो तो शब्द का प्रचलित अर्थ देखिए। (2) संधि और समास एक साथ हो सकते हैं: 'हिमालय' में दीर्घ संधि भी है और 'हिम का आलय' के रूप में तत्पुरुष समास भी। (3) 'प्रत्येक', 'यथाशक्ति', 'आजीवन' अव्ययीभाव हैं, तत्पुरुष नहीं। (4) 'दाल-रोटी' समाहार द्वंद्व है, क्योंकि उसका अर्थ केवल दाल और रोटी नहीं, पूरा भोजन है। (5) 'देशनिकाला' और 'पथभ्रष्ट' अपादान, जबकि 'हस्तलिखित' और 'तुलसीकृत' करण तत्पुरुष हैं। (6) 'महात्मा' को 'महान है आत्मा जिसकी' के रूप में बहुव्रीहि भी लिखा जाता है; विकल्प का विग्रह देखिए।

उदाहरण

- प्रधान पद: अव्ययीभाव में पूर्वपद; तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु में उत्तरपद; द्वंद्व में दोनों; बहुव्रीहि में कोई तीसरा (अन्य) पद।
- अव्ययीभाव: यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), प्रतिदिन, प्रत्येक, आजीवन, भरपेट, निडर; पुनरुक्ति वाले भी: घर-घर, हाथोंहाथ, रातोंरात।
- तत्पुरुष: स्वर्गप्राप्त (कर्म), हस्तलिखित (करण), रसोईघर (संप्रदान), देशनिकाला (अपादान), राजपुत्र (संबंध), घुड़सवार (अधिकरण)।
- नञ् तत्पुरुष: असभ्य, अधर्म, अनपढ़, नापसंद; उपपद: जलचर, कुंभकार, सर्वज्ञ, जलद; मध्यमपदलोपी: दहीबड़ा, पनचक्की, बैलगाड़ी।
- कर्मधारय: नीलकमल (नीला है जो कमल), चंद्रमुख (चंद्र के समान मुख), चरणकमल (कमल रूपी चरण), भवसागर (भव रूपी सागर)।
- द्विगु: त्रिभुवन (तीन भुवनों का समाहार), चौराहा, नवरत्न, सप्ताह, शताब्दी, पंचवटी, त्रिफला, सतसई।
- द्वंद्व: माता-पिता (इतरेतर, 'और'), भला-बुरा (वैकल्पिक, 'या'), दाल-रोटी (समाहार, 'आदि')।
- बहुव्रीहि: दशानन (रावण), लंबोदर, गजानन (गणेश), चक्रपाणि (विष्णु), चंद्रशेखर, त्रिनेत्र (शिव), वीणापाणि (सरस्वती)।
- एक शब्द, दो समास: नीलकंठ = नीला कंठ (कर्मधारय) या नीला है कंठ जिसका, शिव (बहुव्रीहि); चतुर्भुज = चार भुजाओं का समाहार (द्विगु) या विष्णु (बहुव्रीहि)।

त्वरित दोहराव: समास में विभक्ति लुप्त, विग्रह में लौटती है; छह भेद (कुछ पुस्तकें कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष में रखकर चार गिनती हैं); अव्ययीभाव: पहला पद अव्यय (यथाशक्ति, प्रतिदिन); तत्पुरुष: कारक-चिह्न लुप्त (हस्तलिखित, देशनिकाला, राजपुत्र); कर्मधारय: विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय (नीलकमल, चंद्रमुख); द्विगु: संख्या + समूह (त्रिभुवन, चौराहा); द्वंद्व: दोनों प्रधान (माता-पिता); बहुव्रीहि: तीसरे का बोध (दशानन, लंबोदर); नीलकंठ, पीतांबर विग्रह से कर्मधारय या बहुव्रीहि।

संज्ञा और सर्वनाम: भेद, भाववाचक संज्ञा की रचना और सर्वनाम के छह भेद

संज्ञा और उसके भेद: किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। कामताप्रसाद गुरु जैसे पारंपरिक वैयाकरण संज्ञा के तीन भेद मानते हैं: व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक; गुरु द्रव्यवाचक को जातिवाचक में और समुदायवाचक को व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक में ही समाहित मानते हैं। अंग्रेज़ी व्याकरण के प्रभाव से कई पुस्तकें जातिवाचक के भीतर के दो प्रकारों, समूहवाचक और द्रव्यवाचक, को अलग गिनकर पाँच भेद बताती हैं। परीक्षा में विकल्प देखकर तय कीजिए कि प्रश्न तीन भेदों वाला है या पाँच वाला; 'सेना' का उत्तर पाँच भेदों में समूहवाचक और तीन भेदों में जातिवाचक होगा।

व्यक्तिवाचक और जातिवाचक: व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है: महात्मा गांधी, सीता (व्यक्ति); भारत, आगरा, गंगा, हिमालय (स्थान, नदी, पर्वत); रामचरितमानस (पुस्तक); सोमवार, जनवरी (दिन, महीने); दीवाली (त्योहार)। जातिवाचक संज्ञा पूरी जाति या वर्ग का बोध कराती है: लड़का, नदी, पहाड़, शहर, गाय, पुस्तक; पद और व्यवसाय (डॉक्टर, अध्यापक, सिपाही) तथा संबंध (भाई, माँ) भी जातिवाचक हैं। समूहवाचक संज्ञा किसी समूह का बोध कराती है: सेना, सभा, कक्षा, भीड़, झुंड, दल, परिवार, गुच्छा। द्रव्यवाचक संज्ञा ऐसे पदार्थ का बोध कराती है जिसे गिना नहीं, नापा-तौला जाता है: सोना, चाँदी, दूध, पानी, तेल, घी, गेहूँ।

भाववाचक संज्ञा और उसकी रचना: जिस संज्ञा से गुण, दोष, दशा, भाव या क्रिया के व्यापार का बोध हो, वह भाववाचक है: मिठास, बुढ़ापा, क्रोध, प्रेम, सच्चाई, थकान। ये पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं। जातिवाचक संज्ञा से: बच्चा-बचपन, मित्र-मित्रता, मनुष्य-मनुष्यता, पशु-पशुता, दास-दासता, शिशु-शैशव, पंडित-पांडित्य। सर्वनाम से: अपना-अपनापन (अपनत्व), मम-ममता (ममत्व), निज-निजत्व, सर्व-सर्वस्व, अहं-अहंकार। विशेषण से: मीठा-मिठास, सुंदर-सुंदरता (सौंदर्य), चतुर-चतुराई (चातुर्य), लाल-लालिमा, मधुर-माधुर्य, वीर-वीरता, ऊँचा-ऊँचाई, बुरा-बुराई। क्रिया से: पढ़ना-पढ़ाई, हँसना-हँसी, चलना-चाल, लिखना-लिखावट, थकना-थकावट, घबराना-घबराहट, उड़ना-उड़ान, बहना-बहाव, गिरना-गिरावट। अव्यय से: दूर-दूरी, निकट-निकटता, शीघ्र-शीघ्रता, धिक्-धिक्कार। ध्यान दें कि 'सौंदर्य', 'माधुर्य', 'चातुर्य' में पहले स्वर की वृद्धि होती है।

संज्ञा के भेदों का एक-दूसरे में प्रयोग: वाक्य में प्रयोग से संज्ञा का भेद बदल जाता है। व्यक्तिवाचक का जातिवाचक में प्रयोग तब होता है जब किसी विशेष व्यक्ति के नाम से उसका गुण बताया जाए: 'कलियुग में भी हरिश्चंद्रों की कमी नहीं है' (सत्यवादी लोग), 'देश को जयचंदों से बचाना है' (देशद्रोही), 'हर घर में कोई न कोई विभीषण होता है' (घर का भेदी), 'वह तो कुंभकर्ण है' (बहुत सोने वाला)। जातिवाचक का व्यक्तिवाचक में प्रयोग तब होता है जब कोई सामान्य शब्द किसी एक व्यक्ति के लिए रूढ़ हो जाए: गोस्वामी जी (तुलसीदास), बापू या महात्मा (गांधी जी), नेताजी (सुभाषचंद्र बोस), पंडित जी (नेहरू जी), पुरी (जगन्नाथ पुरी)। भाववाचक का जातिवाचक में प्रयोग तब होता है जब वह बहुवचन में या ठोस अर्थ में आए: 'पहाड़ों पर कठिन चढ़ाइयाँ हैं', 'आजकल पहनावे बदल गए हैं', 'बुराइयों से बचो'।

सर्वनाम और उसके छह भेद: संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम हैं, जो संज्ञा की बार-बार पुनरावृत्ति रोकते हैं। गुरु के अनुसार हिंदी में 11 मूल सर्वनाम हैं: मैं, तू, आप, यह, वह, सो, जो, कोई, कुछ, कौन, क्या। इनके छह भेद हैं। पुरुषवाचक: उत्तम पुरुष (मैं, हम), मध्यम पुरुष (तू, तुम, आप) और अन्य पुरुष (वह, वे, यह, ये)। निश्चयवाचक या संकेतवाचक, जो निकट या दूर की निश्चित वस्तु बताता है: 'यह मेरी पुस्तक है', 'वह घर है'। अनिश्चयवाचक, जिसमें निश्चित बोध न हो; 'कोई' प्राणी के लिए और 'कुछ' वस्तु के लिए: 'बाहर कोई खड़ा है', 'दूध में कुछ गिर गया'। संबंधवाचक, जो दो उपवाक्यों में संबंध जोड़ता है: 'जो परिश्रम करेगा, वह सफल होगा', 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। प्रश्नवाचक: 'कौन' प्राणी के लिए, 'क्या' वस्तु या भाव के लिए: 'कौन आया?', 'तुम क्या खा रहे हो?'। निजवाचक, जो कर्ता के अपने-आप होने का बोध कराता है: आप, स्वयं, खुद, अपने-आप: 'मैं अपना काम आप करता हूँ', 'वह स्वयं आया'।

सर्वनाम के जाल: 'आप' तीन रूपों में आता है: आदर के लिए मध्यम पुरुष ('आप कब आए?'), अन्य पुरुष के आदर में ('गांधी जी सत्य के पुजारी थे; आप अहिंसा में विश्वास रखते थे') और निजवाचक ('मैं आप चला जाऊँगा', अर्थात् स्वयं)। 'यह', 'वह', 'कोई', 'कौन' जब संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताएँ, तब सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं: 'यह पुस्तक मेरी है' में 'यह' विशेषण है, पर 'यह मेरी पुस्तक है' में सर्वनाम। 'क्या तुम कल आओगे?' में 'क्या' सर्वनाम नहीं, प्रश्न का सूचक अव्यय है, क्योंकि वह किसी संज्ञा के स्थान पर नहीं आया। 'कुछ' भी 'कुछ लोग', 'कुछ दूध' में विशेषण है।

सर्वनाम के रूप और शुद्ध प्रयोग: सर्वनाम का अपना लिंग नहीं होता; लिंग क्रिया से पता चलता है: 'मैं जाता हूँ', 'मैं जाती हूँ'। सर्वनाम में संबोधन कारक नहीं होता। विभक्ति लगने पर रूप बदलते हैं: मैं-मुझे-मेरा-मुझसे-मैंने, तू-तुझे-तेरा, वह-उसे-उसका-उसने, यह-इसे-इसका, कौन-किसे-किसका, जो-जिसे-जिसका; बहुवचन में वे-उन्होंने, ये-इन्होंने। मानक प्रयोग 'मुझे' या 'मुझको' है, 'मेरे को' नहीं; 'तुझे' है, 'तेरे को' नहीं; और 'वह ने' नहीं, 'उसने'। आदरसूचक 'आप' के साथ क्रिया सदा बहुवचन में आती है: 'आप बैठिए', 'आप कहाँ जा रहे हैं?'।

उदाहरण

- संज्ञा के तीन भेद (गुरु): व्यक्तिवाचक (गंगा, आगरा), जातिवाचक (नदी, शहर), भाववाचक (मिठास, बचपन); पाँच भेद वाली पुस्तकें समूहवाचक (सेना) और द्रव्यवाचक (सोना) अलग गिनती हैं।
- भाववाचक संज्ञा पाँच स्रोतों से: जातिवाचक (मित्र-मित्रता), सर्वनाम (मम-ममता), विशेषण (मधुर-माधुर्य), क्रिया (उड़ना-उड़ान), अव्यय (दूर-दूरी)।
- व्यक्तिवाचक का जातिवाचक प्रयोग: 'कलियुग में भी हरिश्चंद्रों की कमी नहीं', 'देश को जयचंदों से बचाओ'।
- जातिवाचक का व्यक्तिवाचक प्रयोग: गोस्वामी जी (तुलसीदास), बापू (गांधी जी), नेताजी (सुभाषचंद्र बोस)।
- भाववाचक का जातिवाचक प्रयोग: 'पहाड़ों पर कठिन चढ़ाइयाँ हैं', 'आजकल पहनावे बदल गए हैं'।

- सर्वनाम के छह भेद: पुरुषवाचक (मैं, तुम, वह), निश्चयवाचक (यह, वह), अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ), संबंधवाचक (जो-सो), प्रश्नवाचक (कौन, क्या), निजवाचक (आप, स्वयं, खुद)।
- हिंदी के 11 मूल सर्वनाम: मैं, तू, आप, यह, वह, सो, जो, कोई, कुछ, कौन, क्या।
- 'यह मेरी पुस्तक है' में 'यह' सर्वनाम; 'यह पुस्तक मेरी है' में 'यह' सार्वनामिक विशेषण; 'क्या तुम आओगे?' में 'क्या' सर्वनाम नहीं।
- शुद्ध रूप: मुझे/मुझको (मेरे को नहीं), तुझे (तेरे को नहीं), उसने (वह ने नहीं); सर्वनाम में संबोधन कारक नहीं होता।

> **त्वरित दोहराव:** संज्ञा तीन (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक) या पाँच (समूहवाचक, द्रव्यवाचक सहित); भाववाचक जातिवाचक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से (मित्रता, ममता, माधुर्य, उड़ान, दूरी); हरिश्चंद्रों (व्यक्ति से जाति), गोस्वामी जी (जाति से व्यक्ति), चढ़ाइयाँ (भाव से जाति); 11 मूल सर्वनाम; छह भेद: पुरुष, निश्चय, अनिश्चय (कोई प्राणी, कुछ वस्तु), संबंध (जो-सो), प्रश्न (कौन, क्या), निज (आप, स्वयं); संज्ञा से पहले सर्वनाम = सार्वनामिक विशेषण।

विशेषण और क्रियाविशेषण: भेद, विशेष्य, तुलना की अवस्थाएँ और पहचान

विशेषण, विशेष्य और प्रविशेषण: संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, मात्रा) बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं, और जिसकी विशेषता बताई जाए वह विशेष्य कहलाता है: 'काली गाय' में 'काली' विशेषण और 'गाय' विशेष्य है। विशेषण की भी विशेषता बताने वाला शब्द प्रविशेषण कहलाता है: 'बहुत अच्छा लड़का' में 'बहुत' प्रविशेषण है; अति, बड़ा, ज़रा, खूब भी ऐसे ही आते हैं। प्रयोग के आधार पर विशेषण दो तरह से आता है: विशेष्य से पहले आए तो उद्देश्य विशेषण ('मेहनती छात्र सफल होता है'), और क्रिया के साथ विधेय में आए तो विधेय विशेषण ('यह छात्र मेहनती है')। आकारांत विशेषण विशेष्य के लिंग-वचन के अनुसार बदलते हैं (अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, अच्छे लड़के), जबकि सुंदर, लाल, ईमानदार जैसे विशेषण नहीं बदलते।

विशेषण के चार भेद: गुणवाचक विशेषण गुण, दोष, रंग, आकार, दशा, स्वाद, स्थान या काल बताता है: अच्छा, बुरा, लाल, गोल, बीमार, मीठा, भारतीय, नया, पुराना। संख्यावाचक विशेषण गिनती बताता है; निश्चित संख्यावाचक के उपभेद हैं: गणनावाचक (एक, दस), क्रमवाचक (पहला, दूसरा), आवृत्तिवाचक (दुगुना, तिगुना), समुदायवाचक (दोनों, चारों), प्रत्येकबोधक (प्रत्येक, हर एक) और अपूर्णांकबोधक (आधा, पौना, सवा); अनिश्चित संख्यावाचक: कुछ लोग, कई छात्र, अनेक पुस्तकें, सब बच्चे। परिमाणवाचक विशेषण नाप-तौल बताता है: निश्चित (दो लीटर दूध, पाँच किलो चीनी, चार मीटर कपड़ा) और अनिश्चित (थोड़ा पानी, बहुत दूध, ज़रा-सा नमक)। सार्वनामिक विशेषण वह सर्वनाम है जो संज्ञा से पहले आकर विशेषण का काम करे: मौलिक (यह पुस्तक, वह लड़का, कोई आदमी, कौन व्यक्ति) और यौगिक, जो सर्वनाम से बनते हैं (ऐसा आदमी, वैसा घर, इतना पैसा, कितना दूध)।

एक शब्द, कई भेद: 'कुछ' और 'बहुत' का भेद विशेष्य से तय होता है। 'कुछ लोग आए' में गिनी जाने वाली संज्ञा है, इसलिए अनिश्चित संख्यावाचक; 'कुछ दूध दो' में नापी जाने वाली, इसलिए अनिश्चित परिमाणवाचक; 'दूध में कुछ गिर गया' में अकेला 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। 'बहुत लोग' संख्यावाचक, 'बहुत पानी' परिमाणवाचक, 'बहुत अच्छा' प्रविशेषण और 'वह बहुत बोलता है' में क्रियाविशेषण है।

विशेषण की अवस्थाएँ: तुलना के आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं। मूलावस्था में तुलना नहीं होती: 'राम अच्छा है'। उत्तरावस्था में दो की तुलना होती है और संस्कृत '-तर' लगता है: 'राम श्याम से अच्छा है', 'यह मार्ग उससे सुगमतर है'। उत्तमावस्था में दो से अधिक में किसी एक को सर्वोपरि बताया जाता है और '-तम' लगता है: 'राम कक्षा में सबसे अच्छा है'। तत्सम रूप: उच्च-उच्चतर-उच्चतम, निम्न-निम्नतर-निम्नतम, लघु-लघुतर-लघुतम, गुरु-गुरुतर-गुरुतम, प्रिय-प्रियतर-प्रियतम, कोमल-कोमलतर-कोमलतम, अधिक-अधिकतर-अधिकतम। कुछ संस्कृत रूप '-इष्ठ' प्रत्यय से बने हैं और स्वयं उत्तमावस्था के हैं: श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ। तद्भव विशेषणों की तुलना 'से' और 'सबसे' लगाकर होती है: अच्छा, उससे अच्छा, सबसे अच्छा। इसलिए 'सबसे सुंदरतम', 'सबसे श्रेष्ठतम', 'अधिक श्रेष्ठतर' जैसे दोहरे रूप अशुद्ध हैं; शुद्ध हैं 'सबसे सुंदर' या 'सुंदरतम', और 'सर्वश्रेष्ठ'।

विशेषण की रचना: संज्ञा से '-इक' लगने पर पहले स्वर की वृद्धि होती है: समाज-सामाजिक, इतिहास-ऐतिहासिक, नीति-नैतिक, उद्योग-औद्योगिक, भूगोल-भौगोलिक, अर्थ-आर्थिक, मन-मानसिक, शरीर-शारीरिक, विज्ञान-वैज्ञानिक, दिन-दैनिक, वर्ष-वार्षिक। अन्य प्रत्यय: भारत-भारतीय, राष्ट्र-राष्ट्रीय, ग्राम-ग्रामीण, कुल-कुलीन, दया-दयालु, धन-धनवान, बुद्धि-बुद्धिमान, ज़हर-ज़हरीला, पत्थर-पथरीला, रंग-रंगीन, आदर-आदरणीय, पूजा-पूजनीय। क्रिया से: भूलना-भुलक्कड़, घूमना-घुमक्कड़, लड़ना-लड़ाकू, बिकना-बिकाऊ, टिकना-टिकाऊ। अव्यय से: ऊपर-ऊपरी, भीतर-भीतरी, बाहर-बाहरी, आगे-अगला, पीछे-पिछला। सर्वनाम से: यह-ऐसा, वह-वैसा, मैं-मेरा।

क्रियाविशेषण और उसके भेद: क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द क्रियाविशेषण हैं; ये विशेषण और दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता भी बताते हैं: 'वह बहुत धीरे चलता है'। अर्थ के आधार पर चार भेद हैं। कालवाचक (कब?): आज, कल, अभी, तुरंत, प्रतिदिन, सदा, बार-बार, कभी-कभी, लगातार। स्थानवाचक (कहाँ?): यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, अंदर, बाहर, दूर, पास, इधर, सामने। परिमाणवाचक (कितना?): बहुत, थोड़ा, अधिक, कम, खूब, बिलकुल, लगभग, काफ़ी: 'वह बहुत बोलता है'। रीतिवाचक (कैसे?): धीरे-धीरे, जल्दी, ध्यानपूर्वक, अचानक, सचमुच, ठीक; निश्चय (अवश्य, निःसंदेह), अनिश्चय (शायद), स्वीकार (हाँ) और निषेध (नहीं, मत) बताने वाले शब्द भी इसी भेद में रखे जाते हैं, इसलिए यह सबसे बड़ा भेद है।

क्रियाविशेषण के अन्य आधार: प्रयोग के आधार पर साधारण क्रियाविशेषण स्वतंत्र रूप से आते हैं ('जल्दी आओ'); संयोजक क्रियाविशेषण उपवाक्यों को जोड़ते हैं ('जहाँ तुम जाओगे, वहाँ मैं भी जाऊँगा', 'जब वर्षा हुई, तब मोर नाचे'); और अनुबद्ध क्रियाविशेषण किसी शब्द के साथ जुड़कर बल देते हैं ('मैंने उसे देखा तक नहीं')। रूप के आधार पर गुरु तीन भेद बताते हैं: मूल, जो किसी दूसरे शब्द से नहीं बने (ठीक, दूर, अचानक, फिर); यौगिक, जो दूसरे शब्दों में प्रत्यय या शब्द जोड़कर बने (दिनभर, प्रेमपूर्वक, मन से, रात को); और स्थानीय, जिनमें दूसरे शब्द-भेद बिना रूप बदले किसी विशेष स्थान पर क्रियाविशेषण का काम करते हैं: 'वह अपना सिर पढ़ेगा!' (संज्ञा 'सिर'; व्यंग्य में अर्थ है, कुछ नहीं पढ़ेगा) और 'तुम दौड़कर चलते हो' (पूर्वकालिक कृदंत 'दौड़कर'); दोनों उदाहरण गुरु के ही हैं।

परीक्षा के जाल: विशेषण संज्ञा की विशेषता बताता है, क्रियाविशेषण क्रिया की: 'तेज़ घोड़ा' (विशेषण), 'घोड़ा तेज़ दौड़ता है' (क्रियाविशेषण)। क्रियाविशेषण और संबंधबोधक में भी भ्रम होता है: 'बाहर जाओ' में 'बाहर' क्रियाविशेषण है, पर 'घर के बाहर' में संबंधबोधक, क्योंकि वह संज्ञा के साथ 'के' लेकर आया है।

'पहला', 'दूसरा' क्रमवाचक और 'दुगुना' आवृत्तिवाचक हैं; 'दोनों' समुदायवाचक है।

उदाहरण

- विशेषण के चार भेद: गुणवाचक (लाल, मीठा, भारतीय), संख्यावाचक (पाँच, पहला, दुगुना), परिमाणवाचक (दो लीटर दूध, थोड़ा पानी), सार्वनामिक (यह पुस्तक, ऐसा आदमी)।
- निश्चित संख्यावाचक के उपभेद: गणनावाचक (दस), क्रमवाचक (पहला), आवृत्तिवाचक (तिगुना), समुदायवाचक (चारों), प्रत्येकबोधक (प्रत्येक), अपूर्णांक (सवा)।
- 'कुछ लोग' अनिश्चित संख्यावाचक; 'कुछ दूध' अनिश्चित परिमाणवाचक; 'कुछ गिर गया' में 'कुछ' सर्वनाम।
- 'बहुत अच्छा लड़का': लड़का विशेष्य, अच्छा विशेषण, बहुत प्रविशेषण; 'छात्र मेहनती है' में 'मेहनती' विधेय विशेषण।
- तुलना की अवस्थाएँ: मूलावस्था (उच्च), उत्तरावस्था (उच्चतर), उत्तमावस्था (उच्चतम); लघु-लघुतर-लघुतम, प्रिय-प्रियतर-प्रियतम।
- 'सबसे श्रेष्ठतम' और 'सबसे सुंदरतम' अशुद्ध; शुद्ध: 'सर्वश्रेष्ठ', 'सबसे सुंदर' या 'सुंदरतम'।
- '-इक' से वृद्धि: समाज-सामाजिक, इतिहास-ऐतिहासिक, नीति-नैतिक, उद्योग-औद्योगिक, भूगोल-भौगोलिक, वर्ष-वार्षिक।
- क्रियाविशेषण के चार भेद: कालवाचक (आज, अभी), स्थानवाचक (यहाँ, ऊपर), परिमाणवाचक (बहुत, थोड़ा), रीतिवाचक (धीरे, अचानक, अवश्य, नहीं)।
- 'बाहर जाओ' (क्रियाविशेषण) बनाम 'घर के बाहर' (संबंधबोधक); 'तेज़ घोड़ा' (विशेषण) बनाम 'तेज़ दौड़ता है' (क्रियाविशेषण)।

> **त्वरित दोहराव:** विशेषण संज्ञा-सर्वनाम की विशेषता, विशेष्य वह जिसकी विशेषता, प्रविशेषण विशेषण की विशेषता (बहुत); चार भेद: गुणवाचक, संख्यावाचक (निश्चित-अनिश्चित), परिमाणवाचक (निश्चित-अनिश्चित), सार्वनामिक (मौलिक-यौगिक); अवस्थाएँ: मूल, उत्तर (-तर), उत्तम (-तम); 'सबसे श्रेष्ठतम' अशुद्ध; '-इक' से वृद्धि (सामाजिक); क्रियाविशेषण चार: काल, स्थान, परिमाण, रीति; 'के' के साथ आए तो संबंधबोधक।

लिंग और वचन: लिंग निर्धारण, स्त्रीलिंग प्रत्यय, बहुवचन के नियम और अपवाद

लिंग और उसकी पहचान: संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति का होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। संस्कृत में तीन लिंग हैं, पर हिंदी में दो: पुल्लिंग और स्त्रीलिंग; नपुंसक लिंग नहीं है, इसलिए निर्जीव वस्तुएँ भी इन्हीं दो में से किसी एक में आती हैं। प्राणियों का लिंग उनके नर या मादा होने से तय होता है, पर निर्जीव वस्तुओं का लिंग परंपरा और शब्द के अंत से। वाक्य में लिंग की पहचान क्रिया और विशेषण से होती है: 'दही खट्टा है', 'चाय ठंडी है'।

पुल्लिंग के नियम: '-पन', '-पा', '-त्व', '-आव', '-आवा' वाली भाववाचक संज्ञाएँ पुल्लिंग होती हैं: बचपन, बुढ़ापा, महत्त्व, बंधुत्व, बहाव, चढ़ाव, बुलावा, पहनावा। संस्कृत '-य' वाले भाववाचक भी पुल्लिंग हैं: माधुर्य, सौंदर्य, धैर्य, शौर्य। '-खाना' और '-दान' वाले शब्द पुल्लिंग हैं: दवाखाना, डाकखाना, फूलदान, कलमदान। '-ना' से बनी क्रियार्थक संज्ञा पुल्लिंग होती है: 'उसका रोना अच्छा नहीं लगता'। पर्वत (हिमालय, विंध्याचल), समुद्र (हिंद महासागर), देश (भारत, जापान), दिन (सोमवार), हिंदी महीने (चैत्र, सावन), ग्रह (सूर्य, चंद्रमा, मंगल; पर पृथ्वी स्त्रीलिंग), धातुएँ (सोना, ताँबा, लोहा, पीतल; पर चाँदी स्त्रीलिंग), रत्न (हीरा, पन्ना, मोती; पर मणि स्त्रीलिंग), द्रव (पानी, दूध, तेल, घी, दही; पर चाय, लस्सी स्त्रीलिंग), अनाज (गेहूँ, चावल, चना, जौ; पर ज्वार, अरहर, मूँग स्त्रीलिंग) और अधिकतर पेड़ (पीपल, नीम, आम, बरगद; पर इमली स्त्रीलिंग) पुल्लिंग हैं।

स्त्रीलिंग के नियम: '-ता', '-आई', '-आवट', '-आहट', '-इमा', '-ति' वाली भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं: सुंदरता, मित्रता, भलाई, पढ़ाई, थकावट, बनावट, घबराहट, लालिमा, महिमा, रीति, शक्ति, उन्नति। संस्कृत के आकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग हैं: दया, कृपा, लता, शिक्षा, विद्या, माया। नदियाँ (गंगा, यमुना, कावेरी), भाषाएँ और बोलियाँ (हिंदी, अंग्रेज़ी, अवधी, भोजपुरी), लिपियाँ (देवनागरी, रोमन), तिथियाँ (प्रतिपदा, एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा) और नक्षत्र (अश्विनी, भरणी, रोहिणी) स्त्रीलिंग हैं। अपवाद: ब्रह्मपुत्र और सोन को नद मानकर पुल्लिंग माना जाता है। '-ई' अंत से स्त्रीलिंग मान लेना सबसे बड़ा जाल है: पानी, घी, दही, मोती, हाथी, पक्षी, प्राणी, स्वामी, योगी, साथी पुल्लिंग हैं। शरीर के अंगों में सिर, हाथ, पैर, कान, दाँत, होंठ, बाल, गला, पेट पुल्लिंग; और आँख, नाक, जीभ, गर्दन, उँगली, कमर, पीठ, छाती स्त्रीलिंग हैं।

नित्य लिंग और मतभेद वाले शब्द: कुछ प्राणिवाचक शब्द सदा एक ही लिंग में आते हैं। नित्य पुल्लिंग: कौआ, खटमल, भेड़िया, उल्लू, चीता, मच्छर। नित्य स्त्रीलिंग: कोयल, मैना, चील, मछली, गिलहरी, मक्खी, तितली। इनका दूसरा लिंग बताना हो तो 'नर' या 'मादा' जोड़ते हैं: नर कोयल, मादा भेड़िया। मंत्री, डॉक्टर, वकील, प्रधानमंत्री जैसे पद-नाम दोनों के लिए आते हैं; लिंग क्रिया से पता चलता है: 'डॉक्टर आ गई हैं'। कुछ शब्दों पर पुस्तकें और प्रदेश एकमत नहीं हैं: 'आत्मा' संस्कृत में पुल्लिंग है, पर हिंदी में स्त्रीलिंग ('उसकी आत्मा') चलता है; 'दही' मानक हिंदी में पुल्लिंग है, पर बोलचाल में कई जगह स्त्रीलिंग बोला जाता है। ऐसे प्रश्नों में मानक हिंदी का प्रयोग ही चुनिए।

स्त्रीलिंग बनाने के प्रत्यय: '-ई': लड़का-लड़की, घोड़ा-घोड़ी, देव-देवी, पुत्र-पुत्री, दास-दासी। '-इया': बूढ़ा-बुढ़िया, चूहा-चुहिया, बेटा-बिटिया, डिब्बा-डिबिया, लोटा-लुटिया। '-इन': धोबी-धोबिन, माली-मालिन, बाघ-बाघिन, सुनार-सुनारिन, ग्वाला-ग्वालिन। '-नी': शेर-शेरनी, मोर-मोरनी, ऊँट-ऊँटनी, हाथी-हथिनी। '-आनी': सेठ-सेठानी, देवर-देवरानी, जेठ-जेठानी, नौकर-नौकरानी, इंद्र-इंद्राणी, भव-भवानी। '-आइन': पंडित-पंडिताइन, ठाकुर-ठकुराइन। संस्कृत '-अक' से '-इका': लेखक-लेखिका, गायक-गायिका, अध्यापक-अध्यापिका, बालक-बालिका, नायक-नायिका। संस्कृत '-आ': छात्र-छात्रा, सुत-सुता, प्रिय-प्रिया, शिष्य-शिष्या, अनुज-अनुजा। '-वान/-मान' से '-वती/-मती': भगवान-भगवती, श्रीमान-श्रीमती, बुद्धिमान-बुद्धिमती, गुणवान-गुणवती, आयुष्मान-आयुष्मती। '-ई' अंत वाले संस्कृत शब्दों से '-इनी': तपस्वी-तपस्विनी, यशस्वी-यशस्विनी, स्वामी-स्वामिनी। '-ता' से '-त्री': नेता-नेत्री, अभिनेता-अभिनेत्री, दाता-दात्री।

विशेष स्त्रीलिंग रूप: कुछ जोड़े किसी नियम से नहीं बनते और सबसे अधिक पूछे जाते हैं: पिता-माता, भाई-बहन, राजा-रानी, बैल-गाय, पुरुष-स्त्री, वर-वधू, ससुर-सास, सम्राट-सम्राज्ञी, विद्वान-विदुषी, साधु-साध्वी, कवि-कवयित्री, युवक-युवती, दूल्हा-दुल्हन, नर-मादा। वर्तनी का ध्यान रखिए: कवयित्री (कवियत्री नहीं), विदुषी, सम्राज्ञी, साध्वी, अभिनेत्री।

वचन बदलने के नियम: हिंदी में दो वचन हैं, एकवचन और बहुवचन (संस्कृत में द्विवचन भी है)। विभक्ति-रहित बहुवचन इस तरह बनता है: आकारांत पुल्लिंग में '-आ' का '-ए' (लड़का-लड़के, कपड़ा-कपड़े); अकारांत स्त्रीलिंग में '-एँ' (बात-बातें, पुस्तक-पुस्तकें, बहन-बहनें); आकारांत स्त्रीलिंग में '-एँ' (माता-माताएँ, कथा-कथाएँ, कविता-कविताएँ); इकारांत-ईकारांत स्त्रीलिंग में '-इयाँ' (नदी-नदियाँ, तिथि-तिथियाँ, शक्ति-शक्तियाँ); '-इया' अंत वाले में '-इयाँ' (चिड़िया-चिड़ियाँ, गुड़िया-गुड़ियाँ); उकारांत-ऊकारांत स्त्रीलिंग में '-एँ' और ऊ ह्रस्व (वस्तु-वस्तुएँ, बहू-बहुएँ, वधू-वधुएँ)। विभक्ति लगने पर बहुवचन में '-ओं' आता है: लड़कों ने, घरों में, नदियों का, साधुओं को। आकारांत के अलावा पुल्लिंग शब्द विभक्ति-रहित बहुवचन में नहीं बदलते: बालक, घर, फल, हाथी ('बालक आए')। समूह बताने के लिए गण, जन, वर्ग, वृंद, लोग जोड़े जाते हैं: छात्रगण, गुरुजन, पाठकवृंद, अध्यापकवर्ग।

वचन के अपवाद: संबंध और आदर वाले आकारांत पुल्लिंग शब्द बहुवचन में नहीं बदलते: पिता, चाचा, दादा, मामा, राजा, देवता, योद्धा, नेता ('राजा आए', 'मेरे चाचा आए हैं')। कुछ शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं: प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश, लोग, आँसू, दाम ('आपके दर्शन हुए', 'उसके होश उड़ गए', 'मेरे प्राण सूख गए')। कुछ सदा एकवचन में: जनता, पानी, दूध, घी, सोना, आकाश, प्रेम, क्रोध, सामान ('जनता आ रही है')। आदर के लिए एक व्यक्ति के साथ भी बहुवचन क्रिया लगती है: 'पिताजी आ रहे हैं'। 'अनेक' स्वयं बहुवचन है, इसलिए 'अनेकों' अशुद्ध है; और 'प्रत्येक' के साथ एकवचन आता है: 'प्रत्येक छात्र आया'। संबोधन बहुवचन में अनुस्वार नहीं लगता: 'भाइयो और बहनो!'।

उदाहरण

- '-ई' अंत के पुल्लिंग शब्द: पानी, घी, दही, मोती, हाथी, पक्षी, प्राणी, स्वामी, योगी; '-आ' अंत के स्त्रीलिंग: दया, कृपा, लता, विद्या।
- पुल्लिंग वर्ग और अपवाद: धातुएँ (चाँदी स्त्रीलिंग), ग्रह (पृथ्वी स्त्रीलिंग), द्रव (चाय, लस्सी स्त्रीलिंग), पेड़ (इमली स्त्रीलिंग), रत्न (मणि स्त्रीलिंग)।
- स्त्रीलिंग वर्ग: नदियाँ, भाषाएँ, बोलियाँ, लिपियाँ, तिथियाँ; अपवाद ब्रह्मपुत्र और सोन (नद होने से पुल्लिंग)।
- नित्य पुल्लिंग: कौआ, खटमल, भेड़िया, उल्लू, चीता; नित्य स्त्रीलिंग: कोयल, मैना, चील, मछली, गिलहरी, तितली; दूसरा लिंग 'नर/मादा' जोड़कर।
- स्त्रीलिंग प्रत्यय: लेखक-लेखिका, छात्र-छात्रा, सेठ-सेठानी, धोबी-धोबिन, शेर-शेरनी, बूढ़ा-बुढ़िया, तपस्वी-तपस्विनी, नेता-नेत्री, श्रीमान-श्रीमती।
- विशेष जोड़े: कवि-कवयित्री, विद्वान-विदुषी, साधु-साध्वी, सम्राट-सम्राज्ञी, वर-वधू, ससुर-सास, बैल-गाय, युवक-युवती।
- बहुवचन: लड़का-लड़के, बात-बातें, माता-माताएँ, नदी-नदियाँ, चिड़िया-चिड़ियाँ, बहू-बहुएँ; विभक्ति के साथ लड़कों, नदियों, साधुओं।
- न बदलने वाले आकारांत: पिता, चाचा, दादा, मामा, राजा, देवता, योद्धा, नेता; सदा बहुवचन: प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश, लोग।
- शुद्ध प्रयोग: 'अनेकों' अशुद्ध, 'अनेक' शुद्ध; 'प्रत्येक छात्र आया'; 'जनता आ रही है'; संबोधन में 'भाइयो और बहनो!' (अनुस्वार नहीं)।

> **त्वरित दोहराव:** हिंदी में दो लिंग, दो वचन; -पन, -पा, -त्व, -आव पुल्लिंग; -ता, -आई, -आवट, -आहट, -इमा, -ति स्त्रीलिंग; पानी, घी, दही, मोती, हाथी पुल्लिंग; चाँदी, पृथ्वी, चाय, इमली, मणि अपवाद में स्त्रीलिंग; ब्रह्मपुत्र, सोन पुल्लिंग; नित्य लिंग: कौआ, कोयल; कवयित्री, विदुषी, सम्राज्ञी; बहुवचन -ए, -एँ, -इयाँ, विभक्ति के साथ -ओं; पिता, राजा, चाचा नहीं बदलते; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर सदा बहुवचन; जनता एकवचन; अनेकों अशुद्ध; भाइयो-बहनो।

कारक: आठ कारक, विभक्तियाँ, 'ने' का प्रयोग और 'को' तथा 'से' का भेद

कारक और विभक्ति: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया या दूसरे शब्दों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं, और यह संबंध बताने वाले चिह्न विभक्ति या परसर्ग कहलाते हैं। हिंदी में आठ कारक हैं: कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से, के द्वारा), संप्रदान (को, के लिए), अपादान (से, अलग होने के अर्थ में), संबंध (का, की, के; रा, री, रे; ना, नी, ने), अधिकरण (में, पर) और संबोधन (हे, अरे, ऐ, ओ)। संस्कृत परंपरा में कारक वही है जिसका सीधा संबंध क्रिया से हो, इसलिए कुछ वैयाकरण संबंध और संबोधन को कारक नहीं मानते; पर हिंदी की परीक्षाओं में आठ कारक ही पढ़े जाते हैं। 'मोहन ने बाग में पेड़ से आम तोड़कर अपने मित्र के लिए टोकरी में रखे' जैसे एक ही वाक्य में कई कारक पहचाने जा सकते हैं।

कर्ता कारक और 'ने' का प्रयोग: क्रिया को करने वाला कर्ता है। 'ने' मुख्यतः सकर्मक क्रिया के भूतकाल के कुछ रूपों में लगता है: सामान्य भूत ('राम ने पुस्तक पढ़ी'), आसन्न भूत ('राम ने पुस्तक पढ़ी है'), पूर्ण भूत ('राम ने पुस्तक पढ़ी थी'), संदिग्ध भूत ('राम ने पुस्तक पढ़ी होगी') और हेतुहेतुमद् भूत ('यदि उसने परिश्रम किया होता तो सफल होता')। अपूर्ण भूत, वर्तमान और भविष्य में 'ने' नहीं लगता: 'राम पुस्तक पढ़ रहा था', 'राम पुस्तक पढ़ेगा'। अकर्मक क्रिया के साथ भी 'ने' नहीं लगता: 'वह आया', 'सीता हँसी'; पर छींकना, खाँसना, थूकना जैसी कुछ अकर्मक क्रियाओं के साथ लगता है ('उसने छींका'), और 'नहाना' के साथ दोनों रूप मिलते हैं (गुरु 'हमने नहाया है' लिखते हैं, बोलचाल में 'वह नहाया' भी चलता है)। कुछ सकर्मक क्रियाएँ 'ने' नहीं लेतीं: लाना, भूलना, बकना ('वह पुस्तक लाया', 'मैं भूल गया'); गुरु इसी सूची में बोलना, समझना और जानना को भी रखते हैं ('वह कुछ नहीं बोला'), पर आज की मानक हिंदी में कर्म के साथ 'बोलना' प्रायः 'ने' लेता है ('उसने झूठ बोला')। संयुक्त क्रिया में अंतिम क्रिया अकर्मक हो तो 'ने' नहीं लगता ('वह खाना खा गया'), सकर्मक हो तो लगता है ('उसने खाना खा लिया')। कर्ता बिना चिह्न के भी आता है ('राम पढ़ता है'), और कर्मवाच्य-भाववाच्य में 'से' या 'के द्वारा' के साथ ('मुझसे चला नहीं जाता')।

'ने' के साथ क्रिया का मेल: 'ने' लगने पर क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं बदलती। कर्म बिना 'को' के हो तो क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है: 'राम ने रोटी खाई', 'सीता ने आम खाया', 'लड़कों ने पुस्तकें पढ़ीं'। कर्म के साथ 'को' लगा हो तो क्रिया सदा पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष में रहती है: 'राम ने सीता को देखा', 'लड़कियों ने पुस्तकों को पढ़ा'। इसी कारण 'सीता ने गाना गाई' अशुद्ध और 'सीता ने गाना गाया' शुद्ध है।

कर्म और संप्रदान: जिस पर क्रिया का फल पड़े, वह कर्म है; इसका चिह्न 'को' है, जो प्रायः सजीव कर्म के साथ आता है और निर्जीव कर्म के साथ प्रायः लुप्त रहता है: 'माँ बच्चे को सुला रही है', 'वह पुस्तक पढ़ता है'। दो कर्म वाली क्रिया में निर्जीव मुख्य कर्म बिना चिह्न के और सजीव गौण कर्म 'को' के साथ आता है: 'अध्यापक ने छात्रों को गणित पढ़ाया'। जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वह संप्रदान है; चिह्न 'को' और 'के लिए': 'गरीबों को कपड़े दो', 'बच्चों के लिए खिलौने लाओ', 'गुरु को नमस्कार'। पहचान: 'को' के साथ देने, भेजने या किसी के हित का भाव हो तो संप्रदान, वरना कर्म: 'मोहन ने सोहन को पीटा' (कर्म), 'राजा ने ब्राह्मण को गाय दी' (संप्रदान)। 'के लिए' सदा संप्रदान है। समय बताने वाला 'को' अधिकरण होता है: 'वह रात को आया', 'रविवार को छुट्टी है'।

करण और अपादान: दोनों का चिह्न 'से' है, इसलिए यह सबसे अधिक पूछा जाने वाला अंतर है। करण वह साधन या कारण है जिसके द्वारा क्रिया होती है: 'वह कलम से लिखता है', 'पुलिस ने चोर को डंडे से मारा', 'हम आँखों से देखते हैं', 'पत्र डाक के द्वारा भेजा गया', 'वह भूख से व्याकुल है'। अपादान में किसी वस्तु के अलग होने का भाव होता है: 'पेड़ से पत्ते गिरते हैं', 'गंगा हिमालय से निकलती है', 'वह घर से चला गया'। अलगाव के अलावा तुलना ('राम श्याम से लंबा है'), डर ('बच्चा कुत्ते से डरता है'), सीखना ('शिष्य गुरु से विद्या सीखता है'), लज्जा, दूरी ('गाँव शहर से दूर है'), उत्पत्ति ('दूध से दही बनता है'), बचाव ('बुराई से बचो') और समय का आरंभ ('वह कल से बीमार है') भी अपादान में आते हैं। पहचान: 'से' को 'के द्वारा' या 'की सहायता से' से बदल सकें तो करण, 'से अलग होकर' का भाव हो तो अपादान।

संबंध, अधिकरण और संबोधन: संबंध कारक एक संज्ञा का दूसरी संज्ञा से संबंध बताता है, और इसका चिह्न आगे वाली संज्ञा (संबंधी) के लिंग-वचन के अनुसार बदलता है: 'राम का घर', 'राम की पुस्तक', 'राम के बेटे'; सर्वनाम के साथ रा, री, रे (मेरा, तेरा, हमारी) और ना, नी, ने (अपना, अपनी) होते हैं। अधिकरण क्रिया का आधार (स्थान, समय) बताता है; चिह्न 'में' और 'पर': 'मछली जल में रहती है', 'पुस्तक मेज़ पर है', 'परीक्षा मार्च में होगी'। संबोधन कारक में किसी को पुकारा जाता है; चिह्न हे, अरे, ऐ, ओ और संज्ञा के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है: 'हे भगवान!', 'अरे भाई! इधर आओ'। संबोधन बहुवचन में अनुस्वार नहीं लगता: 'बच्चो! शांत रहो', 'भाइयो और बहनो!'।

विभक्ति लिखने का नियम: केंद्रीय हिंदी निदेशालय के मानक के अनुसार संज्ञा के साथ विभक्ति अलग लिखी जाती है (राम ने, घर में, पेड़ से), पर सर्वनाम के साथ मिलाकर (उसने, मुझको, उसका, तुमसे, आपके)। सर्वनाम के साथ दो विभक्तियाँ हों तो पहली मिलाकर और दूसरी अलग लिखी जाती है: उसके लिए, आपके द्वारा, इसमें से। सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' या 'तक' आए तो विभक्ति अलग लिखी जाती है: आप ही के लिए।

परीक्षा के जाल: (1) 'को' कर्म, संप्रदान या अधिकरण (समय) हो सकता है; वाक्य का भाव देखिए। (2) 'से' करण भी हो सकता है और अपादान भी; साधन या कारण हो तो करण, अलगाव, तुलना, डर, सीखना हो तो अपादान। (3) 'वह आया' में 'ने' नहीं, क्योंकि 'आना' अकर्मक है; 'मैंने जाना है' अशुद्ध, 'मुझे जाना है' शुद्ध। (4) 'राम ने सीता को देखा' में क्रिया पुल्लिंग, क्योंकि कर्म के साथ 'को' है। (5) संबोधन बहुवचन में 'बहनों' नहीं, 'बहनो' लिखा जाता है।

उदाहरण

- आठ कारक और चिह्न: कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से, के द्वारा), संप्रदान (को, के लिए), अपादान (से), संबंध (का, की, के), अधिकरण (में, पर), संबोधन (हे, अरे)।
- 'ने' सकर्मक क्रिया के भूतकाल में: 'राम ने पुस्तक पढ़ी/पढ़ी है/पढ़ी थी/पढ़ी होगी'; अपूर्ण भूत में नहीं: 'राम पुस्तक पढ़ रहा था'।
- 'ने' के अपवाद: लाना, भूलना, बकना सकर्मक होकर भी बिना 'ने' ('वह पुस्तक लाया'), पर 'उसने झूठ बोला' आज मानक है; छींकना, खाँसना, थूकना अकर्मक होकर भी 'ने' के साथ ('उसने छींका')।
- क्रिया का मेल: 'राम ने रोटी खाई' (कर्म के अनुसार); 'राम ने सीता को देखा' ('को' होने पर पुल्लिंग एकवचन)।
- कर्म बनाम संप्रदान: 'मोहन ने सोहन को पीटा' (कर्म); 'राजा ने ब्राह्मण को गाय दी', 'बच्चों के लिए खिलौने' (संप्रदान)।
- करण बनाम अपादान: 'कलम से लिखता है', 'भूख से व्याकुल' (करण); 'पेड़ से पत्ते गिरते हैं', 'राम श्याम से लंबा है', 'कुत्ते से डरता है' (अपादान)।
- समय वाला 'को' अधिकरण: 'वह रात को आया', 'रविवार को छुट्टी है'; स्थान: 'मछली जल में', 'पुस्तक मेज़ पर'।
- द्विकर्मक: 'अध्यापक ने छात्रों को गणित पढ़ाया' में गणित मुख्य कर्म, छात्रों को गौण कर्म।
- विभक्ति लेखन: संज्ञा से अलग (राम ने), सर्वनाम से मिलाकर (उसने, मुझको); दो विभक्ति हों तो उसके लिए, आपके द्वारा।

> **त्वरित दोहराव:** आठ कारक: कर्ता ने, कर्म को, करण से/के द्वारा, संप्रदान को/के लिए, अपादान से (अलगाव), संबंध का-की-के, अधिकरण में-पर, संबोधन हे-अरे; 'ने' सकर्मक के सामान्य, आसन्न, पूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद् भूत में, अपूर्ण भूत में नहीं; लाना, भूलना, बकना बिना 'ने'; कर्म पर 'को' हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन; करण साधन-कारण, अपादान अलगाव-तुलना-डर-सीखना; समय का 'को' अधिकरण; संबोधन बहुवचन में अनुस्वार नहीं।

क्रिया, काल और वाच्य: सकर्मक-अकर्मक, प्रेरणार्थक, काल के भेद और वाच्य परिवर्तन

क्रिया और धातु: जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, वह क्रिया है: पढ़ना, खेलना, होना। क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है (पढ़, लिख, खा, जा), और धातु में '-ना' जोड़ने से उसका सामान्य रूप बनता है (पढ़ना)। जो धातुएँ किसी दूसरे शब्द से नहीं बनीं, वे मूल धातु हैं; प्रेरणार्थक, नामधातु और संयुक्त धातु यौगिक धातुएँ हैं। '-ना' वाला रूप वाक्य में संज्ञा की तरह भी आता है, जिसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं: 'टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है'।

सकर्मक और अकर्मक: जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक है; पहचान के लिए क्रिया से 'क्या' या 'किसे/किसको' पूछिए: 'राम पत्र लिखता है' (क्या लिखता है? पत्र)। कर्म न लिखा हो तब भी क्रिया सकर्मक रहती है: 'राम पढ़ता है'। जिसका फल कर्ता पर ही पड़े, वह अकर्मक है: आना, जाना, सोना, हँसना, रोना, उठना, बैठना, दौड़ना, डरना, चमकना। सकर्मक के दो भेद हैं: एककर्मक ('वह फल खाता है') और द्विकर्मक, जिसमें देना, पढ़ाना, सिखाना, पूछना, बताना जैसी क्रियाओं के दो कर्म होते हैं ('माँ ने बच्चे को कहानी सुनाई')। कुछ क्रियाएँ प्रयोग से दोनों होती हैं: 'बाल्टी भर गई' (अकर्मक), 'उसने बाल्टी भरी' (सकर्मक); 'मेरा सिर खुजलाता है', 'वह सिर खुजलाता है'। अकर्मक क्रिया अपनी ही धातु से बना कर्म (सजातीय कर्म) लेकर सकर्मक बन जाती है: 'सिपाही ने बड़ी लड़ाई लड़ी', 'पक्षी अनोखी बोली बोलते हैं'।

प्रेरणार्थक, नामधातु और संयुक्त क्रिया: प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा देता है। धातु में '-आ' जोड़ने से प्रथम और '-वा' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक बनता है: पढ़ना-पढ़ाना-पढ़वाना, लिखना-लिखाना-लिखवाना, सोना-सुलाना-सुलवाना, पीना-पिलाना-पिलवाना, खाना-खिलाना-खिलवाना, देखना-दिखाना-दिखवाना, धोना-धुलाना-धुलवाना। आना, जाना, सकना, होना, रुचना, पाना जैसी क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते (गुरु)। प्रथम प्रेरणार्थक में कर्ता प्रायः स्वयं भी काम में सम्मिलित रहता है ('माँ बच्चे को खाना खिलाती है'), जबकि द्वितीय प्रेरणार्थक में काम किसी दूसरे के द्वारा कराया जाता है ('माँ नौकरानी से बच्चे को खाना खिलवाती है')। संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बनी क्रिया नामधातु है: हाथ-हथियाना, बात-बतियाना, लाज-लजाना, फ़िल्म-फ़िल्माना, अपना-अपनाना, चिकना-चिकनाना, साठ-सठियाना। संयुक्त क्रिया मुख्य क्रिया और रंजक या सहायक क्रिया के मेल से बनती है:

खा चुका, पढ़ने लगा, रो पड़ा, लिख दिया, जा सकता है, गाता रहता है। 'वह खाकर सो गया' में 'खाकर' पूर्वकालिक क्रिया है, जो दूसरी क्रिया से पहले पूरे हुए काम को बताती है।

काल और उसके भेद: क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय पता चले, वह काल है; तीन काल हैं: वर्तमान, भूत और भविष्य। वर्तमान काल के मुख्य भेद: सामान्य वर्तमान ('वह पढ़ता है'), अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान ('वह पढ़ रहा है'), संदिग्ध वर्तमान ('वह पढ़ता होगा') और संभाव्य वर्तमान ('शायद वह पढ़ता हो'); कुछ पुस्तकें पूर्ण वर्तमान ('वह पढ़ चुका है') और आज्ञार्थ वर्तमान भी जोड़ती हैं। भूतकाल के छह भेद सबसे अधिक पढ़ाए जाते हैं: सामान्य भूत ('वह आया'), आसन्न भूत, जिसमें काम अभी-अभी पूरा हुआ हो ('वह आया है'), पूर्ण भूत ('वह आया था'), अपूर्ण भूत ('वह आ रहा था'), संदिग्ध भूत ('वह आया होगा') और हेतुहेतुमद् भूत, जिसमें एक काम दूसरे पर निर्भर था पर हुआ नहीं ('यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती'); कुछ पुस्तकें संभाव्य भूत ('शायद वह आया हो') भी गिनती हैं। भविष्य काल के भेद: सामान्य भविष्य ('वह पढ़ेगा'), संभाव्य भविष्य ('संभव है वह कल आए') और हेतुहेतुमद् भविष्य ('वह परिश्रम करेगा तो सफल होगा')। उपभेदों की संख्या पुस्तकों में अलग-अलग है, इसलिए उदाहरण के वाक्य को ही आधार बनाइए।

काल पहचानने के संकेत: 'ता है/ती है/ते हैं' सामान्य वर्तमान; 'रहा है' अपूर्ण वर्तमान; 'ता होगा' संदिग्ध वर्तमान; 'या/ई/ए' सामान्य भूत; 'या है' आसन्न भूत; 'या था' पूर्ण भूत; 'रहा था' अपूर्ण भूत; 'या होगा' संदिग्ध भूत; 'ता तो ... ता' हेतुहेतुमद् भूत; 'एगा/एगी/एँगे' सामान्य भविष्य। 'वह रोज़ पढ़ता था' जैसे अभ्यास बताने वाले रूप को कुछ पुस्तकें अपूर्ण भूत और कुछ नित्य भूत कहती हैं। आसन्न भूत ('गया है') और पूर्ण भूत ('गया था') का अंतर निकटता का है: पहला अभी पूरा हुआ, दूसरा बहुत पहले।

वाच्य और उसके भेद: क्रिया के जिस रूप से पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है, वह वाच्य है। कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है और क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है: 'राम पत्र लिखता है', 'सीता गीत गाती है'। कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है, कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा/द्वारा' लगता है और क्रिया कर्म के अनुसार चलती है: 'राम द्वारा पत्र लिखा जाता है', 'सीता द्वारा गीत गाया गया'; यह केवल सकर्मक क्रिया से बनता है और सरकारी सूचनाओं ('चोर पकड़ा गया') तथा असमर्थता ('मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाता') में प्रयुक्त होता है। भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है; यह केवल अकर्मक क्रिया से बनता है, कर्ता के साथ 'से' लगता है और क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है; प्रायः असमर्थता बताता है: 'मुझसे चला नहीं जाता', 'बच्चों से रात भर सोया नहीं गया', और प्रस्ताव में बिना निषेध के भी आता है: 'चलो, अब सोया जाए'।

वाच्य परिवर्तन: कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए (1) कर्ता के साथ 'से' या 'द्वारा' लगाइए, (2) मुख्य क्रिया को सामान्य भूत के रूप में रखकर उसके साथ 'जाना' का उसी काल का रूप जोड़िए, (3) क्रिया का लिंग-वचन कर्म के अनुसार कीजिए: 'मैं पुस्तक पढ़ूँगा' से 'मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाएगी'; 'पुलिस ने चोरों को पकड़ा' से 'पुलिस द्वारा चोरों को पकड़ा गया' या 'पुलिस द्वारा चोर पकड़े गए'। भाववाच्य बनाने के लिए अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ 'से' लगाकर क्रिया को पुल्लिंग एकवचन में 'जाना' के साथ रखिए: 'मैं नहीं हँस सकता' से 'मुझसे हँसा नहीं जाता'। जाल: 'मुझसे पत्र नहीं लिखा जाता' कर्मवाच्य है, क्योंकि 'लिखना' सकर्मक है और 'पत्र' कर्म है; 'मुझसे हँसा नहीं जाता' भाववाच्य है, क्योंकि 'हँसना' अकर्मक है। गुरु के व्याकरण में वाच्य से अलग 'प्रयोग' भी बताया गया है: क्रिया कर्ता के अनुसार हो तो कर्तरि, कर्म के अनुसार हो तो कर्मणि और किसी के अनुसार न हो तो भावे प्रयोग; इसलिए 'राम ने रोटी खाई' कर्तृवाच्य होते हुए भी कर्मणि प्रयोग है।

उदाहरण

- सकर्मक की पहचान 'क्या/किसे' से: 'राम पत्र लिखता है'; अकर्मक: आना, जाना, सोना, हँसना, दौड़ना, डरना; द्विकर्मक: 'माँ ने बच्चे को कहानी सुनाई'।
- प्रेरणार्थक: पढ़ना-पढ़ाना-पढ़वाना, सोना-सुलाना-सुलवाना, पीना-पिलाना-पिलवाना, धोना-धुलाना-धुलवाना; आना, जाना, सकना, होना के प्रेरणार्थक नहीं।
- नामधातु: हाथ से हथियाना, बात से बतियाना, लाज से लजाना, अपना से अपनाना, साठ से सठियाना।
- संयुक्त क्रिया: खा चुका, पढ़ने लगा, रो पड़ा, लिख दिया; पूर्वकालिक क्रिया: 'वह खाकर सो गया' में खाकर।
- भूतकाल के छह भेद: वह आया (सामान्य), आया है (आसन्न), आया था (पूर्ण), आ रहा था (अपूर्ण), आया होगा (संदिग्ध), यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती (हेतुहेतुमद्)।
- वर्तमान: पढ़ता है (सामान्य), पढ़ रहा है (अपूर्ण), पढ़ता होगा (संदिग्ध), शायद पढ़ता हो (संभाव्य); भविष्य: पढ़ेगा (सामान्य), संभव है आए (संभाव्य)।
- वाच्य: 'राम पत्र लिखता है' (कर्तृ), 'राम द्वारा पत्र लिखा जाता है' (कर्म), 'मुझसे चला नहीं जाता' (भाव, अकर्मक, पुल्लिंग एकवचन)।
- कर्मवाच्य बनाम भाववाच्य: 'मुझसे पत्र नहीं लिखा जाता' (सकर्मक, कर्मवाच्य); 'मुझसे हँसा नहीं जाता' (अकर्मक, भाववाच्य)।
- प्रयोग (गुरु): 'राम ने रोटी खाई' कर्तृवाच्य है, पर क्रिया कर्म के अनुसार होने से कर्मणि प्रयोग।

> **त्वरित दोहराव:** धातु + ना = सामान्य रूप; सकर्मक की पहचान 'क्या/किसे'; द्विकर्मक देना, पढ़ाना, पूछना; प्रेरणार्थक -आ (प्रथम), -वा (द्वितीय), आना-जाना-सकना-होना के नहीं; नामधातु हथियाना, बतियाना; संयुक्त क्रिया खा चुका; भूत के छह भेद: सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद्; वाच्य तीन: कर्तृ, कर्म (सकर्मक, 'द्वारा'), भाव (अकर्मक, 'से', पुल्लिंग एकवचन, असमर्थता); उपभेदों की गिनती पुस्तकों में अलग।

उपसर्ग और प्रत्यय: संस्कृत, हिंदी, उर्दू उपसर्ग तथा कृत् और तद्धित प्रत्यय

उपसर्ग क्या है: उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं होते, पर किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं या उसमें विशेषता ला देते हैं। एक ही 'हार' शब्द से प्रहार (चोट), आहार (भोजन), विहार (घूमना), संहार (विनाश), उपहार (भेंट) और परिहार (त्याग) बनते हैं। उपसर्ग से कहीं अर्थ बदलता है (हार से प्रहार), कहीं उलट जाता है (मान से अपमान, जय से पराजय) और कहीं केवल विशेषता आती है (बल से प्रबल, कोप से प्रकोप)। उपसर्ग जुड़ते समय संधि के नियम लगते हैं, इसलिए 'उत् + नति = उन्नति' और 'सु + आगत = स्वागत' जैसे रूप बनते हैं। हिंदी में उपसर्ग तीन स्रोतों से आते हैं: संस्कृत, हिंदी और अरबी-फ़ारसी (उर्दू)।

संस्कृत के 22 उपसर्ग: संस्कृत के उपसर्ग 22 माने जाते हैं, जब दुर्-दुस् और निर्-निस् को अलग-अलग गिना जाए। अति (अधिक): अत्यंत, अतिरिक्त, अत्याचार। अधि (ऊपर, श्रेष्ठ): अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष। अनु (पीछे, समान): अनुज, अनुकरण, अनुवाद। अप (बुरा, विपरीत): अपमान, अपयश, अपव्यय। अपि (भी): अपिधान। अभि (सामने, ओर): अभिमुख, अभियान, अभ्यास। अव (नीचे, बुरा): अवगुण, अवनति, अवतार। आ (तक, ओर): आजीवन, आगमन, आक्रमण। उत्/उद् (ऊपर, श्रेष्ठ): उत्थान, उत्कर्ष, उद्घाटन, उन्नति। उप (निकट, सहायक): उपवन, उपमंत्री, उपकार। दुर्/दुस् (कठिन, बुरा): दुर्जन, दुर्गम, दुष्कर्म, दुस्साहस। नि (नीचे, भीतर): निबंध, निवास, निपुण। निर्/निस् (बिना, बाहर): निर्धन, निर्भय, निष्फल, निस्संदेह। परा (उलटा, पीछे): पराजय, पराक्रम, परामर्श। परि (चारों ओर, पूर्ण): परिक्रमा, परिपूर्ण, पर्यावरण। प्र (आगे, अधिक): प्रगति, प्रबल, प्रख्यात। प्रति (हर एक, विपरीत): प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रत्येक। वि (विशेष, अभाव): विज्ञान, वियोग, व्यर्थ। सम् (अच्छी तरह, साथ): संयोग, संगम, सम्मान। सु (अच्छा, सरल): सुगम, सुपुत्र, स्वागत।

उपसर्ग की तरह प्रयुक्त संस्कृत शब्दांश: अ, अन, स, सह, अधः, अंतर्, पुनर्, प्रादुर्, बहिर्, चिर, सत्, स्व जैसे शब्दांश 22 उपसर्गों में नहीं गिने जाते, पर उपसर्ग की तरह जुड़ते हैं: अज्ञान, अनादि, सपरिवार, सहयोग, अधोगति, अंतर्गत, पुनर्जन्म, प्रादुर्भाव, बहिष्कार, चिरकाल, सज्जन, स्वदेश। एक शब्द में दो या तीन उपसर्ग भी हो सकते हैं: निरभिमान (निर् + अभि + मान), सुसंस्कृत (सु + सम् + कृत), प्रत्युपकार (प्रति + उप + कार), अव्यवस्था (अ + वि + अव + स्था)।

हिंदी और उर्दू के उपसर्ग: हिंदी (तद्भव) उपसर्ग: अ (अछूता, अजान), अन (अनपढ़, अनबन, अनमोल, अनजान), अध (अधमरा, अधपका, अधखिला), उन (उन्नीस, उनतीस; एक कम), नि (निडर, निकम्मा, निहत्था), भर (भरपेट, भरपूर, भरसक), बिन (बिनब्याहा, बिनमाँगा), कु (कुपुत्र, कुचाल, कुढंग), स/सु (सपूत, सजग, सुडौल), चौ (चौराहा, चौमासा), ति (तिराहा, तिमाही)। अरबी-फ़ारसी (उर्दू) उपसर्ग: कम (कमज़ोर, कमउम्र), खुश (खुशबू, खुशहाल), ग़ैर (ग़ैरहाज़िर, ग़ैरज़रूरी), दर (दरअसल, दरकिनार), ना (नापसंद, नालायक, नासमझ), ब (बखूबी, बदौलत), बद (बदनाम, बदबू, बदतमीज़), बा (बाकायदा, बाइज़्ज़त), बिला (बिलावजह, बिलाशक), बे (बेईमान, बेघर, बेकार), ला (लापरवाह, लाजवाब, लाइलाज), सर (सरताज, सरपंच), हम (हमउम्र, हमदर्द, हमसफ़र), हर (हरदिन, हरएक)। अंग्रेज़ी से सब (सब-इंस्पेक्टर), हेड (हेडमास्टर) और वाइस (वाइस-चांसलर) भी आते हैं।

प्रत्यय और कृत् प्रत्यय: प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं। धातु (क्रिया के मूल रूप) में जुड़ने वाले प्रत्यय कृत् कहलाते हैं और उनसे बने शब्द कृदंत। कर्तृवाचक कृत्: -अक (लेखक, पाठक, गायक), -ता (दाता, वक्ता, श्रोता, नेता), -वाला (पढ़नेवाला), -हार (होनहार, पालनहार), -आकू (लड़ाकू, पढ़ाकू), -आक (तैराक), -एरा (लुटेरा), -अक्कड़ (भुलक्कड़, घुमक्कड़)। कर्मवाचक: -औना (खिलौना, बिछौना)। करणवाचक: -न (बेलन, ढक्कन), -नी (कतरनी, लेखनी)। भाववाचक: -आई (लड़ाई, पढ़ाई, सिलाई), -आवट (लिखावट, सजावट, थकावट), -आहट (घबराहट, चिल्लाहट), -आव (बहाव, बचाव), -आन (उड़ान, थकान)। क्रियाद्योतक: -ता (बहता पानी, चलती गाड़ी), -आ (पका आम, लिखा पत्र), -कर (पढ़कर), -ते ही (आते ही)। संस्कृत -अनीय और -तव्य से: पठनीय, दर्शनीय, पूजनीय, कर्तव्य, गंतव्य।

तद्धित प्रत्यय: संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में जुड़ने वाले प्रत्यय तद्धित हैं। कर्तृवाचक: -कार (चित्रकार, कलाकार), -आर (सुनार, लुहार), -गर (जादूगर, कारीगर), -ची (तोपची, खज़ानची), -दार (दुकानदार, ज़मींदार), -वाला (दूधवाला)। भाववाचक: -ता (मित्रता, सुंदरता), -त्व (मनुष्यत्व, बंधुत्व), -पन (बचपन, लड़कपन), -आई (भलाई, बुराई), -आस (मिठास, खटास), -इमा (लालिमा, महिमा)। गुणवाचक या संबंधवाचक: -इक (धार्मिक, सामाजिक, मासिक), -ईय (भारतीय, राष्ट्रीय), -ईला (रंगीला, ज़हरीला), -वान/-मान (धनवान, बुद्धिमान), -आलु/-लु (दयालु, कृपालु, ईर्ष्यालु), -मय (आनंदमय, जलमय), -ईन (कुलीन, ग्रामीण)। ऊनवाचक (छोटापन): -इया (खटिया, डिबिया, लुटिया), -ई (टोकरी), -री (कोठरी)। अपत्यवाचक (संतान बताने वाले), जिनमें पहले स्वर की वृद्धि होती है: वसुदेव-वासुदेव, दशरथ-दाशरथि, पृथा-पार्थ, कुंती-कौंतेय, रघु-राघव, मनु-मानव, कुरु-कौरव, पांडु-पांडव, जनक-जानकी, गंगा-गांगेय।

कृत् और तद्धित की पहचान: मूल शब्द क्रिया की धातु हो तो कृत्, संज्ञा या विशेषण हो तो तद्धित। 'पढ़ाई' में पढ़ (धातु) + आई, इसलिए कृत्; 'भलाई' में भला (विशेषण) + आई, इसलिए तद्धित। इसी तरह लिखावट, घबराहट, उड़ान कृदंत हैं, जबकि मिठास, सुंदरता, बचपन तद्धितांत। '-इक' प्रत्यय से पहले स्वर की वृद्धि का नियम वर्तनी के प्रश्नों में भी आता है: इतिहास-ऐतिहासिक, नीति-नैतिक, उद्योग-औद्योगिक, भूगोल-भौगोलिक, सप्ताह-साप्ताहिक; इसलिए 'इतिहासिक' और 'सप्ताहिक' अशुद्ध हैं। उर्दू प्रत्यय भी याद रखिए: -बाज़ (धोखेबाज़), -खाना (दवाखाना), -आना (सालाना, रोज़ाना), -गार (मददगार)।

परीक्षा के जाल: (1) 'अत्यधिक' में उपसर्ग अति है, 'अध्ययन' में अधि, 'व्यर्थ' में वि और 'पर्यावरण' में परि; संधि के कारण उपसर्ग छिप जाता है। (2) 'अ' और 'अन' 22 संस्कृत उपसर्गों में नहीं गिने जाते। (3) 'उन्नीस' का 'उन' हिंदी उपसर्ग है, जबकि 'उन्नति' में संस्कृत 'उत्'। (4) 'बे', 'ना', 'ग़ैर', 'ला' उर्दू के निषेधवाचक उपसर्ग हैं। (5) एक शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों हो सकते हैं: अपमानित (अप + मान + इत), प्रत्यक्षता, बेईमानी (बे + ईमान + ई)।

उदाहरण

- 'हार' से उपसर्ग द्वारा: प्रहार, आहार, विहार, संहार, उपहार, परिहार; मान से अपमान, जय से पराजय (अर्थ उलटा)।
- संस्कृत के 22 उपसर्ग: अति, अधि, अनु, अप, अपि, अभि, अव, आ, उत्, उप, दुर्, दुस्, नि, निर्, निस्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु।
- संधि में छिपे उपसर्ग: अत्यंत (अति), अध्यक्ष (अधि), अभ्यास (अभि), व्यर्थ (वि), पर्यावरण (परि), स्वागत (सु), उन्नति (उत्)।
- एक शब्द में कई उपसर्ग: निरभिमान (निर् + अभि), सुसंस्कृत (सु + सम्), प्रत्युपकार (प्रति + उप), अव्यवस्था (अ + वि + अव)।
- हिंदी उपसर्ग: अन (अनपढ़), अध (अधमरा), उन (उन्नीस), भर (भरपेट), नि (निडर), कु (कुचाल), चौ (चौराहा)।
- उर्दू उपसर्ग: बे (बेईमान), ना (नापसंद), ग़ैर (ग़ैरहाज़िर), ला (लापरवाह), बद (बदनाम), हम (हमदर्द), सर (सरपंच), बिला (बिलावजह)।
- कृत् प्रत्यय (धातु से): लेखक, लुटेरा, भुलक्कड़, खिलौना, बेलन, पढ़ाई, लिखावट, उड़ान, पठनीय, कर्तव्य।
- तद्धित प्रत्यय (संज्ञा/विशेषण से): चित्रकार, जादूगर, मिठास, बचपन, लालिमा, सामाजिक, भारतीय, दयालु, डिबिया।
- अपत्यवाचक तद्धित (वृद्धि के साथ): दशरथ-दाशरथि, पृथा-पार्थ, कुंती-कौंतेय, रघु-राघव, पांडु-पांडव, जनक-जानकी।

त्वरित दोहराव: उपसर्ग आरंभ में, प्रत्यय अंत में; संस्कृत के 22 उपसर्ग (दुर्-दुस्, निर्-निस् अलग गिनकर); अ, अन, स, सह, पुनर् उपसर्गवत् शब्दांश; हिंदी: अन, अध, उन, भर, नि, कु; उर्दू: बे, ना, ग़ैर, ला, बद, हम; कृत् धातु से (पढ़ाई, लिखावट, लुटेरा, पठनीय), तद्धित संज्ञा-विशेषण से (भलाई, मिठास, सामाजिक, दयालु); -इक से वृद्धि (ऐतिहासिक, साप्ताहिक); अपत्यवाचक: दाशरथि, पार्थ, कौंतेय, राघव।

वाक्य-विचार और विराम-चिह्न: वाक्य के अंग, भेद, रूपांतरण और चिह्नों का प्रयोग

वाक्य और उसके आवश्यक तत्त्व: सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह, जो पूरा अर्थ प्रकट करे, वाक्य कहलाता है। वाक्य बनने के लिए छह गुण आवश्यक माने जाते हैं। सार्थकता: हर शब्द का अर्थ हो। योग्यता: शब्दों में अर्थ की संगति हो; 'वह पानी खाता है' में योग्यता नहीं, 'वह पानी पीता है' में है। आकांक्षा: वाक्य सुनकर कुछ और जानने की इच्छा न रहे; अकेला 'राम पुस्तक' अधूरा है। आसत्ति या निकटता: वाक्य के शब्द बीच में लंबे अंतराल के बिना कहे जाएँ। पदक्रम: शब्द व्याकरण के क्रम में हों; हिंदी का सामान्य क्रम कर्ता, कर्म, क्रिया है: 'राम ने रावण को मारा'। अन्वय: लिंग, वचन, पुरुष, कारक और काल का मेल; 'लड़कियाँ खेल रहा है' में अन्वय नहीं। हिंदी में विशेषण विशेष्य से पहले और क्रियाविशेषण प्रायः क्रिया से पहले आता है।

वाक्य के अंग: हर वाक्य के दो अंग होते हैं। उद्देश्य वह है जिसके बारे में कुछ कहा जाए, और विधेय वह जो उद्देश्य के बारे में कहा जाए। 'मेहनती किसान खेत में हल चला रहा है' में 'मेहनती किसान' उद्देश्य है, जिसमें कर्ता 'किसान' और उसका विस्तार 'मेहनती' है; 'खेत में हल चला रहा है' विधेय है, जिसमें क्रिया 'चला रहा है', कर्म 'हल' और क्रिया का विस्तार 'खेत में' है। आज्ञा वाले वाक्यों में उद्देश्य प्रायः छिपा रहता है: 'पानी लाओ' में उद्देश्य 'तुम' है।

रचना के आधार पर भेद: सरल या साधारण वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय, अर्थात् एक ही मुख्य समापिका क्रिया होती है: 'राधा गीत गाती है', 'वर्षा होने पर किसान प्रसन्न हुए'। संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र (प्रधान) उपवाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधकों से जुड़े होते हैं: और, एवं, तथा, पर, परंतु, किंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए, अतः: 'राम आया और श्याम चला गया', 'वह गरीब है, परंतु ईमानदार है', 'वह बीमार था, इसलिए नहीं आया'। मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो व्यधिकरण समुच्चयबोधकों (कि, क्योंकि, यदि-तो, ताकि, यद्यपि-तथापि) या संबंधवाचक शब्दों (जो, जिसे, जब-तब, जहाँ-वहाँ) से जुड़ते हैं: 'मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है'। ध्यान दें: 'इसलिए' से जुड़ा वाक्य संयुक्त है, पर 'क्योंकि' से जुड़ा मिश्र।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद: संज्ञा उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता या कर्म का काम करता है और प्रायः 'कि' से आरंभ होता है: 'उसने कहा कि मैं कल आऊँगा'। विशेषण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा की विशेषता बताता है और जो, जिसे, जिसका, जिसने से आरंभ होता है: 'वह लड़का, जो कल आया था, मेरा भाई है'। क्रियाविशेषण उपवाक्य प्रधान क्रिया का समय, स्थान, कारण, शर्त या रीति बताता है और जब, जहाँ, क्योंकि, यदि, ताकि, यद्यपि, ज्यों-ही से आरंभ होता है: 'जब वर्षा हुई, तब मोर नाचने लगे', 'यदि तुम परिश्रम करोगे तो सफल होगे'।

अर्थ के आधार पर आठ भेद: विधानवाचक, जिसमें किसी बात का होना बताया जाए ('सूर्य पूर्व में उगता है'); निषेधवाचक ('मैं आज बाज़ार नहीं जाऊँगा'); प्रश्नवाचक ('क्या तुमने भोजन किया?'); आज्ञावाचक, जिसमें आज्ञा, अनुरोध या उपदेश हो ('तुम घर जाओ', 'कृपया बैठिए'); इच्छावाचक, जिसमें इच्छा, आशीर्वाद या शुभकामना हो ('ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे', 'आपकी यात्रा सफल हो'); संदेहवाचक ('शायद आज वर्षा हो', 'वह पहुँच गया होगा'); संकेतवाचक या शर्तवाचक, जिसमें एक काम दूसरे पर निर्भर हो ('यदि तुम परिश्रम करते तो सफल हो जाते'); और विस्मयादिवाचक ('वाह! कितना सुंदर दृश्य है!')।

वाक्य रूपांतरण: अर्थ बदले बिना वाक्य की रचना बदलना वाक्य रूपांतरण है। सरल से मिश्र: 'वह अस्वस्थ होने के कारण नहीं आया' से 'वह नहीं आया, क्योंकि वह अस्वस्थ था'; 'परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है' से 'जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह सफल होता है'। सरल से संयुक्त: 'वह खाना खाकर सो गया' से 'उसने खाना खाया और वह सो गया'। संयुक्त से सरल: 'सूरज निकला और अँधेरा दूर हो गया' से 'सूरज निकलने पर अँधेरा दूर हो गया'। मिश्र से सरल: 'जब वह स्टेशन पहुँचा, तब गाड़ी जा चुकी थी' से 'उसके स्टेशन पहुँचने से पहले गाड़ी जा चुकी थी'। अर्थ के आधार पर भी रूपांतरण होता है: विधान से निषेध ('वह ईमानदार है' से 'वह बेईमान नहीं है') और विधान से प्रश्न ('सब तुम्हारा आदर करते हैं' से 'कौन तुम्हारा आदर नहीं करता?')।

विराम-चिह्नों का प्रयोग: लिखते समय रुकने और भाव स्पष्ट करने के लिए विराम-चिह्न लगाए जाते हैं। पूर्ण विराम (।) विधान, निषेध और आज्ञा वाले वाक्य के अंत में; कविता में छंद या पद की समाप्ति पर दोहरा दंड (॥)। अल्प विराम (,) शब्दों की सूची में ('राम, श्याम, मोहन और सोहन आए'; 'और' से पहले नहीं), 'हाँ' और 'नहीं' के बाद ('हाँ, मैं आऊँगा'), संबोधन के बाद ('राम, यहाँ आओ') और उद्धरण से पहले। अल्प विराम की जगह बदलने से अर्थ उलट जाता है: 'रोको, मत जाने दो' और 'रोको मत, जाने दो'। अर्धविराम (;) लंबे वाक्य के ऐसे उपवाक्यों के बीच, जहाँ अल्प विराम से अधिक ठहराव चाहिए। प्रश्नवाचक चिह्न (?) सीधे प्रश्न के अंत में; अप्रत्यक्ष प्रश्न में नहीं: 'उसने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो।' विस्मयादिबोधक चिह्न (!) हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य और संबोधन के बाद: 'अरे! तुम आ गए'।

अन्य विराम-चिह्न: योजक चिह्न (-) द्वंद्व समास (माता-पिता), पुनरुक्त शब्दों (धीरे-धीरे) और 'सा, सी, से' वाली तुलना (चाँद-सा मुखड़ा) में लगता है। निर्देशक चिह्न (—) किसी कथन या संवाद से पहले और व्याख्या के लिए आता है: 'अध्यापक — तुमने गृहकार्य किया?'। उद्धरण चिह्न दो प्रकार के हैं: दोहरा (" ") किसी के कहे वाक्य को ज्यों का त्यों लिखने में, और इकहरा (' ') किसी शब्द, पुस्तक या उपनाम पर बल देने में: 'रामचरितमानस', 'निराला'। कोष्ठक ( ) अर्थ स्पष्ट करने और नाटक के निर्देशों में: 'धनंजय (अर्जुन) ने लक्ष्य भेदा'। लाघव चिह्न (॰) संक्षिप्त रूप में: डॉ॰, पं॰, ई॰पू॰। हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न (^) छूटा हुआ शब्द ऊपर लिखने के लिए लगाया जाता है।

उदाहरण

- वाक्य के छह आवश्यक तत्त्व: सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति (निकटता), पदक्रम और अन्वय; 'वह पानी खाता है' में योग्यता नहीं।
- उद्देश्य-विधेय: 'मेहनती किसान खेत में हल चला रहा है' में 'मेहनती किसान' उद्देश्य, 'खेत में हल चला रहा है' विधेय।
- रचना से तीन भेद: सरल ('राधा गीत गाती है'), संयुक्त ('राम आया और श्याम चला गया'), मिश्र ('मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है')।
- संयुक्त के योजक: और, तथा, परंतु, किंतु, या, अथवा, इसलिए, अतः; मिश्र के योजक: कि, जो, क्योंकि, यदि-तो, जब-तब, यद्यपि-तथापि।

- आश्रित उपवाक्य: संज्ञा (‘कि’ से), विशेषण (‘जो, जिसे’ से), क्रियाविशेषण (‘जब, जहाँ, क्योंकि, यदि’ से)।
- अर्थ से आठ भेद: विधान, निषेध, प्रश्न, आज्ञा, इच्छा (‘ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे’), संदेह (‘शायद वर्षा हो’), संकेत (‘यदि… तो…’), विस्मय (‘वाह!’)।
- रूपांतरण: ‘परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है’ (सरल) से ‘जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह सफल होता है’ (मिश्र)।
- अल्प विराम से अर्थ बदलता है: ‘रोको, मत जाने दो’ (रोक लो) और ‘रोको मत, जाने दो’ (जाने दो)।
- अप्रत्यक्ष प्रश्न में प्रश्नवाचक चिह्न नहीं: ‘उसने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो।’; योजक चिह्न: माता-पिता, धीरे-धीरे, चाँद-सा।

> **त्वरित दोहराव:** वाक्य के तत्त्व: सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति, पदक्रम, अन्वय; अंग: उद्देश्य और विधेय; रचना से: सरल (एक समापिका क्रिया), संयुक्त (स्वतंत्र उपवाक्य; और, परंतु, इसलिए), मिश्र (प्रधान + आश्रित; कि, जो, क्योंकि, यदि); आश्रित उपवाक्य: संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण; अर्थ से आठ भेद; रूपांतरण में अर्थ न बदले; विराम: । , ; ? ! - — “ ” ( ) ..; ‘रोको, मत जाने दो’ बनाम ‘रोको मत, जाने दो’।

अलंकार, रस और छंद: अनुप्रास से अतिशयोक्ति, नौ रस और दोहा-चौपाई-सोरठा की मात्राएँ

अलंकार और उसके भेद: अलंकार का अर्थ है आभूषण; जैसे आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाते हैं। अलंकार के दो मुख्य भेद हैं। शब्दालंकार में चमत्कार किसी विशेष शब्द पर टिका होता है; उस शब्द की जगह उसका पर्यायवाची रख दें तो चमत्कार समाप्त हो जाता है। अर्थालंकार में चमत्कार अर्थ में होता है, इसलिए पर्यायवाची रखने पर भी बना रहता है।

शब्दालंकार: अनुप्रास में एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति होती है: ‘चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में’ (मैथिलीशरण गुप्त, ‘पंचवटी’) में ‘च’ की, और ‘तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए’ (भारतेंदु) में ‘त’ की आवृत्ति है; इसके उपभेद छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, लाटानुप्रास, अंत्यानुप्रास और श्रुत्यनुप्रास हैं। यमक में एक ही शब्द एक से अधिक बार आता है और हर बार उसका अर्थ अलग होता है: ‘कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय’ (बिहारी) में पहला कनक सोना और दूसरा धतूरा है (सोने में धतूरे से सौ गुनी मादकता है); ‘काली घटा का घमंड घटा’ में पहला घटा बादल और दूसरा ‘कम हुआ’। श्लेष में शब्द एक ही बार आता है, पर उसके कई अर्थ निकलते हैं: ‘रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥’ (रहीम) में अंतिम ‘पानी’ के तीन अर्थ हैं: मोती के लिए चमक, मनुष्य के लिए प्रतिष्ठा और चून (आटे) के लिए जल। याद रखिए: यमक में शब्द दोहराया जाता है, श्लेष में नहीं।

उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा: उपमा में दो वस्तुओं की समानता बताई जाती है, और इसके चार अंग हैं: उपमेय (जिसकी तुलना हो), उपमान (जिससे तुलना हो), साधारण धर्म (समान गुण) और वाचक शब्द (सा, सी, से, सम, समान, सरिस, जैसा, ज्यों)। ‘पीपर पात सरिस मनु डोला’ (तुलसी) में मनु (मन) उपमेय, पीपर पात उपमान, डोला साधारण धर्म और सरिस वाचक है; कोई अंग न हो तो लुप्तोपमा: ‘कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा’ में साधारण धर्म (कठोरता) लुप्त है। रूपक में उपमेय और उपमान को एक ही मान लिया जाता है, वाचक शब्द नहीं होता: ‘चरन-कमल बंदौं हरि राई’ (सूरदास), ‘मैया, मैं तौ चंद-खिलौना लैहौं’ (सूरदास), ‘पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो’ (मीराबाई)। उत्प्रेक्षा में उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है; वाचक शब्द हैं मनु, मनहु, मनौ, मानो, जनु, जनहु, जानो: ‘सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात। मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु परयौ प्रभात॥’ (बिहारी), जिसमें पीला वस्त्र ओढ़े साँवले कृष्ण में प्रभात की धूप पड़े नीलमणि पर्वत की संभावना की गई है। अंतर: उपमा में समानता, रूपक में अभेद और उत्प्रेक्षा में संभावना।

अतिशयोक्ति और अन्य अर्थालंकार: अतिशयोक्ति में किसी बात को लोक-सीमा से बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है: ‘हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग॥’। विभावना में कारण के बिना कार्य होने का वर्णन होता है: ‘बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना’ (तुलसी)। संदेह में उपमेय और उपमान में अनिश्चय बना रहता है: ‘सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है’। भ्रांतिमान में भ्रम से एक वस्तु को दूसरी समझ लिया जाता है; मानवीकरण में प्रकृति या निर्जीव वस्तुओं पर मानवीय भावों का आरोप होता है; अन्योक्ति में किसी और के बहाने किसी और की बात कही जाती है।

रस और उसके अंग: काव्य पढ़ने, सुनने या नाटक देखने से जो आनंद मिलता है, वह रस है; आचार्य विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा कहा। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का रस-सूत्र है: ‘विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः’, अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस बनता है। रस के चार अंग हैं। स्थायी भाव मन में स्थायी रूप से रहने वाले भाव हैं। विभाव भाव जगाने वाले कारण हैं: आलंबन विभाव वह व्यक्ति या वस्तु जिसके कारण भाव जागे (जिसके मन में भाव जागे वह आश्रय, जिसके प्रति जागे वह विषय), और उद्दीपन विभाव भाव को और भड़काने वाली परिस्थिति (चाँदनी, एकांत, शत्रु की ललकार)। अनुभाव आश्रय की वे चेष्टाएँ हैं जिनसे भाव प्रकट होता है: आँसू, रोमांच, कंपन। संचारी या व्यभिचारी भाव थोड़ी देर के लिए आने-जाने वाले भाव हैं, जिनकी संख्या 33 मानी जाती है: शंका, चिंता, हर्ष, ग्लानि, स्मृति, गर्व, आलस्य आदि।

रस और स्थायी भाव: शृंगार का स्थायी भाव रति है (रसराज; संयोग और वियोग या विप्रलंभ दो भेद), हास्य का हास, करुण का शोक, रौद्र का क्रोध, वीर का उत्साह, भयानक का भय, वीभत्स का जुगुप्सा (घृणा), अद्भुत का विस्मय (आश्चर्य) और शांत का निर्वेद (श्म)। भरतमुनि ने नाटक के लिए आठ रस माने थे; शांत रस बाद के आचार्यों ने जोड़ा, जिससे नौ रस हुए। बाद में वात्सल्य (स्थायी भाव वात्सल्य या वत्सलता) और भक्ति (स्थायी भाव भगवद्विषयक रति) जोड़कर ग्यारह रस भी गिने जाते हैं। उदाहरण: ‘मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो’ (सूरदास) में वात्सल्य, और ‘खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी’ (सुभद्राकुमारी चौहान) में वीर रस है। जाल: वियोग शृंगार में मिलने की आशा रहती है, करुण में प्रिय सदा के लिए खो जाता है; वीर का स्थायी भाव उत्साह है, क्रोध नहीं।

छंद और मात्रा-गणना: वर्ण, मात्रा, यति (विराम), गति (प्रवाह) और तुक के नियमों में बँधी रचना छंद कहलाती है; छंद की हर पंक्ति के भाग चरण या पाद कहलाते हैं। मात्रा गिनने के नियम: ह्रस्व स्वर और उनसे बने वर्ण लघु (।, 1 मात्रा) हैं, चंद्रबिंदु वाला ह्रस्व भी लघु रहता है (हँसी में हँ); दीर्घ स्वर, अनुस्वार या विसर्ग वाले वर्ण और संयुक्ताक्षर से ठीक पहले का ह्रस्व वर्ण गुरु (ऽ, 2 मात्रा) हैं (सत्य में स गुरु); हलंत वर्ण की मात्रा नहीं गिनी जाती। वर्णिक छंदों में आठ गण होते हैं, जिन्हें ‘यमाताराजभानसलगा’ सूत्र से याद किया जाता है: यगण (।ऽऽ), मगण (ऽऽऽ), तगण (ऽऽ।), रगण (ऽ।ऽ), जगण (।ऽ।), भगण (ऽ।।), नगण (।।।), सगण (।।ऽ)। छंद के मुख्य भेद हैं: मात्रिक (दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, हरिगीतिका), वर्णिक (सवैया, कवित्त या घनाक्षरी) और मुक्त छंद। चरणों के आधार पर चौपाई सम, दोहा और सोरठा अर्धसम, और कुंडलिया तथा छप्पय विषम छंद हैं।

दोहा, सोरठा और चौपाई: दोहा अर्धसम मात्रिक छंद है; इसके विषम (पहले, तीसरे) चरणों में 13 और सम (दूसरे, चौथे) चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं, कुल 48; सम चरणों के अंत में गुरु-लघु और तुक होती है: 'बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥' (कबीर); पहले चरण में बड़ा (3), हुआ (3), तो (2), क्या (2), हुआ (3) मिलकर 13 मात्राएँ हैं। सोरठा दोहे का उलटा है: विषम चरणों में 11 और सम चरणों में 13 मात्राएँ, और तुक विषम चरणों में: 'जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिबर बदन' (तुलसी)। चौपाई सम मात्रिक छंद है, जिसके चारों चरणों में 16-16 मात्राएँ होती हैं और चरण के अंत में जगण या तगण नहीं आता: 'जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥' (हनुमान चालीसा)। रामचरितमानस मुख्यतः चौपाई में है, बीच-बीच में दोहे और सोरठे हैं। अन्य: रोला 24 मात्राएँ (11-13 पर यति), कुंडलिया दोहा और रोला मिलाकर 6 चरण, हरिगीतिका 28 मात्राएँ (16-12 पर यति)।

उदाहरण

- शब्दालंकार बनाम अर्थालंकार: पर्यायवाची रखने पर चमत्कार मिट जाए तो शब्दालंकार (अनुप्रास, यमक, श्लेष), बचा रहे तो अर्थालंकार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा)।
- यमक: 'कनक कनक ते सौ गुनी' (सोना, धतूरा); श्लेष: 'पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून' (चमक, प्रतिष्ठा, जल); यमक में शब्द दोहराया जाता है।
- उपमा के चार अंग: 'पीपर पात सरिस मनु डोला' में मनु (मन) उपमेय, पीपर पात उपमान, डोला साधारण धर्म, सरिस वाचक शब्द।
- रूपक: 'चरन-कमल बंदौं हरि राई', 'पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो'; उत्प्रेक्षा के वाचक: मनु, मनहु, मनौ, मानो, जनु, जानो।
- अतिशयोक्ति: 'हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग॥'; विभावना: 'बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना'।
- रस के अंग: स्थायी भाव, विभाव (आलंबन, उद्दीपन), अनुभाव, संचारी भाव (33); रस-सूत्र भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का।
- स्थायी भाव: शृंगार-रति, हास्य-हास, करुण-शोक, रौद्र-क्रोध, वीर-उत्साह, भयानक-भय, वीभत्स-जुगुप्सा, अद्भुत-विस्मय, शांत-निर्वेद; वात्सल्य और भक्ति मिलाकर ग्यारह।
- दोहा: 13-11, कुल 48 मात्राएँ, सम चरणों के अंत में गुरु-लघु; सोरठा: 11-13 (दोहे का उलटा); चौपाई: हर चरण में 16 मात्राएँ।
- मात्रा: लघु (।) = 1, गुरु (ऽ) = 2; संयुक्ताक्षर से पहले का ह्रस्व गुरु (सत्य), चंद्रबिंदु वाला ह्रस्व लघु (हँसी); गण-सूत्र: यमाताराजभानसलगा।

> **त्वरित दोहराव:** शब्दालंकार (अनुप्रास: वर्ण-आवृत्ति; यमक: शब्द दोहराया, अर्थ अलग; श्लेष: शब्द एक, अर्थ अनेक) और अर्थालंकार (उपमा: सा, सम, सरिस; रूपक: अभेद; उत्प्रेक्षा: मनु, मानो, जनु; अतिशयोक्ति; विभावना); रस के अंग: स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, 33 संचारी; नौ रस, भरत के आठ, वात्सल्य-भक्ति मिलाकर ग्यारह; वीर-उत्साह, करुण-शोक, शांत-निर्वेद; दोहा 13-11, सोरठा 11-13, चौपाई 16 प्रति चरण; यमाताराजभानसलगा।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-grammar/

हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: इस भाग में तीन प्रकार के प्रश्न आते हैं। पहले में कोई मुहावरा या लोकोक्ति देकर उसका सही अर्थ पूछा जाता है। दूसरे में एक वाक्य में रिक्त स्थान होता है और उसमें ठीक बैठने वाला मुहावरा चुनना होता है। तीसरे में वाक्य के रेखांकित अंश के स्थान पर उचित मुहावरा चुनना होता है। तीनों में एक ही बात परखी जाती है: क्या आप मुहावरे का लाक्षणिक अर्थ, यानी शब्दों से अलग छिपा हुआ अर्थ, जानते हैं।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर: मुहावरा एक वाक्यांश है, पूरा वाक्य नहीं। वह अकेले प्रयोग नहीं होता, वाक्य के भीतर आकर अर्थ देता है, और उसकी क्रिया वाक्य के काल, लिंग और वचन के अनुसार बदलती है: 'आँखें चुराना' से 'वह मुझसे आँखें चुराने लगा'। लोकोक्ति अपने-आप में पूरा वाक्य होती है, जो लोगों के लंबे अनुभव से बनी है। उसे प्रायः किसी बात के समर्थन या उदाहरण के रूप में ज्यों-का-त्यों बोला जाता है, उसका रूप नहीं बदलता: 'अधजल गगरी छलकत जाय'। संक्षेप में, मुहावरा वाक्य का हिस्सा बनता है और लोकोक्ति स्वतंत्र वाक्य की तरह आती है।

एक और नियम: मुहावरे के शब्द नहीं बदले जाते। 'आँख का तारा' को 'नेत्र का तारा' या 'आँख का सितारा' नहीं कहा जाता, भले ही शब्दों का अर्थ वही हो। विकल्पों में कभी-कभी ऐसा बदला हुआ रूप जाल के रूप में रखा जाता है।

शरीर के अंगों से जुड़े मुहावरे: अँगूठा दिखाना: साफ़ इनकार करना; आँख का तारा: बहुत प्यारा; आँखें चुराना: सामने आने से बचना; आँखें बिछाना: प्रेम से स्वागत करना; आँखों में धूल झोंकना: धोखा देना; कान भरना: चुगली करना, किसी के विरुद्ध भड़काना; कान पर जूँ न रेंगना: कोई असर न होना; कमर कसना: तैयार होना; दाँतों तले उँगली दबाना: आश्चर्यचकित होना; नाक में दम करना: बहुत परेशान करना; नाक कटना: प्रतिष्ठा नष्ट होना; पेट में चूहे दौड़ना: बहुत भूख लगना; मुँह में पानी आना: लालच आना; हाथ पीले करना: बेटी का विवाह करना; खून-पसीना एक करना: कड़ी मेहनत करना।

भावों से जुड़े मुहावरे: आग बबूला होना: बहुत क्रोधित होना; फूला न समाना: बहुत प्रसन्न होना; पानी-पानी होना: बहुत लज्जित होना; दिन में तारे दिखाई देना: बहुत घबरा जाना; छाती पर साँप लोटना: ईर्ष्या करना; घाव पर नमक छिड़कना: दुखी को और दुख देना; रंग में भंग पड़ना: आनंद में बाधा पड़ना।

स्वभाव और व्यवहार के मुहावरे: आस्तीन का साँप: कपटी मित्र; गिरगिट की तरह रंग बदलना: बार-बार अपनी बात बदलना; चिकना घड़ा होना: किसी बात का असर न होना; अपना उल्लू सीधा करना: अपना स्वार्थ साधना; मक्खी मारना: बेकार बैठे रहना; ईद का चाँद होना: बहुत दिनों बाद दिखाई देना; अक्ल पर पत्थर पड़ना: बुद्धि भ्रष्ट होना।

कठिनाई, सफलता और समय के मुहावरे: टेढ़ी खीर: कठिन काम; लोहे के चने चबाना: बहुत कठिन काम करना; आटे-दाल का भाव मालूम होना: जीवन की कठिनाइयों का पता चलना; दाल न गलना: युक्ति सफल न होना; बाल-बाल बचना: बहुत कठिनाई से बचना; पौ बारह होना: खूब लाभ होना; नौ-दो ग्यारह होना: भाग जाना; श्रीगणेश करना: आरंभ करना; गागर में सागर भरना: थोड़े में बहुत कहना; तिल का ताड़ बनाना: छोटी बात को बहुत बढ़ाना।

प्रमुख लोकोक्तियाँ: अधजल गगरी छलकत जाय: कम ज्ञान वाला अधिक दिखावा करता है; थोथा चना बाजे घना: गुणहीन व्यक्ति अधिक शोर करता है; ऊँची दुकान फीका पकवान: दिखावा अधिक, गुण कम; आम के आम गुठलियों के दाम: दोहरा लाभ; एक पंथ दो काज: एक काम से दो लाभ; एक अनार सौ बीमार: वस्तु एक, चाहने वाले अनेक; उलटा चोर कोतवाल को डाँटे: दोषी स्वयं निर्दोष पर दोष लगाए; चोर की दाढ़ी में तिनका: दोषी स्वयं शंकित रहता है; नाच न जाने आँगन टेढ़ा: अपनी कमी का दोष दूसरों पर डालना; काला अक्षर भैंस बराबर: बिलकुल अनपढ़ होना; खोदा पहाड़ निकली चुहिया: बहुत परिश्रम, बहुत थोड़ा फल।

कुछ और लोकोक्तियाँ: जिसकी लाठी उसकी भैंस: शक्तिशाली की ही जीत होती है; जल में रहकर मगर से बैर: जिसके आश्रय में रहें उससे शत्रुता ठीक नहीं; घर का भेदी लंका ढाए: घर का भेद जानने वाला भीतरी व्यक्ति ही सबसे बड़ा नुकसान करता है; अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत: समय निकल जाने पर पछताना व्यर्थ; नौ नकद न तेरह उधार: भविष्य के बड़े लाभ से तुरंत का थोड़ा लाभ अच्छा; बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद: अज्ञानी गुण की कद्र नहीं जानता; हाथ कंगन को आरसी क्या: प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं; न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी: झगड़े या समस्या का कारण ही मिटा देना; जैसी करनी वैसी भरनी: जैसा कर्म वैसा फल।

वाक्य में सही मुहावरा कैसे चुनें: पहले वाक्य की स्थिति और भाव पहचानिए: क्रोध है, प्रसन्नता है, लज्जा है, धोखा है या परिश्रम। फिर वही भाव वाले विकल्प रखिए और उलटे भाव वाले हटा दीजिए। उदाहरण: 'परीक्षा में प्रथम आने का समाचार सुनकर वह ___।' यहाँ प्रसन्नता चाहिए, इसलिए 'फूला न समाया' सही है, 'आग बबूला हो गया' नहीं। इसके बाद व्याकरण देखिए: मुहावरे की क्रिया वाक्य के काल, लिंग और वचन से मेल खानी चाहिए, जैसे 'वह फूली न समाई' (स्त्रीलिंग) या 'चोर पुलिस को देखकर नौ-दो ग्यारह हो गया'।

रेखांकित अंश वाले प्रश्न में रेखांकित शब्दों का अर्थ ही मुहावरे का अर्थ होना चाहिए। 'उसने बहुत कठिन परिश्रम करके घर बनाया' में रेखांकित 'बहुत कठिन परिश्रम करके' के स्थान पर 'खून-पसीना एक करके' आएगा। अर्थ पूछा जाए तो शब्दशः अर्थ वाले विकल्प से बचिए: 'पानी-पानी होना' का अर्थ भीगना नहीं, बहुत लज्जित होना है।

जाल: (1) मुहावरे का शब्दशः अर्थ चुन लेना, जैसे 'नौ-दो ग्यारह होना' को गिनती से जोड़ना या 'मक्खी मारना' को सचमुच मक्खी मारना समझना; (2) मिलते-जुलते मुहावरों में भ्रम: 'आँखें चुराना' (सामने आने से बचना) और 'आँखें बिछाना' (स्वागत करना); 'कान भरना' (चुगली करना) और 'कान पर जूँ न रेंगना' (असर न होना); (3) मुहावरे के शब्द बदलकर बनाया गया रूप चुन लेना; (4) वाक्य के भाव के उलटे भाव वाला मुहावरा चुनना; (5) क्रिया को वाक्य के लिंग-वचन से न मिलाना; (6) मुहावरे और लोकोक्ति के अंतर वाले प्रश्न में यह भूल जाना कि लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है।

उदाहरण

- मुहावरा वाक्यांश है, क्रिया बदलती है: 'आँखें चुराना' → 'वह मुझसे आँखें चुराने लगा।'
- लोकोक्ति पूरा वाक्य है, रूप नहीं बदलता: 'अधजल गगरी छलकत जाय।'
- 'बेटे को नौकरी मिलने की खबर सुनकर माँ ___।' (फूली न समाई / आग बबूला हुई / पानी-पानी हुई) → फूली न समाई (प्रसन्नता; स्त्रीलिंग कर्ता, इसलिए स्त्रीलिंग क्रिया)।
- 'झूठ पकड़े जाने पर वह ___ हो गया।' → पानी-पानी (लज्जा)।
- 'पुलिस को देखते ही चोर ___ हो गया।' → नौ-दो ग्यारह (भाग जाना)।
- 'इतने कम शब्दों में इतनी बड़ी बात कहना तो ___ है।' → गागर में सागर भरना।
- 'उसने बहुत कठिन परिश्रम करके घर बनाया' → 'उसने खून-पसीना एक करके घर बनाया।'
- आँखें चुराना = सामने आने से बचना; आँखें बिछाना = प्रेम से स्वागत करना; आँखों में धूल झोंकना = धोखा देना।
- कान भरना = चुगली करना; कान पर जूँ न रेंगना = कोई असर न होना।
- टेढ़ी खीर = कठिन काम; लोहे के चने चबाना = बहुत कठिन काम करना; दाल न गलना = युक्ति सफल न होना।
- आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ; एक पंथ दो काज = एक काम से दो लाभ।
- थोथा चना बाजे घना और अधजल गगरी छलकत जाय: दोनों में कम गुण या ज्ञान वाला अधिक दिखावा करता है।
- 'पानी-पानी होना' का अर्थ भीगना नहीं, बहुत लज्जित होना है; शब्दशः अर्थ वाला विकल्प प्रायः जाल होता है।

> **त्वरित दोहराव:** मुहावरा वाक्यांश है, वाक्य के भीतर आता है और उसकी क्रिया काल, लिंग, वचन से बदलती है; लोकोक्ति पूरा, स्वतंत्र वाक्य है और उसका रूप नहीं बदलता; मुहावरे के शब्द नहीं बदलते; अर्थ लाक्षणिक होता है, शब्दशः नहीं; पहले वाक्य का भाव पहचानें, फिर उलटे भाव वाले विकल्प हटाएँ; आग बबूला होना क्रोध, फूला न समाना प्रसन्नता, पानी-पानी होना लज्जा, दिन में तारे दिखाई देना घबराहट, आँखों में धूल झोंकना धोखा, नौ-दो ग्यारह होना भागना, टेढ़ी खीर कठिन काम, गागर में सागर थोड़े में बहुत; अधजल गगरी और थोथा चना दिखावा, आम के आम गुठलियों के दाम दोहरा लाभ।

मुहावरा और लोकोक्ति: परिभाषा, अंतर और प्रयोग के नियम

मुहावरा क्या है: 'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है। इसके अर्थ के बारे में पुस्तकें एकमत नहीं हैं: कुछ इसका अर्थ 'बातचीत करना' या 'उत्तर देना' बताती हैं और कुछ 'अभ्यास'। परिभाषा: जो वाक्यांश अपने शब्दों का सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट करे, उसे मुहावरा कहते हैं। शब्दों का सीधा अर्थ अभिधा शब्द-शक्ति से निकलता है, जबकि मुहावरे का अर्थ लक्षणा (और कहीं-कहीं व्यंजना) से निकलता है, इसलिए उसे लाक्षणिक अर्थ कहते हैं। 'आँखों में धूल झोंकना' का शब्दार्थ है आँख में मिट्टी डालना, पर मुहावरे का अर्थ है धोखा देना: ठग ने बातों में उलझाकर दुकानदार की आँखों में धूल झोंक दी। 'गागर में सागर भरना' में कोई घड़ा नहीं भरा जाता, अर्थ है थोड़े शब्दों में बहुत बड़ी बात कहना: बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है। जो बात सीधे कहने में पूरा वाक्य लेती है, वह मुहावरे से दो-तीन शब्दों में और अधिक प्रभाव से कह दी जाती है।

मुहावरे की विशेषताएँ: पहली, मुहावरा अपूर्ण वाक्यांश है, अकेले प्रयोग नहीं होता, वाक्य के भीतर आकर ही पूरा अर्थ देता है। दूसरी, उसका अर्थ लाक्षणिक होता है, शब्दशः नहीं: 'मक्खी मारना' का अर्थ बेकार बैठे रहना है। तीसरी, उसके शब्द नहीं बदले जाते, पर्यायवाची रखते ही मुहावरा टूट जाता है: 'नाक में दम करना' को 'नासिका में दम करना' या 'पेट में चूहे दौड़ना' को 'उदर में चूहे दौड़ना' नहीं कहेंगे। चौथी, अधिकांश मुहावरे 'ना' पर समाप्त होने वाले क्रियार्थक रूप में लिखे जाते हैं (आग बबूला होना, हाथ मलना, कमर कसना), पर कुछ संज्ञा या विशेषण जैसे रूप में भी होते हैं: आँख का तारा (बहुत प्यारा), आस्तीन का साँप (कपटी मित्र), टेढ़ी खीर (कठिन काम), गूलर का फूल (दुर्लभ वस्तु), दाँत काटी रोटी (गहरी मित्रता)। पाँचवीं, मुहावरे का अर्थ उसी रूप में लिखा जाता है जिस रूप में मुहावरा है: 'हाथ मलना' का अर्थ 'पछताना' लिखेंगे, 'पछतावा' नहीं।

लोकोक्ति क्या है: 'लोकोक्ति' शब्द 'लोक' और 'उक्ति' से बना है (लोक + उक्ति, गुण संधि), अर्थात् लोक में प्रचलित कथन; इसे कहावत भी कहते हैं। लोकोक्ति लोगों के लंबे अनुभव का निचोड़ है, जो किसी घटना, कहानी या जीवन-सत्य से बनकर पीढ़ियों से चली आ रही है। यह अपने-आप में पूर्ण वाक्य होती है और प्रायः किसी बात के समर्थन, उपदेश या व्यंग्य के लिए ज्यों-की-त्यों बोली जाती है। 'अंगूर खट्टे हैं' उस लोमड़ी की कहानी से आई है जो अंगूरों तक न पहुँच पाने पर उन्हें खट्टा बताकर चल दी: चुनाव हारकर नेता जी कहने लगे कि राजनीति अच्छे लोगों के लिए है ही नहीं, यानी अंगूर खट्टे हैं। बहुत-सी लोकोक्तियाँ अवधी, ब्रज या बोलियों के पुराने रूप में ही चलती हैं, जैसे 'अधजल गगरी छलकत जाय', 'थोथा चना बाजे घना'। कई में तुक और लय होती है, जिससे वे याद रह जाती हैं: 'जैसी करनी वैसी भरनी', 'नौ नकद न तेरह उधार'।

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर: पहला अंतर रचना का है, मुहावरा वाक्यांश है और लोकोक्ति पूर्ण वाक्य। दूसरा प्रयोग का है, मुहावरा वाक्य का अंग बनकर आता है और लोकोक्ति स्वतंत्र वाक्य या उद्धरण की तरह। तीसरा रूप का है, मुहावरे की क्रिया वाक्य के अनुसार बदलती है जबकि लोकोक्ति का रूप प्रायः नहीं बदलता। चौथा उद्देश्य का है, मुहावरा वाक्य में चमत्कार और लाक्षणिकता लाता है, लोकोक्ति किसी बात की पुष्टि करती है या अनुभव और उपदेश देती है। एक ही शब्द वाले उदाहरणों से अंतर साफ़ होता है: 'दाल न गलना' (युक्ति सफल न होना) मुहावरा है, सेठ के आगे ठग की दाल नहीं गली; 'घर की मुर्गी दाल बराबर' (घर की वस्तु या व्यक्ति का आदर न होना) लोकोक्ति है। इसी तरह 'अंधे की लकड़ी' (एकमात्र सहारा) मुहावरा है, जबकि 'अंधों में काना राजा' (अज्ञानियों में थोड़ा जानने वाला भी श्रेष्ठ माना जाता है) लोकोक्ति है।

वाक्य में मुहावरा कैसे बदलता है: मुहावरे का संज्ञा वाला भाग स्थिर रहता है और क्रिया वाक्य के काल, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलती है। काल: 'नौ-दो ग्यारह होना' से पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गया (भूतकाल), घंटी बजते ही बच्चे नौ-दो ग्यारह हो जाएँगे (भविष्यत् काल)। लिंग और वचन: 'फूला न समाना' से बेटा फूला न समाया, माँ फूली न समाई, दादाजी फूले न समाए (आदर के लिए बहुवचन)। 'ने' वाले वाक्य में क्रिया कर्ता से नहीं, मुहावरे के कर्म से मेल खाती है: ठग ने सेठ की आँखों में धूल झोंकी (धूल स्त्रीलिंग), उसने मुझे अँगूठा दिखाया (अँगूठा पुल्लिंग), माता-पिता ने बेटी के हाथ पीले कर दिए (हाथ बहुवचन)। मुहावरे के बीच संबंध बताने वाले शब्द भी जुड़ सकते हैं: इस शरारती बच्चे ने सबकी नाक में दम कर रखा है; इतना समझाया, पर उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। इनमें 'नाक', 'दम', 'कान', 'जूँ' जैसे मूल शब्द ज्यों-के-त्यों रहते हैं।

वाक्य बनाने के नियम: 'मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए' वाले प्रश्न में वाक्य ऐसा हो जिससे अर्थ अपने-आप खुल जाए। 'वह आग बबूला हो गया' अधूरा है; 'बेटे का झूठ पकड़कर पिताजी आग बबूला हो गए' ठीक है, क्योंकि कारण से क्रोध स्पष्ट है। मुहावरे का प्रयोग शब्दशः अर्थ में न कीजिए: 'उसने अखबार से मक्खी मारी' साधारण वाक्य है, जबकि 'ग्राहक न आने से दुकानदार दिन भर मक्खियाँ मारता रहा' में मुहावरा है। वाक्य में अर्थ दोबारा न लिखिए: 'वह आग बबूला अर्थात् क्रोधित हो गया' गलत शैली है। लोकोक्ति को प्रायः किसी स्थिति के निष्कर्ष की तरह वाक्य के अंत में रखते हैं: जो सबसे कम जानता है, वही सबसे अधिक बोल रहा है; सच है, अधजल गगरी छलकत जाय। उसे 'छलकती जाती है' जैसे आधुनिक रूप में नहीं बदलना चाहिए।

मुहावरा या लोकोक्ति कैसे पहचानें: 'निम्नलिखित में लोकोक्ति कौन-सी है?' जैसे प्रश्नों में केवल 'ना' वाला अंत देखना पर्याप्त नहीं; सही परख यह है कि वह अपने-आप में पूरी बात कहता है या नहीं। 'आम के आम गुठलियों के दाम', 'एक पंथ दो काज', 'ऊँची दुकान फीका पकवान' में क्रिया नहीं दिखती, फिर भी ये पूरी बात कहती हैं, इसलिए लोकोक्तियाँ हैं। 'आँख का तारा' और 'टेढ़ी खीर' वाक्य का अंग बनकर ही अर्थ देते हैं (वह माँ की आँखों का तारा है), इसलिए मुहावरे हैं। कुछ लोकोक्तियों से मुहावरे भी बन गए हैं: 'अंगूर खट्टे हैं' लोकोक्ति है, पर 'अंगूर खट्टे होना' मुहावरे की तरह भी चलता है। इसी कारण कुछ उदाहरणों का वर्गीकरण पुस्तकों में अलग मिलता है: 'ऊँट के मुँह में जीरा' (आवश्यकता से बहुत कम) को कुछ पुस्तकें मुहावरा और कुछ लोकोक्ति मानती हैं; ऐसे प्रश्न में विकल्पों में से सबसे स्पष्ट उदाहरण चुनिए।

उदाहरण

- मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है (अर्थ 'बातचीत' या 'अभ्यास', पुस्तकों में दोनों मिलते हैं); लोकोक्ति = लोक + उक्ति (गुण संधि), जिसे कहावत भी कहते हैं।
- मुहावरा वाक्यांश है और वाक्य का अंग बनता है: 'आँखें बिछाना' → गाँव वालों ने अतिथियों के स्वागत में आँखें बिछा दीं।
- लोकोक्ति पूरा वाक्य है और ज्यों-की-त्यों आती है: तुम्हारी शेखी सुनकर यही लगता है कि थोथा चना बाजे घना।
- 'ने' वाले वाक्य में क्रिया मुहावरे के कर्म से मिलती है: ठग ने सेठ की आँखों में धूल झोंकी (धूल स्त्रीलिंग); माता-पिता ने बेटी के हाथ पीले कर दिए (हाथ बहुवचन)।
- मुहावरे के शब्द नहीं बदलते: 'नाक में दम करना' सही, 'नासिका में दम करना' गलत; 'आँख का तारा' सही, 'आँख का सितारा' गलत।
- कौन लोकोक्ति है? अंधे की लकड़ी / अंधों में काना राजा / आँख का तारा / हाथ मलना → अंधों में काना राजा; बाकी तीनों मुहावरे हैं।
- 'ना' वाली परख अधूरी है: आँख का तारा, टेढ़ी खीर, आस्तीन का साँप मुहावरे हैं; आम के आम गुठलियों के दाम, एक पंथ दो काज लोकोक्तियाँ हैं।
- वाक्य ऐसा बनाएँ कि अर्थ खुले: 'बेटे का झूठ पकड़कर पिताजी आग बबूला हो गए' ठीक; 'वह आग बबूला हो गया' अधूरा।
- शब्दशः प्रयोग मुहावरा नहीं: 'उसने अखबार से मक्खी मारी' साधारण वाक्य; 'ग्राहक न आने से दुकानदार दिन भर मक्खियाँ मारता रहा' मुहावरा।

त्वरित दोहराव: मुहावरा अरबी शब्द (अर्थ 'बातचीत' या 'अभ्यास'), वाक्यांश, अर्थ लाक्षणिक (लक्षणा), शब्द नहीं बदलते, क्रिया काल-लिंग-वचन से बदलती है, 'ने' के साथ क्रिया कर्म से मिलती है (धूल झोंकी, हाथ पीले कर दिए); लोकोक्ति = लोक + उक्ति, कहावत, पूर्ण वाक्य, अनुभव का निचोड़, रूप नहीं बदलता; 'ना' की परख अधूरी: आँख का तारा मुहावरा, आम के आम गुठलियों के दाम लोकोक्ति; अंधे की लकड़ी मुहावरा, अंधों में काना राजा लोकोक्ति; ऊँट के मुँह में जीरा का वर्गीकरण पुस्तकों में भिन्न।

शरीर के अंगों से जुड़े मुहावरे: अर्थ और वाक्य-प्रयोग

आँख से जुड़े मुहावरे: शरीर के अंगों वाले मुहावरे परीक्षा में सबसे अधिक आते हैं; एक ही अंग से दर्जनों मुहावरे बनते हैं, इसलिए इन्हें अंग के अनुसार याद कीजिए। आँख का तारा (बहुत प्यारा): इकलौता होने के कारण मोहन अपनी दादी की आँखों का तारा है। आँख लगना (नींद आना): रात भर जागने के बाद भोर में जाकर उसकी आँख लगी। आँखें खुलना (सच्चाई का पता चलना, सचेत होना): व्यापार में घाटा होने पर उसकी आँखें खुलीं। आँख दिखाना (क्रोध से देखकर डराना): पिताजी के आँख दिखाते ही बच्चा चुप हो गया। आँखें फेर लेना (पहले जैसा प्रेम न रखना, उपेक्षा करना): धनी होते ही उसने पुराने मित्रों से आँखें फेर लीं। आँख का काँटा (बहुत खटकने वाला व्यक्ति): ईमानदार अफ़सर भ्रष्ट कर्मचारियों की आँख का काँटा बन गया। आँखों पर पर्दा पड़ना (सच दिखाई न देना): बेटे के मोह में माँ की आँखों पर पर्दा पड़ा था, उसे उसकी कोई बुराई नहीं दिखती थी।

नाक और कान के मुहावरे: नाक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। नाक कटना (प्रतिष्ठा नष्ट होना): बेटे के चोरी में पकड़े जाने से पूरे परिवार की नाक कट गई। नाक रखना (प्रतिष्ठा बचाना): अंतिम गेंद पर छक्का मारकर कप्तान ने टीम की नाक रख ली। नाक का बाल (बहुत प्रिय और विश्वासपात्र व्यक्ति): मुनीम जी सेठ जी की नाक के बाल हैं। नाक-भौं सिकोड़ना (अप्रसन्नता या घृणा प्रकट करना): सादा भोजन देखकर वह नाक-भौं सिकोड़ने लगा। नाकों चने चबवाना (बहुत तंग करना): रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवा दिए। कान खड़े होना (सावधान हो जाना): आधी रात को आहट सुनकर चौकीदार के कान खड़े हो गए। कान खाना (बकबक या शोर से परेशान करना): चुप भी रहो, सुबह से कान खा रहे हो। कान का कच्चा (बिना परखे दूसरों की बात मान लेने वाला): कान के कच्चे राजा ने चुगलखोरों के कहने पर ईमानदार मंत्री को निकाल दिया। कानों-कान खबर न होना (किसी को पता न चलना): चोर सारा सामान ले गए और किसी को कानों-कान खबर न हुई।

मुँह और दाँत के मुहावरे: मुँह की खाना (बुरी तरह हारना): डींग मारने वाला पहलवान पहले ही दाँव में मुँह की खा गया। मुँह फुलाना (रूठना): खिलौना न मिलने पर मुन्नी मुँह फुलाकर बैठ गई। मुँह ताकना (सहायता की आशा में दूसरों पर निर्भर रहना): आलसी व्यक्ति सदा दूसरों का मुँह ताकता है। मुँहतोड़ जवाब देना (ऐसा करारा उत्तर देना कि सामने वाला चुप हो जाए): सेना ने घुसपैठियों को मुँहतोड़ जवाब दिया। मुँह में पानी आना (लालच आना): गरम जलेबियाँ देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया। दाँत खट्टे करना (बुरी तरह हराना): शिवाजी ने मुगल सेना के दाँत खट्टे कर दिए। दाँत काटी रोटी (गहरी मित्रता): राम और श्याम में दाँत काटी रोटी है। दाँत पीसना (बहुत क्रोध करना): अपमान याद आते ही वह दाँत पीसने लगा। दाँतों तले उँगली दबाना (आश्चर्यचकित होना): नन्हे बालक को बड़े-बड़े जोड़ मन में करते देखकर सबने दाँतों तले उँगली दबा ली।

हाथ और पैर के मुहावरे: हाथ मलना (पछताना): जो विद्यार्थी समय पर नहीं पढ़ते, वे परिणाम आने पर हाथ मलते रह जाते हैं। हाथ धोकर पीछे पड़ना (पूरी शक्ति से किसी के पीछे लग जाना): पुलिस उस गिरोह के पीछे हाथ धोकर पड़ गई है। हाथ खींचना (सहायता या साथ देना बंद करना): घाटा होते ही साझेदार ने व्यापार से हाथ खींच लिया। हाथ साफ़ करना (चुरा लेना): भीड़ में किसी ने उसकी जेब पर हाथ साफ़ कर दिया। बाएँ हाथ का खेल (बहुत सरल काम): कुशल कारीगर के लिए यह मरम्मत बाएँ हाथ का खेल है। हाथ-पाँव फूलना (घबरा जाना): सामने साँप देखकर उसके हाथ-पाँव फूल गए। पैरों तले ज़मीन खिसकना (होश उड़ जाना): दुर्घटना का समाचार सुनकर उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। पाँव उखड़ना (टिक न पाना, हारकर भागना): भारी गोलाबारी से शत्रु सेना के पाँव उखड़ गए। एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना (पूरी शक्ति लगा देना): प्रथम आने के लिए उसने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।

सिर के मुहावरे: सिर पर कफ़न बाँधना (मरने को तैयार रहना): देश की रक्षा के लिए सैनिक सिर पर कफ़न बाँधकर निकल पड़े। सिर आँखों पर रखना (आदर से स्वीकार करना): शिष्य ने गुरु की आज्ञा को सिर आँखों पर रखा। सिर उठाना (विद्रोह करना): लगान बढ़ने पर किसानों ने सिर उठाया। सिर नीचा होना (लज्जित होना): बेटे की करतूत से पिता का सिर नीचा हो गया। सिर धुनना (पछताना, शोक करना): सब कुछ जुए में हारकर वह सिर धुनने लगा।

दिल और कलेजे के मुहावरे: ये प्रायः दुख, भय, साहस और प्रसन्नता बताते हैं। कलेजा मुँह को आना (बहुत दुखी या व्याकुल होना): बाढ़ पीड़ितों की दशा देखकर कलेजा मुँह को आ गया। कलेजे पर पत्थर रखना (दुख सहने के लिए मन कड़ा करना): माँ ने कलेजे पर पत्थर रखकर बेटे को सीमा पर भेजा। कलेजा ठंडा होना (मन को संतोष मिलना): हत्यारे को दंड मिलने पर पीड़ित परिवार का कलेजा ठंडा हुआ। कलेजा फटना (असहनीय दुख होना): बेटे की मृत्यु का समाचार सुनकर माँ का कलेजा फट गया। दिल बाग-बाग होना (बहुत प्रसन्न होना): वर्षों बाद पुराने मित्र को देखकर उसका दिल बाग-बाग हो गया।

पेट और छाती के मुहावरे: पेट काटना (भूखे रहकर या बहुत कम खर्च करके बचत करना): किसान ने पेट काटकर बेटे को पढ़ाया। पेट में दाढ़ी होना (कम आयु में बहुत चतुर होना): यह छोटा-सा लड़का बड़ों को बातों में हरा देता है, इसके पेट में दाढ़ी है। पेट में बात न पचना (कोई बात छिपा न पाना): उसके पेट में कोई बात नहीं पचती, तुरंत सबको बता देता है। छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या से जलना): पड़ोसी की उन्नति देखकर उसकी छाती पर साँप लोटने लगा। छाती पर मूँग दलना (पास रहकर दुख देना): निकम्मा बेटा घर बैठे माँ-बाप की छाती पर मूँग दल रहा है। छाती फूलना (गर्व होना): बेटी के पदक जीतने पर पिता की छाती फूल गई।

मिलते-जुलते मुहावरों के जाल: एक ही अंग के मुहावरों में क्रिया बदलते ही अर्थ उलट सकता है, इसलिए जोड़े बनाकर याद कीजिए। नाक कटना (प्रतिष्ठा जाना) और नाक रखना (प्रतिष्ठा बचाना) उलटे हैं। मुँह की खाना में कर्ता स्वयं हारता है, दाँत खट्टे करना में कर्ता दूसरे को हराता है: 'शत्रु ने मुँह की खाई' और 'हमने शत्रु के दाँत खट्टे किए' एक ही घटना बताते हैं। कान भरना (चुगली करना), कान खाना (बकबक से तंग करना), कान खड़े होना (सावधान होना) और कान पकड़ना (भूल मानकर फिर न करने का प्रण करना) चारों अलग हैं। सिर उठाना (विद्रोह) और सिर नीचा होना (लज्जा) भी भिन्न हैं। घबराहट के लिए कई मुहावरे हैं: हाथ-पाँव फूलना, पैरों तले ज़मीन खिसकना, दिन में तारे दिखाई देना। टेढ़ी खीर (कठिन काम) का उलटा बाएँ हाथ का खेल (सरल काम) है।

उदाहरण

- आँख लगना = नींद आना; आँखें खुलना = सच्चाई का पता चलना; आँखें फेर लेना = उपेक्षा करना; आँख का काँटा = बहुत खटकने वाला व्यक्ति।
- नाक कटना = प्रतिष्ठा जाना, नाक रखना = प्रतिष्ठा बचाना (उलटे अर्थ); नाक का बाल = बहुत प्रिय व्यक्ति; नाकों चने चबवाना = बहुत तंग करना।
- कान भरना = चुगली करना; कान खाना = बकबक से तंग करना; कान खड़े होना = सावधान होना; कान का कच्चा = बिना परखे बात मानने वाला।
- 'डींग मारने वाला पहलवान पहले ही दाँव में ___।' → मुँह की खा गया (स्वयं हारना); दाँत खट्टे करना का अर्थ दूसरे को हराना है।
- दाँत काटी रोटी = गहरी मित्रता; दाँत पीसना = बहुत क्रोध करना; दाँतों तले उँगली दबाना = आश्चर्यचकित होना; मुँह फुलाना = रूठना।
- हाथ मलना = पछताना; हाथ खींचना = सहायता बंद करना; हाथ साफ़ करना = चुरा लेना; बाएँ हाथ का खेल = बहुत सरल काम (टेढ़ी खीर का उलटा)।
- 'सामने साँप देखकर उसके ___ गए।' → हाथ-पाँव फूल (घबराना); पैरों तले ज़मीन खिसकना का अर्थ भी होश उड़ जाना है।
- सिर पर कफ़न बाँधना = मरने को तैयार रहना; सिर उठाना = विद्रोह करना; सिर नीचा होना = लज्जित होना; सिर धुनना = पछताना।
- कलेजा मुँह को आना = बहुत दुखी या व्याकुल होना; कलेजे पर पत्थर रखना = मन कड़ा करना; पेट में दाढ़ी होना = कम आयु में बहुत चतुर होना; छाती पर मूँग दलना = पास रहकर दुख देना।
- अन्य अंग: उँगली उठाना = दोष लगाना; घुटने टेकना = हार मान लेना; तलवे चाटना = चापलूसी करना; बाल बाँका न होना = कोई हानि न होना; खून खौलना = बहुत क्रोध आना।

> **त्वरित दोहराव:** आँख लगना नींद, आँखें खुलना सचेत होना, आँखें फेरना उपेक्षा, आँख का काँटा खटकने वाला; नाक कटना/रखना प्रतिष्ठा जाना/बचाना, नाक का बाल प्रिय; कान खड़े होना सावधान, कान खाना तंग करना, कान का कच्चा; मुँह की खाना हारना, दाँत खट्टे करना हराना, दाँत काटी रोटी मित्रता; हाथ मलना पछताना, बाएँ हाथ का खेल सरल, हाथ-पाँव फूलना घबराना; सिर उठाना विद्रोह, सिर नीचा होना लज्जा; कलेजा ठंडा होना संतोष; पेट में दाढ़ी चतुर; छाती पर साँप लोटना ईर्ष्या, छाती पर मूँग दलना पास रहकर दुख देना।

पशु-पक्षी, खान-पान, रंग, संख्या और प्रकृति से जुड़े मुहावरे

पशुओं से जुड़े मुहावरे: शरीर के अंगों के बाद पशु-पक्षियों से जुड़े मुहावरों का समूह बहुत बड़ा है, क्योंकि उनके स्वभाव लोकजीवन में सब जानते थे, जैसे बिल्ली का सहमना, बगुले का ध्यान लगाना, गीदड़ का डरपोकपन। भीगी बिल्ली बनना (डर से सहम जाना): पिताजी के आते ही शोर मचाने वाला राजू भीगी बिल्ली बन गया। गीदड़ भभकी (झूठी धमकी): उसकी गीदड़ भभकी से कोई नहीं डरता। कोल्हू का बैल (बिना रुके कठोर परिश्रम करने वाला): वह दिन-रात कोल्हू के बैल की तरह काम में जुटा रहता है। घोड़े बेचकर सोना (निश्चिंत होकर गहरी नींद सोना): परीक्षा समाप्त होते ही वह घोड़े बेचकर सो गया। साँप सूँघ जाना (डर से चुप या स्तब्ध हो जाना): प्रधानाचार्य को सामने देखकर सबको साँप सूँघ गया। घड़ियाली आँसू बहाना (दिखावटी दुख या झूठी सहानुभूति प्रकट करना): ज़मींदार किसानों की बदहाली पर घड़ियाली आँसू बहा रहा था। भैंस के आगे बीन बजाना (मूर्ख के आगे ज्ञान की बात करना व्यर्थ होना): उसे शास्त्रीय संगीत समझाना भैंस के आगे बीन बजाना है।

पक्षियों और कीड़ों से जुड़े मुहावरे: उल्लू बनाना (मूर्ख बनाना): दुकानदार ने नकली घड़ी बेचकर ग्राहक को उल्लू बना दिया। हाथों के तोते उड़ जाना (अचानक बहुत घबरा जाना): सूची में अपना नाम न देखकर उसके हाथों के तोते उड़ गए। बगुला भगत (ऊपर से साधु, भीतर से कपटी): वह बगुला भगत है, माला जपता है पर दूसरों का धन हड़पता है। सोने की चिड़िया (बहुत धनी और समृद्ध): प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। मक्खी पर मक्खी मारना (बिना समझे ज्यों-की-त्यों नकल करना): उसने मित्र की कॉपी से मक्खी पर मक्खी मार दी, गलतियाँ भी वैसी ही उतार लीं। किताबी कीड़ा (हर समय पढ़ने में लगा रहने वाला): रमेश किताबी कीड़ा है, खेलने कभी नहीं जाता।

खाने-पीने की चीज़ों से जुड़े मुहावरे: दाल में काला होना (संदेह की बात होना): अजनबी का रोज़ रात घर के चक्कर लगाना बताता है कि दाल में कुछ काला है। गुड़ गोबर करना (बना-बनाया काम बिगाड़ देना): अंतिम क्षण की एक भूल ने सारा गुड़ गोबर कर दिया। खिचड़ी पकाना (गुप्त रूप से योजना बनाना): दोनों भाई मिलकर कोई खिचड़ी पका रहे हैं। ख्याली पुलाव पकाना (मन-ही-मन असंभव कल्पनाएँ करना): काम कुछ करता नहीं, बस करोड़पति बनने के ख्याली पुलाव पकाता है। पापड़ बेलना (बहुत कष्ट उठाना, तरह-तरह के काम करना): इस नौकरी के लिए उसे बहुत पापड़ बेलने पड़े। चने के झाड़ पर चढ़ाना (झूठी प्रशंसा करके फुला देना): चापलूसों ने उसे चने के झाड़ पर चढ़ा दिया। घी के दीये जलाना (बहुत खुशी मनाना): राम के अयोध्या लौटने पर लोगों ने घी के दीये जलाए। दूध का दूध और पानी का पानी करना (ठीक-ठीक न्याय करना): पंचायत ने दोनों पक्षों को सुनकर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। नमक हराम (कृतघ्न): जिस मालिक ने पाला, उसी को लूटकर नौकर नमक हराम निकला।

रंगों से जुड़े मुहावरे: लाल-पीला होना (बहुत क्रोधित होना): नौकर की लापरवाही पर मालिक लाल-पीला हो गया। रंग उड़ना (डर या लज्जा से चेहरा फीका पड़ जाना): चोरी पकड़ी जाते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया। रंग जमाना (प्रभाव जमाना): युवा कवि ने पहली ही कविता से सम्मेलन में रंग जमा दिया। रंग में भंग पड़ना (आनंद में बाधा पड़ना): विवाह के बीच आँधी आने से रंग में भंग पड़ गया। सफ़ेद झूठ (सरासर झूठ): यह कहना सफ़ेद झूठ है कि मैं उस दिन वहाँ था। सब्ज़ बाग दिखाना (झूठी आशाएँ देना): ठग ने दुगुने लाभ के सब्ज़ बाग दिखाकर लोगों का धन हड़प लिया। रंगा सियार (ढोंगी, धोखेबाज़): समाजसेवा का नाटक करने वाला वह रंगा सियार निकला।

संख्याओं से जुड़े मुहावरे: इनमें गिनती का अर्थ नहीं लिया जाता, यही परीक्षा का सबसे बड़ा जाल है। तीन-तेरह होना (तितर-बितर हो जाना): पिता के मरते ही परिवार तीन-तेरह हो गया। तीन-पाँच करना (टालमटोल करना, इधर-उधर की बातें या व्यर्थ बहस करना): ज़्यादा तीन-पाँच मत करो, चुपचाप काम पूरा करो। छत्तीस का आँकड़ा होना (विरोध या शत्रुता होना): दोनों पड़ोसियों में छत्तीस का आँकड़ा है। उन्नीस-बीस का अंतर (बहुत थोड़ा अंतर): दोनों खिलाड़ियों में उन्नीस-बीस का ही अंतर है। छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना): भारतीय सैनिकों ने शत्रु के छक्के छुड़ा दिए। चार चाँद लगाना (शोभा बढ़ाना): मुख्य अतिथि के आगमन ने समारोह में चार चाँद लगा दिए। छठी का दूध याद आना (बहुत कठिनाई का अनुभव होना): खड़ी चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते छठी का दूध याद आ गया।

आठ-आठ आँसू रोना (बहुत अधिक रोना या पछताना): बेटे के परदेस जाने पर माँ आठ-आठ आँसू रोई। निन्यानबे के फेर में पड़ना (धन जोड़ने की चिंता में पड़ना): निन्यानबे के फेर में पड़कर सेठ जी का चैन चला गया।

प्रकृति से जुड़े मुहावरे: आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर मचाना): छुट्टी की घंटी बजते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया। आकाश-पाताल एक करना (बहुत प्रयत्न करना): खोए बेटे को ढूँढ़ने के लिए पिता ने आकाश-पाताल एक कर दिया। ज़मीन-आसमान का अंतर (बहुत अधिक अंतर): दोनों भाइयों के स्वभाव में ज़मीन-आसमान का अंतर है। हवा से बातें करना (बहुत तेज़ दौड़ना): महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक हवा से बातें करता था। आग में घी डालना (क्रोध या झगड़े को और भड़काना): उसकी कड़वी बात ने आग में घी डालने का काम किया। पत्थर की लकीर (कभी न बदलने वाली बात): भीष्म की प्रतिज्ञा पत्थर की लकीर थी। मिट्टी में मिलाना (नष्ट कर देना): जुए की लत ने पुरखों की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला दी। घाट-घाट का पानी पीना (बहुत अनुभवी होना): वह घाट-घाट का पानी पिए हुए है, उसे कोई नहीं ठग सकता। सूरज को दीपक दिखाना (महान व्यक्ति के आगे तुच्छ प्रयास करना): तुलसीदास की प्रशंसा मैं करूँ, यह सूरज को दीपक दिखाना है। गूलर का फूल (दुर्लभ वस्तु): आजकल ऐसा निःस्वार्थ व्यक्ति गूलर का फूल हो गया है।

मिलते-जुलते मुहावरों का अंतर: उन्नीस-बीस का अंतर (बहुत थोड़ा) और ज़मीन-आसमान का अंतर (बहुत अधिक) उलटे हैं। तीन-तेरह होना (बिखर जाना), नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना) और तीन-पाँच करना (बहस या टालमटोल) को गिनती से न जोड़ें। उल्लू बनाना (दूसरे को मूर्ख बनाना) और अपना उल्लू सीधा करना (अपना स्वार्थ साधना) अलग हैं। गीदड़ भभकी में धमकाने वाला खोखला है, भीगी बिल्ली बनने में डरने वाला सहमा हुआ है। चार चाँद लगाना (शोभा बढ़ाना) और ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) में चाँद एक है, अर्थ अलग। घी के दीये जलाना खुशी है, गुड़ गोबर करना काम बिगाड़ना। ख्याली पुलाव पकाना और हवाई किले बनाना, दोनों का अर्थ कोरी कल्पनाएँ करना है। 'तीन-पाँच करना' के अर्थ शब्दकोशों में एक से अधिक मिलते हैं (टालमटोल, इधर-उधर की बातें, झगड़ा, हेरा-फेरी), इसलिए वाक्य का प्रसंग देखकर अर्थ चुनिए।

उदाहरण

- भीगी बिल्ली बनना = डर से सहम जाना; गीदड़ भभकी = झूठी धमकी; घोड़े बेचकर सोना = निश्चिंत होकर सोना; साँप सूँघ जाना = डर से स्तब्ध हो जाना।
- हाथों के तोते उड़ जाना = अचानक बहुत घबरा जाना; बगुला भगत = ढोंगी; सोने की चिड़िया = बहुत समृद्ध; किताबी कीड़ा = हर समय पढ़ने वाला।
- दाल में काला होना = संदेह की बात; दाल न गलना = युक्ति सफल न होना; गुड़ गोबर करना = बना काम बिगाड़ना; खिचड़ी पकाना = गुप्त योजना बनाना।
- 'पंचायत ने दोनों पक्षों को सुनकर ___ कर दिया।' → दूध का दूध और पानी का पानी (ठीक-ठीक न्याय)।
- लाल-पीला होना = बहुत क्रोधित होना; रंग उड़ना = डर से चेहरा फीका पड़ना; रंग जमाना = प्रभाव जमाना; सब्ज़ बाग दिखाना = झूठी आशा देना; सफ़ेद झूठ = सरासर झूठ।
- छत्तीस का आँकड़ा होना = विरोध या शत्रुता होना; उन्नीस-बीस का अंतर = बहुत थोड़ा अंतर; तीन-तेरह होना = बिखर जाना; छक्के छुड़ाना = बुरी तरह हराना।
- चार चाँद लगाना = शोभा बढ़ाना; छठी का दूध याद आना = बहुत कठिनाई होना; आठ-आठ आँसू रोना = बहुत रोना; निन्यानबे के फेर में पड़ना = धन जोड़ने की चिंता में पड़ना।
- 'महाराणा प्रताप का चेतक ___ करता था।' → हवा से बातें (बहुत तेज़ दौड़ना); आसमान से बातें करना = बहुत ऊँचा होना।
- आग में घी डालना = झगड़ा और भड़काना; पत्थर की लकीर = अटल बात; घाट-घाट का पानी पीना = बहुत अनुभवी होना; गूलर का फूल = दुर्लभ वस्तु।
- उल्लू बनाना = दूसरे को मूर्ख बनाना, पर अपना उल्लू सीधा करना = अपना स्वार्थ साधना; दोनों में उल्लू है, अर्थ अलग।

त्वरित दोहराव: भीगी बिल्ली सहमना, गीदड़ भभकी झूठी धमकी, कोल्हू का बैल कठोर परिश्रमी, घड़ियाली आँसू दिखावटी दुख; हाथों के तोते उड़ना घबराना, बगुला भगत ढोंगी; दाल में काला संदेह, गुड़ गोबर काम बिगाड़ना, खिचड़ी पकाना गुप्त योजना, पापड़ बेलना कष्ट उठाना; लाल-पीला क्रोध, रंग उड़ना घबराना, सब्ज़ बाग झूठी आशा; छत्तीस का आँकड़ा विरोध, उन्नीस-बीस थोड़ा अंतर, तीन-तेरह बिखरना, चार चाँद शोभा, छठी का दूध कठिनाई; आकाश-पाताल एक करना प्रयत्न, ज़मीन-आसमान का अंतर बहुत अंतर, पत्थर की लकीर अटल, गूलर का फूल दुर्लभ।

प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ (भाग 1): अर्थ और वाक्य-प्रयोग सहित

दिखावे और घमंड की लोकोक्तियाँ: लोकोक्ति किसी छोटी कहानी या जीवन-स्थिति का सार होती है, इसलिए पहले उसका चित्र मन में बनाइए, फिर अर्थ जोड़िए; नीचे हर लोकोक्ति के साथ अर्थ और ऐसा वाक्य है जिसमें वह ज्यों-की-त्यों आती है। अधजल गगरी छलकत जाय (कम ज्ञान या धन वाला अधिक दिखावा करता है); आधा भरा घड़ा चलते समय छलकता है, पूरा भरा नहीं: चार किताबें पढ़कर वह सबको उपदेश देता फिरता है, अधजल गगरी छलकत जाय। थोथा चना बाजे घना (गुणहीन व्यक्ति अधिक शोर करता है): जिसने कभी बल्ला नहीं पकड़ा, वही क्रिकेट पर सबसे ज़्यादा बोलता है; थोथा चना बाजे घना। ऊँची दुकान फीका पकवान (बाहर सजावट या बड़ा नाम, भीतर गुण कम): शहर के सबसे महँगे होटल का खाना बेस्वाद निकला, ऊँची दुकान फीका पकवान। नाम बड़े और दर्शन छोटे (प्रसिद्धि बहुत, वास्तविकता कम): जिस विद्वान की इतनी चर्चा थी, वह एक प्रश्न का उत्तर न दे सका; नाम बड़े और दर्शन छोटे। आँख का अंधा नाम नयनसुख (नाम के विपरीत गुण): नाम तो वीर सिंह है, पर चूहे से डरता है; आँख का अंधा नाम नयनसुख। हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और (कहना कुछ, करना कुछ): नेता जी मंच पर सादगी का उपदेश देते हैं और घर में ठाट-बाट से रहते हैं; हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और।

लाभ और लालच की लोकोक्तियाँ: आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ; एक ही वस्तु से दो लाभ): पुरानी किताबें बेचकर पैसे भी मिले और अलमारी भी खाली हो गई, आम के आम गुठलियों के दाम। एक पंथ दो काज (एक प्रयत्न से दो काम): दिल्ली जाकर परीक्षा भी दे आया और मौसी से भी मिल आया, एक पंथ दो काज। नौ नकद न तेरह उधार (भविष्य के बड़े लाभ से तुरंत का थोड़ा लाभ अच्छा): दुकानदार ने उधार के बड़े सौदे के बदले नकद में कम दाम पर माल बेच दिया, क्योंकि नौ नकद न तेरह उधार। आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे (अधिक के लालच में हाथ का भी चला जाता है): पक्की नौकरी छोड़कर झटपट अमीर बनने की योजना में पैसा लगाया और दोनों खो बैठा; आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे। बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा (बिना प्रयत्न संयोग से मनचाही वस्तु मिल जाना): मैं टिकट के लिए परेशान था कि मित्र की यात्रा रद्द हुई और उसने अपना टिकट मुझे दे दिया, बिल्ली के

भाग्य से छींका टूटा। अंधा क्या चाहे दो आँखें (जो चाहिए वही मिल जाना): भूखे यात्री को किसी ने भोजन पर बुलाया तो वह मन में बोला, अंधा क्या चाहे दो आँखें।

दोष और बहाने की लोकोक्तियाँ: उलटा चोर कोतवाल को डाँटे (दोषी उलटे निर्दोष पर दोष लगाए): गलत दिशा से गाड़ी चलाकर टक्कर मारने वाला ही हमें दोषी बताने लगा; उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। चोर की दाढ़ी में तिनका (दोषी स्वयं शंकित रहता है): चोरी की बात छिड़ते ही नौकर बिना पूछे सफ़ाई देने लगा, चोर की दाढ़ी में तिनका। नाच न जाने आँगन टेढ़ा (अपनी अयोग्यता का दोष साधन या परिस्थिति पर डालना): सुंदर लिख नहीं पाता तो कलम को दोष देता है; नाच न जाने आँगन टेढ़ा। खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे (लज्जित या असफल होकर क्रोध दूसरों पर उतारना): मैच हारकर कप्तान अंपायर पर बरस पड़ा, खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे। अंगूर खट्टे हैं (न मिल पाने पर वस्तु को ही बुरा बताना): चयन न होने पर बोला कि वह नौकरी तो वैसे भी अच्छी नहीं थी; अंगूर खट्टे हैं। चोर-चोर मौसेरे भाई (एक जैसे बुरे लोग आपस में मिल जाते हैं): ठेकेदार और भ्रष्ट बाबू ने मिलकर सड़क का पैसा खा लिया, चोर-चोर मौसेरे भाई।

शक्ति, संगति और विश्वासघात की लोकोक्तियाँ: जिसकी लाठी उसकी भैंस (शक्तिशाली की ही चलती है): गाँव के दबंग ने गरीब का खेत हथिया लिया और कोई कुछ न कर सका; जिसकी लाठी उसकी भैंस। जल में रहकर मगर से बैर (जिसके आश्रय में रहें उससे शत्रुता ठीक नहीं): इसी दफ़्तर में काम करके अपने अधिकारी से झगड़ना जल में रहकर मगर से बैर करना है। घर का भेदी लंका ढाए (भीतर का भेद जानने वाला सबसे बड़ी हानि करता है); इसे प्रायः रामकथा के विभीषण से जोड़ा जाता है, जो रावण का भाई होकर राम से जा मिला था: कंपनी का गुप्त सूत्र उसी के कर्मचारी ने बेचा; घर का भेदी लंका ढाए। अंधों में काना राजा (अज्ञानियों में थोड़ा जानने वाला भी श्रेष्ठ माना जाता है): गाँव में वही अकेला पढ़ा-लिखा है, इसलिए सबकी चिट्ठियाँ वही पढ़ता है; अंधों में काना राजा। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है (एक बुरा व्यक्ति पूरे समूह को बदनाम कर देता है): एक रिश्वतखोर कर्मचारी के कारण पूरा विभाग बदनाम हो गया; सच है, एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता): गाँव की सड़क तभी बनी जब सब मिलकर जुटे, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

समय, कर्म और परिश्रम की लोकोक्तियाँ: अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (समय निकल जाने पर पछताना व्यर्थ): साल भर खेलते रहे, अब परीक्षा से एक दिन पहले रोने से क्या होगा; अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। का बरखा जब कृषि सुखाने (समय बीत जाने पर मिली सहायता व्यर्थ है), जो तुलसीदास के रामचरितमानस की एक पंक्ति से आई है: रोगी के मरने के बाद दवा पहुँची, का बरखा जब कृषि सुखाने। खोदा पहाड़ निकली चुहिया (बहुत परिश्रम, बहुत थोड़ा फल): महीने भर की खुदाई के बाद वहाँ से केवल कुछ टूटे बर्तन निकले, खोदा पहाड़ निकली चुहिया। जैसी करनी वैसी भरनी (जैसा कर्म, वैसा फल): जीवन भर सबको सताने वाला बुढ़ापे में अकेला रह गया; जैसी करनी वैसी भरनी। बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय (बुरे कर्म करके अच्छे फल की आशा व्यर्थ): बच्चों को संस्कार नहीं दिए और अब उनसे सेवा की आशा करते हो? बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय। मन चंगा तो कठौती में गंगा (मन पवित्र हो तो घर ही तीर्थ है), जो संत रैदास से जुड़ी है: सच्चे मन से काम करने वाले को तीर्थ जाने की आवश्यकता नहीं, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

लोकोक्ति का रूप न बदलें: लोकोक्तियों में 'छलकत', 'होत', 'बाजे', 'ढाए', 'होय' जैसे पुराने रूप हैं; इन्हें 'छलकती', 'होता', 'बजता' में न बदलें। कहीं-कहीं रूप-भेद मिलते हैं: 'अधजल गगरी छलकत जाय' के साथ 'छलकत जाए', 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' के साथ 'नाच न आवे आँगन टेढ़ा', और 'बोया पेड़ बबूल का' के अंत में 'आम कहाँ से होय' के साथ 'आम कहाँ से खाय'। परीक्षा में इनमें से कोई भी रूप दिया हो, अर्थ एक ही है; रूप के अंतर को गलती न समझें।

उदाहरण

- अधजल गगरी छलकत जाय और थोथा चना बाजे घना: दोनों में कम ज्ञान या गुण वाला अधिक दिखावा और शोर करता है।
- ऊँची दुकान फीका पकवान = बाहर सजावट, भीतर गुण कम; नाम बड़े और दर्शन छोटे = प्रसिद्धि बहुत, वास्तविकता कम; आँख का अंधा नाम नयनसुख = नाम के उलटे गुण।
- हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और = कथनी और करनी में अंतर, कपटपूर्ण व्यवहार।
- आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ; एक पंथ दो काज = एक प्रयत्न से दो काम; नौ नकद न तेरह उधार = तुरंत का थोड़ा लाभ, बाद के बड़े लाभ से अच्छा।
- आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे = अधिक के लालच में हाथ का भी खो देना; बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा = संयोग से अनायास लाभ।
- उलटा चोर कोतवाल को डाँटे = दोषी ही निर्दोष पर दोष लगाए; चोर की दाढ़ी में तिनका = दोषी स्वयं शंकित रहे; चोर-चोर मौसेरे भाई = बुरे लोग आपस में मिल जाते हैं।
- नाच न जाने आँगन टेढ़ा = अपनी कमी का दोष साधन पर; खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे = लज्जा का क्रोध दूसरों पर; अंगूर खट्टे हैं = न मिलने पर वस्तु को बुरा बताना।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस = शक्तिशाली की चलती है; जल में रहकर मगर से बैर = आश्रयदाता से शत्रुता अनुचित; घर का भेदी लंका ढाए = भीतर का भेदी सबसे घातक (विभीषण)।
- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत और का बरखा जब कृषि सुखाने: दोनों में समय निकल जाने के बाद पछताना या सहायता व्यर्थ है।
- जैसी करनी वैसी भरनी = जैसा कर्म वैसा फल; बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय = बुरे कर्म से अच्छा फल नहीं; खोदा पहाड़ निकली चुहिया = परिश्रम बहुत, फल थोड़ा।

> **त्वरित दोहराव:** अधजल गगरी छलकत जाय, थोथा चना बाजे घना = दिखावा; ऊँची दुकान फीका पकवान, नाम बड़े दर्शन छोटे = बाहर चमक भीतर खोखला; हाथी के दाँत = कथनी-करनी में अंतर; आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ; एक पंथ दो काज = एक प्रयत्न दो काम; नौ नकद न तेरह उधार; उलटा चोर कोतवाल को डाँटे; चोर की दाढ़ी में तिनका; नाच न जाने आँगन टेढ़ा; खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे; अंगूर खट्टे हैं; जिसकी लाठी उसकी भैंस; घर का भेदी लंका ढाए; अंधों में काना राजा; का बरखा जब कृषि सुखाने (मानस); मन चंगा तो कठौती में गंगा (रैदास)।

प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ (भाग 2) और अर्थ वाले प्रश्न हल करने की विधि

संकट और विपत्ति की लोकोक्तियाँ: आसमान से गिरा खजूर में अटका (एक संकट से निकलकर दूसरे में फँस जाना): बाढ़ से बचकर शहर पहुँचे तो वहाँ दंगा हो गया; आसमान से गिरा खजूर में अटका। कंगाली में आटा गीला (संकट में और संकट आ पड़ना): नौकरी पहले ही छूट गई थी, ऊपर से घर में चोरी हो गई; कंगाली में आटा गीला। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े (काम आरंभ करते ही विघ्न आना): दुकान खोलने के पहले ही दिन बाज़ार बंद हो गया, यानी सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े। डूबते को तिनके का सहारा (संकट में छोटी सहायता भी बड़ी लगती है): बेरोज़गारी के दिनों में ट्यूशन से मिले थोड़े पैसे डूबते को तिनके का सहारा बने। ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर (कठिन काम हाथ में लेने पर कष्टों से नहीं डरना चाहिए): सेना में भर्ती हुए हो तो कठिन प्रशिक्षण से कैसा डर; ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर। दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है (एक बार धोखा खाया व्यक्ति आगे बहुत सावधान रहता है): एक बार ठगे जाने के बाद वह हर कागज़ कई बार पढ़कर हस्ताक्षर करता है; दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है।

घर, समाज और स्वभाव की लोकोक्तियाँ: घर की मुर्गी दाल बराबर (घर की सुलभ वस्तु या व्यक्ति का आदर नहीं होता): घर में ही गणित के अध्यापक पिता हैं, फिर भी बेटा बाहर ट्यूशन पढ़ने जाता है; घर की मुर्गी दाल बराबर। घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध (गुणी का आदर अपने स्थान पर नहीं, बाहर होता है): जिस गायक को अपने कस्बे में कोई नहीं पूछता था, उसे विदेश में सम्मान मिला; घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध। दूर के ढोल सुहावने (दूर से हर चीज़ अच्छी लगती है, पास जाकर कमियाँ दिखती हैं): शहर की नौकरी गाँव से बड़ी आकर्षक लगती थी, वहाँ जाकर समझ आया कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं। चिराग तले अँधेरा (जहाँ अच्छाई की आशा हो, वहीं बुराई होना): थानेदार का बेटा ही चोरी करता पकड़ा गया, चिराग तले अँधेरा। आप भला तो जग भला (स्वयं अच्छे हों तो संसार भी अच्छा लगता है): तुम सबसे प्रेम से मिलोगे तो सब तुमसे प्रेम से मिलेंगे; आप भला तो जग भला। होनहार बिरवान के होत चीकने पात (होनहार के लक्षण बचपन में ही दिख जाते हैं): छोटी आयु में ही वह शतरंज में बड़ों को हरा देता था; होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

संयम, धैर्य और प्रयास की लोकोक्तियाँ: तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर (आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए; सौर यानी ओढ़ने की रज़ाई या चादर): कम वेतन में महँगी गाड़ी खरीदकर वह कर्ज़ में डूब गया; तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है (थोड़ा-थोड़ा जोड़ने से बहुत हो जाता है): रोज़ थोड़े पैसे बचाकर उसने साल के अंत में अच्छी रकम जोड़ ली; बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। सहज पके सो मीठा होय (धैर्य से किया गया काम अच्छा होता है): जल्दबाज़ी मत करो, धीरे-धीरे तैयारी करो; सहज पके सो मीठा होय। जहाँ चाह वहाँ राह (दृढ़ इच्छा हो तो उपाय मिल ही जाता है): पैर में चोट के बाद भी उसने दौड़ पूरी की; सच है, जहाँ चाह वहाँ राह। हाथ कंगन को आरसी क्या (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं): मेरे परिश्रम पर संदेह है तो मेरी उत्तर-पुस्तिका देख लो; हाथ कंगन को आरसी क्या।

मिलते-जुलते अर्थ वाली लोकोक्तियों में अंतर: परीक्षा में एक जैसे भाव वाली दो लोकोक्तियाँ अक्सर विकल्पों में साथ रखी जाती हैं, इसलिए बारीक अंतर पकड़िए। संकट: 'आसमान से गिरा खजूर में अटका' में एक संकट से छूटकर दूसरे में फँसना है, 'कंगाली में आटा गीला' में पहले संकट के ऊपर दूसरा संकट आ पड़ना, और 'सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े' में काम की शुरुआत में ही बाधा। दिखावा: 'अधजल गगरी' और 'थोथा चना' व्यक्ति के अधूरे ज्ञान और शोर के लिए हैं, जबकि 'ऊँची दुकान फीका पकवान' प्रायः किसी स्थान, वस्तु या संस्था की बाहरी चमक और भीतरी खोखलेपन के लिए आती है। लाभ: 'आम के आम गुठलियों के दाम' में एक ही वस्तु से दोहरा लाभ है और 'एक पंथ दो काज' में एक ही प्रयत्न या यात्रा से दो काम बनते हैं; कई पुस्तकें दोनों का अर्थ 'दोहरा लाभ' ही लिखती हैं, इसलिए दोनों विकल्प हों तो प्रश्न के शब्द ('लाभ' या 'काम') देखकर चुनिए। अनादर: 'घर की मुर्गी दाल बराबर' में सुलभ होने से आदर घटता है, 'घर का जोगी जोगड़ा' में गुणी का अपने ही स्थान पर अनादर है।

उलटे और भ्रम वाले जोड़े: 'जैसी करनी वैसी भरनी' (जो करे वही भोगे) के विपरीत 'करे कोई भरे कोई' (दोष एक का, दंड दूसरे को) है। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' अकेलेपन की दुर्बलता बताती है, जबकि 'एक और एक ग्यारह होते हैं' मेल की शक्ति। 'ताली एक हाथ से नहीं बजती' का अर्थ है कि झगड़े में दोनों पक्ष दोषी होते हैं: दोनों पड़ोसी एक-दूसरे को दोष दे रहे थे, पर ताली एक हाथ से नहीं बजती। 'एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं' (दो समान बलशाली एक स्थान पर साथ नहीं रह सकते) को 'एक अनार सौ बीमार' (वस्तु एक, चाहने वाले अनेक) से न मिलाएँ।

अर्थ चुनने के प्रश्नों के जाल: पहला जाल शब्दशः अर्थ है: 'आम के आम गुठलियों के दाम' के विकल्पों में 'आम और गुठली दोनों बेचना' जैसा विकल्प रखा जाता है, जबकि सही अर्थ 'दोहरा लाभ' है। दूसरा जाल शब्दों का अनुवाद मात्र है: 'अंधों में काना राजा' के लिए 'अंधों का राजा काना होता है' अर्थ नहीं है; सही अर्थ 'अज्ञानियों में थोड़ा जानने वाला भी श्रेष्ठ माना जाता है' है। तीसरा जाल भाव की दिशा है: 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' निराशा है (परिश्रम अधिक, फल कम), लाभ नहीं; 'बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा' अनायास लाभ है, परिश्रम का फल नहीं। चौथा जाल किसी एक शब्द का पीछा करना है: 'घर की मुर्गी दाल बराबर' का भोजन से कोई संबंध नहीं, और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का पशुपालन से नहीं।

प्रश्न हल करने की विधि: पहले लोकोक्ति के पीछे की स्थिति या कहानी सोचिए, जैसे बबूल बोने वाले को आम नहीं मिलता। फिर उसका भाव तय कीजिए: प्रशंसा है या व्यंग्य, लाभ है या हानि, उपदेश है या चेतावनी। अब शब्दशः अनुवाद वाले और उलटे भाव वाले विकल्प काट दीजिए। रिक्त स्थान वाले प्रश्न में वाक्य की स्थिति से कुंजी लीजिए: 'अकेले जाकर पूरी व्यवस्था से लड़ोगे? .....' में अकेलेपन की बात है, इसलिए 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' सही है। अंत में बचे दो मिलते-जुलते विकल्पों में ऊपर बताए बारीक अंतर से निर्णय कीजिए।

उदाहरण

- आसमान से गिरा खजूर में अटका = एक संकट से छूटकर दूसरे में फँसना; कंगाली में आटा गीला = संकट पर और संकट; सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े = आरंभ में ही विघ्न।
- डूबते को तिनके का सहारा = संकट में छोटी सहायता भी बड़ी; दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है = एक बार धोखा खाने वाला अधिक सावधान रहता है।
- घर की मुर्गी दाल बराबर = सुलभ का आदर नहीं; घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध = गुणी का अपने स्थान पर अनादर; चिराग तले अँधेरा = जहाँ अच्छाई की आशा, वहीं बुराई।

- होनहार बिरवान के होत चीकने पात = होनहार के लक्षण बचपन में ही दिख जाते हैं; दूर के ढोल सुहावने = दूर की वस्तु अच्छी लगती है; आप भला तो जग भला।
- तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर = आय के अनुसार व्यय करें; बूँद-बूँद से घड़ा भरता है = थोड़ा-थोड़ा जोड़ने से बहुत होता है; सहज पके सो मीठा होय = धैर्य का फल मीठा।
- 'जैसी करनी वैसी भरनी' (जो करे वही भोगे) का उलटा: 'करे कोई भरे कोई' (दोष एक का, दंड दूसरे को); 'ताली एक हाथ से नहीं बजती' = झगड़े में दोनों पक्ष दोषी।
- 'आम के आम गुठलियों के दाम' का अर्थ? (क) आम और गुठली दोनों बेचना (ख) दोहरा लाभ (ग) महँगा सौदा (घ) व्यर्थ परिश्रम → (ख); (क) शब्दशः अर्थ वाला जाल है।
- 'अंधों में काना राजा' = अज्ञानियों में थोड़ा जानने वाला भी श्रेष्ठ; 'अंधों का राजा काना होता है' केवल शब्दों का अनुवाद है, अर्थ नहीं।
- 'अकेले जाकर पूरी व्यवस्था से लड़ोगे? ___' → अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता; 'एक और एक ग्यारह होते हैं' इसका उलटा भाव (मेल की शक्ति) है।
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया = परिश्रम बहुत, फल थोड़ा (निराशा); बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा = बिना प्रयत्न अचानक लाभ; हाथ कंगन को आरसी क्या = प्रत्यक्ष को प्रमाण नहीं चाहिए।

> **त्वरित दोहराव:** आसमान से गिरा खजूर में अटका = एक संकट से दूसरे में; कंगाली में आटा गीला = संकट पर संकट; सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े = आरंभ में विघ्न; डूबते को तिनके का सहारा; दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है; घर की मुर्गी दाल बराबर बनाम घर का जोगी जोगड़ा; चिराग तले अँधेरा; तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर = आय के अनुसार व्यय; जैसी करनी वैसी भरनी बनाम करे कोई भरे कोई; जाल: शब्दशः अर्थ, शब्दों का अनुवाद, उलटा भाव, एक शब्द का पीछा; विधि: स्थिति सोचें, भाव तय करें, जाल काटें, बारीक अंतर से चुनें।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-idioms-proverbs/

हिंदी: अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: एक वाक्यांश दिया जाता है, जैसे 'जो कहा न जा सके', और चार विकल्पों में से उसके लिए एक सही शब्द चुनना होता है। कभी उलटा भी पूछा जाता है: शब्द देकर उसका सही वाक्यांश। ये शब्द अधिकतर संस्कृत के उपसर्गों और प्रत्ययों से बने होते हैं, इसलिए यदि आप शब्द-निर्माण के कुछ नियम समझ लें, तो बिना रटे भी बहुत-से प्रश्न हल हो जाते हैं। विकल्प प्रायः आपस में बहुत मिलते-जुलते होते हैं, इसलिए सटीक अर्थ पर ध्यान देना ज़रूरी है।

तरीका: पहले वाक्यांश का मुख्य विचार पहचानिए, यानी वह संज्ञा या क्रिया जिस पर पूरा अर्थ टिका है। 'जिसका खंडन न हो सके' में मुख्य विचार 'खंडन' है और साथ में 'न हो सके' का निषेध। अब 'हो सके' के लिए '-नीय' प्रत्यय वाला रूप 'खंडनीय' लीजिए और निषेध के लिए 'अ' उपसर्ग जोड़िए: अ + खंडनीय = 'अखंडनीय'। इसी तरह 'जो कहा न जा सके' = 'अकथनीय', 'जिसका वर्णन न हो सके' = 'अवर्णनीय'। हर विकल्प को वाक्यांश में वापस रखकर जाँचिए कि अर्थ पूरा मेल खाता है या नहीं।

निषेध वाले उपसर्ग: 'न' या 'नहीं' का भाव हो तो व्यंजन से पहले 'अ' और स्वर से पहले 'अन्' लगता है: अजर (जो कभी बूढ़ा न हो), अमर (जो कभी न मरे), अजेय (जिसे जीता न जा सके), अदृश्य (जो दिखाई न दे), अक्षम्य (जो क्षमा न किया जा सके), अथाह (जिसकी थाह न हो), अनादि (जिसका आदि न हो), अनंत (जिसका अंत न हो)। 'रहित' या 'बिना' का भाव हो तो प्रायः 'निर्' या 'निस्': निराकार (जिसका कोई आकार न हो), निरक्षर (जो पढ़ा-लिखा न हो), निःसंतान (जिसकी कोई संतान न हो), निष्पक्ष (जो किसी का पक्ष न ले)।

'योग्य' या 'हो सके' वाले प्रत्यय: '-नीय' और '-य': पूजनीय या पूज्य (जो पूजा के योग्य हो), दर्शनीय (जो देखने योग्य हो), स्मरणीय (जो याद रखने योग्य हो), अविस्मरणीय (जिसे भुलाया न जा सके), अविश्वसनीय (जिस पर विश्वास न किया जा सके), अकल्पनीय (जिसकी कल्पना न की जा सके)।

'जानने वाला' के लिए '-ज्ञ': सर्वज्ञ (जो सब कुछ जानता हो), अल्पज्ञ (जो थोड़ा जानता हो), मर्मज्ञ (जो किसी बात का मर्म जानता हो), शास्त्रज्ञ (जो शास्त्रों का ज्ञाता हो), कृतज्ञ (जो किए हुए उपकार को माने); और इसका उलटा 'कृतघ्न' (जो किए हुए उपकार को न माने)।

'करने या बनाने वाला' के लिए '-कार' और '-क': कहानीकार, नाटककार, चित्रकार, मूर्तिकार; दर्शक (देखने वाला), आलोचक (आलोचना करने वाला)। 'सुनने वाला' श्रोता होता है। 'जीविका' के लिए '-जीवी': श्रमजीवी (परिश्रम से जीविका चलाने वाला), बुद्धिजीवी (बुद्धि से जीविका चलाने वाला)। 'भोगने वाला' के लिए '-भोगी': भुक्तभोगी (जिसने स्वयं कष्ट या अनुभव भोगा हो)। 'रहित' के लिए '-हीन': शक्तिहीन, गुणहीन, अर्थहीन (जिसका कोई अर्थ न हो, जिसे 'निरर्थक' भी कहते हैं)।

'चलने या रहने वाला' के लिए '-चर': जलचर (जल में रहने वाला जीव), थलचर (स्थल पर रहने वाला), नभचर (आकाश में उड़ने वाला), उभयचर (जल और थल दोनों में रहने वाला), निशाचर (रात में घूमने वाला)। 'खाने वाला' के लिए '-आहारी': मांसाहारी, शाकाहारी। 'बोलने वाला' के लिए '-भाषी': मितभाषी (कम बोलने वाला), मृदुभाषी (मीठा बोलने वाला); बहुत बोलने वाले को 'वाचाल' कहते हैं।

इच्छा वाले शब्द अलग से याद रखिए: जिज्ञासा (जानने की इच्छा), जिज्ञासु (जानने की इच्छा रखने वाला), पिपासा (पीने की इच्छा, प्यास), बुभुक्षा (खाने की इच्छा, भूख), जिजीविषा (जीने की इच्छा), मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा रखने वाला)।

समय वाले शब्द: पूर्वाह्न (दोपहर से पहले का समय), मध्याह्न (दोपहर), अपराह्न (दोपहर के बाद का समय)। इनकी वर्तनी में 'ह्न' है, यानी पहले ह फिर न; 'अपरान्ह' लिखना अशुद्ध है। साप्ताहिक (सप्ताह में एक बार होने वाला), पाक्षिक (पंद्रह दिन में एक बार), मासिक (महीने में एक बार), वार्षिक (वर्ष में एक बार),

शताब्दी (सौ वर्ष का समय)।

व्यक्ति और संबंध: अनाथ (जिसके माता-पिता न हों), विधवा (जिसका पति मर गया हो), विधुर (जिसकी पत्नी मर गई हो), सधवा (जिसका पति जीवित हो), अग्रज (पहले जन्मा, बड़ा भाई), अनुज (बाद में जन्मा, छोटा भाई), सहोदर (एक ही माँ के उदर से जन्मा), सहपाठी (साथ पढ़ने वाला), शरणागत (जो शरण में आया हो), अजातशत्रु (जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो)।

स्वभाव और गुण: आस्तिक (जो ईश्वर में विश्वास रखे), नास्तिक (जो ईश्वर में विश्वास न रखे), दूरदर्शी (जो दूर की सोचे), मितव्ययी (जो सोच-समझकर खर्च करे), अपव्ययी (जो बहुत अधिक या व्यर्थ खर्च करे), परोपकारी (जो दूसरों की भलाई करे), स्वावलंबी (जो अपने ऊपर निर्भर हो), परावलंबी (जो दूसरों पर निर्भर हो), अनुभवी (जिसे अनुभव हो)। 'किंकर्तव्यविमूढ़' उसे कहते हैं जिसे यह न सूझे कि अब क्या करे।

अन्य उपयोगी शब्द: अद्वितीय या अनुपम (जिसके समान कोई दूसरा न हो), अभूतपूर्व (जो पहले कभी न हुआ हो), भूतपूर्व (जो पहले किसी पद पर रहा हो), दुर्गम (जहाँ पहुँचना कठिन हो), सुलभ (जो सरलता से मिल जाए), दुर्लभ (जो कठिनाई से मिले), प्रत्यक्ष (जो आँखों के सामने हो), परोक्ष (जो आँखों के सामने न हो), उपर्युक्त (जो ऊपर कहा गया हो), निर्विवाद (जिसमें कोई विवाद न हो), पारदर्शी (जिसके आर-पार दिखाई दे), नश्वर (जो नष्ट होने वाला हो)।

मिलते-जुलते जोड़ों में सावधानी रखिए। 'अजेय' वह है जिसे जीता न जा सके, जबकि 'अपराजित' वह जो अब तक कभी हारा न हो। 'अकथनीय' में कहने की बात है, 'अवर्णनीय' में वर्णन की। 'अभूतपूर्व' का अर्थ है जो पहले कभी न हुआ हो, जबकि 'भूतपूर्व' का अर्थ है जो पहले था, अब नहीं। 'साप्ताहिक' और 'पाक्षिक' की अवधि अलग है।

जाल: (1) 'अपराह्न' (दोपहर के बाद) और 'पूर्वाह्न' (दोपहर से पहले) को आपस में बदल देना; (2) 'विधुर' (जिसकी पत्नी मर गई हो) और 'विधवा' (जिसका पति मर गया हो) को आपस में बदल देना; (3) 'अभूतपूर्व' और 'भूतपूर्व' में उलझना; (4) 'अग्रज' और 'अनुज' को उलट देना; (5) 'कृतज्ञ' और 'कृतघ्न' की उलटी पहचान; (6) 'मितव्ययी' (सोच-समझकर खर्च करने वाला) को 'कंजूस' समझना; (7) 'अपराह्न' की गलत वर्तनी वाला विकल्प चुनना; (8) केवल पहला शब्द देखकर उत्तर चुनना, जबकि वाक्यांश में 'न' जैसा छोटा शब्द पूरा अर्थ उलट देता है।

उदाहरण

- जो कहा न जा सके → अकथनीय; जिसका वर्णन न हो सके → अवर्णनीय; जिसका खंडन न हो सके → अखंडनीय।
- दोपहर से पहले का समय → पूर्वाह्न; दोपहर → मध्याह्न; दोपहर के बाद का समय → अपराह्न ('ह्न', अपरान्ह नहीं)।
- जिसे जीता न जा सके → अजेय; जो कभी हारा न हो → अपराजित।
- जो पहले कभी न हुआ हो → अभूतपूर्व; जो पहले किसी पद पर रहा हो → भूतपूर्व।
- जो सब कुछ जानता हो → सर्वज्ञ; थोड़ा जानने वाला → अल्पज्ञ; उपकार मानने वाला → कृतज्ञ; उपकार न मानने वाला → कृतघ्न।
- जल में रहने वाला → जलचर; आकाश में उड़ने वाला → नभचर; जल और थल दोनों में रहने वाला → उभयचर; रात में घूमने वाला → निशाचर।
- परिश्रम से जीविका चलाने वाला → श्रमजीवी; बुद्धि से जीविका चलाने वाला → बुद्धिजीवी।
- जानने की इच्छा → जिज्ञासा; पीने की इच्छा → पिपासा; खाने की इच्छा → बुभुक्षा; जीने की इच्छा → जिजीविषा; मोक्ष चाहने वाला → मुमुक्षु।
- जिसकी पत्नी मर गई हो → विधुर; जिसका पति मर गया हो → विधवा; जिसका पति जीवित हो → सधवा।
- जो ईश्वर में विश्वास रखे → आस्तिक; जो विश्वास न रखे → नास्तिक; जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो → अजातशत्रु।
- सोच-समझकर खर्च करने वाला → मितव्ययी; व्यर्थ खर्च करने वाला → अपव्ययी; कम बोलने वाला → मितभाषी।
- जो आँखों के सामने हो → प्रत्यक्ष; जो आँखों के सामने न हो → परोक्ष; जो ऊपर कहा गया हो → उपर्युक्त।
- जिसे यह न सूझे कि क्या करे → किंकर्तव्यविमूढ़; जिसने स्वयं कष्ट भोगा हो → भुक्तभोगी।

> **त्वरित दोहराव:** वाक्यांश का मुख्य विचार पहचानें, फिर उपसर्ग-प्रत्यय जोड़ें; 'न' हो तो अ/अन्, 'रहित' हो तो निर्/निस्; योग्य के लिए -नीय (पूजनीय, दर्शनीय, अखंडनीय, अकथनीय); जानने वाला -ज्ञ (सर्वज्ञ, अल्पज्ञ, कृतज्ञ, उलटा कृतघ्न); करने वाला -कार/-क; जीविका -जीवी; रहने/घूमने वाला -चर (जलचर, नभचर, उभयचर, निशाचर); इच्छा: जिज्ञासा, पिपासा, बुभुक्षा, जिजीविषा, मुमुक्षु; पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न (ह्न); अजेय-अपराजित, अभूतपूर्व-भूतपूर्व, अग्रज-अनुज, विधवा-विधुर-सधवा का अंतर याद रखें; मितव्ययी कंजूस नहीं, सोच-समझकर खर्च करने वाला।

व्यक्ति, स्वभाव और गुण बताने वाले शब्द (आस्तिक, मितभाषी, अजातशत्रु)

ये शब्द कैसे बनते हैं: किसी व्यक्ति के विश्वास, स्वभाव, बोलचाल या गुण को एक शब्द में कहने वाले शब्द प्रायः विशेषण होते हैं और तीन तरीकों से बनते हैं। पहला, प्रत्यय से: '-ई' (सदाचारी, स्वार्थी), '-इक' (आस्तिक), '-वान/-मान' (गुणवान, बुद्धिमान; प्रायः अ या आ पर समाप्त होने वाले शब्द के बाद '-वान' और इ, ई या उ पर समाप्त होने वाले शब्द के बाद '-मान', जैसे धनवान, विद्यावान, बुद्धिमान, श्रीमान; लक्ष्मीवान जैसे अपवाद भी हैं), '-शील' (क्षमाशील, विचारशील), '-आलु' (दयालु, श्रद्धालु), '-इष्णु' (सहिष्णु) और '-वी' (तपस्वी, यशस्वी, तेजस्वी, मेधावी, मायावी)। दूसरा, उपसर्ग या उपसर्ग की तरह लगने वाले शब्दों से: 'सत्' और 'दुर्' अच्छे-बुरे का भेद बताते हैं (सदाचारी, दुराचारी) और 'निर्/निस्' रहित होने का (निर्भीक, निर्लज्ज, निःस्वार्थ)। तीसरा, बहुव्रीहि समास से: इसमें दोनों पद मिलकर किसी तीसरे व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, जैसे अजातशत्रु = नहीं जन्मा है शत्रु जिसका। प्रश्न में 'जो', 'जिसका', 'जिसकी', 'जिसने' से शुरू होने वाले वाक्यांश अधिकतर इन्हीं शब्दों के लिए होते हैं।

आस्था और दृष्टिकोण: जो ईश्वर में विश्वास रखे वह 'आस्तिक' और जो विश्वास न रखे वह 'नास्तिक' कहलाता है। ये संस्कृत 'अस्ति' (है) और 'नास्ति' (नहीं है) में '-इक' प्रत्यय लगकर बने हैं; प्रत्यय लगने पर पहला स्वर 'अ' बढ़कर 'आ' हो जाता है, इसलिए 'अस्तिक' नहीं, 'आस्तिक' लिखा जाता है। भारतीय दर्शन में वेद को प्रमाण मानने वाले दर्शनों को भी आस्तिक कहा गया है, पर परीक्षा में अर्थ 'ईश्वर में विश्वास रखने वाला' ही लिया जाता है। इसी तरह जो हर बात में अच्छा

परिणाम देखे वह 'आशावादी', जो हर बात में निराशा देखे वह 'निराशावादी', जो सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ दे वह 'भाग्यवादी', जो वास्तविकता को मानकर चले वह 'यथार्थवादी' और जो ऊँचे आदर्शों पर चले वह 'आदर्शवादी' है। जो बिना परखे किसी बात पर विश्वास कर ले वह 'अंधविश्वासी' है। जो अपने कर्तव्य में लगा रहे उसे 'कर्तव्यपरायण' या 'कर्तव्यनिष्ठ' कहते हैं।

बोलने का ढंग: '-भाषी' और '-वादी' वाले शब्द बहुत पूछे जाते हैं। जो कम और नपा-तुला बोले वह 'मितभाषी' (मित = नपा-तुला) है; 'अल्पभाषी' (अल्प = थोड़ा) भी इसी अर्थ में आता है। जो मीठा बोले वह 'मृदुभाषी' या 'मिष्टभाषी', जो कड़वा बोले वह 'कटुभाषी', जो सच बोले वह 'सत्यवादी' और जो झूठ बोले वह 'मिथ्यावादी' है। जो बहुत बोले उसे 'वाचाल' कहते हैं। जो बिना लाग-लपेट के साफ़ बात कहे वह 'स्पष्टवक्ता', जो बातचीत में चतुर हो वह 'वाक्पटु' और जो अपनी प्रशंसा आप करे वह 'आत्मश्लाघी' कहलाता है। 'बहुभाषी' पर पुस्तकें एकमत नहीं हैं: कुछ इसे 'बहुत बोलने वाला' लिखती हैं, जबकि आज इसका अधिकतर प्रयोग 'कई भाषाएँ बोलने वाला' के अर्थ में होता है; इसलिए 'बहुत बोलने वाला' के प्रश्न में विकल्पों में 'वाचाल' हो तो उसे ही चुनिए।

स्वभाव और आचरण: अच्छे आचरण वाला 'सदाचारी' और बुरे आचरण वाला 'दुराचारी' है। केवल अपना लाभ देखने वाला 'स्वार्थी' है और जिसमें स्वार्थ न हो वह 'निःस्वार्थ'। जिस पर भरोसा किया जा सके वह 'विश्वासपात्र' और जो भरोसा तोड़े वह 'विश्वासघाती' है। '-आलु' प्रत्यय स्वभाव या प्रवृत्ति बताता है: दयालु (दया करने वाला), कृपालु (कृपा करने वाला), श्रद्धालु (श्रद्धा रखने वाला), ईर्ष्यालु (दूसरों की उन्नति देखकर जलने वाला)। '-इष्णु' से सहिष्णु (सहन करने वाला) और उसका उलटा असहिष्णु बनता है; '-शील' से क्षमाशील, सहनशील, प्रगतिशील। जिसे डर न लगे वह 'निर्भीक', डरपोक 'भीरु' या 'कायर', जिसे लज्जा न आए वह 'निर्लज्ज' और जिसमें दया न हो वह 'निर्दय' है। दूसरों के दोष ढूँढ़ने वाले को 'छिद्रान्वेषी' (छिद्र = दोष, अन्वेषी = खोजने वाला) कहते हैं। धन होते हुए भी खर्च न करने वाला 'कृपण' (कंजूस) है, और जिसके पास कुछ भी न हो वह 'अकिंचन'।

बुद्धि और मन, बहुव्रीहि समास से: ये शब्द परीक्षा में बार-बार आते हैं और इनका विग्रह 'जिसका, जिसकी, जिसने' से होता है। कुशाग्रबुद्धि = कुश के अग्रभाग (नोक) जैसी तीक्ष्ण है बुद्धि जिसकी; प्रत्युत्पन्नमति = जिसकी बुद्धि मौके पर तुरंत काम करे (हाज़िरजवाब); स्थितप्रज्ञ = जिसकी बुद्धि सुख-दुख में स्थिर रहे; जितेंद्रिय = जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो; वीतराग = जिसका राग (आसक्ति) समाप्त हो गया हो; अन्यमनस्क = जिसका मन कहीं और लगा हो; आजानुबाहु = जिसकी भुजाएँ घुटनों (जानु) तक लंबी हों; दीर्घायु = लंबी है आयु जिसकी, और उलटा अल्पायु। 'मेधावी' (तीव्र बुद्धि वाला) और 'प्रतिभाशाली' (जिसमें प्रतिभा हो) प्रत्यय से बने विशेषण हैं, समास नहीं।

आयु, कुल और संबंध: बहुत समय तक जीने वाला 'चिरंजीवी' है। जो बालिग हो वह 'वयस्क', जो बालिग न हो वह 'अवयस्क' और समान आयु वाले 'समवयस्क' कहलाते हैं। अच्छे कुल में जन्मा 'कुलीन' है। संबंधों में पिता के पिता 'पितामह', माता के पिता 'मातामह', पिता के दादा 'प्रपितामह', सौतेली माँ 'विमाता' और गोद लिया हुआ पुत्र 'दत्तक' कहलाता है। विद्वान स्त्री को 'विदुषी' कहते हैं; 'विद्वानी' अशुद्ध रूप है।

उलटे जोड़े और सावधानी: इस वर्ग के लगभग हर शब्द का विलोम भी होता है और प्रश्न में वही विकल्प बनकर आता है: आस्तिक-नास्तिक, सदाचारी-दुराचारी, स्वार्थी-निःस्वार्थ, सहिष्णु-असहिष्णु, आशावादी-निराशावादी, वयस्क-अवयस्क, विश्वासपात्र-विश्वासघाती। इसलिए पहले देखिए कि वाक्यांश में 'न' या 'नहीं' है या नहीं। 'मितभाषी' और 'मितव्ययी' में 'मित' का अर्थ 'नपा-तुला' है, 'कंजूस' नहीं; कंजूस के लिए 'कृपण' है। 'अजातशत्रु' का अर्थ है जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो; इसे 'जिसने सब शत्रुओं को जीत लिया हो' समझना आम भूल है। बहुव्रीहि शब्दों का पूरा विग्रह याद रखिए, केवल एक पद देखकर उत्तर न चुनिए।

उदाहरण

- जो ईश्वर में विश्वास रखे → आस्तिक; जो विश्वास न रखे → नास्तिक (अस्ति/नास्ति + इक; आस्तिक में पहला स्वर अ से आ)।
- कम और नपा-तुला बोलने वाला → मितभाषी (अल्पभाषी भी); बहुत बोलने वाला → वाचाल; मीठा बोलने वाला → मृदुभाषी; कड़वा बोलने वाला → कटुभाषी।
- साफ़-साफ़ कहने वाला → स्पष्टवक्ता; बातचीत में चतुर → वाक्पटु; अपनी प्रशंसा आप करने वाला → आत्मश्लाघी।
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो → अजातशत्रु (बहुव्रीहि); इसका अर्थ 'सब शत्रुओं को जीतने वाला' नहीं है।
- कुश की नोक जैसी तीक्ष्ण बुद्धि वाला → कुशाग्रबुद्धि; जिसकी बुद्धि मौके पर तुरंत काम करे → प्रत्युत्पन्नमति; जिसकी बुद्धि स्थिर हो → स्थितप्रज्ञ।
- जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो → जितेंद्रिय; जिसकी आसक्ति मिट गई हो → वीतराग; जिसका मन कहीं और लगा हो → अन्यमनस्क।
- दूसरों के दोष ढूँढ़ने वाला → छिद्रान्वेषी; दूसरों की उन्नति से जलने वाला → ईर्ष्यालु; सहन करने वाला → सहिष्णु।
- धन होते हुए भी खर्च न करने वाला → कृपण; सोच-समझकर खर्च करने वाला → मितव्ययी; जिसके पास कुछ न हो → अकिंचन।
- जिसकी भुजाएँ घुटनों तक हों → आजानुबाहु; समान आयु वाले → समवयस्क; सौतेली माँ → विमाता; गोद लिया पुत्र → दत्तक; विद्वान स्त्री → विदुषी।

> **त्वरित दोहराव:** व्यक्ति-वाचक शब्द प्रत्यय (-ई, -इक, -वान/-मान, -शील, -आलु, -इष्णु, -वी), उपसर्ग या उपसर्ग-जैसे शब्द (सत्, दुर्, निर्) और बहुव्रीहि से बनते हैं; आस्तिक-नास्तिक (अस्ति + इक); मितभाषी/अल्पभाषी, वाचाल, मृदुभाषी, कटुभाषी, स्पष्टवक्ता, वाक्पटु, आत्मश्लाघी; कुशाग्रबुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति, स्थितप्रज्ञ, जितेंद्रिय, वीतराग, अन्यमनस्क, आजानुबाहु, अजातशत्रु (शत्रु जन्मा ही न हो); छिद्रान्वेषी, ईर्ष्यालु, सहिष्णु, निर्भीक, भीरु; कृपण कंजूस है, मितव्ययी नहीं; पितामह, मातामह, विमाता, दत्तक, विदुषी।

काम, स्थान और समय से जुड़े शब्द (पुस्तकालय, अपरिहार्य, अभूतपूर्व)

स्थान बताने वाले अंत: 'जहाँ ... हो' वाले वाक्यांशों के उत्तर प्रायः '-आलय', '-शाला', '-आगार' या '-भूमि' से बनते हैं। 'आलय' का अर्थ है घर या भवन: पुस्तकालय (जहाँ पुस्तकें रखी हों), चिकित्सालय (जहाँ चिकित्सा हो), औषधालय (जहाँ दवाएँ मिलें), संग्रहालय (जहाँ दर्शनीय वस्तुओं का संग्रह हो), न्यायालय, देवालय, अनाथालय। इनमें दीर्घ संधि है: पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, हिम + आलय = हिमालय (बर्फ़ का घर)। '-शाला' से पाठशाला, प्रयोगशाला (जहाँ प्रयोग किए जाएँ), धर्मशाला (यात्रियों के ठहरने का धर्मार्थ स्थान), गोशाला (जहाँ गायें रहें), अश्वशाला (जहाँ घोड़े बाँधे जाएँ) और पाकशाला (जहाँ भोजन पकाया जाए) बनते हैं; '-आगार' से शस्त्रागार (जहाँ शस्त्र रखे जाएँ) और कारागार (जेल)। कुछ शब्द याद ही करने पड़ते हैं: श्मशान (जहाँ शव जलाए जाएँ),

टकसाल (जहाँ सिक्के ढलते हैं), आश्रम (जहाँ ऋषि-मुनि रहते हों), छात्रावास (जहाँ विद्यार्थी रहते हों), रणभूमि (जहाँ युद्ध हो)। पशु-पक्षियों के घर भी पूछे जाते हैं: पक्षी का घोंसला 'नीड़', साँप का घर 'बाँबी', शेर जैसे जंगली पशु की 'माँद'।

भूगोल से जुड़े स्थान: चारों ओर जल से घिरा भूभाग 'द्वीप', तीन ओर जल से घिरा 'प्रायद्वीप', दो नदियों के बीच की भूमि 'दोआब', जहाँ नदियाँ मिलें वह 'संगम', जहाँ से नदी निकले वह 'उद्गम' और जहाँ नदी समुद्र में मिले वह 'मुहाना' है। पर्वत के पास नीचे की भूमि 'उपत्यका' (घाटी) और पर्वत के ऊपर की समतल भूमि 'अधित्यका' कहलाती है; 'उप' पास या नीचे का और 'अधि' ऊपर का भाव देता है। दो बड़े जलभागों को जोड़ने वाला पतला जलमार्ग 'जलडमरूमध्य' और दो बड़े भूभागों को जोड़ने वाली पतली भूमि 'स्थलडमरूमध्य' है। जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखें वह 'क्षितिज', जहाँ कुछ न उगे वह 'ऊसर' या 'बंजर', उपजाऊ भूमि 'उर्वर', जहाँ कोई न रहता हो वह 'निर्जन' और जहाँ वन्य जीव बिना भय के रह सकें वह 'अभयारण्य' (अभय + अरण्य) है। जहाँ पहुँचना कठिन हो वह 'दुर्गम', जहाँ जाया ही न जा सके वह 'अगम्य' और जहाँ सरलता से पहुँचा जा सके वह 'सुगम' है।

निवास और यात्रा: गाँव में रहने वाला 'ग्रामीण' और नगर में रहने वाला 'नागरिक' है (नागरिक देश के निवासी के अर्थ में भी आता है)। जो अपना स्थान या देश छोड़कर दूसरी जगह जा बसा हो वह 'प्रवासी' और जो दूसरे देश से आकर यहाँ बसा हो वह 'आप्रवासी' है। जो एक जगह टिककर न रहे वह 'यायावर' या 'घुमंतू', रास्ते पर चलने वाला 'पथिक' और तीर्थ जाने वाला 'तीर्थयात्री' है। जो कहीं से आया हो वह 'आगंतुक' और जिसके आने की तिथि निश्चित न हो वह 'अतिथि' है। जो अपना देश छोड़कर दूसरे देश में शरण चाहता हो वह 'शरणार्थी' और जो शरण में आ चुका हो वह 'शरणागत'।

जो किया गया हो, जो किया जा सके, जो करना चाहिए: ये तीन अर्थ तीन अलग प्रत्यय माँगते हैं। 'जो किया गया हो' के लिए '-इत' या '-त': आमंत्रित (जिसे बुलाया गया हो), उपेक्षित (जिसकी उपेक्षा की गई हो), निर्वासित (जिसे देश या स्थान से निकाल दिया गया हो), बहिष्कृत (जिसे समाज से बाहर कर दिया गया हो), पुरस्कृत, अप्रकाशित (जो छपा न हो) और अनूदित (जिसका अनुवाद किया गया हो)। 'जो किया जा सके' या 'करने योग्य' के लिए '-य' और '-नीय': पेय और अपेय, खाद्य और अखाद्य, गेय (जो गाया जा सके), श्रव्य (जो सुना जा सके), ग्राह्य (जो ग्रहण करने योग्य हो), त्याज्य (जो त्यागने योग्य हो), अपठनीय (जो पढ़ा न जा सके), अनुकरणीय (जो अनुकरण करने योग्य हो), अपरिहार्य (जिसे टाला न जा सके), अविभाज्य (जिसे बाँटा न जा सके)। 'जो करना या जानना चाहिए' के लिए '-तव्य': कर्तव्य (जो करना चाहिए), वक्तव्य (जो कहा जाए), ज्ञातव्य (जो जानने योग्य हो), द्रष्टव्य (जो देखने योग्य हो) और गंतव्य (जहाँ जाना हो)। अचानक होने वाला 'आकस्मिक', जिसकी आशा न की गई हो वह 'अप्रत्याशित' और जिसका होना निश्चित हो वह 'अवश्यंभावी' है।

काम करने वाले: खेती करने वाला 'कृषक', श्रम करने वाला 'श्रमिक', शिल्प का काम करने वाला 'शिल्पी', रथ चलाने वाला 'सारथी', अनुवाद करने वाला 'अनुवादक', दो भाषाएँ जानकर दो लोगों की बात एक-दूसरे को समझाने वाला 'दुभाषिया', छिपकर भेद लेने वाला 'गुप्तचर', समाचार भेजने वाला 'संवाददाता', दो पक्षों में समझौता कराने वाला 'मध्यस्थ', किसी की ओर से काम करने वाला 'प्रतिनिधि' और किसी के बाद उसकी संपत्ति या पद पाने वाला 'उत्तराधिकारी' है। बिना वेतन के काम करने वाला 'अवैतनिक', अपनी इच्छा से सेवा करने वाला 'स्वयंसेवक', सेवा से निवृत्त 'सेवानिवृत्त' और पद से हटाया गया 'पदच्युत' कहलाता है। जो काम में लगा रहे वह 'कर्मठ' और जो कोई काम न करे वह 'अकर्मण्य' है।

समय और अवधि: '-इक' प्रत्यय से अवधि वाले शब्द बनते हैं और प्रत्यय लगने पर पहला स्वर प्रायः बढ़ जाता है: दिन से दैनिक, तीन मास से त्रैमासिक (तीन महीने में एक बार), छह मास से षाण्मासिक या अर्धवार्षिक, वर्ष से वार्षिक, तीन वर्ष से त्रैवार्षिक। दस वर्ष का समय 'दशक', सौ वर्ष का 'शताब्दी' और हज़ार वर्ष का 'सहस्राब्दी' है। 25 वर्ष पूरे होने का उत्सव 'रजत जयंती' और 50 का 'स्वर्ण जयंती' है; 'हीरक जयंती' को अधिकतर परीक्षा-पुस्तकें 60 वर्ष पूरे होने का उत्सव मानती हैं (कुछ 75 वर्ष भी लिखती हैं), इसलिए परीक्षा में 60 ही सुरक्षित उत्तर है। सूर्योदय से लगभग डेढ़ घंटा पहले का समय 'ब्राह्म मुहूर्त' (शुद्ध तत्सम रूप 'ब्राह्म' है, पर 'ब्रह्म मुहूर्त' भी चलता है) और संध्या का वह समय जब गायें चरकर लौटती हैं 'गोधूलि' है। जो पहले कभी न हुआ हो वह 'अभूतपूर्व'; इसी साँचे पर अदृष्टपूर्व (जो पहले कभी न देखा गया हो) और अश्रुतपूर्व (जो पहले कभी न सुना गया हो) बनते हैं। पहले हुए पुरखे 'पूर्वज' और बाद की पीढ़ियाँ 'वंशज'; एक ही समय में रहने वाले 'समकालीन'; उस समय का 'तत्कालीन' और तुरंत का 'तात्कालिक'; पुराना 'प्राचीन' और नया 'अर्वाचीन'; असमय होने वाला (जैसे असामयिक मृत्यु) 'असामयिक'; क्षण भर में नष्ट होने वाला 'क्षणभंगुर'; सदा रहने वाला 'शाश्वत'; जिसकी मृत्यु हो चुकी हो वह 'दिवंगत' और जो मृत्यु के निकट हो वह 'मरणासन्न' है।

वर्तनी और भ्रम: 'श्मशान' (शमशान नहीं), 'अभयारण्य' (अभ्यारण्य नहीं) और 'मुहूर्त' (मुहुर्त नहीं) की वर्तनी पर विकल्प बनाए जाते हैं। 'अनूदित' शुद्ध तत्सम रूप है; 'अनुवादित' भी चलन में है और कुछ पुस्तकें उसे स्वीकार करती हैं, पर दोनों विकल्प हों तो 'अनूदित' चुनिए। 'अप्रवासी' शब्द समाचारों में खूब चलता है, पर इसमें 'अ' निषेध का अर्थ देता है (अ + प्रवासी = जो प्रवासी न हो), इसलिए कई व्याकरण-पुस्तकें इसे अशुद्ध मानती हैं; दूसरे देश से आकर बसे व्यक्ति के लिए 'आप्रवासी' और विदेश जा बसे व्यक्ति के लिए 'प्रवासी' चुनिए। विदेश में रहने वाले भारतीयों के लिए सरकारी प्रयोग में 'प्रवासी भारतीय' और 'अनिवासी भारतीय' (NRI) दोनों मिलते हैं। 'गंतव्य' स्थान है, 'कर्तव्य' करने योग्य काम; 'अगम्य' वह जहाँ जाया ही न जा सके, 'दुर्गम' वह जहाँ कठिनाई से पहुँचा जाए।

उदाहरण

- जहाँ पुस्तकें रखी हों → पुस्तकालय; जहाँ दवाएँ मिलें → औषधालय; जहाँ दर्शनीय वस्तुओं का संग्रह हो → संग्रहालय (पुस्तक + आलय: दीर्घ संधि)।
- जहाँ प्रयोग किए जाएँ → प्रयोगशाला; जहाँ घोड़े बाँधे जाएँ → अश्वशाला; जहाँ शस्त्र रखे जाएँ → शस्त्रागार; जहाँ शव जलाए जाएँ → श्मशान; जहाँ सिक्के ढलें → टकसाल।
- पर्वत के पास नीचे की भूमि → उपत्यका; पर्वत के ऊपर की समतल भूमि → अधित्यका; दो नदियों के बीच की भूमि → दोआब; जहाँ नदी समुद्र में मिले → मुहाना।
- तीन ओर जल से घिरा भूभाग → प्रायद्वीप; दो जलभागों को जोड़ने वाला पतला जलमार्ग → जलडमरूमध्य; जहाँ वन्य जीव निर्भय रहें → अभयारण्य।
- जो दूसरे देश से आकर बसा हो → आप्रवासी; जो अपना स्थान छोड़कर दूसरी जगह बसा हो → प्रवासी; जो शरण चाहता हो → शरणार्थी; जो शरण में आ चुका हो → शरणागत।
- जिसे टाला न जा सके → अपरिहार्य; जिसका होना निश्चित हो → अवश्यंभावी; जिसकी आशा न की गई हो → अप्रत्याशित; जिसका अनुवाद किया गया हो → अनूदित।

- जो करना चाहिए → कर्तव्य; जो कहा जाए → वक्तव्य; जो जानने योग्य हो → ज्ञातव्य; जहाँ जाना हो → गंतव्य (‘-तव्य’ प्रत्यय)।
- तीन महीने में एक बार → त्रैमासिक; छह महीने में एक बार → षाण्मासिक या अर्धवार्षिक; तीन वर्ष में एक बार → त्रैवार्षिक; हज़ार वर्ष → सहस्राब्दी।
- जो पहले कभी न हुआ हो → अभूतपूर्व; जो पहले कभी न देखा गया हो → अदृष्टपूर्व; जो पहले कभी न सुना गया हो → अश्रुतपूर्व।
- बिना वेतन काम करने वाला → अवैतनिक; जो कोई काम न करे → अकर्मण्य; दो पक्षों में समझौता कराने वाला → मध्यस्थ; पद से हटाया गया → पदच्युत।

> **त्वरित दोहराव:** स्थान: -आलय (पुस्तकालय, औषधालय, संग्रहालय, हिमालय), -शाला (प्रयोगशाला, अश्वशाला, पाकशाला), -आगार (शस्त्रागार, कारागार), श्मशान, टकसाल; उपत्यका-अधित्यका, दोआब, मुहाना, प्रायद्वीप, जलडमरूमध्य, अभयारण्य; प्रवासी-आप्रवासी, शरणार्थी-शरणागत, अतिथि; -इत (अनूदित, निर्वासित), -य/-नीय (अपरिहार्य, अविभाज्य), -तव्य (कर्तव्य, गंतव्य); त्रैमासिक, षाण्मासिक, त्रैवार्षिक, सहस्राब्दी; रजत 25, स्वर्ण 50, हीरक 60 (अधिकतर पुस्तकें; कुछ 75); अभूतपूर्व, अदृष्टपूर्व, अश्रुतपूर्व; तत्कालीन-तात्कालिक।

इच्छा, ज्ञान और भाव से जुड़े शब्द तथा प्रत्ययों के पैटर्न (-ज्ञ, -दर्शी, -भोगी, -हीन)

इच्छा वाले शब्दों का नियम: संस्कृत में किसी काम की इच्छा बताने के लिए धातु में ‘सन्’ प्रत्यय लगता है। इसकी पहचान आसान है: प्रायः धातु का पहला अक्षर दोहराया जाता है (कभी थोड़े बदले रूप में, जैसे भुज् से बुभुक्षा, कृ से चिकीर्षा) और अंत में प्रायः ‘-सा’ या ‘-षा’ आता है। ‘-आ’ वाला रूप इच्छा (संज्ञा) बताता है और ‘-उ’ वाला रूप इच्छा रखने वाला व्यक्ति (विशेषण)। ज्ञा (जानना) से जिज्ञासा (जानने की इच्छा) और जिज्ञासु; पा (पीना) से पिपासा (पीने की इच्छा, प्यास) और पिपासु; भुज् (खाना) से बुभुक्षा (खाने की इच्छा, भूख) और बुभुक्षित (भूखा); जीव् (जीना) से जिजीविषा (जीने की इच्छा) और जिजीविषु; मुच् (मुक्त होना) से मुमुक्षा (मोक्ष की इच्छा) और मुमुक्षु; युध् (लड़ना) से युयुत्सा (युद्ध की इच्छा) और युयुत्सु; जि (जीतना) से जिगीषा (जीतने की इच्छा) और जिगीषु; कृ (करना) से चिकीर्षा (करने की इच्छा); दृश् (देखना) से दिदृक्षा (देखने की इच्छा); मृ (मरना) से मुमूर्षा (मरने की इच्छा)। लभ् (पाना) से बना ‘लिप्सा’ (पाने की लालसा, जैसे धन-लिप्सा) भी इसी सन् प्रत्यय का रूप है, पर इसमें दोहराव होता ही नहीं: संस्कृत व्याकरण के एक विशेष नियम से लभ् का रूप ‘लिप्स’ बनता है और दोहराया हुआ अक्षर हट जाता है। इसी तरह आप् (पाना) से ‘ईप्सा’ और ‘ईप्सित’ (चाहा हुआ) बनते हैं।

सन् से बने, पर इच्छा नहीं: कुछ शब्द इसी सन् प्रत्यय से बने हैं, पर संस्कृत व्याकरण (पाणिनि) के अनुसार इनमें सन् इच्छा का अर्थ नहीं देता, धातु का एक विशेष अर्थ देता है; परीक्षा में यहीं भूल होती है। गुप् से बने ‘जुगुप्सा’ का अर्थ घृणा है (वीभत्स रस का स्थायी भाव), कित् से बने ‘चिकित्सा’ का अर्थ रोग दूर करना या इलाज, तिज् से बने ‘तितिक्षा’ का अर्थ सहनशीलता और मान् से बने ‘मीमांसा’ का अर्थ गहन विचार या विवेचना है। ये सन् के रूप तो हैं, पर इच्छा-वाचक नहीं। ‘शुश्रूषा’ (श्रु + सन्) का शाब्दिक अर्थ ‘सुनने की इच्छा’ है; संस्कृत में भी इसका दूसरा अर्थ सेवा या आज्ञापालन है, और हिंदी में यही सेवा-टहल वाला अर्थ चलता है (रोगी की शुश्रूषा)। कुछ पुस्तकें ‘सुनने की इच्छा = शुश्रूषा’ पूछती हैं, इसलिए दोनों अर्थ याद रखिए; वर्तनी ‘शुश्रूषा’ है, ‘सुश्रूषा’ या ‘शुश्रुषा’ नहीं। ‘मुमूर्षु’ को भी पुस्तकें दो तरह लिखती हैं: ‘मरने की इच्छा रखने वाला’ और ‘जो मरने के निकट हो’। इच्छा से जुड़े दूसरे शब्द: इच्छा रखने वाला ‘इच्छुक’, चाहा हुआ ‘इच्छित’, ‘ईप्सित’ या ‘अभीष्ट’, जो चाहा न गया हो ‘अवांछित’, बिना फल की इच्छा के काम करने वाला ‘निष्काम’, फल की इच्छा से काम करने वाला ‘सकाम’, मनमानी करने वाला ‘स्वेच्छाचारी’ और लालच से भरा ‘लोलुप’।

ज्ञान से जुड़े शब्द: ‘-ज्ञ’ का अर्थ है जानने वाला। सर्वज्ञ, अल्पज्ञ, मर्मज्ञ और कृतज्ञ के अलावा विशेषज्ञ (किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला), बहुज्ञ (बहुत जानने वाला), विज्ञ (जानकार), नीतिज्ञ (नीति जानने वाला), धर्मज्ञ (धर्म जानने वाला), रसज्ञ (रस का पारखी) और तत्त्वज्ञ (तत्त्व जानने वाला) इसी ढंग के हैं। उलटे अर्थ में ‘अज्ञ’ (जो कुछ न जानता हो) और ‘अनभिज्ञ’ (जो किसी विशेष बात से अनजान हो) आते हैं। ‘-विद्’ और ‘-वेत्ता’ भी जानने वाले के लिए आते हैं: भाषाविद्, वेदविद्, तत्त्ववेत्ता। जिसने बहुत सुना-पढ़ा हो वह ‘बहुश्रुत’, किसी विषय में पूरी तरह निपुण ‘पारंगत’ और जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो वह ‘प्रत्यक्षदर्शी’ कहलाता है। ज्ञा धातु से बने ज्ञाता, ज्ञात और ज्ञेय का अंतर अगले पाठ में विस्तार से दिया गया है।

भाव और प्रेम के रूप: प्रेम के अलग-अलग रूपों के लिए अलग शब्द हैं: संतान के प्रति माता-पिता का प्रेम ‘वात्सल्य’, छोटों के प्रति प्रेम ‘स्नेह’, बड़ों के प्रति आदर-भरा प्रेम ‘श्रद्धा’, ईश्वर के प्रति प्रेम ‘भक्ति’ और पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम ‘प्रणय’। पुस्तकों में इनकी परिभाषा के शब्द थोड़े अलग मिलते हैं, पर मूल अंतर यही है। किए हुए गलत काम पर बाद में होने वाला दुख ‘पश्चात्ताप’ है और पाप के शोधन के लिए किया गया कर्म ‘प्रायश्चित्त’; दोनों की वर्तनी में ‘त्त’ है। दूसरे के दुख को अपना समझकर दुखी होना ‘सहानुभूति’, आश्चर्य का भाव ‘विस्मय’, आनंद या भय से रोंगटे खड़े होना ‘रोमांच’, प्रिय से बिछुड़ने का दुख ‘विरह’, किसी अनिष्ट का डर ‘आशंका’ और किसी बात को पाने या जानने की तीव्र इच्छा और बेचैनी ‘उत्कंठा’ है। जिसे किसी बात में रुचि या लगाव न हो वह ‘उदासीन’ और शोक से व्याकुल ‘शोकाकुल’ कहलाता है।

प्रत्ययों के पैटर्न: ‘-दर्शी’ का अर्थ है देखने या समझने वाला: दूरदर्शी और उसका उलटा अदूरदर्शी, त्रिकालदर्शी (भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों को जानने वाला), समदर्शी (सबको समान दृष्टि से देखने वाला), पारदर्शी (जिसके आर-पार दिखे)। इसे ‘-दर्शक’ से अलग रखिए: दर्शक (देखने वाला), मार्गदर्शक (मार्ग दिखाने वाला)। ‘-भोगी’ भोगने वाला बताता है: भुक्तभोगी (जिसने स्वयं भोगा हो), सुखभोगी (सुख भोगने वाला)। ‘-गामी’ चलने या जाने वाला: अनुगामी (पीछे चलने वाला), अग्रगामी (आगे चलने वाला), द्रुतगामी (तेज़ चलने वाला), ऊर्ध्वगामी (ऊपर जाने वाला), अधोगामी (नीचे जाने वाला), दूरगामी (दूर तक असर डालने वाला)। ‘-भक्षी’ और ‘-आहारी’ खाने वाला: सर्वभक्षी या सर्वाहारी (सब कुछ खाने वाला), कीटभक्षी (कीड़े खाने वाला), फलाहारी, अल्पाहारी (कम खाने वाला)। ‘-जीवी’ जीने वाला: परजीवी (दूसरे पर आश्रित रहकर जीने वाला), अल्पजीवी (थोड़े समय तक जीने वाला)। ‘-ज’ जन्मा हुआ: जलज और पंकज (कमल), अंडज (अंडे से जन्मा), पिंडज या जरायुज (गर्भ से जन्मा; जरायु = गर्भ की झिल्ली), स्वेदज (पसीने या नमी से उत्पन्न), उद्भिज्ज (धरती फोड़कर उगने वाला, पेड़-पौधे; यह उद्भिद् + ज से बना तत्सम रूप है, हिंदी में ‘उद्भिज’ भी लिखा जाता है)।

‘-हीन’ और ‘सर्व-’ वाले शब्द: ‘-हीन’ रहित का भाव देता है और प्रायः ‘निर्/निस्’ वाले शब्द का पर्याय बनता है: अर्थहीन = निरर्थक, आधारहीन = निराधार, बलहीन = निर्बल, धनहीन = निर्धन, गुणहीन = निर्गुण। दिशाहीन (जिसकी कोई दिशा न हो), विवेकहीन (जिसमें भले-बुरे की पहचान न हो) और श्रीहीन (शोभा से रहित) भी ऐसे ही बनते हैं। ‘निर्गुण’ का एक विशेष अर्थ भी है: ईश्वर का वह रूप जो गुणों और आकार से परे हो, जैसे कबीर की निर्गुण भक्ति। ‘सर्व-’ से शुरू

होने वाले शब्द एक साथ याद कीजिए: सर्वशक्तिमान (जिसमें सब प्रकार की शक्ति हो), सर्वव्यापी (जो सब जगह व्याप्त हो), सर्वसुलभ (जो सबको सरलता से मिले), सर्वसम्मत (जिसमें सबकी सहमति हो), सर्वांगीण (सब अंगों या पक्षों से जुड़ा), सर्वमान्य (जिसे सब मानें)। 'बहु-' से बहुमुखी (जो अनेक क्षेत्रों में कुशल हो) और बहुरूपिया (अनेक रूप धरने वाला) बनते हैं।

सावधानी: इच्छा वाले शब्दों में '-आ' और '-उ' का भेद प्रश्न का उत्तर बदल देता है: 'जानने की इच्छा' का उत्तर जिज्ञासा है, 'जानने की इच्छा रखने वाला' का जिज्ञासु। '-दर्शी' और '-दर्शक', 'पश्चात्ताप' और 'प्रायश्चित्त', 'अज्ञ' और 'अनभिज्ञ' के जोड़े भी उलझाते हैं। 'सर्वज्ञ' (सब कुछ जानने वाला) और 'सर्वव्यापी' (सब जगह उपस्थित) अलग गुण हैं, यद्यपि दोनों ईश्वर के लिए आते हैं।

उदाहरण

- जानने की इच्छा → जिज्ञासा; जानने की इच्छा रखने वाला → जिज्ञासु ('-आ' इच्छा, '-उ' इच्छा रखने वाला)।
- युद्ध की इच्छा → युयुत्सा, युद्ध का इच्छुक → युयुत्सु; जीतने की इच्छा → जिगीषा; करने की इच्छा → चिकीर्षा; देखने की इच्छा → दिदृक्षा।
- पाने की लालसा → लिप्सा; मरने की इच्छा → मुमूर्षा; मोक्ष की इच्छा रखने वाला → मुमुक्षु; भूखा → बुभुक्षित।
- सन् से बने पर इच्छा-वाचक नहीं: जुगुप्सा (गुप्) = घृणा, चिकित्सा (कित्) = इलाज, तितिक्षा (तिज्) = सहनशीलता, मीमांसा (मान्) = गहन विचार; शुश्रूषा = सेवा (शाब्दिक अर्थ सुनने की इच्छा)।
- किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला → विशेषज्ञ; नीति जानने वाला → नीतिज्ञ; जो किसी बात से अनजान हो → अनभिज्ञ; जिसने बहुत सुना-पढ़ा हो → बहुश्रुत।
- संतान के प्रति प्रेम → वात्सल्य; छोटों के प्रति → स्नेह; बड़ों के प्रति → श्रद्धा; ईश्वर के प्रति → भक्ति; पति-पत्नी का प्रेम → प्रणय।
- किए पर बाद में होने वाला पछतावा → पश्चात्ताप; पाप-शोधन के लिए किया गया कर्म → प्रायश्चित्त (दोनों में 'त्त')।
- भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने वाला → त्रिकालदर्शी; सबको समान देखने वाला → समदर्शी; पीछे चलने वाला → अनुगामी; ऊपर जाने वाला → ऊर्ध्वगामी।
- सब कुछ खाने वाला → सर्वभक्षी/सर्वाहारी; कीड़े खाने वाला → कीटभक्षी; दूसरे पर आश्रित रहकर जीने वाला → परजीवी; अंडे से जन्मा → अंडज।
- अर्थहीन = निरर्थक, आधारहीन = निराधार, बलहीन = निर्बल; जो सब जगह व्याप्त हो → सर्वव्यापी; जिसमें सबकी सहमति हो → सर्वसम्मत।

त्वरित दोहराव: इच्छा = सन् प्रत्यय (प्रायः धातु का पहला अक्षर दोहरा, -सा/-षा; लिप्सा में दोहराव नहीं): जिज्ञासा, पिपासा, बुभुक्षा, जिजीविषा, मुमुक्षा, युयुत्सा, जिगीषा, चिकीर्षा, दिदृक्षा, मुमूर्षा, लिप्सा; -आ इच्छा, -उ इच्छुक; जुगुप्सा, चिकित्सा, तितिक्षा, मीमांसा भी सन् से बने पर इच्छा-वाचक नहीं; शुश्रूषा = सेवा; -ज्ञ (विशेषज्ञ, नीतिज्ञ), अज्ञ, अनभिज्ञ, बहुश्रुत; वात्सल्य, स्नेह, श्रद्धा, भक्ति, प्रणय; पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त; -दर्शी, -भोगी, -गामी, -भक्षी, -जीवी, -ज; -हीन = निर्- (निरर्थक, निराधार); सर्वव्यापी, सर्वसम्मत।

मिलते-जुलते शब्दों में अंतर और प्रश्न हल करने की विधि (अज्ञ, अज्ञात, अज्ञेय)

एक धातु के तीन रूप: बहुत-से भ्रम इसलिए होते हैं कि एक ही धातु से कर्ता, कर्म और संभावना के अलग-अलग शब्द बनते हैं। ज्ञा (जानना) से 'ज्ञाता' या '-ज्ञ' = जानने वाला (कर्ता), 'ज्ञात' = जाना हुआ, 'ज्ञेय' = जो जाना जा सके या जानने योग्य हो। निषेध लगाने पर 'अज्ञ' = जो कुछ न जानता हो (व्यक्ति, अज्ञानी), 'अज्ञात' = जिसके बारे में अब तक पता न चला हो (अज्ञात व्यक्ति, अज्ञात कारण), और 'अज्ञेय' = जो जाना ही न जा सके, जिसे जानना मनुष्य की सीमा से परे हो (कुछ दार्शनिक परम सत्य को अज्ञेय मानते हैं)। 'अनभिज्ञ' अलग है: यह उस व्यक्ति के लिए आता है जो किसी विशेष बात से अनजान हो (वह नए नियम से अनभिज्ञ था)। यही साँचा दूसरी धातुओं पर भी चलता है: दृश् से द्रष्टा (देखने वाला), दृष्ट (देखा हुआ), दृश्य (जो देखा जा सके), अदृष्ट (जो देखा न गया हो; भाग्य के अर्थ में भी), अदृश्य (जो दिखाई न दे); श्रु से श्रोता, श्रुत, श्रव्य, अश्रुत; जि से विजेता (जीतने वाला), विजित (जो जीता गया हो), अजेय (जिसे जीता न जा सके), अजित (जो अब तक जीता न गया हो)।

बारीक अंतर वाले युग्म: 'दुर्लभ' जो कठिनाई से मिले, 'अलभ्य' जो मिल ही न सके। 'साध्य' जो सिद्ध या ठीक किया जा सके, 'दुःसाध्य' जो कठिनाई से सिद्ध हो, 'असाध्य' जो सिद्ध या ठीक न हो सके (असाध्य रोग)। 'अक्षम' असमर्थ व्यक्ति है, 'अक्षम्य' वह अपराध जो क्षमा न किया जा सके। 'अमूल्य' का अर्थ है जिसका मूल्य आँका न जा सके, 'मूल्यहीन' नहीं; बहुत अधिक मूल्य वाला 'बहुमूल्य' है। 'अदृश्य' जो आँखों से न दिखे, 'अगोचर' जो किसी भी इंद्रिय से न जाना जा सके। 'इहलौकिक' इस लोक से जुड़ा, 'पारलौकिक' परलोक से जुड़ा, 'अलौकिक' जो इस लोक में साधारणतः न मिले, अद्भुत। 'निष्पक्ष' वह जो निर्णय करते समय किसी का पक्ष न ले, 'तटस्थ' वह जो विवाद में किसी भी ओर न हो; कई पुस्तकें 'जो किसी का पक्ष न ले' के लिए दोनों शब्द देती हैं, पर पक्षपात न करने के भाव में निष्पक्ष और किसी ओर न होने के भाव में तटस्थ अधिक सटीक है। 'अनुपम' (जिसकी उपमा न हो), 'अद्वितीय' (जिसके समान दूसरा न हो) और 'अतुलनीय' (जिसकी तुलना न हो सके) लगभग पर्याय हैं; वाक्यांश में 'उपमा', 'दूसरा' या 'तुलना' में से जो शब्द हो, उसी से उत्तर मिलाइए।

विकल्प परखने की विधि: पहले वाक्यांश का मुख्य शब्द पहचानिए और उसके मूल शब्द तक जाइए ('जिसे टाला न जा सके' में टालना = परिहार)। फिर देखिए कि अर्थ किस प्रकार का है: करने वाला हो तो '-क', '-कार', '-ई', '-ता' या '-ज्ञ'; जो किया गया हो तो '-इत' या '-त'; जो किया जा सके या करने योग्य हो तो '-य', '-नीय' या '-तव्य'; स्थान हो तो '-आलय' या '-शाला'; इच्छा हो तो सन् वाला रूप। इसके बाद निषेध और मात्रा के छोटे शब्द पढ़िए: 'न' के लिए अ/अन्, 'बिना' या 'रहित' के लिए निर्/निस् या '-हीन', 'कठिनाई से' के लिए दुर्/दुस्, 'सरलता से' के लिए सु। फिर काल देखिए: 'जो हुआ हो', 'जो होने वाला हो' और 'जो हो सके' तीन अलग उत्तर हैं। अंत में चुना हुआ शब्द वाक्यांश में वापस रखकर पूरा अर्थ मिलाइए और उसकी वर्तनी जाँचिए, क्योंकि कई प्रश्नों में सही शब्द का एक अशुद्ध रूप भी विकल्प में होता है। इस तरह 'जिसे टाला न जा सके' में परिहार से परिहार्य (जो टाला जा सके) और निषेध से अपरिहार्य मिलता है।

हल किए गए प्रश्न: पहला प्रश्न 'जिसे जीता न जा सके'; विकल्प अजित, अजेय, अपराजित, विजित। यहाँ 'जा सके' संभावना है, इसलिए '-य' वाला 'अजेय' सही है; अजित और अपराजित 'अब तक न जीता गया या न हारा' बताते हैं और विजित तो जीता हुआ है। इन दोनों में भी वाक्यांश का शब्द देखिए: 'जीता न गया हो' हो तो अजित, 'हारा न हो' या 'पराजित न हुआ हो' हो तो अपराजित। दूसरा प्रश्न 'जो पहले कभी न सुना गया हो'; विकल्प अश्रव्य, अश्रुत, अश्रुतपूर्व, अनसुना।

‘पहले कभी’ के कारण ‘अश्रुतपूर्व’ सही है, जबकि ‘अश्रव्य’ वह है जो सुना न जा सके। तीसरा प्रश्न ‘किसी विशेष बात को न जानने वाला’; विकल्प अज्ञेय, अज्ञात, अनभिज्ञ, अज्ञ। अज्ञेय और अज्ञात जानी जाने वाली वस्तु के लिए हैं, जानने वाले के लिए नहीं, और ‘अज्ञ’ सामान्य रूप से कुछ न जानने वाला है, इसलिए ‘अनभिज्ञ’ सही है। चौथा प्रश्न ‘जो ऊपर कहा गया हो’; उपरि + उक्त = ‘उपर्युक्त’ (यण् संधि) शुद्ध है, ‘उपरोक्त’ चलन में बहुत है पर अधिकतर व्याकरण-पुस्तकें उसे अशुद्ध मानती हैं, इसलिए दोनों हों तो ‘उपर्युक्त’ चुनिए।

मिश्रित अभ्यास: इन वाक्यांशों को पहले स्वयं हल कीजिए, फिर उत्तर मिलाइए। जो धरती से संबंधित हो → पार्थिव; जो आकाश को छूता हो → गगनचुंबी; जो कानून के विरुद्ध हो → अवैध; जो सबके लिए हो → सार्वजनिक; जो छिपकर अदृश्य हो गया हो → अंतर्धान; जिसका वर्णन वाणी से न हो सके → अनिर्वचनीय; जो बीत गया हो → अतीत; जिसकी गिनती न हो सके → अगणित या असंख्य; जो किसी के मत को मानकर उसके पीछे चले → अनुयायी; जो अपनी जगह से हिल न सके → स्थावर, और उलटा चलने-फिरने वाला → जंगम; जो इंद्रियों की पहुँच से परे हो → अतींद्रिय या इंद्रियातीत (‘अगोचर’ इसका निकट पर्याय है); जो सबसे आगे रहकर नेतृत्व करे → अग्रणी; जो अपने मार्ग से भटक गया हो → पथभ्रष्ट; जो क्षमा के योग्य हो → क्षम्य।

जाल और वर्तनी: विकल्पों में सबसे अधिक ये अशुद्ध रूप रखे जाते हैं: उपरोक्त (शुद्ध उपर्युक्त), अपरान्ह (अपराह्न), अभ्यारण्य (अभयारण्य), शमशान (श्मशान), अंतर्ध्यान (अंतर्धान), पश्चाताप (पश्चात्ताप), प्रायश्चित (प्रायश्चित्त), मुहुर्त (मुहूर्त)। ‘अनुदित’ एक अलग शब्द है, जिसका अर्थ है जो उदित न हुआ हो (अन् + उदित); ‘अनुवाद किया हुआ’ के लिए ‘अनूदित’ लिखा जाता है। अर्थ के जाल भी पहचानिए: वाक्यांश में ‘न’, ‘कभी’, ‘पहले’, ‘स्वयं’ जैसे छोटे शब्द पूरा उत्तर बदल देते हैं (भूतपूर्व-अभूतपूर्व, ज्ञात-अज्ञात-अज्ञेय, शरणार्थी-शरणागत)। विलोम शब्द प्रायः विकल्प में होता है, इसलिए उत्तर चुनने से पहले वाक्यांश दोबारा पढ़िए। जहाँ पुस्तकें दो उत्तर मानती हैं (मितभाषी-अल्पभाषी, अनूदित-अनुवादित, हीरक जयंती 60 या 75 वर्ष), वहाँ विकल्पों में जो एक ही ठीक बैठे, उसे चुनिए; दोनों हों तो अधिक मान्य रूप (मितभाषी, अनूदित, 60 वर्ष) चुनिए।

उदाहरण

- जो कुछ न जानता हो → अज्ञ; जिसके बारे में पता न हो → अज्ञात; जो जाना ही न जा सके → अज्ञेय; जो किसी विशेष बात से अनजान हो → अनभिज्ञ।
- जिसे जीता न जा सके → अजेय; जो अब तक जीता न गया हो → अजित; जो कभी हारा न हो → अपराजित; जो जीता गया हो → विजित।
- जो कठिनाई से मिले → दुर्लभ; जो मिल ही न सके → अलभ्य; जो ठीक न हो सके → असाध्य; जो कठिनाई से सिद्ध हो → दुःसाध्य।
- असमर्थ → अक्षम; जो क्षमा न किया जा सके → अक्षम्य; जिसका मूल्य आँका न जा सके → अमूल्य (मूल्यहीन नहीं)।
- जो आँखों से न दिखे → अदृश्य; जो इंद्रियों से न जाना जा सके → अगोचर; इस लोक का → इहलौकिक; परलोक का → पारलौकिक; अद्भुत, असाधारण → अलौकिक।
- जो पहले कभी न सुना गया हो → अश्रुतपूर्व; जो सुना न जा सके → अश्रव्य; जो ऊपर कहा गया हो → उपर्युक्त (उपरि + उक्त, यण् संधि)।
- जो धरती से संबंधित हो → पार्थिव; जो आकाश को छूता हो → गगनचुंबी; जो छिपकर अदृश्य हो गया हो → अंतर्धान; जिसका वर्णन वाणी से न हो सके → अनिर्वचनीय।
- जो अपनी जगह से हिल न सके → स्थावर; चलने-फिरने वाला → जंगम; जो इंद्रियों की पहुँच से परे हो → अतींद्रिय; जो अपने मार्ग से भटक गया हो → पथभ्रष्ट।
- अशुद्ध → शुद्ध: उपरोक्त → उपर्युक्त, अभ्यारण्य → अभयारण्य, शमशान → श्मशान, अंतर्ध्यान → अंतर्धान, पश्चाताप → पश्चात्ताप, प्रायश्चित → प्रायश्चित्त।
- विधि: मुख्य शब्द → अर्थ का प्रकार (कर्ता, किया गया, किया जा सके, स्थान, इच्छा) → निषेध (अ/अन्, निर्, दुर्) → काल → शब्द को वाक्यांश में रखकर जाँच → वर्तनी।

> **त्वरित दोहराव:** -ज्ञ/ज्ञाता करने वाला, ज्ञात जाना हुआ, ज्ञेय जो जाना जा सके; अज्ञ, अज्ञात, अज्ञेय, अनभिज्ञ अलग; अजेय-अजित-अपराजित-विजित; दुर्लभ-अलभ्य; साध्य-दुःसाध्य-असाध्य; अक्षम-अक्षम्य; अमूल्य मूल्यहीन नहीं; अदृश्य-अगोचर; इहलौकिक-पारलौकिक-अलौकिक; निष्पक्ष-तटस्थ; विधि: मुख्य शब्द, अर्थ का प्रकार, निषेध, काल, वापस रखकर जाँच, वर्तनी; उपर्युक्त, अपराह्न, अभयारण्य, श्मशान, अंतर्धान, पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त, अनूदित शुद्ध।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-one-word-substitution/

हिंदी गद्यांश (रिक्त स्थान और बोध)

गद्यांश: रिक्त स्थान और बोध

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: इस भाग में एक छोटा गद्यांश दिया जाता है और उस पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। ये प्रश्न दो तरह के होते हैं। पहले प्रकार में गद्यांश के बीच-बीच में कुछ स्थान खाली छोड़ दिए जाते हैं और हर रिक्त स्थान के लिए चार शब्द दिए जाते हैं; आपको वह शब्द चुनना होता है जो अर्थ, व्याकरण और प्रसंग, तीनों की दृष्टि से ठीक बैठे। दूसरे प्रकार में गद्यांश पढ़कर उसका मुख्य भाव, उचित शीर्षक, किसी शब्द का प्रसंग के अनुसार अर्थ या गद्यांश से निकलने वाला निष्कर्ष पूछा जाता है। दोनों का मूल नियम एक ही है: उत्तर गद्यांश के भीतर खोजिए, अपनी राय या बाहरी जानकारी से नहीं।

पहले पूरा गद्यांश पढ़िए। पहले रिक्त स्थान पर रुककर तुरंत विकल्प देखने की आदत छोड़ दीजिए। पूरा गद्यांश एक बार पढ़कर समझिए कि उसका विषय क्या है, जैसे पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य या परिश्रम, और लेखक का स्वर कैसा है: प्रशंसा का, चिंता का, चेतावनी का या सलाह का। विषय और स्वर समझ में आते ही कई विकल्प अपने-आप हट जाते हैं। यदि गद्यांश वनों की कटाई से होने वाली हानि पर है, तो किसी रिक्त स्थान पर ‘लाभ’ या ‘सुख’ जैसा शब्द प्रायः नहीं बैठेगा।

रिक्त स्थान की पहली कसौटी अर्थ है। रिक्त स्थान से पहले और बाद के शब्दों को मिलाकर पूरा वाक्य पढ़िए और देखिए कि वहाँ कौन-सा भाव चाहिए: कारण, परिणाम, विरोध, उदाहरण या निष्कर्ष। ‘वर्षा न होने के कारण किसानों की फसल ___ गई’ में ‘कारण’ शब्द बता रहा है कि यहाँ परिणाम चाहिए, इसलिए उत्तर

‘सूख’ है, ‘पक’ या ‘बढ़’ नहीं। कई बार अगला वाक्य भी संकेत देता है, इसलिए केवल एक वाक्य पढ़कर निर्णय न लें।

दूसरी कसौटी व्याकरण है। जब चारों विकल्पों का अर्थ लगभग एक-सा हो, तब लिंग, वचन, कारक और शब्द-भेद से निर्णय होता है। ‘बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन बहुत ___ है’ में ‘आवश्यक’ ठीक है, ‘आवश्यकता’ नहीं, क्योंकि यहाँ विशेषण चाहिए, संज्ञा नहीं। ‘ने’ वाले भूतकाल के वाक्य में, जब कर्म के साथ ‘को’ न हो, सकर्मक क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं, कर्म के अनुसार बदलती है: ‘लड़के ने रोटी खाई’, ‘लड़की ने केला खाया’। रिक्त स्थान से ठीक पहले आए ‘का’, ‘की’, ‘के’ भी संकेत देते हैं: ‘देश की ___’ के बाद स्त्रीलिंग संज्ञा आएगी, जैसे ‘प्रगति’ या ‘सुरक्षा’, जबकि ‘देश का ___’ के बाद पुल्लिंग संज्ञा, जैसे ‘विकास’।

तीसरी कसौटी शब्दों का स्वाभाविक जोड़ा है, जिसे शब्द-संगति कहते हैं। हिंदी में कुछ संज्ञाओं के साथ कुछ विशेष क्रियाएँ ही चलती हैं: ‘ध्यान देना’, ‘भाग लेना’, ‘शपथ लेना’, ‘प्रश्न पूछना’, ‘उत्तर देना’, ‘कदम उठाना’, ‘प्रकाश डालना’, ‘स्वागत करना’, ‘समस्या का समाधान करना’। विशेषणों के भी जोड़े होते हैं: ‘कड़ी मेहनत’, ‘गहरी नींद’, ‘घोर अपराध’, ‘तीव्र गति’, ‘मूसलाधार वर्षा’। यदि कोई विकल्प अर्थ में ठीक लगे पर बोलने में अटपटा हो, जैसे ‘गहरी मेहनत’ या ‘कड़ी नींद’, तो वह प्रायः गलत होता है।

चौथी बात जोड़ने वाले शब्दों की है। वाक्यों का आपसी संबंध बताने वाले शब्द भी रिक्त स्थान बन सकते हैं। विरोध के लिए ‘परंतु’, ‘किंतु’, ‘लेकिन’, ‘फिर भी’; कारण के लिए ‘क्योंकि’; परिणाम के लिए ‘इसलिए’, ‘अतः’; शर्त के लिए ‘यदि…तो’। कुछ शब्द जोड़ी में आते हैं: ‘यद्यपि…तथापि’, ‘जब…तब’, ‘जैसा…वैसा’, ‘न केवल…बल्कि…भी’। जोड़ी का एक भाग गद्यांश में दिख जाए तो दूसरा भाग पहचानना आसान हो जाता है।

एक छोटा उदाहरण देखिए: ‘परिश्रम ही सफलता की ___ है। जो व्यक्ति ___ से अपना काम करता है, वह जीवन में कभी ___ नहीं होता।’ पहले रिक्त स्थान में ‘कुंजी’ आएगा, क्योंकि ‘सफलता की कुंजी’ प्रचलित जोड़ा है और ‘की’ के बाद स्त्रीलिंग शब्द चाहिए। दूसरे में ‘लगन’ जैसा शब्द, जो ‘से’ के साथ बैठे। तीसरे में ‘असफल’ या ‘निराश’ जैसा शब्द, क्योंकि पूरा गद्यांश परिश्रम के अच्छे फल की बात कर रहा है।

अब बोध वाले प्रश्न। केंद्रीय भाव या मुख्य विचार वह है जो पूरे गद्यांश पर लागू हो, किसी एक वाक्य पर नहीं। प्रायः यह पहले या अंतिम वाक्य में स्पष्ट होता है, और बीच के वाक्य उसे समझाते हैं या उदाहरण देते हैं। ऐसा विकल्प न चुनें जो गद्यांश की केवल एक छोटी बात हो, और ऐसा भी नहीं जो गद्यांश की सीमा से बहुत बड़ा हो।

शीर्षक के लिए वही नियम है। अच्छा शीर्षक छोटा, सटीक और पूरे गद्यांश को समेटने वाला होता है। यदि गद्यांश वृक्षों से मिलने वाली छाया, फल, लकड़ी, औषधि और शुद्ध वायु की चर्चा करता है, तो ‘वृक्षों का महत्त्व’ उचित शीर्षक है; ‘छाया’ बहुत संकुचित है और ‘प्रकृति’ बहुत व्यापक।

प्रसंग में शब्द का अर्थ पूछा जाए तो याद रखिए कि हिंदी के अनेक शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। ‘उत्तर’ का अर्थ ‘जवाब’ भी है और एक दिशा भी; ‘वर्ण’ का अर्थ ‘अक्षर’ भी है और ‘रंग’ भी; ‘अंबर’ का अर्थ ‘आकाश’ भी है और ‘वस्त्र’ भी। जिस वाक्य में शब्द आया है, उसमें हर विकल्प को रखकर पढ़िए; जिस अर्थ को रखने पर वाक्य का भाव ठीक बना रहे, वही उत्तर है।

निष्कर्ष और कथन वाले प्रश्नों में, जैसे ‘गद्यांश के अनुसार कौन-सा कथन सत्य है’ या ‘लेखक क्या कहना चाहता है’, केवल गद्यांश में लिखी बात मायने रखती है। कोई कथन सामान्य ज्ञान के अनुसार सही हो सकता है, पर यदि गद्यांश में उसका आधार नहीं है तो वह उत्तर नहीं है। प्रश्न में ‘नहीं’, ‘असत्य’ या ‘के अतिरिक्त’ जैसे शब्द हों तो उन पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि उलटा पढ़ने पर जानते हुए भी उत्तर गलत हो जाता है।

अंत में अपने चुने हुए शब्दों के साथ पूरा गद्यांश एक बार मन में दोहरा लें। कोई वाक्य अटपटा लगे तो वहाँ दूसरा विकल्प परखें। बोध वाले प्रश्नों में पहले प्रश्न पढ़ लेना भी उपयोगी है, ताकि गद्यांश पढ़ते समय पता रहे कि क्या खोजना है। गलत उत्तर पर अंक कटते हैं, इसलिए दो विकल्पों में उलझन हो तो अर्थ, व्याकरण और संगति, तीनों कसौटियों पर दोबारा जाँचें।

जाल: (1) केवल रिक्त स्थान वाला वाक्य पढ़कर उत्तर देना, जबकि अगला वाक्य संकेत दे रहा हो; (2) अर्थ में ठीक पर व्याकरण में गलत विकल्प चुनना, जैसे विशेषण की जगह संज्ञा या स्त्रीलिंग की जगह पुल्लिंग रूप; (3) गद्यांश के स्वर के उलटे भाव वाला शब्द चुनना; (4) शीर्षक के लिए किसी एक वाक्य या अनुच्छेद का विषय चुन लेना; (5) निष्कर्ष में अपनी राय या बाहरी जानकारी जोड़ देना; (6) ‘हमेशा’, ‘सभी’, ‘कभी नहीं’ जैसे पक्के दावों वाले विकल्प चुन लेना, जबकि गद्यांश इतनी पक्की बात नहीं कहता; (7) ‘नहीं’ वाले प्रश्न को सीधा पढ़ लेना।

उदाहरण

- ‘वर्षा न होने के कारण फसल ___ गई।’ (सूख / पक / बढ़) → सूख; ‘के कारण’ परिणाम माँगता है।
- ‘यद्यपि वह गरीब था, ___ उसने कभी बेईमानी नहीं की।’ → तथापि; ‘यद्यपि’ के साथ ‘तथापि’ या ‘फिर भी’ आता है।
- ‘यदि तुम समय पर पढ़ोगे, ___ परीक्षा में सफल हो जाओगे।’ → तो; ‘यदि…तो’ की जोड़ी।
- ‘लड़की ने केला ___।’ (खाई / खाया / खाए) → खाया; ‘ने’ होने पर क्रिया कर्म ‘केला’ (पुल्लिंग) के अनुसार।
- ‘बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन बहुत ___ है।’ (आवश्यक / आवश्यकता) → आवश्यक; यहाँ विशेषण चाहिए, संज्ञा नहीं।
- ‘सरकार ने इस समस्या के ___ के लिए समिति बनाई।’ (समाधान / परिणाम / आरंभ) → समाधान; ‘समस्या का समाधान’ स्वाभाविक जोड़ा है।
- ‘विद्यालय के सभी छात्रों ने खेल-कूद में ___ लिया।’ → भाग; ‘भाग लेना’ स्थिर जोड़ा है।
- शब्द-संगति: कड़ी मेहनत, गहरी नींद, घोर अपराध, तीव्र गति, मूसलाधार वर्षा; ‘गहरी मेहनत’ या ‘कड़ी नींद’ नहीं।
- शीर्षक: वृक्षों की छाया, फल, लकड़ी, औषधि और शुद्ध वायु पर गद्यांश → ‘वृक्षों का महत्त्व’; ‘छाया’ बहुत छोटा, ‘प्रकृति’ बहुत बड़ा।
- प्रसंग में अर्थ: ‘उसने प्रश्न का उत्तर दिया’ में उत्तर = जवाब; ‘हिमालय भारत के उत्तर में है’ में उत्तर = दिशा।
- प्रसंग में अर्थ: ‘वर्णमाला के वर्ण’ में वर्ण = अक्षर; ‘उसका वर्ण गोरा है’ में वर्ण = रंग।

- निष्कर्ष: गद्यांश कहे 'नियमित व्यायाम से शरीर स्वस्थ रहता है', तो 'व्यायाम करने वाला कभी बीमार नहीं पड़ता' उसका निष्कर्ष नहीं, यह बढ़ा-चढ़ाकर किया गया दावा है।
- 'कौन-सा कथन गद्यांश के अनुसार सत्य नहीं है?' पहले 'नहीं' को चिह्नित करें, फिर हर कथन को गद्यांश की पंक्ति से मिलाएँ।

त्वरित दोहराव: पहले पूरा गद्यांश पढ़कर विषय और लेखक का स्वर समझें; हर रिक्त स्थान को अर्थ, व्याकरण (लिंग, वचन, कारक, शब्द-भेद) और शब्द-संगति, तीनों पर परखें; 'ने' वाले भूतकाल में (कर्म के साथ 'को' न हो तो) सकर्मक क्रिया कर्म के अनुसार; जोड़ी वाले शब्द: यद्यपि-तथापि, यदि-तो, जब-तब, न केवल-बल्कि भी; संगति: ध्यान देना, भाग लेना, प्रकाश डालना, कड़ी मेहनत, गहरी नींद; केंद्रीय भाव पूरे गद्यांश पर लागू हो; शीर्षक छोटा, सटीक और सब कुछ समेटने वाला; शब्द का प्रसंग वाला अर्थ चुनें; निष्कर्ष केवल गद्यांश के आधार पर; 'नहीं' वाले प्रश्नों और 'हमेशा, सभी' जैसे पक्के दावों से सावधान।

अपठित गद्यांश हल करने की विधि: मुख्य विचार, शीर्षक, कथन और निष्कर्ष

अपठित गद्यांश क्या परखता है: 'अपठित' शब्द 'अ' (नहीं) और 'पठित' (पढ़ा हुआ) से बना है, अर्थात् ऐसा गद्यांश जो अभ्यर्थी ने पहले न पढ़ा हो। इसलिए यह स्मृति की नहीं, बोध की परीक्षा है: किसी अनजान अंश को आप कितनी जल्दी और कितनी सही तरह समझते हैं। एक गद्यांश पर प्रायः चार प्रकार के प्रश्न आते हैं: तथ्य वाले प्रश्न, जिनका उत्तर किसी एक पंक्ति में सीधा लिखा होता है; मुख्य विचार या केंद्रीय भाव वाले; शीर्षक वाले; और कथन, निष्कर्ष या लेखक के दृष्टिकोण वाले, जिनमें पूरे गद्यांश से तर्क करना पड़ता है। शब्दार्थ और व्याकरण के प्रश्न भी साथ आते हैं, जिनकी चर्चा अगले पाठ में है।

पहले प्रश्न, फिर गद्यांश:
गद्यांश से पहले केवल प्रश्न पढ़िए, विकल्प नहीं। इससे पता चल जाता है कि क्या खोजना है: कोई तथ्य, कोई कारण, किसी शब्द का अर्थ या पूरे गद्यांश का भाव। 'कारण', 'परिणाम', 'लेखक के अनुसार', 'असत्य' जैसे मुख्य शब्द मन में रख लीजिए। फिर गद्यांश एक बार पूरा पढ़िए और दो बातें पकड़िए: विषय क्या है और लेखक उसके बारे में क्या कह रहा है। जिस पंक्ति में किसी प्रश्न का उत्तर दिखे, उसे चिह्नित कर लीजिए। तथ्य वाले प्रश्न पहले हल कीजिए, क्योंकि वे सीधे पंक्ति से मिलते हैं; मुख्य विचार, शीर्षक और निष्कर्ष वाले अंत में, जब पूरा गद्यांश समझ में आ चुका हो। विकल्प पहले पढ़ने से इसलिए बचें कि गलत विकल्प भी गद्यांश के ही शब्दों से बनाए जाते हैं और मन को भ्रम में डालते हैं।

मुख्य विचार कैसे खोजें: पहले विषय और मुख्य विचार का अंतर समझिए। विषय वह है जिसके बारे में गद्यांश है, जैसे 'जल'; मुख्य विचार वह है जो लेखक उस विषय के बारे में कहना चाहता है, जैसे 'जल का संरक्षण हमारा कर्तव्य है'। केवल विषय बताने वाला विकल्प प्रायः अधूरा उत्तर होता है। मुख्य विचार के तीन संकेत हैं। पहला, विषय-वाक्य: अधिकतर गद्यांशों में पहला वाक्य विषय रखता है या अंतिम वाक्य निष्कर्ष देता है, और बीच के वाक्य कारण, उदाहरण या विवरण होते हैं। दूसरा, संकेत-शब्द: 'अतः', 'इसलिए', 'वास्तव में', 'सच तो यह है कि' के बाद प्रायः मुख्य बात आती है, जबकि 'जैसे', 'उदाहरण के लिए' के बाद सहायक बात। तीसरा, आवृत्ति: जो विचार पूरे गद्यांश में बार-बार लौटता है, मुख्य विचार उसी के चारों ओर होता है। अंतिम जाँच यह है कि चुना हुआ विकल्प गद्यांश के हर भाग पर लागू हो; जो केवल एक उदाहरण पर लागू हो, वह विवरण है, मुख्य विचार नहीं।

शीर्षक चुनने की कसौटियाँ: उचित शीर्षक मुख्य विचार का संक्षिप्त नाम है, इसलिए पहले मुख्य विचार तय कीजिए, फिर शीर्षक। विकल्पों को तीन चरणों में छाँटिए। पहले वे हटाइए जिनकी बात गद्यांश में है ही नहीं; फिर वे जो केवल एक वाक्य या उदाहरण पर टिके हैं (बहुत संकुचित) या विषय से कहीं बड़े हैं (बहुत व्यापक); बचे हुए में वह चुनिए जो लेखक के स्वर से मेल खाए। यदि गद्यांश बच्चों पर मोबाइल फ़ोन की हानियाँ गिनाकर चेतावनी दे रहा है, तो 'बच्चों पर मोबाइल फ़ोन का दुष्प्रभाव' ठीक है; 'मोबाइल फ़ोन के लाभ' स्वर के विपरीत है, केवल 'मोबाइल फ़ोन' बहुत व्यापक है और 'मोबाइल फ़ोन का आविष्कार' विषय से बाहर। शीर्षक प्रायः छोटा पदबंध होता है, जैसे 'परिश्रम का महत्त्व', 'समय का सदुपयोग', कभी-कभी सूक्ति, जैसे 'जल ही जीवन है'। गद्यांश का कोई शब्द शीर्षक में होना अच्छा संकेत है, पर पर्याप्त नहीं; पूरा भाव मिलना चाहिए।

कथन और निष्कर्ष वाले प्रश्न: हर कथन को तीन में से एक खाने में रखिए: गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया (सत्य), गद्यांश से तर्क द्वारा अनिवार्य रूप से निकलता है (निष्कर्ष), या गद्यांश में उसका कोई आधार नहीं (असत्य या बाहरी)। कथन वाले प्रश्न प्रायः 'कथन 1 और कथन 2 में से कौन-सा सत्य है' के रूप में आते हैं, विकल्प होते हैं 'केवल 1', 'केवल 2', 'दोनों', 'कोई नहीं'; हर कथन को अलग से गद्यांश की पंक्ति से मिलाइए। सबसे बड़ा जाल मात्रा बताने वाले शब्दों का है: गद्यांश 'कुछ', 'कई' या 'प्रायः' कहे और कथन 'सभी', 'हमेशा' या 'केवल' कहे, तो कथन असत्य है। जो बात 'हो सकती है' पर गद्यांश से अनिवार्य नहीं, वह निष्कर्ष नहीं। लेखक के स्वर के लिए शब्द-चयन देखिए: 'दुर्भाग्य से', 'चिंता का विषय' से चिंता; 'सराहनीय', 'गौरव' से प्रशंसा; 'हमें चाहिए', 'आवश्यकता है' से सुझाव या उपदेश; और दोष को प्रशंसा के ढंग से कहना व्यंग्य का संकेत है।

हल किया हुआ उदाहरण, गद्यांश: 'हमारे गाँवों में कभी हर बस्ती के पास एक तालाब होता था। वर्षा का जल उसमें इकट्ठा होता, धीरे-धीरे धरती में रिसता और आसपास के कुओं का जल-स्तर बनाए रखता था। गर्मियों में पशु वहीं पानी पीते थे। तालाब की देखभाल पूरा गाँव मिलकर करता था और हर वर्ष उसकी तली से मिट्टी निकाली जाती थी। फिर नल और नलकूप आए और लोगों ने तालाबों को अनावश्यक मान लिया। कई तालाब कूड़े से भर गए और कई पर मकान बन गए। परिणाम यह हुआ कि भूमिगत जल नीचे चला गया और वही नलकूप सूखने लगे जिनके भरोसे तालाब छोड़े गए थे। अतः आज आवश्यकता है कि पुराने तालाबों को फिर से जीवित किया जाए, क्योंकि वर्षा के जल को सहेजे बिना जल का कोई भी आधुनिक साधन टिकाऊ नहीं हो सकता।'

उदाहरण के प्रश्न और हल: प्रश्न 1, मुख्य विचार क्या है? (क) नलकूप तालाबों से अधिक उपयोगी हैं (ख) वर्षा-जल सहेजने वाले तालाबों को फिर से जीवित करना आवश्यक है (ग) गाँवों में पशुओं के लिए पानी की कमी है (घ) गाँव के लोग आलसी हो गए हैं। उत्तर (ख): 'अतः' से शुरू होने वाला अंतिम वाक्य यही कहता है और पूरा गद्यांश, अर्थात् तालाबों का लाभ, उपेक्षा और उसका परिणाम, इसी तक पहुँचता है; (क) गद्यांश के विपरीत है, (ग) छोटा विवरण है, (घ) का कोई आधार नहीं। प्रश्न 2, उचित शीर्षक: (क) गाँव का जीवन (ख) नलकूप (ग) तालाबों की उपयोगिता और पुनर्जीवन (घ) पशुओं के लिए पानी। उत्तर (ग); (क) बहुत व्यापक, (ख) केवल एक अंश, (घ) बहुत संकुचित। प्रश्न 3, कथन 1, तालाब की देखभाल पूरा गाँव मिलकर करता था; कथन 2, नल आने के बाद सभी तालाबों पर मकान बन गए। उत्तर 'केवल 1', क्योंकि गद्यांश 'कई' कहता है और कथन 2 'सभी' कहकर बात बढ़ा देता है। प्रश्न 4, कौन-सा निष्कर्ष निकलता है?

(क) आधुनिक जल-साधन पूरी तरह बेकार हैं (ख) नलकूपों का चलना भी भूमिगत जल-स्तर पर निर्भर है (ग) तालाब केवल पशुओं के लिए थे (घ) गाँवों में नल नहीं लगने चाहिए। उत्तर (ख), क्योंकि जल-स्तर गिरने से ही नलकूप सूखे; (क) और (घ) अति-कथन हैं और (ग) 'केवल' के कारण गलत। प्रश्न 5, लेखक का स्वर: चिंता और सुझाव, जो 'परिणाम यह हुआ' और 'आज आवश्यकता है' से स्पष्ट है।

उदाहरण

- 'अपठित' = 'अ' (नहीं) + 'पठित' (पढ़ा हुआ); अपठित गद्यांश स्मृति की नहीं, बोध की परीक्षा है।
- क्रम: पहले प्रश्न पढ़ें, विकल्प नहीं; फिर पूरा गद्यांश; तथ्य वाले प्रश्न पहले, मुख्य विचार, शीर्षक और निष्कर्ष वाले अंत में।
- विषय और मुख्य विचार अलग: विषय 'जल', मुख्य विचार 'जल का संरक्षण हमारा कर्तव्य है'; केवल विषय बताने वाला विकल्प अधूरा उत्तर है।
- मुख्य बात के संकेत-शब्द: अतः, इसलिए, वास्तव में, सच तो यह है कि; सहायक बात के संकेत: जैसे, उदाहरण के लिए।
- शीर्षक छाँटने के तीन चरण: गद्यांश से बाहर वाले हटाएँ; बहुत संकुचित और बहुत व्यापक हटाएँ; बचे हुए में लेखक के स्वर से मेल खाने वाला चुनें।
- कथन के तीन खाने: स्पष्ट रूप से कहा गया (सत्य), तर्क से अनिवार्य रूप से निकलता है (निष्कर्ष), गद्यांश में आधार नहीं (असत्य या बाहरी)।
- मात्रा-शब्दों का जाल: गद्यांश में 'कई' या 'प्रायः' और कथन में 'सभी', 'हमेशा' या 'केवल' हो, तो कथन असत्य है।
- स्वर की पहचान: 'दुर्भाग्य से' से चिंता; 'सराहनीय' से प्रशंसा; 'हमें चाहिए' से उपदेश; दोष को प्रशंसा के ढंग से कहना व्यंग्य।
- तालाब वाला उदाहरण: 'अतः' वाला अंतिम वाक्य मुख्य विचार देता है; 'सभी तालाबों पर मकान बने' असत्य, क्योंकि गद्यांश 'कई' कहता है।

> **त्वरित दोहराव:** अपठित = पहले न पढ़ा गया गद्यांश, बोध की परीक्षा; पहले प्रश्न पढ़ें, विकल्प नहीं; विषय और मुख्य विचार अलग; मुख्य विचार प्रायः पहले या अंतिम वाक्य में, 'अतः, इसलिए, वास्तव में' के बाद; शीर्षक: बाहरी, संकुचित और व्यापक विकल्प हटाकर स्वर से मेल खाने वाला; कथन को सत्य, निष्कर्ष या आधारहीन में बाँटें; 'सभी, हमेशा, केवल' वाले अति-कथन से सावधान; निष्कर्ष वही जो गद्यांश से अनिवार्य रूप से निकले।

गद्यांश पर आधारित शब्दार्थ और व्याकरण के प्रश्न: पर्यायवाची, विलोम, संधि, समास, उपसर्ग-प्रत्यय

गद्यांश में व्याकरण क्यों पूछा जाता है: अनेक परीक्षाओं में गद्यांश के नीचे बोध के साथ उसी में आए किसी शब्द का पर्यायवाची, विलोम, संधि-विच्छेद, समास-विग्रह, उपसर्ग या प्रत्यय भी पूछा जाता है। ऐसे प्रश्न दो बातें एक साथ परखते हैं: व्याकरण का ज्ञान और यह समझ कि शब्द इस गद्यांश में किस अर्थ और किस रूप में आया है। इसलिए उत्तर से पहले उस शब्द वाली पूरी पंक्ति पढ़िए, उसका शब्द-भेद (संज्ञा, विशेषण, क्रिया या अव्यय) पहचानिए, फिर विकल्प परखिए। जो उत्तर किसी शब्द-सूची में ठीक हो, वह भी गलत हो सकता है यदि गद्यांश वाले अर्थ से मेल न खाए।

प्रसंग के अनुसार पर्यायवाची: हिंदी के कई शब्द अनेकार्थी हैं और परीक्षक उनका दूसरा अर्थ विकल्प में रखकर जाल बनाता है। 'कर' के अर्थ हाथ, किरण, टैक्स और सूँड हैं: 'सूर्य के कर धरती को गरम करते हैं' में कर = किरण, 'सरकार ने नया कर लगाया' में कर = टैक्स, और दोनों में 'हस्त' वाला विकल्प गलत होगा। 'पत्र' चिट्ठी भी है और पत्ता भी: 'पेड़ के पत्र झड़ गए' में 'पर्ण' ठीक है। 'हार' पराजय भी है और माला भी; 'अर्थ' मतलब भी है और धन भी। दूसरा जाल मिलते-जुलते शब्दों का है: अनिल वायु है पर अनल आग; सविता सूर्य है पर सरिता नदी; नीरज कमल है पर नीरद बादल। 'कौन-सा पर्यायवाची नहीं है' वाले प्रश्न में हर विकल्प को उसी एक अर्थ से मिलाइए: 'जल' के लिए नीर, वारि, अंबु, तोय सही हैं, पर 'नीरद' नहीं।

विलोम में शब्द-भेद और मानक रूप: विलोम उसी शब्द-भेद का होना चाहिए जिसका मूल शब्द है। 'उन्नति' संज्ञा है, उसका विलोम 'अवनति'; 'उन्नत' विशेषण है, उसका विलोम 'अवनत'। 'ज्ञान' का विलोम 'अज्ञान' है, 'अज्ञानी' नहीं, क्योंकि 'अज्ञानी' तो 'ज्ञानी' का विलोम है। तत्सम शब्द का विलोम प्रायः तत्सम ही होता है और बहुत-से विलोम उपसर्ग बदलकर बनते हैं: आयात-निर्यात, अनुकूल-प्रतिकूल, उत्कर्ष-अपकर्ष, आदान-प्रदान। हर शब्द के आगे 'अ' लगा देने से मानक विलोम नहीं बनता: आस्तिक का नास्तिक, साकार का निराकार, सजीव का निर्जीव, सुगम का दुर्गम और कृतज्ञ का कृतघ्न होता है (कृतज्ञ-कृतघ्न में उपसर्ग नहीं, दूसरा खंड बदलता है)। गद्यांश के शब्द का विलोम पूछे जाने पर भी प्रसंग देखिए: पराजय वाले अर्थ में 'हार' का विलोम 'जीत' है, पर माला वाले अर्थ में उसका कोई विलोम नहीं बनता।

संधि-विच्छेद की पहचान: संधि में पास-पास की दो ध्वनियाँ मिलकर बदलती हैं, इसलिए विच्छेद में '+' लगता है और दोनों खंड अपने मूल रूप में लौटते हैं। स्वर संधि के पाँच भेद सबसे अधिक पूछे जाते हैं: दीर्घ (विद्यालय = विद्या + आलय, परीक्षा = परि + ईक्षा), गुण (सूर्योदय = सूर्य + उदय, महेश = महा + ईश), वृद्धि (सदैव = सदा + एव, महौषधि = महा + औषधि), यण् (इत्यादि = इति + आदि, स्वागत = सु + आगत) और अयादि (नयन = ने + अन, पवन = पो + अन)। व्यंजन संधि में जगदीश = जगत् + ईश, सज्जन = सत् + जन, उज्ज्वल = उत् + ज्वल; विसर्ग संधि में मनोबल = मनः + बल, निराशा = निः + आशा, दुर्जन = दुः + जन। विकल्पों में 'विद्य + आलय' या 'विद्या + लय' जैसे खंड जाल होते हैं; सही विच्छेद वही है जिसके दोनों खंड इस शब्द के अर्थ में सार्थक हों (विद्या का आलय) और संधि-नियम से जोड़ने पर वही शब्द बने।

समास-विग्रह और प्रसंग: समास में बीच के कारक-चिह्न या योजक शब्द लुप्त होते हैं और विग्रह में लौट आते हैं, इसलिए विग्रह में '+' नहीं, 'का', 'के लिए', 'से', 'और' जैसे शब्द लिखे जाते हैं। अव्ययीभाव में पहला पद अव्यय और प्रधान होता है (प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजीवन); तत्पुरुष में दूसरा पद प्रधान (राजपुत्र = राजा का पुत्र, हस्तलिखित = हस्त से लिखित, देवालय = देव का आलय, जिसे कुछ पुस्तकें 'देव के लिए आलय' लिखती हैं; दोनों विग्रहों में तत्पुरुष); कर्मधारय में विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान (नीलकमल = नीला है जो कमल, चरणकमल = कमल के समान चरण); द्विगु में पहला पद संख्यावाचक और पूरा पद समूह का बोधक (चौराहा = चार राहों का समूह, त्रिलोक, सप्ताह); द्वंद्व में दोनों पद प्रधान (माता-पिता, सुख-दुःख); और बहुव्रीहि में कोई तीसरा अर्थ प्रधान (दशानन = दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण)। गद्यांश में सबसे बड़ा जाल यह है कि एक ही शब्द प्रसंग के अनुसार दो अलग समासों का हो सकता है: 'पीतांबर' पीले वस्त्र के अर्थ में कर्मधारय है, पर 'पीतांबर ने बाँसुरी बजाई' में अर्थ कृष्ण है, इसलिए बहुव्रीहि; 'त्रिलोचन' शिव के अर्थ में बहुव्रीहि है। पुस्तकों में एक मतभेद भी है: संस्कृत व्याकरण कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष के उपभेद मानता है, जबकि हिंदी की अधिकतर पुस्तकें इन्हें अलग गिनकर समास के छह भेद बताती हैं।

उपसर्ग और प्रत्यय: उपसर्ग शब्द के आगे जुड़कर अर्थ बदलता है (प्र + गति = प्रगति, अनु + शासन = अनुशासन, परि + श्रम = परिश्रम) और प्रत्यय पीछे जुड़ता है। कृत् प्रत्यय क्रिया के मूल रूप या धातु के बाद लगते हैं (लिख + आवट = लिखावट, पढ़ + आई = पढ़ाई, लूट + एरा = लुटेरा, बिक + आऊ = बिकाऊ), और तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के बाद (मानव + ता = मानवता, बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा, गुण + वान = गुणवान)। 'इक' प्रत्यय में सबसे अधिक भूल होती है, क्योंकि इसके लगने पर प्रायः पहले स्वर की वृद्धि हो जाती है: समाज से सामाजिक, इतिहास से ऐतिहासिक, दिन से दैनिक, नीति से नैतिक, भूगोल से भौगोलिक; इसलिए 'सामाजिक' का मूल शब्द 'समाज' है। उपसर्ग के साथ संधि भी देखिए: 'अत्यधिक' में उपसर्ग 'अति' है, 'अभ्यास' में 'अभि', 'स्वागत' में 'सु'। 'अनुपस्थित' में 'अन्' और 'उप' दो उपसर्ग हैं; कुछ पुस्तकें 'अ' और 'अन्' को उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाला निषेधवाचक अव्यय मानती हैं, पर प्रश्नों में इन्हें प्रायः उपसर्ग ही कहा जाता है।

हल किया हुआ उदाहरण: गद्यांश पढ़िए: 'विद्यालय केवल पढ़ाई का स्थान नहीं, जीवन की पाठशाला भी है। यहाँ बालक अनुशासन सीखता है, मित्रता निभाना सीखता है और हार-जीत को समान भाव से स्वीकार करना सीखता है। जो छात्र प्रतिदिन पुस्तकालय जाता है, उसका ज्ञान पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रहता। सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य को विनम्र बनाए और सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग करे।' प्रश्न 1, 'विद्यालय' का संधि-विच्छेद: (क) विद्य + आलय (ख) विद्या + लय (ग) विद्या + आलय (घ) विद + यालय; उत्तर (ग), आ + आ = आ, दीर्घ संधि। प्रश्न 2, 'प्रतिदिन' में समास: अव्ययीभाव, क्योंकि पहला पद 'प्रति' अव्यय है और विग्रह 'प्रत्येक दिन' (हर दिन) है। प्रश्न 3, 'हार-जीत' में समास: द्वंद्व (हार और जीत); यहाँ 'हार' का अर्थ पराजय है, माला नहीं। प्रश्न 4, 'अनुशासन' में उपसर्ग: 'अनु'। प्रश्न 5, 'सामाजिक' में मूल शब्द और प्रत्यय: समाज + इक। प्रश्न 6, 'ज्ञान' का विलोम: (क) अज्ञानी (ख) अज्ञान (ग) ज्ञानी (घ) विज्ञान; उत्तर (ख), क्योंकि संज्ञा का विलोम संज्ञा होगा। प्रश्न 7, 'मनुष्य' का पर्यायवाची: (क) मानवता (ख) मानव (ग) मनोज (घ) मनन; उत्तर (ख); 'मानवता' भाववाचक संज्ञा है और 'मनोज' कामदेव का नाम।

उदाहरण

- अनेकार्थी शब्द: 'सूर्य के कर' में कर = किरण; 'सरकार ने नया कर लगाया' में कर = टैक्स; पर्यायवाची गद्यांश वाले अर्थ का ही चुनें।
- मिलते-जुलते शब्दों का जाल: अनिल = वायु, अनल = आग; सविता = सूर्य, सरिता = नदी; नीरज = कमल, नीरद = बादल।
- विलोम उसी शब्द-भेद का: उन्नति-अवनति (संज्ञा), उन्नत-अवनत (विशेषण); ज्ञान का विलोम अज्ञान, अज्ञानी नहीं।
- मानक विलोम: आस्तिक-नास्तिक, साकार-निराकार, सजीव-निर्जीव, सुगम-दुर्गम, कृतज्ञ-कृतघ्न, आयात-निर्यात, अनुकूल-प्रतिकूल।
- संधि-विच्छेद: विद्यालय = विद्या + आलय (दीर्घ), सूर्योदय = सूर्य + उदय (गुण), सदैव = सदा + एव (वृद्धि), इत्यादि = इति + आदि (यण्), पवन = पो + अन (अयादि)।
- एक शब्द, दो समास: पीतांबर = पीला है जो अंबर (कर्मधारय), पर कृष्ण के अर्थ में पीला है अंबर जिसका (बहुव्रीहि); त्रिलोचन शिव के अर्थ में बहुव्रीहि।
- 'इक' प्रत्यय से प्रायः पहले स्वर की वृद्धि: समाज-सामाजिक, इतिहास-ऐतिहासिक, दिन-दैनिक, नीति-नैतिक, भूगोल-भौगोलिक।
- उपसर्ग के साथ संधि: अत्यधिक = अति + अधिक, अभ्यास = अभि + आस, स्वागत = सु + आगत; अनुपस्थित में अन् और उप दो उपसर्ग।
- संधि-विच्छेद में '+' (विद्यालय = विद्या + आलय), समास-विग्रह में कारक-चिह्न (राजपुत्र = राजा का पुत्र, हस्तलिखित = हस्त से लिखित)।

> **त्वरित दोहराव:** गद्यांश के शब्द का उत्तर उसके प्रसंग और शब्द-भेद से दें; अनेकार्थी (कर, पत्र, हार, अर्थ) का प्रसंग वाला अर्थ लें; अनिल-अनल, सविता-सरिता, नीरज-नीरद का जाल; विलोम उसी शब्द-भेद का (उन्नति-अवनति, ज्ञान-अज्ञान), मानक रूप (आस्तिक-नास्तिक, सुगम-दुर्गम); संधि-विच्छेद के दोनों खंड सार्थक; पीतांबर, त्रिलोचन में समास प्रसंग से तय; 'इक' से स्वर-वृद्धि (समाज-सामाजिक); उपसर्ग के साथ संधि (अति + अधिक)।

क्लोज़ टेस्ट (रिक्त स्थान वाला गद्यांश): संदर्भ, लिंग-वचन-कारक और संयोजक शब्द

क्लोज़ टेस्ट क्या है: इसमें एक छोटे गद्यांश के बीच-बीच से शब्द हटाकर रिक्त स्थान बना दिए जाते हैं और हर रिक्त स्थान के लिए चार विकल्प दिए जाते हैं। 'क्लोज़' शब्द अंग्रेज़ी 'क्लोज़र' (पूर्णता) से लिया गया है: मन अधूरी रचना को अर्थ के सहारे पूरा कर लेता है, और यही क्षमता यह प्रश्न परखता है। विधि दो चरणों की है। पहले चरण में पूरा गद्यांश पढ़िए और हर रिक्त स्थान पर विकल्प देखे बिना अपना शब्द सोचिए, जैसे 'यहाँ कोई अच्छा गुण आएगा' या 'यहाँ विरोध का शब्द आएगा'। दूसरे चरण में वह विकल्प चुनिए जो आपके सोचे भाव के सबसे निकट हो। गलत विकल्प प्रायः ऐसे बनाए जाते हैं जो अकेले पढ़ने पर ठीक लगें पर पूरे गद्यांश में न बैठें। परखने का क्रम यह रखिए: पहले व्याकरण से असंभव विकल्प हटाइए, फिर अर्थ और स्वर से, और अंत में शब्द-संगति से।

संदर्भ के संकेत तीन स्तरों पर: संकेत उसी वाक्य में, पड़ोसी वाक्य में या पूरे गद्यांश के विषय में मिलता है। वाक्य के भीतर 'के कारण', 'के बावजूद', 'के समान' बताते हैं कि परिणाम, विरोध या समानता चाहिए। पड़ोसी वाक्यों में तुलना का ढाँचा दिखता है: 'पहले लोग पैदल या बैलगाड़ी से यात्रा करते थे, इसलिए यात्रा बहुत ..... होती थी। आज रेल और वायुयान ने उसे ..... बना दिया है।' 'पहले' और 'आज' का विरोध बताता है कि पहले रिक्त स्थान में 'कठिन' और दूसरे में 'सरल' या 'सुगम' आएगा। पूरे गद्यांश का संकेत पर्यायवाची शृंखला से मिलता है: स्वच्छता पर लिखा लेखक 'स्वच्छ', 'निर्मल', 'शुद्ध' जैसे शब्द दोहराता है, इसलिए रिक्त स्थान में प्रायः उसी भाव-क्षेत्र का शब्द बैठता है। गद्यांश के स्वर के विपरीत शब्द, चाहे व्याकरण में ठीक हो, प्रायः गलत होता है।

लिंग से परखना: जब विकल्पों में एक ही शब्द के रूप हों (देता, देती, देते), तो निर्णय कर्ता या कर्म के लिंग से होता है, इसलिए संज्ञा का लिंग पक्का होना चाहिए। भूल वाले शब्द याद रखिए: दही, पानी, घी, मोती, हाथी, समाज और महत्त्व पुल्लिंग हैं; आत्मा, पुस्तक, चाय, सरकार, जनता, प्रजा और सभा स्त्रीलिंग। प्रत्यय भी संकेत देते हैं: '-ता' वाली भाववाचक संज्ञाएँ (मित्रता, सुंदरता) और '-आई', '-आवट', '-आहट' वाली (पढ़ाई, लिखावट, घबराहट) स्त्रीलिंग होती हैं, जबकि '-त्व', '-पन', '-आव' वाली (व्यक्तित्व, बचपन, बहाव) पुल्लिंग; पर 'देवता' और 'पिता' पुल्लिंग हैं, क्योंकि ये भाववाचक संज्ञाएँ नहीं, पुरुष का बोध कराने वाली संज्ञाएँ हैं; 'पिता' तो संस्कृत 'पितृ' से बना है, उसमें '-ता' प्रत्यय है ही नहीं। इसलिए 'सरकार ने नई योजना शुरू की', 'दही खट्टा है', 'देश की जनता जागरूक हो रही है' सही हैं। 'जनता' समूहवाचक होकर भी एकवचन है, जबकि 'लोग' सदा बहुवचन: 'लोग जागरूक हो रहे हैं'। आदर के लिए एक व्यक्ति के साथ भी बहुवचन क्रिया आती है: 'प्रधानाचार्य जी आ रहे हैं'।

वचन और कारक से परखना: परसर्ग (ने, को, से, में, पर, का, के, की) लगने पर कई संज्ञाओं का रूप बदल जाता है। बहुवचन संज्ञा के बाद परसर्ग हो तो ‘-ओं’ वाला रूप आता है: ‘इन पौधों को समय पर पानी दो’, ‘बच्चों के लिए’; और आकारांत पुल्लिंग एकवचन ‘-ए’ बन जाता है: ‘लड़के ने’, ‘कमरे में’; पर राजा, पिता, देवता, चाचा जैसे शब्द नहीं बदलते: ‘राजा ने’, ‘पिता को’। रिक्त स्थान स्वयं परसर्ग हो तो अर्थ से कारक पहचानिए: ‘वह बस ..... विद्यालय जाता है’ में साधन है, इसलिए ‘से’ (करण); ‘पेड़ ..... पत्ते गिरते हैं’ में अलग होना है, इसलिए ‘से’ (अपादान); ‘माँ ने बच्चे ..... दूध दिया’ में ‘को’ (संप्रदान); ‘छत ..... बंदर बैठा है’ में ‘पर’ (अधिकरण)। ‘ने’ सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत वाले रूपों (खाया, खाया है, खाया था) के साथ आता है, अपूर्ण भूत (खा रहा था) के साथ नहीं; ‘वह आया’ सही है, ‘उसने आया’ नहीं। संयुक्त क्रिया में निर्णय अंतिम क्रिया से होता है: ‘उसने खाना खा लिया’, पर ‘वह खाना खा चुका’। अपवाद: ‘लाना’ सकर्मक होकर भी ‘ने’ नहीं लेता (‘वह पुस्तक लाया’), और ‘नहाना’, ‘छींकना’, ‘खाँसना’, ‘थूकना’ अकर्मक होकर भी ‘ने’ लेते हैं (‘उसने छींका’)। ‘ने’ वाले वाक्य में कर्म के साथ भी ‘को’ हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन रहती है: ‘लड़की ने बिल्ली को देखा’।

संयोजक शब्दों के वर्ग: पहले दोनों वाक्यों का संबंध पहचानिए। जोड़ने वाले: और, तथा, एवं; विकल्प वाले: या, अथवा, अन्यथा, नहीं तो; विरोध वाले: परंतु, किंतु, लेकिन, बल्कि; परिणाम वाले: इसलिए, अतः, अतएव; कारण वाले: क्योंकि, चूँकि; उद्देश्य वाले: ताकि, जिससे कि; शर्त वाले: यदि...तो; स्वरूप बताने वाले: कि, अर्थात्, यानी। तीन भूलें बार-बार होती हैं। पहली दिशा की: ‘क्योंकि’ के बाद कारण आता है और ‘इसलिए’ के बाद परिणाम: ‘वह विद्यालय नहीं आया, क्योंकि बीमार था’, पर ‘वह बीमार था, इसलिए विद्यालय नहीं आया’। दूसरी दोहराव की: ‘क्योंकि’ और ‘इसलिए’ एक वाक्य में साथ नहीं आते; जोड़ी चाहिए तो ‘चूँकि...इसलिए’। तीसरी ‘बल्कि’ की: यह निषेध के बाद आता है, जैसे ‘वह केवल गायक नहीं, बल्कि अच्छा कवि भी है’। जोड़ी का दूसरा भाग कभी अगले रिक्त स्थान में होता है, इसलिए ‘यद्यपि’ दिखे तो आगे ‘तथापि’ या ‘फिर भी’ खोजिए। मानक व्याकरण ‘यद्यपि’ के साथ ‘तथापि’ (या ‘फिर भी’) की जोड़ी मानता है; बोलचाल और कुछ लेखन में ‘यद्यपि...परंतु’ भी मिलता है, पर वाक्य-शुद्धि के प्रश्नों में इसे प्रायः अशुद्ध माना जाता है, इसलिए विकल्प में ‘तथापि’ हो तो वही चुनिए।

हल किया हुआ उदाहरण: ‘पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी (1)..... होती हैं। वे बिना कुछ माँगे हमें ज्ञान (2)..... हैं। (3)..... आज मोबाइल फ़ोन के कारण पढ़ने की आदत घटती जा रही है, (4)..... अच्छी पुस्तकों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। जो बालक बचपन से ही (5)..... रूप से पढ़ने लगते हैं, उनकी भाषा समृद्ध होती है और सोचने की (6)..... बढ़ती है।’ विकल्प: (1) शत्रु, मित्र, मित्रता, मित्रवत्; (2) लेती, देती, देते, करती; (3) यद्यपि, क्योंकि, इसलिए, जब; (4) तथापि, अतः, और, अथवा; (5) नियम, नियमों, नियमित, नियमितता; (6) शक्ति, शक्तियाँ, शक्तिशाली, बल।

उदाहरण का हल: (1) ‘मित्र’; गद्यांश पुस्तकों की प्रशंसा कर रहा है, इसलिए ‘शत्रु’ स्वर के विपरीत है, ‘पुस्तकें मित्रता होती हैं’ अर्थहीन है और ‘मित्रवत्’ (मित्र के समान) अव्यय है, संज्ञा नहीं। (2) ‘देती’; कर्ता ‘वे’ यहाँ पुस्तकों (स्त्रीलिंग बहुवचन) के लिए आया है, इसलिए ‘देते’ नहीं; ‘लेती’ अर्थ के विपरीत है और संगत जोड़ा ‘ज्ञान देना’ है, ‘ज्ञान करना’ नहीं। (3) और (4) साथ हल होते हैं: एक ओर आदत घटने की बात है, दूसरी ओर महत्त्व न घटने की, अर्थात् विरोध; इसलिए ‘यद्यपि...तथापि’; ‘क्योंकि’ या ‘इसलिए’ कारण-परिणाम बताते, विरोध नहीं। (5) ‘नियमित’, क्योंकि ‘रूप’ संज्ञा से पहले विशेषण चाहिए; बाकी तीनों संज्ञाएँ हैं। (6) ‘शक्ति’, क्योंकि ‘की’ और ‘बढ़ती है’ स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा माँगते हैं; ‘शक्तियाँ’ के साथ ‘बढ़ती हैं’ होता, ‘बल’ पुल्लिंग है (‘सोचने का बल बढ़ता है’) और ‘शक्तिशाली’ विशेषण। अंत में चुने हुए शब्दों के साथ पूरा गद्यांश एक बार पढ़िए; हर वाक्य स्वाभाविक लगे, तभी उत्तर पक्के मानिए।

उदाहरण

- विधि: पूरा गद्यांश पढ़कर हर रिक्त स्थान पर विकल्प देखे बिना अपना शब्द सोचें; फिर व्याकरण, अर्थ-स्वर और शब्द-संगति के क्रम में विकल्प हटाएँ।
- तुलना का संकेत: ‘पहले यात्रा बहुत ..... होती थी, आज रेल ने उसे ..... बना दिया है’ में कठिन और सरल; ‘पहले’ और ‘आज’ विरोध बताते हैं।
- पुल्लिंग: दही, पानी, घी, मोती, हाथी, समाज, महत्त्व; स्त्रीलिंग: आत्मा, पुस्तक, चाय, सरकार, जनता, प्रजा, सभा।
- ‘-ता’, ‘-आई’, ‘-आवट’, ‘-आहट’ वाली भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग; ‘-त्व’, ‘-पन’, ‘-आव’ वाली पुल्लिंग; पर देवता और पिता पुल्लिंग हैं।
- ‘जनता जागरूक हो रही है’ (एकवचन स्त्रीलिंग), ‘लोग जागरूक हो रहे हैं’ (बहुवचन); आदर में ‘प्रधानाचार्य जी आ रहे हैं’।
- परसर्ग से पहले बहुवचन में ‘-ओं’: इन पौधों को, बच्चों के लिए; आकारांत पुल्लिंग एकवचन में ‘-ए’: लड़के ने, कमरे में; पर राजा ने, पिता को (ये नहीं बदलते)।
- ‘ने’ के अपवाद: लाना सकर्मक होकर भी ‘ने’ नहीं लेता (वह पुस्तक लाया); नहाना, छींकना, खाँसना, थूकना अकर्मक होकर भी ‘ने’ लेते हैं (उसने छींका)।
- संयोजक की दिशा: ‘क्योंकि’ के बाद कारण, ‘इसलिए’ के बाद परिणाम; दोनों एक वाक्य में साथ नहीं, जोड़ी ‘चूँकि...इसलिए’; ‘बल्कि’ निषेध के बाद।
- पुस्तक वाला उदाहरण: मित्र, देती, यद्यपि, तथापि, नियमित, शक्ति; ‘सोचने की ..... बढ़ती है’ में स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा चाहिए।

> **त्वरित दोहराव:** क्लोज़ टेस्ट: पूरा गद्यांश पढ़कर पहले अपना शब्द सोचें; व्याकरण, फिर अर्थ-स्वर, फिर संगति से विकल्प हटाएँ; संकेत उसी वाक्य, पड़ोसी वाक्य और पूरे विषय में; लिंग पक्का करें (दही पुल्लिंग, सरकार और जनता स्त्रीलिंग); परसर्ग से पहले ‘-ओं’ और ‘-ए’ रूप; ‘ने’ सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत रूपों (खाया, खाया था) में, अपूर्ण भूत में नहीं, अपवाद लाना और छींकना; ‘ने’ और ‘को’ दोनों हों तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन; क्योंकि के बाद कारण, इसलिए के बाद परिणाम; चूँकि...इसलिए, यद्यपि...तथापि; बल्कि निषेध के बाद।

काव्यांश और तथ्यात्मक गद्यांश: भाव, अलंकार, शब्दार्थ, समय-प्रबंधन और आम गलतियाँ

काव्यांश के प्रश्न कैसे आते हैं: कुछ परीक्षाओं में गद्यांश की जगह कविता की चार-छह पंक्तियाँ, अर्थात् काव्यांश या पद्यांश, दी जाती हैं। उन पर प्रायः कविता का भाव, उचित शीर्षक, कठिन शब्दों के अर्थ, किसी पंक्ति का अलंकार और कभी-कभी रस या भाषा पूछे जाते हैं। कविता में बात सीधे नहीं कही जाती, इसलिए पहले उसे अपने शब्दों में गद्य की तरह बोलकर देखिए: किसका वर्णन है, कौन-सा समय या ऋतु है, और कवि का मन प्रसन्न है, दुखी है या जोश से भरा है। भाषा पहचानने का सरल संकेत क्रिया के रूप हैं: ‘था’, ‘गया’, ‘हुआ’ जैसे रूपों वाली कविता खड़ी बोली में है, जबकि ‘भयो’, ‘गयो’ जैसे ओकारांत रूप प्रायः ब्रजभाषा के संकेत हैं; राजस्थानी में भी ऐसे रूप मिलते हैं, इसलिए यह संकेत है, अंतिम प्रमाण नहीं।

अलंकार पहचानने की कुंजी: हर प्रमुख अलंकार का एक पहचान-चिह्न है। अनुप्रास में एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति होती है। यमक में एक ही शब्द एक से अधिक बार आता है और हर बार अर्थ अलग होता है, जैसे 'काली घटा का घमंड घटा' में पहला 'घटा' बादल है और दूसरा 'कम हुआ'। श्लेष में शब्द एक ही बार आता है पर एक साथ एक से अधिक अर्थ देता है। उपमा में समानता बताई जाती है और 'सा', 'सी', 'से', 'सम', 'समान', 'जैसा' जैसे वाचक शब्द दिखते हैं; इसके चार अंग हैं: उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म, जैसे 'मुख चंद्रमा के समान सुंदर है' में मुख, चंद्रमा, 'समान' और 'सुंदर'। रूपक में वाचक शब्द नहीं होता और उपमेय तथा उपमान को एक ही मान लिया जाता है (चरण-कमल, मुख-चंद्र); समास-विग्रह में 'चरणकमल' को 'कमल के समान चरण' (कर्मधारय) लिखा जाता है, पर अलंकार की दृष्टि से इसमें वाचक शब्द नहीं और उपमेय-उपमान का अभेद है, इसलिए यह रूपक है। उत्प्रेक्षा में संभावना या कल्पना होती है और 'मानो', 'मनु', 'जनु', 'जानो' इसके संकेत हैं। मानवीकरण में प्रकृति या निर्जीव वस्तु को मनुष्य की तरह काम करते दिखाया जाता है; यह पाश्चात्य काव्यशास्त्र से आया अलंकार है, इसलिए संस्कृत की पुरानी सूचियों में नहीं मिलता, पर आज की परीक्षाओं में पूछा जाता है।

हल किया हुआ उदाहरण, काव्यांश: यह स्वरचित काव्यांश पढ़िए: 'भोर हुई, नभ में लाली छाई, / चिड़ियाँ चहकीं, चली पुरवाई। / खेतों में सरसों मुसकाई, / सोने-सी पीली धरती लहराई।' प्रश्न 1, मुख्य भाव: प्रातःकाल में गाँव के खेतों की प्राकृतिक सुंदरता; 'भोर' और 'लाली' समय बताते हैं और 'चहकीं', 'मुसकाई' से कवि का स्वर प्रसन्नता का है, इसलिए 'किसान की निर्धनता' या 'वर्षा का कष्ट' जैसे विकल्प गलत होंगे। प्रश्न 2, शब्दार्थ: 'पुरवाई' पूर्व दिशा से चलने वाली हवा है; 'नभ' आकाश है, जिसके पर्यायवाची गगन, व्योम और अंबर हैं। प्रश्न 3, 'खेतों में सरसों मुसकाई' में मानवीकरण, क्योंकि मुसकाना मनुष्य का काम है और यहाँ फूली सरसों को दिया गया है। प्रश्न 4, 'सोने-सी पीली धरती लहराई' में उपमा: उपमेय धरती, उपमान सोना, वाचक शब्द 'सी' और साधारण धर्म 'पीली'। प्रश्न 5, 'चिड़ियाँ चहकीं, चली' में 'च' की आवृत्ति से अनुप्रास। एक काव्यांश में कई अलंकार हो सकते हैं, इसलिए उत्तर प्रश्न में दी गई पंक्ति पर ही दीजिए।

तथ्यात्मक और विवरणात्मक गद्यांश: समाचार, रिपोर्ट या किसी वस्तु, संस्था या प्रक्रिया का विवरण देने वाले गद्यांश में भाव कम और तथ्य अधिक होते हैं: तिथियाँ, संख्याएँ, नाम, क्रम और कारण। इन पर प्रायः 'कब', 'कितने', 'किसने', 'किस क्रम में' और 'किसका उल्लेख नहीं है' पूछा जाता है। विधि खोजकर पढ़ने की है: प्रश्न से मुख्य शब्द या संख्या लीजिए, गद्यांश में वही पंक्ति ढूँढ़िए और उत्तर उसी से मिलाइए। उत्तर गद्यांश के अनुसार दिया जाता है, अपनी जानकारी के अनुसार नहीं। 'उल्लेख नहीं है' वाले प्रश्न में हर विकल्प को गद्यांश में खोजिए; जो न मिले, वही उत्तर है।

हल किया हुआ उदाहरण, तथ्यात्मक गद्यांश: 'भारत में डाक को सही स्थान तक जल्दी पहुँचाने के लिए 15 अगस्त 1972 को पिन कोड प्रणाली शुरू की गई। पिन का पूरा रूप पोस्टल इंडेक्स नंबर है। यह छह अंकों की संख्या होती है। इसका पहला अंक क्षेत्र बताता है, दूसरा उप-क्षेत्र, और पहले तीन अंक मिलकर छँटाई ज़िले की पहचान कराते हैं। अंतिम तीन अंक उस डाकघर को बताते हैं जहाँ डाक पहुँचनी है।' प्रश्न 1, प्रणाली कब शुरू हुई? उत्तर: 15 अगस्त 1972। प्रश्न 2, पिन कोड में कितने अंक होते हैं? उत्तर: छह। प्रश्न 3, छँटाई ज़िले की पहचान कैसे होती है? उत्तर: पहले तीन अंकों से; 'केवल तीसरा अंक' वाला विकल्प जाल है, क्योंकि गद्यांश 'पहले तीन अंक मिलकर' कहता है। प्रश्न 4, किसका उल्लेख नहीं है? (क) पिन का पूरा रूप (ख) पहले अंक का काम (ग) प्रणाली बनाने वाले व्यक्ति का नाम (घ) अंतिम तीन अंकों का काम; उत्तर (ग)। प्रश्न 5, उचित शीर्षक: 'पिन कोड प्रणाली'; 'भारतीय डाक का इतिहास' बहुत व्यापक है।

समय-प्रबंधन: गद्यांश वाले प्रश्न सबसे अधिक समय लेते हैं, इसलिए उनका क्रम पहले से तय रखिए। प्रायः लाभ इसमें है कि पहले व्याकरण और शब्द-भंडार के छोटे प्रश्न हल हों, फिर गद्यांश, ताकि समय कम पड़ने पर आसान अंक न छूटें। एक गद्यांश पर क्रम यह रहे: प्रश्नों पर एक दृष्टि, फिर एक बार पूरा पाठ, फिर उत्तर; दूसरी बार पूरा गद्यांश नहीं, केवल चिह्नित पंक्ति पढ़िए। जिन परीक्षाओं में नकारात्मक अंकन है, वहाँ दो विकल्पों में उलझन हो तो पंक्ति से एक बार और मिलाइए; फिर भी निर्णय न हो तो उस परीक्षा के अंकन-नियम को ध्यान में रखकर ही प्रश्न करने या छोड़ने का निर्णय कीजिए। अभ्यास के समय घड़ी लगाकर गद्यांश हल कीजिए, ताकि परीक्षा भवन में गति अपने-आप बने।

आम गलतियाँ: पहली, प्रश्न के 'नहीं', 'असत्य', 'के अतिरिक्त' को अनदेखा करना। दूसरी, गद्यांश का कोई शब्द विकल्प में देखकर उसे चुन लेना, जबकि विकल्प का अर्थ गद्यांश के विपरीत हो। तीसरी, अपनी जानकारी या राय को उत्तर बना देना। चौथी, काव्यांश में पूरी कविता का अलंकार बताना, जबकि प्रश्न एक पंक्ति का है। पाँचवीं, उपमा और रूपक में भ्रम: 'सा', 'समान' जैसा वाचक शब्द हो तो उपमा; न हो और दोनों को एक मान लिया गया हो तो रूपक। छठी, यमक और श्लेष में भ्रम: शब्द एक से अधिक बार आए और हर बार अर्थ बदले तो यमक, एक ही बार आकर एक से अधिक अर्थ दे तो श्लेष। सातवीं, तथ्यात्मक गद्यांश में 'लगभग', 'से अधिक', 'केवल' जैसे शब्द छोड़कर संख्या मिलाना। इन सबका एक ही उपाय है: हर उत्तर को उस पंक्ति से मिलाइए जिससे वह निकला है।

उदाहरण

- काव्यांश पर प्रायः भाव, शीर्षक, कठिन शब्दों के अर्थ, किसी पंक्ति का अलंकार और कभी-कभी रस या भाषा पूछे जाते हैं; पहले उसे गद्य की तरह अपने शब्दों में समझें।
- अनुप्रास: वर्ण की आवृत्ति (चिड़ियाँ चहकीं, चली); यमक: शब्द एक से अधिक बार, हर बार अर्थ अलग (काली घटा का घमंड घटा); श्लेष: शब्द एक बार, अर्थ एक से अधिक।
- उपमा के चार अंग: उपमेय, उपमान, वाचक शब्द (सा, सी, सम, समान, जैसा), साधारण धर्म; 'सोने-सी पीली धरती' में धरती, सोना, सी, पीली।
- रूपक: वाचक शब्द नहीं, उपमेय और उपमान एक मान लिए जाते हैं (चरण-कमल, मुख-चंद्र); उत्प्रेक्षा: संभावना, संकेत मानो, मनु, जनु, जानो।
- मानवीकरण: प्रकृति या निर्जीव वस्तु को मनुष्य की तरह काम करते दिखाना (खेतों में सरसों मुसकाई); यह पाश्चात्य काव्यशास्त्र से आया अलंकार है।
- शब्दार्थ: पुरवाई = पूर्व दिशा से चलने वाली हवा; नभ = आकाश (गगन, व्योम, अंबर); भोर = प्रातःकाल।
- तथ्यात्मक गद्यांश: प्रश्न से मुख्य शब्द या संख्या लें, वही पंक्ति खोजें; उत्तर गद्यांश के अनुसार दें, अपनी जानकारी से नहीं।
- पिन कोड: 15 अगस्त 1972 से, छह अंक; पहला अंक क्षेत्र, दूसरा उप-क्षेत्र, पहले तीन मिलकर छँटाई ज़िला, अंतिम तीन डाकघर।
- समय: पहले व्याकरण के छोटे प्रश्न, फिर गद्यांश; दूसरी बार पूरा गद्यांश नहीं, केवल चिह्नित पंक्ति पढ़ें; नकारात्मक अंकन हो तो अंधा अनुमान नहीं।
- आम भूलें: 'नहीं' वाला प्रश्न सीधा पढ़ना, पूरी कविता का अलंकार बताना, उपमा-रूपक और यमक-श्लेष में भ्रम, 'लगभग' या 'केवल' छोड़कर संख्या मिलाना।

त्वरित दोहराव: काव्यांश: पहले गद्य की तरह अर्थ समझें, फिर भाव, शीर्षक, शब्दार्थ, अलंकार; अनुप्रास वर्ण-आवृत्ति, यमक में एक शब्द बार-बार भिन्न अर्थ में, श्लेष में एक बार अनेक अर्थ, उपमा में वाचक शब्द (सा, सी, समान), रूपक में अभेद, उत्प्रेक्षा में मानो-जनु, मानवीकरण में प्रकृति मनुष्य जैसी; तथ्यात्मक गद्यांश में मुख्य शब्द से पंक्ति खोजें, उत्तर गद्यांश के अनुसार; पहले छोटे प्रश्न, फिर गद्यांश; 'नहीं', 'केवल', 'लगभग' पर ध्यान।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-passages/

हिंदी वाक्य शुद्धि और वर्तनी

वाक्य शुद्धि और वर्तनी

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: इस भाग में प्रायः तीन तरह के प्रश्न आते हैं। कभी एक वाक्य को तीन-चार हिस्सों में बाँटकर पूछा जाता है कि किस हिस्से में त्रुटि है; कभी चार वाक्य देकर शुद्ध या अशुद्ध वाक्य चुनना होता है; और कभी चार शब्दों में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द पहचानना होता है। वाक्य की त्रुटियाँ प्रायः कुछ गिनी-चुनी श्रेणियों से आती हैं: लिंग, वचन, कारक-चिह्न, क्रिया और काल का मेल, पुनरुक्ति, अनुचित शब्द और शब्द-क्रम। हर वाक्य को इन्हीं कसौटियों पर एक-एक करके जाँचने की आदत डालिए।

लिंग: क्रिया और विशेषण अपनी संज्ञा के लिंग से मेल खाने चाहिए, और 'का/की/के' अपने बाद आने वाली संज्ञा के लिंग से: 'सीता का भाई', 'राम की बहन'। भूल प्रायः उन संज्ञाओं में होती है जिनका लिंग रूप देखकर पता नहीं चलता। 'आग', 'पुस्तक', 'सड़क' और 'बर्फ़' स्त्रीलिंग हैं; 'आँसू', 'पानी', 'मोती' और 'हस्ताक्षर' पुल्लिंग हैं। इसलिए 'जंगल में आग लग गया' अशुद्ध है, 'जंगल में आग लग गई' शुद्ध; 'उसकी आँखों में आँसू आ गई' अशुद्ध है, 'आँसू आ गए' शुद्ध; 'सरकार ने नया नियम बनाई' अशुद्ध है, 'नया नियम बनाया' शुद्ध, क्योंकि 'ने' होने पर, जब कर्म के साथ 'को' न हो, क्रिया कर्म 'नियम' के अनुसार चलती है।

वचन: 'प्राण', 'दर्शन', 'हस्ताक्षर', 'आँसू' और 'होश' प्रायः बहुवचन में प्रयोग होते हैं: 'उसके प्राण निकल गए', 'मुझे आपके दर्शन हुए', 'डर से उसके होश उड़ गए'। 'अनेक' स्वयं बहुवचन का भाव देता है, इसलिए 'अनेकों' अशुद्ध है: 'उसने अनेकों पुस्तकें पढ़ीं' के स्थान पर 'उसने अनेक पुस्तकें पढ़ीं'। आदर के लिए एक व्यक्ति के साथ भी बहुवचन क्रिया आती है: 'पिताजी आ गया' नहीं, 'पिताजी आ गए'।

कारक-चिह्न: 'ने' भूतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ आता है ('वह खा रहा था' जैसे अपूर्ण भूत में नहीं)। 'मैंने घर जाना है' अशुद्ध है, 'मुझे घर जाना है' शुद्ध। अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' नहीं लगता: 'लड़के ने हँसा' नहीं, 'लड़का हँसा'; 'छींकना', 'खाँसना' जैसे गिने-चुने अपवाद हैं ('उसने छींका')। 'लाना' के साथ भी 'ने' नहीं आता: 'उसने पुस्तक लाई' नहीं, 'वह पुस्तक लाया'। 'कहना' और 'पूछना' के साथ 'से' आता है: 'उसने मुझे कहा' के स्थान पर 'उसने मुझसे कहा'; 'मेरे से पूछो' के स्थान पर 'मुझसे पूछो'। साधन बताने के लिए 'से' आता है, 'के साथ' नहीं: 'वह कलम से लिखता है'। किसी वस्तु की सतह के लिए 'पर': 'मेज़ पर किताब रखी है', 'मेज़ में' नहीं। 'उपकार' के साथ 'पर': 'आपने मुझ पर बहुत उपकार किया'।

क्रिया और काल का मेल: वाक्य में आए समय-सूचक शब्द, जैसे 'कल', 'परसों', 'पिछले वर्ष', 'अगले सप्ताह', 'प्रतिदिन', काल तय करते हैं। 'पिछले वर्ष मैं दिल्ली जाऊँगा' अशुद्ध है; 'पिछले वर्ष मैं दिल्ली गया था' शुद्ध। शर्त वाले वाक्य के दोनों भाग एक ही ढंग के होने चाहिए: 'यदि तुम परिश्रम करते तो सफल हो जाओगे' अशुद्ध है, 'यदि तुम परिश्रम करते तो सफल हो जाते' शुद्ध। दो कर्ता 'और' से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन होती है, और यदि वे भिन्न लिंग के हों तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन: 'राम और सीता वन को गए'। कर्ता 'या' से जुड़े हों तो क्रिया अंतिम कर्ता के अनुसार चलती है: 'राम या उसकी बहन आएगी'।

पुनरुक्ति, यानी एक ही अर्थ को दो बार कहना, एक आम भूल है। 'सज्जन पुरुष' में 'सज्जन' ही पर्याप्त है; 'प्रातःकाल के समय' में 'प्रातःकाल'; 'कृपया करके' में 'कृपया' (या 'कृपा करके'); 'सविनय सहित' में 'सविनय'; 'सपरिवार सहित' में 'सपरिवार'; 'यथाशक्ति के अनुसार' में 'यथाशक्ति'; 'केवल मात्र' में 'केवल' या 'मात्र'; 'सबसे श्रेष्ठतम' में 'श्रेष्ठतम' या 'सबसे श्रेष्ठ'। इसी तरह दोहरे प्रत्यय भी अशुद्ध हैं: 'सौंदर्यता' के स्थान पर 'सौंदर्य' या 'सुंदरता', 'गौरवता' के स्थान पर 'गौरव', 'पूज्यनीय' के स्थान पर 'पूजनीय' या 'पूज्य'।

अनुचित शब्द और शब्द-क्रम: 'दुर्घटना में तीन लोग मृत्यु हो गए' अशुद्ध है; 'दुर्घटना में तीन लोगों की मृत्यु हो गई' शुद्ध। 'उसने बोला कि वह आएगा' के स्थान पर 'उसने कहा कि वह आएगा' या 'वह बोला कि वह आएगा' लिखना चाहिए। विशेषण अपने विशेष्य के ठीक पहले आता है: 'उसने मुझे एक फूलों की माला दी' अशुद्ध है, क्योंकि 'एक' माला के लिए है, फूलों के लिए नहीं; शुद्ध है 'उसने मुझे फूलों की एक माला दी'। इसी तरह 'यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है' के स्थान पर 'यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है', क्योंकि शुद्ध दूध है, गाय नहीं।

अब वर्तनी। इ और ई की भूल सबसे आम है: 'परीक्षा' (परिक्षा नहीं), 'निरीक्षण' (निरिक्षण नहीं), 'श्रीमती' (श्रीमति नहीं), 'अतिथि' (अतिथी नहीं), 'उन्नति' (उन्नती नहीं), 'हानि' (हानी नहीं), 'कवयित्री' (कवियित्री नहीं)। उ और ऊ में: 'गुरु' में छोटा उ है पर 'शुरू' में बड़ा ऊ; 'रुपया' में छोटा उ पर 'रूप' में बड़ा ऊ; 'अनुकूल' (अनूकूल नहीं), 'भूगोल' (भुगोल नहीं), 'वधू', 'सूची'।

ऋ की मात्रा (ृ) और र के रूप (्र) में भ्रम दूसरी बड़ी भूल है। शुद्ध रूप हैं: 'ऋषि', 'कृपा', 'पृथ्वी', 'हृदय', 'दृष्टि', 'प्रकृति', 'कृत्रिम'; 'ह्रदय' या 'प्रथ्वी' अशुद्ध हैं। 'अनुगृहीत' शुद्ध है, 'अनुग्रहीत' अशुद्ध। 'शृंगार' और 'शृंखला' शुद्ध हैं, 'श्रृंगार' और 'श्रृंखला' अशुद्ध, क्योंकि यहाँ 'श' में केवल ऋ की मात्रा लगती है, 'श्र' में नहीं। छपाई में 'श्रृंगार' रूप बहुत दिखता है, पर मानक वर्तनी 'शृंगार' ही है।

र के रूप समझ लीजिए। जब र का उच्चारण किसी व्यंजन से पहले होता है तो वह रेफ बनकर अगले वर्ण के ऊपर लगता है: 'कर्म', 'धर्म', 'पूर्ण', 'निर्माण', 'आशीर्वाद'। 'आशीर्वाद' में र, 'व' से पहले बोला जाता है, इसलिए 'आर्शीवाद' अशुद्ध है। जब र किसी व्यंजन के बाद बोला जाता है तो वह उस व्यंजन के नीचे लगता है: 'प्रकाश', 'क्रम', 'ग्राम'; और ट या ड के साथ 'राष्ट्र', 'ड्रामा' जैसा रूप बनता है।

अनुस्वार और अनुनासिक:
अनुस्वार (ं) का उदाहरण है 'संसार', 'गंगा', 'हंस' (पक्षी); चंद्रबिंदु (ँ) का 'हँसना', 'आँख', 'चाँद', 'माँ', 'गाँव'। 'हंस' और 'हँस' का अर्थ अलग है। जब शिरोरेखा

के ऊपर कोई मात्रा हो (ि, ी, े, ै, ो, ौ), तो चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु लगाया जाता है: ‘मैं’, ‘में’, ‘नहीं’, ‘हैं’। य, र, ल, व, श, ष, स, ह से पहले केवल अनुस्वार लिखा जाता है: ‘संयम’, ‘संसार’, ‘संहार’; पर जहाँ वही नासिक्य वर्ण दोबारा आए, वहाँ पूरा वर्ण लिखा जाता है: ‘सम्मान’, ‘सम्मेलन’, ‘अन्न’। ‘संन्यासी’ शुद्ध है, ‘सन्यासी’ अशुद्ध।

श, ष, स: ‘विशेष’ (विषेश नहीं), ‘प्रशंसा’ (प्रसंशा नहीं), ‘शुश्रूषा’ (सुश्रुषा नहीं)। तत्सम शब्दों में ट और ठ से पहले ष आता है: ‘कष्ट’, ‘स्पष्ट’, ‘राष्ट्र’, ‘षष्ठ’। संयुक्ताक्षर ‘क्ष’ और ‘ज्ञ’ की जगह बोलचाल के उच्चारण के आधार पर ‘छ’ या ‘ग्य’ न लिखें: ‘क्षमा’, ‘क्षेत्र’, ‘शिक्षा’ (छमा, छेत्र नहीं); ‘ज्ञान’, ‘आज्ञा’, ‘विज्ञान’ (ग्यान नहीं)। ‘ज्ञ’ में ज् और ञ मिले हैं।

हलंत और आधे अक्षर: संस्कृत से आए कुछ शब्दों के अंत में हलंत (्) लगता है, जैसे ‘जगत्’, ‘पश्चात्’, ‘विद्वान्’; आज की हिंदी में इसे प्रायः छोड़ भी दिया जाता है। आधे अक्षर की जगह पर ध्यान दें: ‘उद्देश्य’ (उदेश्य नहीं), ‘उज्ज्वल’ (उज्वल नहीं), ‘बुद्धि’, ‘महत्त्व’, ‘उद्धार’। संधि या उपसर्ग से बने कुछ शब्द भी प्रायः गलत लिखे जाते हैं: ‘उपर्युक्त’ (उपरोक्त नहीं), ‘अत्यधिक’ (अत्याधिक नहीं), ‘अनधिकार’ (अनाधिकार नहीं), ‘अधीन’ (आधीन नहीं)। ‘इक’ प्रत्यय लगने पर प्रायः पहला स्वर बढ़ जाता है: ‘प्रामाणिक’, ‘व्यावहारिक’, ‘ऐतिहासिक’, ‘साप्ताहिक’ (प्रमाणिक, व्यवहारिक नहीं)।

जाल:
(1) केवल पहला हिस्सा पढ़कर त्रुटि ढूँढना, जबकि भूल प्रायः क्रिया या कारक-चिह्न में छिपी होती है; (2) ‘ने’ वाले वाक्य में क्रिया को कर्ता से मिलाना, कर्म से नहीं; (3) ‘आग’, ‘पुस्तक’ को पुल्लिंग और ‘आँसू’, ‘हस्ताक्षर’ को स्त्रीलिंग मान लेना; (4) ‘अनेकों’, ‘सज्जन पुरुष’, ‘प्रातःकाल के समय’ जैसी पुनरुक्ति को सामान्य मान लेना; (5) ‘गुरु’ और ‘शुरू’, ‘रुपया’ और ‘रूप’ की मात्राएँ आपस में बदल देना; (6) ‘श्रृंगार’, ‘अनुग्रहीत’, ‘आर्शीवाद’, ‘उपरोक्त’ जैसे प्रचलित पर अशुद्ध रूपों को शुद्ध मान लेना; (7) ‘हंस’ और ‘हँस’ को एक ही शब्द समझना।

उदाहरण

- ‘जंगल में आग लग गया।’ → ‘जंगल में आग लग गई।’ (आग स्त्रीलिंग)
- ‘उसकी आँखों में आँसू आ गई।’ → ‘उसकी आँखों में आँसू आ गए।’ (आँसू पुल्लिंग)
- ‘मैंने घर जाना है।’ → ‘मुझे घर जाना है।’
- ‘उसने पुस्तक लाई।’ → ‘वह पुस्तक लाया।’ (‘लाना’ के साथ ‘ने’ नहीं)
- ‘उसने अनेकों पुस्तकें पढ़ीं।’ → ‘उसने अनेक पुस्तकें पढ़ीं।’
- ‘आपने मुझे बहुत उपकार किया।’ → ‘आपने मुझ पर बहुत उपकार किया।’
- ‘प्रातःकाल के समय सज्जन पुरुष टहलते हैं।’ → ‘प्रातःकाल सज्जन टहलते हैं।’
- ‘उसने मुझे एक फूलों की माला दी।’ → ‘उसने मुझे फूलों की एक माला दी।’
- ‘यदि तुम परिश्रम करते तो सफल हो जाओगे।’ → ‘यदि तुम परिश्रम करते तो सफल हो जाते।’
- इ/ई: परीक्षा, निरीक्षण, श्रीमती, अतिथि, कवयित्री शुद्ध; परिक्षा, निरिक्षण, श्रीमति, अतिथी, कवियित्री अशुद्ध।
- उ/ऊ: गुरु पर शुरू, रुपया पर रूप। ऋ: हृदय, पृथ्वी, अनुगृहीत, शृंगार शुद्ध; ह्रदय, प्रथ्वी, अनुग्रहीत, श्रृंगार अशुद्ध।
- र और श/ष/स: आशीर्वाद (आर्शीवाद नहीं), प्रशंसा (प्रसंशा नहीं), शुश्रूषा (सुश्रुषा नहीं), विशेष (विषेश नहीं)।
- संधि-प्रत्यय वाले: उपर्युक्त (उपरोक्त नहीं), अत्यधिक (अत्याधिक नहीं), अधीन (आधीन नहीं), प्रामाणिक (प्रमाणिक नहीं), संन्यासी (सन्यासी नहीं)।
- बिंदु-चंद्रबिंदु: हंस (पक्षी) / हँसना; ऊपर मात्रा होने पर बिंदु: मैं, में, नहीं, हैं; संसार, संयम में अनुस्वार, पर सम्मान में म्म।

> **त्वरित दोहराव:** क्रिया और विशेषण अपनी संज्ञा से, का/की/के बाद वाली संज्ञा से लिंग-वचन में मिलें; आग, पुस्तक, सड़क, बर्फ़ स्त्रीलिंग, आँसू, पानी, मोती, हस्ताक्षर पुल्लिंग; प्राण, दर्शन, होश बहुवचन; ‘अनेकों’ अशुद्ध; ‘ने’ भूतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ, ‘मुझे जाना है’, ‘वह लाया’, ‘मुझसे कहा’, ‘मुझ पर उपकार’; समय-सूचक शब्द काल तय करते हैं; पुनरुक्ति हटाएँ: सज्जन पुरुष, प्रातःकाल के समय, कृपया करके, सबसे श्रेष्ठतम; विशेषण विशेष्य के ठीक पहले; शुद्ध वर्तनी: परीक्षा, श्रीमती, गुरु, शुरू, हृदय, अनुगृहीत, शृंगार, आशीर्वाद, प्रशंसा, शुश्रूषा, उपर्युक्त, अत्यधिक, संन्यासी, महत्त्व, उज्ज्वल।

वर्तनी की अशुद्धियाँ (1): मात्रा, अनुस्वार-अनुनासिक और मानक वर्तनी के नियम

वर्तनी और परीक्षा का प्रश्न: वर्तनी किसी शब्द को लिखने का मानक रूप है, यानी उसमें कौन-से वर्ण, कौन-सी मात्राएँ और कौन-से चिह्न किस क्रम में आएँगे। देवनागरी लगभग उच्चारण के अनुसार लिखी जाती है, इसलिए भूलें वहीं होती हैं जहाँ बोलचाल में दो ध्वनियों का अंतर मिट गया है, जैसे छोटी-बड़ी मात्रा या बिंदु-चंद्रबिंदु, या जहाँ तत्सम शब्द संस्कृत के नियम साथ लाते हैं। परीक्षा में प्रायः चार विकल्पों में से शुद्ध वर्तनी चुननी होती है, और विकल्प केवल एक-दो मात्राओं में भिन्न होते हैं, जैसे ‘परीक्षा, परिक्षा, परीक्सा, परिकषा’। ऐसे प्रश्न में केवल वही अक्षर देखिए जो विकल्पों में बदल रहा है, और उसी पर नियम लगाइए। मानक वर्तनी का आधार भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय के नियम हैं।

इ और ई की मात्रा: संस्कृत से आई इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं में छोटी इ रहती है: शक्ति, बुद्धि, रात्रि, विधि, कीर्ति, संस्कृति, संपत्ति, हानि, तिथि, और ‘अंजलि’ से बने श्रद्धांजलि, पुष्पांजलि; इसलिए ‘शक्ती’, ‘रात्री’, ‘श्रद्धांजली’ अशुद्ध हैं। बड़ी ई को प्रायः छोटी लिख दिया जाता है: परीक्षा, प्रतीक्षा, निरीक्षण, दीक्षा, आजीविका, ईर्ष्या; और ‘प्रदर्शनी’ शुद्ध है, ‘प्रदर्शिनी’ अशुद्ध। विसर्ग संधि में ‘निः’ के बाद र आए तो विसर्ग (र्) लुप्त होकर इ दीर्घ हो जाती है: निः + रोग = नीरोग, निः + रस = नीरस; इसलिए ‘निरोग’ और ‘निरस’ अशुद्ध माने जाते हैं। ‘ईय’ प्रत्यय में बड़ी ई (भारतीय, राष्ट्रीय, स्थानीय) और ‘इक’ में छोटी इ (दैनिक, मासिक) आती है। रूप बदलने पर ई छोटी हो जाती है: नदी से नदियाँ, स्त्री से स्त्रियाँ, स्थायी से स्थायित्व, उत्तरदायी से उत्तरदायित्व; संस्कृत के ‘इन्’

अंत वाले शब्दों के समास में भी: मंत्री से मंत्रिमंडल, स्वामी से स्वामिभक्त, प्राणी से प्राणिमात्र। 'मंत्रीमंडल' लिखना आम है, पर व्याकरण की पुस्तकें 'मंत्रिमंडल' को शुद्ध मानती हैं।

उ और ऊ की मात्रा: तत्सम उकारांत शब्दों में प्रायः छोटा उ होता है: वायु, आयु, ऋतु, वस्तु, धातु, हेतु, सेतु, जंतु, साधु, शत्रु, पशु, शिशु, प्रभु, मधु, बंधु, गुरु। तद्भव और देशज शब्दों के अंत में प्रायः बड़ा ऊ आता है: आलू, भालू, आँसू, डाकू, झाड़ू, लड्डू, उल्लू, बहू। 'वधू' और 'भू' तत्सम होकर भी बड़े ऊ वाले हैं; यह अपवाद याद रखिए। बहुवचन बनाते समय ऊ छोटा हो जाता है: डाकू से डाकुओं, आलू से आलुओं, बहू से बहुएँ, वधू से वधुएँ। शब्द के बीच के कठिन शब्द हैं: अनुकूल, प्रतिकूल, भूगोल, मूल्य, सूर्य, शून्य, पूर्ण, पूर्व, दूषित, अनुसूची, नूपुर, मुहूर्त (मुहुर्त नहीं), धूम्रपान (धुम्रपान नहीं)। र के साथ 'रु' और 'रू' का भ्रम सबसे अधिक होता है। रुपया, रुचि, गुरु, तरुण, करुणा, पुरुष और अरुण में छोटा उ है; रूप, रूस, रूठना, शुरू और रूढ़ि में बड़ा ऊ। इसलिए 'रूपया' और 'पुरूष' अशुद्ध हैं।

ए-ऐ और ओ-औ: इन जोड़ियों में मात्रा बदलते ही अर्थ बदल जाता है: 'और' (तथा) और 'ओर' (दिशा), 'बैर' (शत्रुता) और 'बेर' (फल), 'मैल' (गंदगी) और 'मेल' (मिलाप), 'सौ' (संख्या) और 'सो' (सोना क्रिया)। इसलिए 'मेरी और देखो' अशुद्ध है और 'मेरी ओर देखो' शुद्ध; 'दोनों भाइयों में बेर हो गया' के स्थान पर 'बैर हो गया' शुद्ध है। इस भाग का सबसे काम का नियम 'इक' प्रत्यय का है: 'इक' लगने पर प्रायः शब्द के पहले स्वर की वृद्धि होती है; अ का आ बनता है, इ, ई और ए का ऐ बनता है, तथा उ, ऊ और ओ का औ बनता है। इसलिए समाज से सामाजिक, सप्ताह से साप्ताहिक, वर्ष से वार्षिक, धर्म से धार्मिक, अर्थ से आर्थिक, व्यवहार से व्यावहारिक, प्रमाण से प्रामाणिक; नीति से नैतिक, इतिहास से ऐतिहासिक, विज्ञान से वैज्ञानिक, वेद से वैदिक, सेना से सैनिक; भूगोल से भौगोलिक, उद्योग से औद्योगिक, पुराण से पौराणिक, लोक से लौकिक, भूत से भौतिक। 'परलोक' से 'पारलौकिक' बनता है, जिसमें दोनों खंडों के स्वर बढ़ते हैं; यह विशेष स्थिति है, सामान्यतः केवल पहला स्वर बढ़ता है (सर्वजन से सार्वजनिक)। श्रमिक, धनिक और क्रमिक जैसे कुछ शब्दों में वृद्धि होती ही नहीं। 'समाजिक', 'नेतिक', 'भोगोलिक' जैसे विकल्प इसी नियम से पकड़े जाते हैं।

अनुस्वार और अनुनासिक: अनुस्वार (ं) में ध्वनि नाक से निकलती है और यह अगले व्यंजन से जुड़े नासिक्य की तरह बोला जाता है: संसार, गंगा, हंस, अंक। अनुनासिक (ँ, चंद्रबिंदु) में स्वर ही नाक और मुँह दोनों से बोला जाता है: हँसना, आँख, चाँद, माँ, गाँव, पाँच, दाँत। यह अंतर अर्थ भी बदलता है: 'हंस' (पक्षी) और 'हँस' (हँसना से), 'अंगना' (स्त्री) और 'अँगना' (आँगन)। निदेशालय के अनुसार जहाँ ध्वनि अनुनासिक है, वहाँ चंद्रबिंदु लगाना आवश्यक है; जब शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा हो (ि, ी, े, ै, ो, ौ), तब चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु लगता है, यद्यपि उच्चारण अनुनासिक ही रहता है: मैं, में, नहीं, हैं, क्यों, कहीं, गोंद। स्त्रीलिंग बहुवचन क्रिया के अंतिम ई पर बिंदु लगता है ('लड़कियाँ गईं', 'उसने पुस्तकें पढ़ीं'), पर विशेषण पर नहीं ('अच्छी लड़कियाँ')। पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के बाद उसी वर्ग का वर्ण आए तो निदेशालय अनुस्वार लिखने को कहता है: गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक, हिंदी। पर यदि पंचमाक्षर के बाद किसी दूसरे वर्ग का वर्ण या य, व जैसा वर्ण आए, या वही पंचमाक्षर दोबारा आए, तो पूरा वर्ण लिखा जाता है: अन्य, कन्या, पुण्य, वाङ्मय, उन्मुख, चिन्मय, अन्न, सम्मान, सम्मेलन। 'सम्' उपसर्ग वाले संयम, संवाद, संसार, संहार में अनुस्वार ही रहता है, क्योंकि संस्कृत में भी वहाँ अनुस्वार है।

निदेशालय के अन्य मानक नियम: क्रिया और विशेषण के रूपों में स्वरात्मक रूप लिखे जाते हैं: गए, गई, नई, किए, लिए, दीजिए, चाहिए; 'गये', 'नयी', 'किये', 'चाहिये' अमानक हैं। पर जहाँ य मूल शब्द का अंग है, वहाँ य बना रहता है: स्थायी, दायित्व, अव्ययीभाव। परसर्ग संज्ञा से अलग लिखे जाते हैं (राम ने, बच्चों के लिए) और सर्वनाम से मिलाकर (उसने, मुझको, आपसे); सर्वनाम के साथ दो परसर्ग हों तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग (उसके लिए, इसमें से), और बीच में 'ही' या 'तक' आए तो सब अलग (आप ही के लिए)। पूर्वकालिक 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाता है (खाकर, पढ़कर), जबकि संयुक्त क्रिया के अंग अलग रहते हैं (पढ़ा करता है, जा सकता है)। तत्सम शब्दों में विसर्ग बना रहता है (अतः, प्रायः, पुनः, दुःख), पर तद्भव प्रयोग में छूट सकता है ('दुख-सुख')। जहाँ नुक़्ता से अर्थ बदलता है, वहाँ उसे लगाना चाहिए: 'राज' (शासन) और 'राज़' (रहस्य)।

परीक्षा के जाल: पहला जाल तत्सम स्त्रीलिंग शब्दों पर बड़ी ई लगाना (श्रद्धांजली, रात्री) और 'परीक्षा', 'प्रदर्शनी' की बड़ी ई को छोटा करना है। दूसरा, 'रु' और 'रू' की अदला-बदली (रूपया, पुरूष, मुहुर्त)। तीसरा, 'इक' प्रत्यय में पहले स्वर की वृद्धि भूलना (समाजिक, व्यवहारिक, एतिहासिक)। चौथा, समास और बहुवचन में ई का छोटा होना न जानना (मंत्रीमंडल, नदीयाँ)। पाँचवाँ, 'और-ओर' तथा 'हंस-हँस' को एक मान लेना। ध्यान रहे कि पुराने पंचमाक्षर रूप (हिन्दी, सम्पादक) और बिना चंद्रबिंदु के छपाई रूप (आंख, चांद) प्रचलित हैं; 'अशुद्ध' वर्तनी पूछी जाए तो पहले देखिए कि कोई दूसरा विकल्प स्पष्ट रूप से अशुद्ध तो नहीं, और 'मानक' वर्तनी पूछी जाए तो निदेशालय वाला रूप चुनिए।

उदाहरण

- इ/ई (तत्सम स्त्रीलिंग): शक्ति, बुद्धि, रात्रि, विधि, कीर्ति, तिथि, श्रद्धांजलि शुद्ध; शक्ती, रात्री, विधी, श्रद्धांजली अशुद्ध।
- बड़ी ई: परीक्षा, प्रतीक्षा, निरीक्षण, आजीविका, ईर्ष्या, प्रदर्शनी शुद्ध; परिक्षा, प्रतिक्षा, निरिक्षण, आजिविका, इर्ष्या, प्रदर्शिनी अशुद्ध।
- निः + र: नीरोग, नीरस, नीरव शुद्ध (विसर्ग का लोप, इ दीर्घ); निरोग, निरस अशुद्ध।
- ई और ऊ का छोटा होना: नदी-नदियाँ, स्त्री-स्त्रियाँ, स्थायी-स्थायित्व, मंत्री-मंत्रिमंडल, प्राणी-प्राणिमात्र; डाकू-डाकुओं, बहू-बहुएँ।
- उ/ऊ: वायु, आयु, ऋतु, वस्तु, गुरु, रुपया, पुरुष में छोटा उ; आलू, डाकू, वधू, शुरू, रूप, मुहूर्त, धूम्रपान में बड़ा ऊ।
- 'इक' से वृद्धि: समाज-सामाजिक, वर्ष-वार्षिक, व्यवहार-व्यावहारिक, प्रमाण-प्रामाणिक, नीति-नैतिक, इतिहास-ऐतिहासिक, भूगोल-भौगोलिक, उद्योग-औद्योगिक, परलोक-पारलौकिक; पर श्रमिक, धनिक, क्रमिक में वृद्धि नहीं।
- अर्थ-भेद: और (तथा) / ओर (दिशा), बैर (शत्रुता) / बेर (फल), मैल (गंदगी) / मेल (मिलाप), हंस (पक्षी) / हँस (हँसना), अंगना (स्त्री) / अँगना (आँगन)।
- चंद्रबिंदु और बिंदु: आँख, चाँद, पाँच, गाँव में चंद्रबिंदु; ऊपर मात्रा होने पर केवल बिंदु: मैं, में, नहीं, हैं, क्यों; 'लड़कियाँ गईं' पर 'अच्छी लड़कियाँ'।
- पंचमाक्षर: गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, हिंदी, संपादक में अनुस्वार; अन्य, कन्या, वाङ्मय, उन्मुख, अन्न, सम्मान, सम्मेलन में पूरा पंचमाक्षर।
- निदेशालय के रूप: गए, गई, नई, किए, लिए, चाहिए (गये, नयी, किये नहीं); राम ने पर उसने; उसके लिए; पढ़कर; जा सकता है; अतः, प्रायः, दुःख।

त्वरित दोहराव: तत्सम इकारांत स्त्रीलिंग में छोटी इ (शक्ति, रात्रि, श्रद्धांजलि); परीक्षा, प्रतीक्षा, प्रदर्शनी में ई; निः + र से नीरोग, नीरस; बहुवचन-समास में ई-ऊ छोटी (नदियाँ, मंत्रिमंडल, डाकुओं); तत्सम उकारांत में उ (वायु, गुरु), तद्भव में ऊ (आलू), अपवाद वधू; रुपया, पुरुष पर रूप, शुरू, मुहूर्त; 'इक' से वृद्धि (सामाजिक, व्यावहारिक, नैतिक, भौगोलिक, पारलौकिक); और/ओर, बैर/बेर, हंस/हँस; ऊपर मात्रा पर बिंदु (मैं, नहीं); सवर्गी पंचमाक्षर का अनुस्वार (गंगा, हिंदी) पर अन्य, सम्मान; गए, नई, किए, चाहिए।

वर्तनी की अशुद्धियाँ (2): र के रूप, श-ष-स, ण-न, ब-व, क्ष-छ, हलंत और संयुक्ताक्षर

र के रूप: देवनागरी में र कई तरह से लिखा जाता है, और वर्तनी के बहुत-से प्रश्न इन्हीं पर बनते हैं। जब र स्वर-रहित होकर अपने बाद वाले व्यंजन से पहले बोला जाता है, तो वह रेफ बनकर उस व्यंजन के ऊपर लगता है: कर्म, धर्म, सूर्य, कार्य, पूर्ण, निर्माण। रेफ जिस वर्ण के ऊपर लगता है, उच्चारण में र ठीक उसी से पहले आता है; 'आ-शीर्-वाद' बोलने पर 'आशीर्वाद' लिखा जाएगा, 'आर्शीवाद' नहीं। इसी तर्क से अंतर्धान (अंतर्ध्यान नहीं), पुनर्जन्म, निर्दोष, आर्द्र, पूर्णिमा और सौहार्द (सौहार्द्र नहीं) लिखे जाते हैं। जब र किसी व्यंजन के बाद बोला जाता है, तो वह उस व्यंजन के नीचे तिरछी रेखा बनकर लगता है, जिसे पदेन र कहते हैं: प्रकाश, क्रम, ग्राम, श्रम, द्रव, व्रत; ट और ड के नीचे यह छोटे कोण के आकार में लगता है: राष्ट्र, ट्रक, ड्रामा। ऋ की मात्रा (ृ) र नहीं बल्कि एक स्वर है: कृपा, गृह, हृदय, पृथ्वी, दृष्टि, मृत्यु।

ऋ और र का भ्रम: क् + र + इ से 'क्रिया' बनता है और क + ऋ से 'कृपा'; इन्हें आपस में बदलने पर 'कृया' या 'क्रपा' जैसे अशुद्ध रूप बनते हैं। अर्थ बदलने वाली जोड़ियाँ: 'गृह' (घर; गृहस्थ, गृहिणी) और 'ग्रह' (नवग्रह, ग्रहण); 'हृदय' में ह + ऋ पर 'ह्रास' (कमी) में ह् + र; इसी तरह प्रकृति और प्रक्रिया, दृश्य और द्रव्य, वृक्ष और व्रत। 'शृंगार' और 'शृंखला' में श + ऋ है, इसलिए 'श्रृंगार' अशुद्ध है, जबकि श्रम, श्रद्धा और आश्रम में श् + र है। सबसे अधिक पूछा जाने वाला जाल 'स्र' और 'स्त्र' का है: 'स्रोत' और 'सहस्र' में केवल स् + र है, इसलिए 'स्त्रोत' और 'सहस्त्र' अशुद्ध हैं; जबकि स्त्री, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र और शास्त्र में सचमुच स् + त् + र है। ऋषि, ऋण और ऋतु आरंभ में ऋ स्वर से लिखे जाते हैं, और 'सृष्टि' को 'श्रृष्टि' लिखना दोहरी भूल है।

श, ष और स: बोलचाल में ष प्रायः श की तरह बोला जाता है, इसलिए भूलें होती हैं; ष लगभग केवल तत्सम शब्दों में आता है। संस्कृत के संधि-नियमों से तीन काम की बातें निकलती हैं। तत्सम शब्दों में ट और ठ से ठीक पहले ष आता है: कष्ट, स्पष्ट, दृष्टि, षष्ठी, निष्ठा, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठ; ध्यान रहे कि 'षष्ठी' में ष्ठ है, 'षष्टी' अशुद्ध है। च और छ से पहले श आता है: पश्चिम, पश्चात्, निश्चय, निश्छल। त और थ से पहले स आता है: अस्त, स्थान, स्वस्थ, पुस्तक। इ या उ पर समाप्त होने वाले उपसर्ग के बाद स प्रायः ष हो जाता है (निषेध, अभिषेक, विषम, अनुष्ठान), पर 'अनुसार', 'विस्मरण' जैसे अपवाद भी हैं, इसलिए इसे पक्का नियम न मानें। जिन शब्दों में भूल आम है: विशेष (विषेश नहीं), प्रशंसा (प्रसंशा नहीं), शासन, शीर्षक, विश्लेषण, आकर्षण, अभिलाषा, शुश्रूषा, श्मशान (शमशान नहीं), षड्यंत्र।

ण और न: हिंदी का कोई शब्द ण से आरंभ नहीं होता। संस्कृत का णत्व नियम है कि ऋ, र या ष के बाद आने वाला न, ण बन जाता है, और यह परिवर्तन तब भी होता है जब दोनों के बीच कोई स्वर, क-वर्ग, प-वर्ग, य, व, ह या अनुस्वार हो: ऋण, कृष्ण, विष्णु, भूषण, कारण, ग्रहण, रामायण, प्रमाण, परिणाम, अर्पण, निर्माण, आदरणीय, स्मरणीय। क्ष में भी ष छिपा है, इसलिए लक्षण, शिक्षण, निरीक्षण में ण आता है। पर यदि बीच में च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग, श, स या ल आ जाए, तो न बना रहता है: अर्चना, रचना, गर्जन, अर्जुन, दर्शन, प्रार्थना, रत्न, प्रयत्न। इसी कारण 'आदरणीय' और 'स्मरणीय' में ण है, पर 'दर्शनीय' में न, क्योंकि वहाँ र और न के बीच श है। यह नियम तत्सम शब्दों पर लगता है; तद्भव और ठेठ हिंदी शब्दों में न ही रहता है: करना, मरना, रानी, पुराना। तत्सम 'कर्ण' से तद्भव 'कान' और 'स्वर्ण' से 'सोना' बनना इसी का उदाहरण है।

ब और व: बोलचाल में ब और व का भेद प्रायः मिट जाता है, पर लिखने में यह अर्थ बदल देता है: 'वात' (वायु) और 'बात' (कथन), 'वाद' (विवाद, सिद्धांत) और 'बाद' (पश्चात्), 'वार' (आक्रमण, सप्ताह का दिन) और 'बार' (दफ़ा), 'वहन' (ढोना) और 'बहन' (भगिनी), 'वन' (जंगल) और 'बन' (बनना से)। इसलिए 'वह दो वार आया' अशुद्ध है, 'दो बार आया' शुद्ध; 'उसने भार का बहन किया' अशुद्ध है, 'भार का वहन किया' शुद्ध। व वाले शब्द जिन्हें प्रायः ब से लिखा जाता है: वाल्मीकि (बाल्मीकि नहीं), वीणा, विश्व, विवश, व्यंग्य (ब्यंग्य या व्यंग नहीं), वृद्ध, व्यवहार, वसुधा। ब वाले शब्द जिन्हें प्रायः व से लिखा जाता है: बिंदु (विंदु नहीं), बृहस्पति (वृहस्पति नहीं), बुद्धि, बंधु, ब्राह्मण।

क्ष, छ, ज्ञ और ग्य: 'क्ष' संयुक्ताक्षर है, जिसमें क् और ष मिले हैं; बोलचाल में यह 'छ' जैसा सुनाई देता है, पर लिखा क्ष ही जाता है: क्षमा, क्षेत्र, क्षत्रिय, क्षीण, क्षुधा, कक्षा, शिक्षा, रक्षा, वृक्ष, अध्यक्ष, साक्षी, लक्षण, दक्षिण। 'छमा', 'छेत्र', 'छत्रिय' अशुद्ध हैं। उलटी भूल भी होती है: छात्र, छाया, छत्र (छाता), इच्छा, स्वच्छ और तुच्छ में छ ही है, क्ष नहीं। 'ज्ञ' में ज् और ञ मिले हैं, यद्यपि हिंदी में इसका उच्चारण प्रायः 'ग्य' जैसा होता है: ज्ञान, यज्ञ, आज्ञा, संज्ञा, प्रतिज्ञा, विज्ञान, कृतज्ञ, सर्वज्ञ। इनके विपरीत योग्य, भाग्य, आरोग्य, वैराग्य और अयोग्य में सचमुच ग् + य है, इसलिए इन्हें ज्ञ से नहीं लिखा जाता। 'कृतघ्न' को 'कृतघ्नी' लिखना भी अशुद्ध है।

हलंत, संधि और ह वाले संयुक्ताक्षर: स्वर-रहित व्यंजन का चिह्न हलंत (्) तत्सम शब्दों में लिखा जाता है: जगत्, पश्चात्, अर्थात्, साक्षात्, विद्युत्; पर निदेशालय के अनुसार जिन शब्दों में हिंदी में हल् चिह्न लुप्त हो चुका है, जैसे महान और विद्वान, उनमें इसे फिर लगाने की आवश्यकता नहीं। हलंत वाले शब्द संधि में रूप बदलते हैं, और यहीं अशुद्धियाँ बनती हैं: सत् + उपदेश = सदुपदेश (सदोपदेश नहीं), तत् + उपरांत = तदुपरांत (तदोपरांत नहीं), उत् + ज्वल = उज्ज्वल, उत् + लंघन = उल्लंघन (उलंघन नहीं); इसी प्रकार पुनः + उक्ति = पुनरुक्ति, दुः + अवस्था = दुरवस्था (दुरावस्था नहीं)। ह से बने संयुक्ताक्षरों में अक्षरों का क्रम उलट देना आम भूल है: चिह्न (चिन्ह नहीं), ब्रह्मा, ब्राह्मण (ब्राम्हण नहीं), आह्वान (आव्हान नहीं), जिह्वा (जिव्हा नहीं), आह्लाद, मध्याह्न और अपराह्न (मध्यान्ह नहीं)। दोहरे और संयुक्त वर्ण वाले शब्द: महत्त्व (महत् + त्व), तत्त्व (तत् + त्व), द्वंद्व, अध्ययन (अध्यन नहीं), स्वास्थ्य, ज्योत्स्ना, साम्राज्य (सम्राज्य नहीं)।

सामान्यतः अशुद्ध लिखे जाने वाले शब्द और हल करने का क्रम: ऊपर के शब्दों के अतिरिक्त ये भी बार-बार पूछे जाते हैं: पुरस्कार (पुरुस्कार नहीं), आगामी (अगामी नहीं), अंत्याक्षरी (अंताक्षरी नहीं), निरपराध (निरपराधी नहीं), धूम्रपान (धुम्रपान नहीं), प्रशंसा (प्रसंशा नहीं)। वर्तनी के प्रश्न में चारों विकल्प साथ रखकर पहले रेफ और पदेन र की जगह देखिए, फिर स्र और स्त्र, फिर ह वाले संयुक्ताक्षर, और अंत में श-ष-स तथा ण-न; प्रायः पहले दो-तीन चरणों में ही उत्तर

मिल जाता है। 'महत्व' रूप भी बहुत प्रचलित है; विकल्पों में 'महत्त्व' हो तो वही मानक है, पर केवल 'महत्व' हो तो उसे अशुद्ध मानने से पहले बाकी विकल्प देख लीजिए।

उदाहरण

- रेफ का स्थान उच्चारण से: आशीर्वाद (आर्शीवाद नहीं), अंतर्धान (अंतर्ध्यान नहीं), सौहार्द (सौहार्द्र नहीं), पूर्णिमा, आर्द्र, निर्माण।
- ऋ और र: गृह (घर) / ग्रह (नवग्रह), हृदय / ह्रास, कृपा / क्रिया, शृंगार और शृंखला शुद्ध; श्रृंगार, कृया, श्रृष्टि अशुद्ध।
- स्र और स्त्र: स्रोत, सहस्र शुद्ध, स्त्रोत, सहस्त्र अशुद्ध; पर स्त्री, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, शास्त्र में स् + त् + र है।
- श-ष-स: ट/ठ से पहले ष (कष्ट, षष्ठी, श्रेष्ठ), च/छ से पहले श (पश्चिम, निश्चय, निश्छल), त/थ से पहले स (अस्त, स्थान); विशेष, प्रशंसा, श्मशान शुद्ध।
- णत्व: ऋ, र, ष के बाद न का ण (ऋण, कारण, प्रमाण, रामायण, आदरणीय, लक्षण); बीच में च/ट/त-वर्ग, श, स, ल हो तो न (अर्चना, दर्शन, दर्शनीय, प्रार्थना, रत्न)।
- ब/व के अर्थ-भेद: वात / बात, वाद / बाद, वार / बार, वहन / बहन, वन / बन; वाल्मीकि, व्यंग्य, बिंदु, बृहस्पति शुद्ध।
- क्ष और ज्ञ: क्षमा, क्षेत्र, क्षत्रिय, शिक्षा (छमा, छेत्र नहीं); छात्र, इच्छा, स्वच्छ में छ; ज्ञान, यज्ञ, आज्ञा में ज्ञ, पर योग्य, भाग्य, आरोग्य में ग्य।
- ह वाले संयुक्ताक्षर: चिह्न, ब्रह्मा, ब्राह्मण, आह्वान, जिह्वा, आह्लाद, मध्याह्न, अपराह्न शुद्ध; चिन्ह, ब्रम्हा, आव्हान, जिव्हा, मध्यान्ह अशुद्ध।
- संधि से बनी वर्तनी: सदुपदेश, तदुपरांत, उज्ज्वल, उल्लंघन, पुनरुक्ति, दुरवस्था शुद्ध; सदोपदेश, तदोपरांत, उज्वल, उलंघन, पुनरोक्ति, दुरावस्था अशुद्ध।
- अन्य: पुरस्कार, आगामी, अंत्याक्षरी, निरपराध, कृतघ्न, धूम्रपान, षष्ठी, साम्राज्य, अध्ययन, स्वास्थ्य, महत्त्व, द्वंद्व शुद्ध रूप हैं।

> **त्वरित दोहराव:** रेफ उच्चारण-क्रम से: आशीर्वाद, अंतर्धान, सौहार्द; पदेन र: प्रकाश, राष्ट्र; ऋ स्वर: कृपा, गृह, हृदय, शृंगार; गृह/ग्रह, हृदय/ह्रास; स्रोत, सहस्र (स्त्रोत नहीं); ट/ठ से पहले ष, च/छ से पहले श, त/थ से पहले स; ऋ, र, ष के बाद ण (कारण, प्रमाण, आदरणीय), बीच में च/ट/त-वर्ग, श, स, ल हो तो न (दर्शन, प्रार्थना); वात/बात, वाद/बाद, वहन/बहन; क्षमा, क्षेत्र; ज्ञान पर योग्य; चिह्न, ब्राह्मण, आह्वान, मध्याह्न; सदुपदेश, उज्ज्वल, पुनरुक्ति; पुरस्कार, आगामी, महत्त्व।

लिंग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ

वाक्य में मेल का नियम: हिंदी वाक्य के शब्द आपस में बँधे रहते हैं। विशेषण अपने विशेष्य से, संबंध कारक के 'का, की, के' अपने बाद आने वाली संज्ञा से, और क्रिया अपने कर्ता या कर्म से लिंग, वचन और पुरुष में मेल खाती है। इसलिए किसी एक संज्ञा का लिंग या वचन गलत समझ लेने पर भूल पूरे वाक्य में फैल जाती है: 'मेरा पुस्तक खो गया' में 'मेरा' और 'गया' दोनों अशुद्ध हैं, शुद्ध है 'मेरी पुस्तक खो गई'। हिंदी में दो ही लिंग हैं, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग; संस्कृत का नपुंसक लिंग हिंदी में नहीं है। ध्यान रहे कि तत्सम शब्द भी हिंदी में सदा संस्कृत वाला लिंग नहीं रखते: संस्कृत में 'पुस्तक' नपुंसक और 'आत्मा' पुल्लिंग है, पर हिंदी में दोनों स्त्रीलिंग हैं ('मेरी पुस्तक', 'उसकी आत्मा')। इसलिए लिंग का निर्णय हिंदी के प्रयोग से होता है, शब्द के मूल से नहीं।

जिन संज्ञाओं का लिंग धोखा देता है: स्त्रीलिंग शब्द जिन्हें प्रायः पुल्लिंग मान लिया जाता है: आग, आत्मा, आयु, वायु, ऋतु, वस्तु, मृत्यु, देह, संतान, सरकार, पुलिस, जनता, भीड़, सड़क, पुस्तक, बर्फ़, सलाह, सुबह, शाम, भूख, प्यास। पुल्लिंग शब्द जिन्हें प्रायः स्त्रीलिंग मान लिया जाता है: पानी, घी, दही, मोती, आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, सवेरा, व्यक्ति, अतिथि, कवि, शत्रु, पक्षी, हाथी। एक ही समय के दो शब्दों का लिंग अलग है: 'सुबह हो गई' पर 'सवेरा हो गया'। 'दही खट्टा है' शुद्ध है, 'दही खट्टी है' अशुद्ध; 'पुलिस आ गई', 'सरकार ने घोषणा की', 'उसकी आयु बीस वर्ष की है', 'ठंडी वायु चल रही है', 'मुझे भूख लगी है' शुद्ध हैं (संस्कृत और कुछ पुराने प्रयोगों में 'वायु' पुल्लिंग है, पर परीक्षा में इसे स्त्रीलिंग मानिए)। कुछ समूह याद रखिए: भाषाओं, नदियों और तिथियों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं (हिंदी, गंगा, एकादशी), पर 'ब्रह्मपुत्र' पुल्लिंग है; पर्वतों, देशों, दिनों और ग्रहों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं (हिमालय, भारत, सोमवार, मंगल), पर 'पृथ्वी' स्त्रीलिंग है। कुछ प्राणी-नाम नित्य स्त्रीलिंग हैं (कोयल, मैना, चील, मक्खी) और कुछ नित्य पुल्लिंग (कौआ, उल्लू, भेड़िया, खटमल); इनका दूसरा लिंग 'नर' या 'मादा' जोड़कर बताया जाता है: नर कोयल, मादा भेड़िया।

लिंग की भूलें वाक्य में: 'का, की, के' अपने से पहले वाली संज्ञा से नहीं, बाद वाली से मेल खाते हैं: 'राम का बहन' अशुद्ध है, 'राम की बहन' शुद्ध; 'सीता के भाई आया' अशुद्ध है, 'सीता का भाई आया' शुद्ध। 'उसकी आत्मा काँप उठा' अशुद्ध है, 'काँप उठी' शुद्ध; 'पुलिस चोर को पकड़ ले गया' के स्थान पर 'पकड़ ले गई'। विशेषणों में प्रायः आकारांत विशेषण ही लिंग और वचन के साथ बदलते हैं (अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, अच्छे लड़के), यद्यपि 'बढ़िया' जैसे कुछ आकारांत भी नहीं बदलते; सुंदर, लाल, चतुर, ईमानदार जैसे विशेषण नहीं बदलते (सुंदर लड़का, सुंदर लड़की)। स्त्रीलिंग बहुवचन में भी विशेषण 'ई' पर ही रहता है: 'अच्छी लड़कियाँ', 'बड़ी इमारतें'। जब भिन्न लिंगों के प्राणिवाचक कर्ता 'और' से जुड़े हों, तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन होती है: 'माता और पिता आए', 'भाई और बहन खेल रहे हैं'।

वचन की भूलें: कुछ शब्द आदर या प्रयोग के कारण प्रायः बहुवचन में ही चलते हैं: प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश, आँसू, लोग, दाम ('बाल' भी प्रायः बहुवचन में आता है, पर 'एक बाल' शुद्ध है)। इसलिए 'मुझे आपका दर्शन हुआ' अशुद्ध है, 'मुझे आपके दर्शन हुए' शुद्ध; 'शेर को देखकर उसके होश उड़ गया' के स्थान पर 'होश उड़ गए'; 'यहाँ अपना हस्ताक्षर कीजिए' के स्थान पर 'अपने हस्ताक्षर कीजिए'। पर 'दर्शन' का अर्थ जब शास्त्र हो, तब वह एकवचन है: 'भारतीय दर्शन बहुत प्राचीन है'। कुछ शब्द एकवचन में ही चलते हैं: समूहवाचक जनता और भीड़; द्रव्यवाचक पानी, दूध, घी, सोना, चाँदी; तथा सामान और आकाश। 'जनता मेले में आए' अशुद्ध है, 'जनता मेले में आई' शुद्ध। संख्या के बाद संज्ञा बहुवचन होती है: 'दस रुपया' नहीं, 'दस रुपये'; 'चार पुस्तक' नहीं, 'चार पुस्तकें'। इसके विपरीत 'प्रत्येक', 'हर' और 'हर एक' के साथ संज्ञा और क्रिया एकवचन रहती हैं: 'प्रत्येक छात्रों को' नहीं, 'प्रत्येक छात्र को'; 'प्रत्येक व्यक्ति अपना काम करते हैं' नहीं, 'करता है'। 'गण', 'वृंद', 'जन' और 'वर्ग' स्वयं बहुवचन बनाते हैं (छात्रगण, गुरुजन), इसलिए 'सब छात्रगण आए' में 'सब' अनावश्यक है।

'ने' कहाँ लगता है और कहाँ नहीं: 'ने' केवल सकर्मक क्रिया के उन भूतकालिक रूपों में आता है जो भूतकालिक कृदंत से बनते हैं: सामान्य भूत (उसने खाया), आसन्न भूत (उसने खाया है), पूर्ण भूत (उसने खाया था), संदिग्ध भूत (उसने खाया होगा) और हेतुहेतुमद् भूत (यदि उसने खाया होता)। अपूर्ण भूत (वह खा रहा था, वह खाता था), वर्तमान और भविष्यत् में 'ने' नहीं आता: 'मैंने कल पत्र लिखूँगा' अशुद्ध है, 'मैं कल पत्र लिखूँगा' शुद्ध। अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' नहीं आता: 'उसने हँसा', 'मैंने सोया' के स्थान पर 'वह हँसा', 'मैं सोया'; छींकना, खाँसना और थूकना इसके अपवाद हैं (उसने छींका)। कुछ सकर्मक क्रियाओं के साथ भी 'ने'

नहीं आता: लाना (‘वह पुस्तक लाया’) और भूलना (‘मैं उसका नाम भूल गया’)। ‘बोलना’ बिना कर्म के ‘ने’ नहीं लेता (‘वह बोला’), पर कर्म होने पर लेता है (‘उसने सच बोला’)। संयुक्त क्रिया में प्रायः अंतिम क्रिया निर्णय करती है: वह सकर्मक हो तो ‘ने’ (‘उसने खाना खा लिया’, ‘उसने पत्र लिख दिया’, ‘उसने आत्महत्या कर ली’), और अकर्मक हो या ‘चुकना’, ‘सकना’ हो तो ‘ने’ नहीं (‘वह खाना खा गया’, ‘वह खाना खा चुका’, ‘मैं यह काम कर सका’)।

अन्य परसर्गों की भूलें: सर्वनाम के साथ ‘मेरे को’, ‘तेरे को’, ‘हमारे को’, ‘मेरे से’, ‘मेरे में’ अशुद्ध हैं; शुद्ध रूप हैं मुझे या मुझको, तुझे, हमें, मुझसे, मुझमें। ‘चाहिए’, ‘पड़ना’ और कर्तव्य बताने वाले ‘है’ के साथ कर्ता ‘को’ लेता है: ‘मैं जाना चाहिए’ नहीं, ‘मुझे जाना चाहिए’; ‘वह जाना पड़ा’ नहीं, ‘उसे जाना पड़ा’। कुछ क्रियाएँ अपना परसर्ग साथ लाती हैं। ‘से’ लेने वाली: कहना, पूछना (‘उसने मुझसे पूछा’), डरना (‘वह कुत्ते से डरता है’, ‘कुत्ते को डरता’ नहीं), प्रार्थना करना (‘ईश्वर से प्रार्थना’) और मिलना जब उसका अर्थ भेंट करना हो (‘मैं कल उससे मिला’; ‘मुझे रास्ते में पर्स मिला’ में अर्थ पाना है)। ‘पर’ लेने वाले भाव: विश्वास, दया, उपकार, क्रोध, गर्व, निर्भर (‘मुझ पर विश्वास करो’, ‘उस पर दया करो’, ‘मुझे अपने देश पर गर्व है’); ‘उसने मुझसे दया की’ अशुद्ध है। सतह पर होने के लिए ‘पर’, भीतर होने के लिए ‘में’: ‘बंदर पेड़ में चढ़ गया’ अशुद्ध है, ‘पेड़ पर चढ़ गया’ शुद्ध।

परीक्षा के जाल: पहला जाल ‘ने’ वाले वाक्य में क्रिया को कर्ता से मिलाना है; ‘सीता ने केले खाई’ में ‘सीता’ देखकर स्त्रीलिंग क्रिया लगाना भूल है, क्योंकि यहाँ क्रिया कर्म ‘केले’ से चलती है: ‘सीता ने केले खाए’। दूसरा, धोखा देने वाली संज्ञाएँ: दही, मोती, आँसू, सवेरा पुल्लिंग; आयु, आत्मा, पुलिस, भूख स्त्रीलिंग। तीसरा, नित्य बहुवचन शब्दों (दर्शन, हस्ताक्षर, प्राण, होश) को एकवचन मान लेना और समूहवाचक शब्दों (जनता, भीड़) को बहुवचन। चौथा, ‘प्रत्येक’ के बाद बहुवचन संज्ञा। पाँचवाँ, ‘सकना’ और ‘चुकना’ वाले वाक्यों में ‘ने’ लगा देना। छठा, क्रिया के साथ जाने वाला परसर्ग बदल देना: ‘मुझे कहा’, ‘कुत्ते को डरना’, ‘मुझसे दया’।

उदाहरण

- ‘दही खट्टी है।’ → ‘दही खट्टा है।’; ‘सुबह हो गया।’ → ‘सुबह हो गई।’ (पर ‘सवेरा हो गया’ शुद्ध है)।
- ‘पुलिस चोर को पकड़ ले गया।’ → ‘पुलिस चोर को पकड़ ले गई।’; ‘उसकी आयु बीस वर्ष का है।’ → ‘उसकी आयु बीस वर्ष की है।’
- ‘उसकी आत्मा काँप उठा।’ → ‘उसकी आत्मा काँप उठी।’; ‘आज ठंडा वायु चल रहा है।’ → ‘आज ठंडी वायु चल रही है।’
- ‘मुझे आपका दर्शन हुआ।’ → ‘मुझे आपके दर्शन हुए।’; पर ‘भारतीय दर्शन बहुत प्राचीन है’ में दर्शन (शास्त्र) एकवचन है।
- ‘प्रत्येक छात्रों को पुस्तक मिली।’ → ‘प्रत्येक छात्र को पुस्तक मिली।’; ‘जनता मेले में आए।’ → ‘जनता मेले में आई।’
- ‘मुझे दस रुपया चाहिए।’ → ‘मुझे दस रुपये चाहिए।’; ‘सब छात्रगण आए।’ → ‘सब छात्र आए।’ या ‘छात्रगण आए।’
- ‘मैंने कल पत्र लिखूँगा।’ → ‘मैं कल पत्र लिखूँगा।’; ‘उसने हँसा।’ → ‘वह हँसा।’; ‘मैंने यह काम कर सका।’ → ‘मैं यह काम कर सका।’
- ‘वह खाना खा लिया।’ → ‘उसने खाना खा लिया।’ (अंतिम क्रिया ‘लेना’ सकर्मक); ‘उसने खाना खा चुका।’ → ‘वह खाना खा चुका।’
- ‘मेरे को नींद आ रही है।’ → ‘मुझे नींद आ रही है।’; ‘मेरे से भूल हो गई।’ → ‘मुझसे भूल हो गई।’; ‘मैं जाना चाहिए।’ → ‘मुझे जाना चाहिए।’
- ‘वह कुत्ते को डरता है।’ → ‘वह कुत्ते से डरता है।’; ‘उसने मुझसे दया की।’ → ‘उसने मुझ पर दया की।’; ‘बंदर पेड़ में चढ़ गया।’ → ‘बंदर पेड़ पर चढ़ गया।’

> **त्वरित दोहराव:** का/की/के बाद वाली संज्ञा से मेल खाते हैं; आग, आत्मा, आयु, वायु, पुलिस, सरकार, जनता, सुबह, भूख स्त्रीलिंग; दही, मोती, आँसू, सवेरा, व्यक्ति पुल्लिंग; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश बहुवचन; जनता, भीड़, सामान एकवचन; प्रत्येक के साथ एकवचन; संख्या के बाद बहुवचन (दस रुपये); ‘ने’ केवल सकर्मक के भूतकालिक कृदंत वाले रूपों में, लाना, भूलना, सकना, चुकना के साथ नहीं; मुझे जाना चाहिए; मुझसे कहा, कुत्ते से डरना, मुझ पर दया, पेड़ पर चढ़ना।

क्रिया, काल और पद-क्रम की अशुद्धियाँ

क्रिया किससे मेल खाए, तीन प्रयोग: हिंदी व्याकरण में क्रिया के मेल को ‘प्रयोग’ कहते हैं, और यह कर्ता तथा कर्म के साथ लगे परसर्ग से तय होता है। कर्तरि प्रयोग में कर्ता के साथ कोई परसर्ग नहीं होता और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार चलती है: ‘लड़का पत्र लिखता है’, ‘लड़कियाँ पत्र लिखती हैं’, ‘सीता गीत गा रही थी’। कर्मणि प्रयोग में कर्ता के साथ ‘ने’ होता है और कर्म के साथ कोई परसर्ग नहीं; तब क्रिया कर्म के अनुसार चलती है: ‘राम ने रोटी खाई’, ‘सीता ने केले खाए’, ‘लड़कों ने पुस्तक पढ़ी’। भावे प्रयोग में कर्ता और कर्म दोनों के साथ परसर्ग होता है (प्रायः ‘ने’ और ‘को’), तब क्रिया न कर्ता से मेल खाती है न कर्म से, और सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है: ‘सीता ने राम को देखा’, ‘रानी ने दासियों को बुलाया’, ‘माँ ने बच्ची को सुलाया’। इसलिए ‘रानी ने दासियों को बुलाईं’ और ‘शिक्षक ने छात्राओं को पढ़ाईं’ अशुद्ध हैं।

‘को’ वाले कर्ता के साथ क्रिया: जब कर्ता के साथ ‘को’ हो और वाक्य में ‘चाहिए’ या ‘है’ के साथ क्रियार्थक संज्ञा हो, तो मानक हिंदी में क्रिया कर्म के लिंग-वचन से मेल खाती है: ‘मुझे पुस्तक पढ़नी है’, ‘मुझे पत्र लिखना है’, ‘आपको दवा लेनी चाहिए’, ‘हमें ये बातें याद रखनी चाहिए’। बोलचाल में ‘मुझे पुस्तक पढ़ना है’ भी सुनाई देता है, और कुछ पुस्तकें इसे स्वीकार करती हैं, पर परीक्षा में कर्म से मेल वाला रूप सुरक्षित उत्तर है। कर्म के साथ ‘को’ हो तो रूप ‘ना’ ही रहता है: ‘मुझे सीता को बुलाना है’। ‘चाहिए’ का रूप आधुनिक हिंदी में प्रायः नहीं बदलता: ‘मुझे दो पुस्तकें चाहिए’; कुछ पुरानी व्याकरण पुस्तकें बहुवचन कर्म के साथ ‘चाहिएँ’ लिखती हैं, पर आज का प्रचलित मानक रूप ‘चाहिए’ है।

एक से अधिक कर्ता: ‘और’ से जुड़े कर्ताओं के साथ क्रिया बहुवचन होती है, और भिन्न लिंगों के प्राणी हों तो पुल्लिंग बहुवचन: ‘माता और पिता आए’। ‘या’, ‘अथवा’ से जुड़े कर्ताओं में क्रिया अंतिम कर्ता के अनुसार चलती है: ‘मोहन या उसकी बहन आएगी’। ‘के साथ’ से जुड़ा व्यक्ति कर्ता नहीं होता, इसलिए क्रिया मुख्य कर्ता से मिलती है: ‘राधा अपने भाइयों के साथ आए’ अशुद्ध है, ‘राधा अपने भाइयों के साथ आई’ शुद्ध। भिन्न पुरुषों के कर्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष को, और उत्तम पुरुष न हो तो मध्यम पुरुष को प्राथमिकता देती है: ‘राम और मैं कल जाएगा’ अशुद्ध है, ‘राम और मैं कल जाएँगे’ शुद्ध; ‘तुम और वह कल आएगा’ के स्थान पर ‘तुम और वह कल आओगे’। शिष्टता के लिए व्याकरण की पुस्तकें कर्ताओं का क्रम मध्यम, अन्य, उत्तम पुरुष रखने को कहती हैं: ‘तुम, वह और मैं चलेंगे’।

काल की भूलें: वाक्य में आए समय-सूचक शब्द काल तय करते हैं। 'प्रतिदिन', 'रोज़', 'हमेशा' आदत बताते हैं, इसलिए सामान्य वर्तमान (बीती आदत के लिए 'जाता था') चाहिए: 'मैं प्रतिदिन टहलने गया' अशुद्ध है, 'मैं प्रतिदिन टहलने जाता हूँ' शुद्ध। 'अभी-अभी' के साथ आसन्न भूत आता है: 'वह अभी-अभी आया था' के स्थान पर 'वह अभी-अभी आया है'। बीते समय के निश्चित शब्दों ('पिछले वर्ष', 'दो वर्ष पहले', बीता हुआ 'कल') के साथ आसन्न भूत नहीं आता: 'वह कल आया है' अशुद्ध है, 'वह कल आया' या 'आया था' शुद्ध। 'से' से बताई गई अवधि में जो काम अब भी चल रहा है, उसके लिए अपूर्ण वर्तमान: 'मैं दो घंटे से तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ' अशुद्ध है, 'कर रहा हूँ' शुद्ध। भूतकाल की दो घटनाओं में जो पहले पूरी हो चुकी, वह पूर्ण भूत में आती है: 'जब मैं स्टेशन पहुँचा, तब तक गाड़ी छूट चुकी थी' ('छूट गई है' नहीं)। शर्त वाले वाक्य के दोनों भाग एक ढंग के हों: 'यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होती', 'यदि तुम आओगे तो मैं चलूँगा'; 'यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होगी' अशुद्ध है।

निषेध, आज्ञा और आदर: 'मत' केवल आज्ञा और निषेध के आदेश में आता है: 'वहाँ मत जाओ', 'झूठ मत बोलो'। भविष्यत् या भूतकाल की क्रिया के साथ 'नहीं' आता है: 'तुम वहाँ मत जाओगे' अशुद्ध है, 'तुम वहाँ नहीं जाओगे' शुद्ध; 'मैं वहाँ मत गया' के स्थान पर 'मैं वहाँ नहीं गया'। 'न' आशंका, इच्छा और 'न... न' के जोड़े में आता है: 'कहीं वह न आ जाए', 'न वह आया, न उसका भाई'। आज्ञार्थक क्रिया सर्वनाम के आदर-स्तर से मेल खाती है: 'तू' के साथ 'बैठ', 'तुम' के साथ 'बैठो', 'आप' के साथ 'बैठिए'। इसलिए 'आप यहाँ बैठो' अशुद्ध है और 'आप यहाँ बैठिए' शुद्ध। 'आप' के साथ क्रिया सदा बहुवचन रहती है: 'आप कब आए?', 'आप कहाँ जा रहे हैं?' ('जा रहे हो' नहीं)।

पद-क्रम: हिंदी वाक्य का सामान्य क्रम है कर्ता, फिर कर्म, और अंत में क्रिया: 'राम ने रावण को मारा'। दो कर्म हों तो पहले गौण कर्म ('को' वाला) और फिर मुख्य कर्म: 'माँ ने बच्चे को दूध पिलाया', 'शिक्षक ने छात्रों को कहानी सुनाई'। विशेषण अपने विशेष्य के ठीक पहले आता है, और विधेय-विशेषण क्रिया से पहले: 'यह आम मीठा है'। इसलिए 'मुझे एक गरम कप चाय चाहिए' अशुद्ध है, क्योंकि गरम चाय है, कप नहीं: 'मुझे एक कप गरम चाय चाहिए'। हाँ-नहीं वाले प्रश्न में 'क्या' वाक्य के आरंभ में आता है ('क्या तुम कल आओगे?'), और 'नहीं', 'न', 'मत' क्रिया से ठीक पहले आते हैं। 'ही', 'भी', 'तक', 'केवल' जिस शब्द पर बल देते हैं, उसी के पास आते हैं, और जगह बदलते ही अर्थ बदल जाता है: 'मैं ही आज जाऊँगा' (कोई और नहीं), 'मैं आज ही जाऊँगा' (कल नहीं), 'मैं आज जाऊँगा ही' (निश्चय)।

उपवाक्य और योजक जोड़े: संबंधवाचक उपवाक्य में 'जो' के साथ 'वह' एक ही बार आता है: 'वह लड़का जो कल आया था, वह मेरा भाई है' अशुद्ध है, 'जो लड़का कल आया था, वह मेरा भाई है' शुद्ध। योजकों के जोड़े निश्चित हैं: जो... वह, जैसा... वैसा, जितना... उतना, जब... तब, जहाँ... वहाँ, यदि... तो, यद्यपि... तथापि (या फिर भी), न केवल... बल्कि (या अपितु), चूँकि... इसलिए। 'जितना पढ़ोगे, इतना सीखोगे' अशुद्ध है, 'जितना पढ़ोगे, उतना सीखोगे' शुद्ध; 'वह न केवल गायक है, परंतु लेखक भी है' के स्थान पर 'बल्कि लेखक भी है'। 'क्योंकि' कारण बताने वाले उपवाक्य को मुख्य वाक्य के बाद जोड़ता है ('वह नहीं आया, क्योंकि बीमार था'), जबकि आरंभ में 'चूँकि' आता है ('चूँकि वह बीमार था, इसलिए नहीं आया'); इसलिए अनेक पुस्तकें 'क्योंकि... इसलिए' को एक साथ प्रयोग करना अशुद्ध मानती हैं, और परीक्षा में 'चूँकि... इसलिए' ही सुरक्षित उत्तर है।

परीक्षा के जाल: इस श्रेणी के सामान्य जाल हैं: कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' वाले वाक्य में क्रिया को कर्म से मिला देना ('रानी ने दासियों को बुलाईं'); 'के साथ' वाले व्यक्ति को कर्ता गिन लेना; 'प्रतिदिन', 'अभी-अभी', 'दो घंटे से' जैसे शब्दों को अनदेखा करना; शर्त वाले वाक्य में दो ढंग मिलाना; 'मत' को भविष्यत् के साथ और 'आप' के साथ 'बैठो' लगाना; विशेषण को गलत शब्द के पास रखना; और योजक जोड़े बदल देना (जितना... इतना, न केवल... परंतु)।

उदाहरण

- 'रानी ने दासियों को बुलाईं।' → 'रानी ने दासियों को बुलाया।' (कर्ता के साथ ने, कर्म के साथ को: क्रिया पुल्लिंग एकवचन)
- 'लड़कों ने पुस्तक पढ़े।' → 'लड़कों ने पुस्तक पढ़ी।'; 'सीता ने केले खाई।' → 'सीता ने केले खाए।' (ने वाले वाक्य में क्रिया कर्म से)
- 'राधा अपने भाइयों के साथ आए।' → 'राधा अपने भाइयों के साथ आई।'; 'राम और मैं कल जाएगा।' → 'राम और मैं कल जाएँगे।'
- 'मैं प्रतिदिन टहलने गया।' → 'मैं प्रतिदिन टहलने जाता हूँ।'; 'वह कल आया है।' → 'वह कल आया था।'
- 'जब मैं स्टेशन पहुँचा, गाड़ी छूट गई है।' → 'जब मैं स्टेशन पहुँचा, तब तक गाड़ी छूट चुकी थी।'
- 'मैं दो घंटे से तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ।' → 'मैं दो घंटे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'; 'यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होगी।' → '... अच्छी होती।'
- 'तुम वहाँ मत जाओगे।' → 'तुम वहाँ नहीं जाओगे।' या 'तुम वहाँ मत जाओ।'; 'आप यहाँ बैठो।' → 'आप यहाँ बैठिए।'
- 'मुझे एक गरम कप चाय चाहिए।' → 'मुझे एक कप गरम चाय चाहिए।'; 'वह लड़का जो कल आया था, वह मेरा भाई है।' → 'जो लड़का कल आया था, वह मेरा भाई है।'
- 'जितना पढ़ोगे, इतना सीखोगे।' → 'जितना पढ़ोगे, उतना सीखोगे।'; 'वह न केवल गायक है, परंतु लेखक भी है।' → '... बल्कि लेखक भी है।'
- 'ही' का स्थान: 'मैं ही आज जाऊँगा' (कोई और नहीं), 'मैं आज ही जाऊँगा' (कल नहीं), 'मैं आज जाऊँगा ही' (निश्चय)।

> **त्वरित दोहराव:** कर्ता बिना परसर्ग: क्रिया कर्ता से (कर्तरि); कर्ता के साथ ने, कर्म बिना परसर्ग: क्रिया कर्म से (कर्मणि); ने और कर्म के साथ को: क्रिया पुल्लिंग एकवचन (भावे), रानी ने दासियों को बुलाया; मुझे पुस्तक पढ़नी है; या से जुड़े कर्ता में अंतिम कर्ता से; के साथ वाला कर्ता नहीं; राम और मैं जाएँगे; प्रतिदिन जाता हूँ, अभी-अभी आया है, दो घंटे से कर रहा हूँ; यदि होती तो होती; मत केवल आज्ञा में; आप बैठिए; एक कप गरम चाय; जितना-उतना, न केवल-बल्कि, चूँकि-इसलिए।

शब्द-चयन और पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ: सर्वनाम और विशेषण की भूलें सहित

शब्द-चयन की अशुद्धि क्या है: कई वाक्यों में लिंग, वचन, कारक और काल सब ठीक होते हैं, फिर भी कोई शब्द अनावश्यक, गलत या अर्थ से भटका हुआ होता है। ऐसी भूलें तीन प्रकार की हैं: एक ही अर्थ को दो बार कहना, जिसे पुनरुक्ति या अधिक-पद दोष कहते हैं; मिलते-जुलते अर्थ या रूप वाले दो शब्दों में से गलत को चुन लेना; और ऐसे शब्द-रूप बना लेना जो व्याकरण से बनते ही नहीं, जैसे 'सौंदर्यता'। ये भूलें सबसे कठिन इसलिए हैं कि वाक्य सुनने में स्वाभाविक लगता है। इन्हें पकड़ने का उपाय है हर शब्द से पूछना कि क्या इसे हटा देने पर अर्थ घटता है, और क्या इसके स्थान पर कोई अधिक सटीक शब्द है।

पुनरुक्ति के प्रकार: पहला प्रकार है दो समानार्थी शब्द साथ रखना: 'आपस में परस्पर', 'पुनः दोबारा', 'प्रतिदिन रोज़', 'हर प्रत्येक', 'स्वयं अपने आप', 'इत्यादि आदि', 'केवल राम ही आया'; हर जोड़े में एक शब्द पर्याप्त है: 'वे परस्पर लड़ते हैं', 'केवल राम आया' या 'राम ही आया'। दूसरा प्रकार है उपसर्ग या प्रत्यय से पहले ही आ चुके अर्थ को फिर से कहना: 'सकुशलपूर्वक' में 'स' और 'पूर्वक' दोनों 'साथ' का अर्थ देते हैं, इसलिए 'सकुशल' या 'कुशलपूर्वक' लिखिए; इसी तरह 'सादरपूर्वक' के स्थान पर 'सादर' या 'आदरपूर्वक', 'निर्दोषी' के स्थान पर 'निर्दोष'। तीसरा प्रकार है 'कृपया' और 'कृपा करें' को एक साथ रखना: 'कृपया पत्र का उत्तर देने की कृपा करें' के स्थान पर 'कृपया पत्र का उत्तर दें' या 'पत्र का उत्तर देने की कृपा करें'। चौथा प्रकार है सीमा बताने वाले दो शब्द: 'सारे भारत भर में' के स्थान पर 'सारे भारत में' या 'भारत भर में'। 'वापस लौटना' को अनेक पुस्तकें पुनरुक्ति मानती हैं ('लौटना' या 'वापस आना' पर्याप्त है), यद्यपि बोलचाल में यह प्रचलित है।

दोहरे प्रत्यय: जो भाववाचक संज्ञा पहले से किसी प्रत्यय से बनी है, उस पर 'ता' या 'त्व' फिर से नहीं लगता। 'य' प्रत्यय से बने माधुर्य, धैर्य, सौजन्य, ऐक्य, चातुर्य, औदार्य और सौंदर्य पहले से भाववाचक हैं। इसलिए 'माधुर्यता', 'धैर्यता', 'सौजन्यता', 'ऐक्यता', 'चातुर्यता', 'औदार्यता' अशुद्ध हैं; शुद्ध रूप हैं माधुर्य या मधुरता, धैर्य, सौजन्य, ऐक्य या एकता, चातुर्य या चतुरता, औदार्य या उदारता। विशेषण पर दो प्रत्यय लगाने की भूल भी होती है: 'आवश्यकीय' के स्थान पर 'आवश्यक', 'पूज्यनीय' के स्थान पर 'पूजनीय' या 'पूज्य'। 'महानता' पर पुस्तकों में मतभेद है: संस्कृत के अनुसार 'महत्ता' शुद्ध है, पर 'महानता' हिंदी में इतना प्रचलित है कि अनेक कोश इसे स्वीकार करते हैं और केंद्रीय हिंदी निदेशालय भी इसे प्रचलित रूप के उदाहरण में देता है; विकल्पों में 'महत्ता' हो तो वही सुरक्षित उत्तर है। तुलना के प्रत्यय 'तर' और 'तम' के साथ 'अधिक' या 'सबसे' नहीं लगता: 'अधिक सुंदरतर' के स्थान पर 'सुंदरतर' या 'अधिक सुंदर'; 'सबसे श्रेष्ठतम' और 'सर्वश्रेष्ठतम' के स्थान पर 'सर्वश्रेष्ठ' या 'श्रेष्ठतम'।

मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द: भाव बताने वाले शब्दों में संबंध की दिशा देखी जाती है। छोटों के प्रति स्नेह, बड़ों के प्रति श्रद्धा, संतान के प्रति वात्सल्य, ईश्वर के प्रति भक्ति, और बराबर वालों में प्रेम या मैत्री: 'माँ की पुत्र के प्रति श्रद्धा' अशुद्ध है, 'माँ का पुत्र के प्रति वात्सल्य' शुद्ध। दुखी पर दया की जाती है, और बड़े छोटों पर कृपा करते हैं। ईर्ष्या दूसरे की उन्नति देखकर होने वाली जलन है, द्वेष शत्रुता का भाव। शंका संदेह है, आशंका अनिष्ट का डर: 'मुझे आशंका है कि तुम सफल होगे' अशुद्ध है, 'मुझे आशा है कि तुम सफल होगे' शुद्ध। आविष्कार नई वस्तु बनाना है और खोज पहले से विद्यमान वस्तु का पता लगाना: 'कोलंबस ने अमेरिका का आविष्कार किया' अशुद्ध है, 'अमेरिका की खोज की' शुद्ध। अस्त्र फेंककर चलाया जाता है (बाण), शस्त्र हाथ में पकड़कर (तलवार): 'तलवार एक अस्त्र है' अशुद्ध है। बहुमूल्य वह है जिसका मूल्य बहुत अधिक है, अमूल्य वह जिसका मूल्य आँका ही न जा सके।

रूप में मिलते-जुलते शब्द (युग्म): इन शब्दों में एक मात्रा या एक वर्ण का अंतर पूरा अर्थ बदल देता है। परिणाम (फल) और परिमाण (मात्रा): 'इस दवा का परिणाम ठीक रखें' अशुद्ध है, 'परिमाण ठीक रखें' शुद्ध। उपयुक्त (उचित) और उपर्युक्त (ऊपर कहा हुआ): 'यह उपर्युक्त अवसर नहीं है' अशुद्ध है, 'उपयुक्त अवसर' शुद्ध। प्रसाद (भोग, कृपा) और प्रासाद (महल): 'राजा का प्रसाद बहुत विशाल था' के स्थान पर 'राजा का प्रासाद बहुत विशाल था'। आदि (इत्यादि, आरंभ) और आदी (अभ्यस्त): 'वह चाय का आदि है' के स्थान पर 'चाय का आदी है'। अनिल (वायु) और अनल (आग); अभिराम (सुंदर) और अविराम (लगातार); कुल (वंश) और कूल (किनारा); अवधि (समय-सीमा) और अवधी (भाषा)। ऐसे शब्दों में शुद्ध वर्तनी जानना पर्याप्त नहीं, वाक्य का अर्थ देखकर सही शब्द चुनना पड़ता है।

सर्वनाम की भूलें: वाक्य का कर्ता जिस वस्तु या व्यक्ति का स्वामी है, उसके लिए निजवाचक 'अपना' आता है, 'मेरा', 'तेरा', 'तुम्हारा' नहीं: 'मैं मेरे घर जा रहा हूँ' अशुद्ध है, 'मैं अपने घर जा रहा हूँ' शुद्ध; 'तुम तुम्हारा काम करो' के स्थान पर 'तुम अपना काम करो'। बहुवचन और आदरवाचक 'वे' है, 'वह' एकवचन: 'लड़के मैदान में खेल रहे हैं, वह बहुत प्रसन्न हैं' के स्थान पर 'वे बहुत प्रसन्न हैं'। 'ने' के साथ 'उन' और 'जिन' के रूप 'उन्होंने' और 'जिन्होंने' हैं, 'उनने' और 'जिनने' नहीं। 'कौन' प्राणियों के लिए और 'क्या' वस्तुओं के लिए आता है: 'तुम्हारे हाथ में कौन है?' के स्थान पर 'तुम्हारे हाथ में क्या है?'। सर्वनाम के रूप में 'कोई' अज्ञात व्यक्ति या प्राणी के लिए और 'कुछ' अज्ञात वस्तु के लिए आता है: 'बाहर कोई खड़ा है', पर 'दूध में कोई पड़ा है' के स्थान पर 'दूध में कुछ पड़ा है'।

विशेषण की भूलें: संख्यावाचक विशेषण में 'दो' गिनती है और 'दोनों' पूरे जोड़े का बोध: 'दो भाई आए' और 'दोनों भाई आए' का अर्थ अलग है। परिमाणवाचक 'बहुत-सा' अपनी संज्ञा से लिंग-वचन में मेल खाता है: 'उसके पास बहुत सा पुस्तकें हैं' अशुद्ध है, 'बहुत-सी पुस्तकें हैं' शुद्ध। 'अनेक' और 'कई' पहले से बहुवचन हैं, इसलिए 'अनेकों' अशुद्ध है; और 'गण' स्वयं बहुवचन बनाता है, इसलिए 'सब छात्रगण' में 'सब' अनावश्यक है। 'मेरा अपना निजी मकान' में 'अपना' और 'निजी' एक ही बात कहते हैं, इसलिए एक हटाइए। दो की तुलना में 'से' के साथ मूल विशेषण या 'तर' आता है, और 'तम' सबमें सर्वोच्च के लिए: 'यह पर्वत उस पर्वत से उच्चतम है' अशुद्ध है, 'उस पर्वत से ऊँचा है' या 'उच्चतर है' शुद्ध; 'एवरेस्ट संसार की उच्चतम चोटी है' शुद्ध है।

परीक्षा के जाल: इस श्रेणी के प्रश्न प्रायः ऐसे वाक्य होते हैं जिनमें पुनरुक्ति छिपी रहती है, जैसे 'कृपया... की कृपा करें', 'सकुशलपूर्वक', 'सारे भारत भर में', 'आपस में परस्पर'; विकल्पों में व्याकरण की कोई भूल नहीं दिखती, इसलिए अभ्यर्थी 'कोई त्रुटि नहीं' चुन लेते हैं। दूसरा जाल युग्म शब्दों का है, जहाँ दोनों वर्तनियाँ शुद्ध हैं पर अर्थ केवल एक का बैठता है (परिणाम-परिमाण, उपयुक्त-उपर्युक्त, आदि-आदी)। तीसरा जाल 'अपना' के स्थान पर 'मेरा' या 'तुम्हारा' है, जो बोलचाल में बहुत सुनाई देता है। चौथा, दोहरे प्रत्यय वाले रूप (सौंदर्यता, धैर्यता, आवश्यकीय), जो पढ़ने में विद्वत्तापूर्ण लगते हैं।

उदाहरण

- 'सकुशलपूर्वक' → 'सकुशल' या 'कुशलपूर्वक'; 'सादरपूर्वक' → 'सादर' या 'आदरपूर्वक'; 'निर्दोषी' → 'निर्दोष'; 'आवश्यकीय' → 'आवश्यक'।
- 'कृपया पत्र का उत्तर देने की कृपा करें।' → 'कृपया पत्र का उत्तर दें।' या 'पत्र का उत्तर देने की कृपा करें।'
- 'वे आपस में परस्पर लड़ते हैं।' → 'वे आपस में लड़ते हैं।' या 'वे परस्पर लड़ते हैं।'; 'सारे भारत भर में' → 'सारे भारत में'।
- दोहरा प्रत्यय: माधुर्यता, धैर्यता, सौजन्यता, ऐक्यता, चातुर्यता अशुद्ध; माधुर्य या मधुरता, धैर्य, सौजन्य, ऐक्य या एकता, चातुर्य या चतुरता शुद्ध।
- 'कोलंबस ने अमेरिका का आविष्कार किया।' → 'कोलंबस ने अमेरिका की खोज की।' (आविष्कार नई वस्तु का, खोज पहले से विद्यमान की)
- 'इस दवा का परिणाम ठीक रखें।' → 'इस दवा का परिमाण ठीक रखें।' (परिणाम = फल, परिमाण = मात्रा); उपयुक्त = उचित, उपर्युक्त = ऊपर कहा हुआ।
- 'मुझे आशंका है कि तुम सफल होगे।' → 'मुझे आशा है कि तुम सफल होगे।' (आशंका केवल अनिष्ट की होती है)

- भाव-भेद: छोटों से स्नेह, बड़ों के प्रति श्रद्धा, संतान से वात्सल्य, ईश्वर के प्रति भक्ति; दुखी पर दया, बड़ों की छोटों पर कृपा; ईर्ष्या (उन्नति से जलन), द्वेष (शत्रुता)।
- 'मैं मेरे घर जा रहा हूँ।' → 'मैं अपने घर जा रहा हूँ।'; 'उनने कहा।' → 'उन्होंने कहा।'; 'उसके पास बहुत सा पुस्तकें हैं।' → 'बहुत-सी पुस्तकें हैं।'
- युग्म: प्रसाद (भोग) / प्रासाद (महल), आदि (इत्यादि) / आदी (अभ्यस्त), अनिल (वायु) / अनल (आग), अभिराम (सुंदर) / अविराम (लगातार), कुल (वंश) / कूल (किनारा)।

> **त्वरित दोहराव:** पुनरुक्ति हटाएँ: आपस में परस्पर, पुनः दोबारा, हर प्रत्येक, केवल... ही, सकुशलपूर्वक, सादरपूर्वक, कृपया... कृपा करें, सारे भारत भर में; दोहरे प्रत्यय अशुद्ध: माधुर्यता, धैर्यता, सौजन्यता, आवश्यकीय, पूज्यनीय, सबसे श्रेष्ठतम; 'महानता' पर मतभेद, 'महत्ता' सुरक्षित; स्नेह-श्रद्धा-वात्सल्य-भक्ति, दया-कृपा, शंका-आशंका, आविष्कार-खोज, अस्त्र-शस्त्र; परिणाम-परिमाण, उपयुक्त-उपर्युक्त, प्रसाद-प्रासाद, आदि-आदी; कर्ता की वस्तु के लिए 'अपना'; उन्होंने; बहुत-सी पुस्तकें।

वाक्य शुद्धि के प्रश्न कैसे हल करें: क्रमबद्ध जाँच और हल किए गए अभ्यास

प्रश्नों के चार रूप: वाक्य शुद्धि के प्रश्न प्रायः चार रूपों में आते हैं, और हर रूप की विधि थोड़ी अलग है। पहले रूप में एक वाक्य को तीन-चार भागों में बाँटकर पूछा जाता है कि त्रुटि किस भाग में है, और अंतिम विकल्प प्रायः 'कोई त्रुटि नहीं' होता है; यहाँ हर भाग को अलग-अलग नहीं, पूरे वाक्य के संदर्भ में जाँचना होता है, क्योंकि अंतिम भाग की क्रिया की भूल अक्सर पहले भाग में आए कर्ता या कर्म के कारण होती है। दूसरे रूप में चार वाक्य देकर शुद्ध या अशुद्ध वाक्य पूछा जाता है; यहाँ चारों वाक्यों में जो शब्द बदल रहे हैं, केवल उन्हीं की तुलना कीजिए। तीसरे रूप में वाक्य का एक अंश रेखांकित होता है और उसका शुद्ध रूप चुनना होता है; हर विकल्प को वाक्य में रखकर पूरा वाक्य पढ़िए। चौथे रूप में शुद्ध या अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द चुनना होता है; यहाँ विकल्पों में बदलने वाले अक्षर पर पहले दो पाठों के नियम लगाइए।

क्रमबद्ध जाँच, पहले दो चरण: सबसे पहले क्रिया ढूँढिए और पूछिए कि वह किससे मेल खा रही है। कर्ता के साथ कोई परसर्ग नहीं है तो क्रिया कर्ता से मिलेगी; कर्ता के साथ 'ने' है और कर्म बिना परसर्ग है तो कर्म से; कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' है तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन रहेगी; पर 'मुझे' जैसा 'को' वाला गौण कर्म हो और मुख्य कर्म बिना परसर्ग, तो क्रिया मुख्य कर्म से मिलेगी। फिर संज्ञाओं का लिंग-वचन जाँचिए, विशेषकर धोखा देने वाले शब्द (दही, आँसू, सवेरा पुल्लिंग; आयु, आत्मा, पुलिस, भूख स्त्रीलिंग), नित्य बहुवचन (प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर), समूहवाचक एकवचन (जनता, भीड़) और आदर का बहुवचन। दूसरे चरण में परसर्ग जाँचिए: 'ने' ठीक काल और ठीक क्रिया के साथ है या नहीं (भविष्यत्, अकर्मक, लाना, सकना और चुकना के साथ नहीं); 'चाहिए' और 'पड़ना' के साथ कर्ता 'को' लेता है या नहीं; क्रिया का अपना परसर्ग ठीक है या नहीं (कहना, पूछना और डरना के साथ 'से'; विश्वास, दया और उपकार के साथ 'पर'); और कहीं 'मेरे को', 'मेरे से' जैसे रूप तो नहीं।

क्रमबद्ध जाँच, शेष तीन चरण: तीसरे चरण में काल और योजक देखिए: समय-सूचक शब्द (प्रतिदिन, अभी-अभी, कल, दो घंटे से) क्रिया के काल से मेल खाते हैं या नहीं; शर्त वाले वाक्य के दोनों भाग एक ढंग के हैं या नहीं; 'मत' केवल आज्ञा में है या नहीं; और योजक जोड़े ठीक हैं या नहीं (जितना-उतना, न केवल-बल्कि, यद्यपि-तथापि)। चौथे चरण में शब्द-चयन देखिए: कोई शब्द हटाने पर अर्थ नहीं घटता तो वह पुनरुक्ति है; युग्म शब्द (परिणाम-परिमाण, उपयुक्त-उपर्युक्त) अर्थ से बैठते हैं या नहीं; कर्ता की अपनी वस्तु के लिए 'अपना' है या नहीं; और विशेषण अपने सही विशेष्य के पास है या नहीं। पाँचवें और अंतिम चरण में हर शब्द की वर्तनी देखिए, क्योंकि कई प्रश्नों में त्रुटि केवल एक मात्रा या एक वर्ण की होती है, जैसे 'आशीर्वाद' के स्थान पर 'आर्शीवाद' या 'उपर्युक्त' के स्थान पर 'उपरोक्त'। अधिकतर त्रुटियाँ क्रिया के मेल और परसर्ग में ही मिलती हैं, इसलिए उन्हें पहले जाँचने से समय बचता है।

हल किए गए अभ्यास, मेल और परसर्ग: 'मेरे पिताजी ने मुझे एक सुंदर घड़ी दिया।' इसमें कर्ता 'पिताजी' के साथ 'ने' है; 'मुझे' गौण कर्म है, पर मुख्य कर्म 'घड़ी' बिना परसर्ग है, इसलिए क्रिया 'घड़ी' (स्त्रीलिंग) से मिलेगी: 'घड़ी दी'। 'शिक्षक ने छात्राओं को पढ़ाईं।' में 'ने' और 'को' दोनों हैं, अतः 'पढ़ाया'। 'राम ने रावण को बाण से मारी।' में भी यही नियम है, अतः 'मारा'। 'आज उसकी आँखों में आँसू आ गई।' में 'आँसू' पुल्लिंग है और यहाँ बहुवचन: 'आँसू आ गए'। 'मुझे बहुत भूख लगा है।' में 'भूख' स्त्रीलिंग है: 'भूख लगी है'। 'प्रत्येक अभ्यर्थियों को अपना प्रवेश पत्र लाना है।' में 'प्रत्येक' के साथ एकवचन चाहिए: 'प्रत्येक अभ्यर्थी को'। 'वह अपने मित्र को मिलने गया।' में भेंट के अर्थ वाला 'मिलना' 'से' लेता है: 'मित्र से मिलने गया'। 'तुम और वह कल मेरे घर आएगा।' में मध्यम पुरुष को प्राथमिकता मिलती है: 'तुम और वह कल मेरे घर आओगे'।

हल किए गए अभ्यास, काल और शब्द-चयन: 'मैं सुबह से अब तक तुम्हारी राह देखता हूँ।' में प्रतीक्षा अभी जारी है, इसलिए 'मैं सुबह से तुम्हारी राह देख रहा हूँ'। 'यदि तुम समय पर आते तो गाड़ी नहीं छूटेगी।' में शर्त के दोनों भाग एक ढंग के होने चाहिए: 'तो गाड़ी नहीं छूटती'। 'तुम कल वहाँ मत जाओगे।' में भविष्यत् के साथ 'नहीं' आएगा: 'तुम कल वहाँ नहीं जाओगे'। 'मंत्री जी सपरिवार सहित पधारे।' में 'स' और 'सहित' एक ही अर्थ देते हैं: 'मंत्री जी सपरिवार पधारे'। 'उपरोक्त नियम सभी अभ्यर्थियों पर लागू हैं।' में शब्द ही अशुद्ध है: 'उपर्युक्त नियम'। 'मैंने मेरा काम पूरा कर लिया है।' में कर्ता की अपनी वस्तु के लिए 'अपना' चाहिए: 'मैंने अपना काम पूरा कर लिया है'। 'उसकी वाणी की माधुर्यता सबको प्रिय है।' में दोहरा प्रत्यय है; शुद्ध है 'उसकी वाणी की मधुरता' या 'उसकी वाणी का माधुर्य', और ध्यान दीजिए कि 'माधुर्य' पुल्लिंग है, इसलिए 'का' आएगा।

हल किए गए अभ्यास, शुद्ध वाक्य और वर्तनी: हर प्रश्न में त्रुटि होना आवश्यक नहीं। 'पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।' शुद्ध है: 'ने' और 'को' दोनों होने से 'लिया' पुल्लिंग एकवचन है, भले ही 'पुलिस' स्त्रीलिंग है। 'जनता ने सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाई।' शुद्ध है: 'ने' के साथ कर्म 'आवाज़' (स्त्रीलिंग) बिना परसर्ग है, इसलिए 'उठाई'। 'मैंने उसे बहुत समझाया, पर वह नहीं माना।' शुद्ध है: 'समझाया' के साथ 'ने' और 'को' (उसे = उसको) हैं, और 'मानना' यहाँ बिना कर्म के है, इसलिए 'वह नहीं माना'। 'मुझे पुस्तक पढ़नी है।' भी शुद्ध है, क्योंकि क्रिया कर्म 'पुस्तक' से मेल खा रही है। वर्तनी के प्रश्न में 'आशीर्वाद, स्रोत, अंतर्ध्यान, उज्ज्वल' में से अशुद्ध शब्द 'अंतर्ध्यान' है, जिसका शुद्ध रूप 'अंतर्धान' है। 'पुरुस्कार, पुरस्कार, पूरस्कार, पुरस्कर' में शुद्ध 'पुरस्कार' है। 'ऐतिहासिक, एतिहासिक, ऐतीहासिक, इतिहासिक' में शुद्ध 'ऐतिहासिक' है, क्योंकि 'इक' प्रत्यय से 'इ' की वृद्धि 'ऐ' होती है और 'ति' तथा 'सि' में छोटी इ रहती है।

अंतिम सावधानियाँ: ‘कोई त्रुटि नहीं’ विकल्प से डरिए मत; पाँचों चरण जाँचने के बाद भी कोई भूल न मिले, तो वही उत्तर है। उलटे, किसी भाग को केवल इसलिए अशुद्ध मत मानिए कि वह आपकी बोली से अलग लगता है; परीक्षा मानक हिंदी पर आधारित होती है, क्षेत्रीय बोलचाल पर नहीं, और ‘मैंने जाना है’ या ‘मेरे को’ जैसे बोलचाल के रूप ही प्रायः त्रुटि होते हैं। जहाँ व्याकरण की पुस्तकों में मतभेद है, जैसे ‘महत्व’ और ‘महत्त्व’, ‘मुझे पुस्तक पढ़ना है’ और ‘पढ़नी है’, ‘वापस लौटना’ या ‘महानता’, वहाँ मानक व्याकरण वाला रूप (महत्त्व, पढ़नी है, लौटना, महत्ता) चुनिए; अधिकांश प्रश्न निर्विवाद नियमों पर ही बनते हैं। जिन परीक्षाओं में नकारात्मक अंकन है, उनमें संदेह होने पर पहले उन विकल्पों को हटाइए जिनमें कोई निश्चित नियम टूटता है, और तभी उत्तर दीजिए जब एक ही विकल्प बचे। हर दिन कुछ वाक्य इन्हीं पाँच चरणों में जाँचिए, जब तक यह क्रम अपने आप न चलने लगे।

उदाहरण

- जाँच का क्रम: क्रिया किससे मेल खाए → परसर्ग → काल और योजक → शब्द-चयन, पुनरुक्ति और पद-क्रम → वर्तनी; हर चरण में एक ही प्रश्न पूछिए।
- ‘मेरे पिताजी ने मुझे एक सुंदर घड़ी दिया।’ → ‘... घड़ी दी।’ (ने वाले वाक्य में क्रिया कर्म ‘घड़ी’ से मेल खाती है)
- ‘प्रत्येक अभ्यर्थियों को अपना प्रवेश पत्र लाना है।’ → ‘प्रत्येक अभ्यर्थी को अपना प्रवेश पत्र लाना है।’
- ‘आज उसकी आँखों में आँसू आ गई।’ → ‘... आँसू आ गए।’; ‘मुझे बहुत भूख लगा है।’ → ‘मुझे बहुत भूख लगी है।’
- ‘वह अपने मित्र को मिलने गया।’ → ‘वह अपने मित्र से मिलने गया।’; ‘तुम और वह कल मेरे घर आएगा।’ → ‘... आओगे।’
- ‘यदि तुम समय पर आते तो गाड़ी नहीं छूटेगी।’ → ‘यदि तुम समय पर आते तो गाड़ी नहीं छूटती।’; ‘तुम कल वहाँ मत जाओगे।’ → ‘... नहीं जाओगे।’
- ‘मंत्री जी सपरिवार सहित पधारे।’ → ‘मंत्री जी सपरिवार पधारे।’; ‘उपरोक्त नियम सब पर लागू हैं।’ → ‘उपर्युक्त नियम सब पर लागू हैं।’
- ‘उसकी वाणी की माधुर्यता सबको प्रिय है।’ → ‘उसकी वाणी की मधुरता सबको प्रिय है।’ या ‘उसकी वाणी का माधुर्य सबको प्रिय है।’
- शुद्ध वाक्य (कोई त्रुटि नहीं): ‘पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।’, ‘जनता ने सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाई।’, ‘मैंने उसे बहुत समझाया, पर वह नहीं माना।’
- वर्तनी में केवल बदलते अक्षर देखिए: आशीर्वाद, स्रोत, अंतर्धान, उज्ज्वल, पुरस्कार, ऐतिहासिक शुद्ध; आर्शीवाद, स्त्रोत, अंतर्ध्यान, उज्वल, पुरुस्कार, एतिहासिक अशुद्ध।

> **त्वरित दोहराव:** चार रूप: त्रुटि वाला भाग, शुद्ध या अशुद्ध वाक्य, रेखांकित अंश का शुद्ध रूप, शुद्ध वर्तनी; जाँच का क्रम: क्रिया का मेल (कर्ता बिना परसर्ग तो कर्ता से, ने हो तो कर्म से, ने और कर्म के साथ को हो तो पुल्लिंग एकवचन), परसर्ग (ने, को, से, पर), काल और योजक, शब्द-चयन और पुनरुक्ति, वर्तनी; ‘कोई त्रुटि नहीं’ भी उत्तर हो सकता है; बोलचाल के रूप प्रायः त्रुटि होते हैं; विवादित रूपों में मानक व्याकरण वाला रूप; संदेह में निश्चित नियम तोड़ने वाले विकल्प पहले हटाइए।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-sentence-correction/

हिंदी पर्यायवाची और विलोम शब्द

पर्यायवाची और विलोम शब्द

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: एक शब्द दिया जाता है और उसका पर्यायवाची (समान अर्थ वाला शब्द) या विलोम (उलटे अर्थ वाला शब्द) चुनना होता है। कई बार प्रश्न उलटा होता है: ‘इनमें से कौन-सा शब्द ‘सूर्य’ का पर्यायवाची नहीं है?’ कभी विकल्पों में शब्द-युग्म दिए जाते हैं और सही या गलत युग्म पहचानना होता है। ये प्रश्न रटने से अधिक शब्दों की बनावट समझने से हल होते हैं, क्योंकि अधिकतर शब्द संस्कृत के मूल शब्दों और उपसर्गों से बने हैं।

पर्यायवाची हल करने का तरीका: यदि विकल्पों में शब्दों का समूह हो, तो हर शब्द को अलग-अलग जाँचिए; समूह में एक भी शब्द गलत हो तो पूरा विकल्प गलत है। ‘पर्यायवाची नहीं है’ वाले प्रश्न में प्रायः एक मिलता-जुलता शब्द रखा जाता है, जैसे ‘अनिल’ (हवा) के साथ ‘अनल’ (आग), या ‘अंबु’ (जल) के साथ ‘अंबर’ (आकाश)। इसलिए हर शब्द की मात्रा और अक्षर ध्यान से पढ़िए।

शब्दों के अंत से अर्थ पहचानना बहुत काम आता है। ‘-ज’ का अर्थ है ‘जन्मा हुआ’: जलज, पंकज, नीरज, सरोज, ये सब जल या कीचड़ में जन्मे कमल हैं। ‘-द’ का अर्थ है ‘देने वाला’: जलद, नीरद, पयोद, ये जल देने वाले बादल हैं। ‘-धि’ का भाव है ‘धारण करने वाला, भंडार’: जलधि, पयोधि, वारिधि, ये समुद्र हैं। ‘पय’ का अर्थ दूध भी है और जल भी, इसी से पयोद और पयोधि बने हैं। ‘दिनकर’, ‘दिवाकर’, ‘प्रभाकर’ सूर्य हैं, जबकि ‘निशाकर’ और ‘सुधाकर’ चंद्रमा; ‘रत्नाकर’ (रत्नों की खान) समुद्र है।

कुछ प्रमुख पर्यायवाची: अग्नि: आग, अनल, पावक, वह्नि। आकाश: नभ, गगन, अंबर, व्योम। जल: नीर, वारि, अंबु, तोय, सलिल। सूर्य: रवि, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, आदित्य। चंद्रमा: शशि, सोम, इंदु, राकेश, सुधाकर, निशाकर, मयंक। पृथ्वी: धरा, धरती, वसुधा, वसुंधरा, भू, मही, अवनि। समुद्र: सागर, सिंधु, जलधि, पयोधि, रत्नाकर। कमल: पंकज, जलज, नीरज, सरोज, राजीव, अरविंद। बादल: मेघ, घन, जलद, नीरद, पयोद।

और भी: वृक्ष: पेड़, तरु, विटप, पादप, द्रुम। हवा: वायु, पवन, समीर, अनिल, मारुत। रात: रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी। आँख: नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु। घर: गृह, सदन, भवन, निकेतन, आलय। सोना: स्वर्ण, कनक, कंचन, हेम। हाथी: गज, हस्ती, कुंजर, करी। घोड़ा: अश्व, हय, तुरंग, घोटक। पर्वत: गिरि, शैल, अचल, भूधर। नदी: सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा। राजा: नृप, भूप, नरेश, नृपति, महीप। शत्रु: रिपु, अरि, बैरी। फूल: पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून। दूध: दुग्ध, क्षीर, पय। बिजली: विद्युत, तड़ित, दामिनी, चपला। शरीर: देह, तन, काया, कलेवर।

कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, जिससे भ्रम होता है। ‘कनक’ का अर्थ सोना भी है और धतूरा भी; ‘अंबर’ का अर्थ आकाश भी है और वस्त्र भी। ऐसे शब्द किसी एक समूह में सही हो सकते हैं, इसलिए पूरे विकल्प को देखकर निर्णय कीजिए।

विलोम हल करने का तरीका: पहला नियम है कि विलोम उसी शब्द-भेद का हो। संज्ञा का विलोम संज्ञा और विशेषण का विलोम विशेषण होता है: 'उन्नति' का विलोम 'अवनति', पर 'उन्नत' का 'अवनत'; 'आशा' का 'निराशा'; 'धनी' का 'निर्धन'। दूसरा नियम है कि तत्सम शब्द का विलोम प्रायः तत्सम ही होता है: 'प्राचीन' का विलोम 'अर्वाचीन' या 'नवीन'। तीसरा, शब्द का अर्थ पूरा उलटा होना चाहिए, केवल अलग नहीं।

बहुत-से विलोम उपसर्ग से बनते हैं। व्यंजन से शुरू होने वाले शब्द में 'अ' लगता है: ज्ञान-अज्ञान, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय। स्वर से शुरू होने वाले शब्द में 'अन्' लगता है: आदर-अनादर, उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक, उपस्थित-अनुपस्थित। 'स' से शुरू होने वाले कई शब्दों का विलोम 'निर्' या 'निस्' से बनता है: सजीव-निर्जीव, साकार-निराकार, साक्षर-निरक्षर, सक्रिय-निष्क्रिय, सापेक्ष-निरपेक्ष। 'सु' का उलटा 'दुर्' या 'कु' है: सुगम-दुर्गम, सुलभ-दुर्लभ, सुबोध-दुर्बोध, सुकर-दुष्कर, सुपुत्र-कुपुत्र, सुमति-कुमति। 'स्व' का उलटा 'पर': स्वतंत्र-परतंत्र, स्वाधीन-पराधीन। 'अनु' का उलटा 'प्रति' या 'वि': अनुकूल-प्रतिकूल, अनुराग-विराग। 'सम्' या 'सं' का उलटा 'वि': संयोग-वियोग। 'उत्' का उलटा 'अप' या 'अव': उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति। 'अप' से भी कई विलोम बनते हैं: मान-अपमान, यश-अपयश, उपकार-अपकार, शकुन-अपशकुन; और 'अव' से: गुण-अवगुण, आरोह-अवरोह।

कुछ और उपसर्ग-जोड़े भी याद रखिए: आयात-निर्यात, आदान-प्रदान, आकर्षण-विकर्षण, आविर्भाव-तिरोभाव, सज्जन-दुर्जन। 'कृतज्ञ' (उपकार मानने वाला) का विलोम 'कृतघ्न' (उपकार न मानने वाला) है।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण विलोम, जिन्हें सीधे याद करना पड़ता है: अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आस्तिक-नास्तिक, उदय-अस्त, आदि-अंत, उत्थान-पतन, अमृत-विष, कोमल-कठोर, गुरु-लघु, दाता-याचक, निंदा-स्तुति, पाप-पुण्य, मौखिक-लिखित, विधि-निषेध, शीत-उष्ण, हर्ष-विषाद, सृष्टि-प्रलय, अनुज-अग्रज, मितव्ययी-अपव्ययी, स्थावर-जंगम, मूक-वाचाल, आर्द्र-शुष्क, पूर्ववर्ती-परवर्ती, शुक्ल-कृष्ण, अथ-इति, जीवन-मरण।

कई शब्दों के एक से अधिक मान्य विलोम होते हैं: 'प्राचीन' के अर्वाचीन और नवीन, 'हर्ष' के विषाद और शोक, 'निंदा' के स्तुति और प्रशंसा, 'गुण' के अवगुण और दोष। चारों विकल्पों में प्रायः इनमें से एक ही होगा, इसलिए अपनी याद वाला शब्द न दिखे तो घबराइए नहीं; देखिए कि कौन-सा विकल्प अर्थ में पूरा उलटा है।

हल करने का क्रम एक उदाहरण से समझिए। प्रश्न है: 'सुगम' का विलोम क्या है? विकल्प हैं सरल, दुर्गम, सुलभ, सहज। 'सरल', 'सुलभ' और 'सहज' अर्थ में 'सुगम' के निकट हैं, इसलिए हट गए। 'सु' का सीधा जोड़ा 'दुर्' है, और 'दुर्गम' (जहाँ जाना कठिन हो) उसी मूल 'गम' (जाना) से बना है। इसलिए उत्तर 'दुर्गम' है। यानी पहले समान अर्थ वाले विकल्प हटाइए, फिर उपसर्ग का जोड़ा खोजिए।

याद करने का सरल तरीका यह है कि जोड़ों को उनके उपसर्ग के अनुसार समूह में लिखें, जैसे 'सु/दुर्' वाला समूह, 'अनु/प्रति' वाला समूह, और हर समूह को रोज़ एक बार दोहराएँ। जो जोड़े किसी उपसर्ग के नियम में नहीं आते, जैसे अनुज-अग्रज या स्थावर-जंगम, उन्हें अलग सूची में रखें।

जाल: (1) 'वि' हमेशा उलटा अर्थ नहीं देता: 'विज्ञान' 'ज्ञान' का विलोम नहीं है, यहाँ 'वि' का अर्थ 'विशेष' है; 'विख्यात' और 'ख्यात' दोनों का अर्थ प्रसिद्ध है, और 'विख्यात' का विलोम 'कुख्यात' है; (2) 'अमूल्य' का अर्थ बेकार नहीं, बल्कि 'अनमोल, जिसका मूल्य आँका न जा सके' है; (3) 'प्रति' भी हमेशा उलटा अर्थ नहीं देता: 'प्रतिदिन' का अर्थ 'हर दिन' है; (4) 'निर्मल' का विलोम 'मलिन' है, 'मल' नहीं, क्योंकि विशेषण का विलोम विशेषण होगा; (5) अनल-अनिल, अंबु-अंबर, जलज-जलद-जलधि, दिनकर-निशाकर जैसे मिलते-जुलते शब्दों में भ्रम; (6) 'पर्यायवाची नहीं है' वाले प्रश्न को 'पर्यायवाची है' पढ़ लेना।

उदाहरण

- 'अनिल' = हवा, 'अनल' = आग: एक मात्रा से अर्थ बदल जाता है।
- '-ज' = जन्मा (जलज, पंकज, नीरज = कमल); '-द' = देने वाला (जलद, नीरद, पयोद = बादल); '-धि' = भंडार (जलधि, पयोधि, वारिधि = समुद्र)।
- सूर्य: रवि, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर; चंद्रमा: शशि, इंदु, राकेश, सुधाकर, निशाकर।
- 'सूर्य का पर्यायवाची नहीं है': रवि / भानु / निशाकर / दिवाकर → निशाकर (चंद्रमा)।
- 'अंबु' = जल, 'अंबर' = आकाश या वस्त्र; 'कनक' = सोना या धतूरा।
- अ और अन्: व्यंजन से पहले अ (ज्ञान-अज्ञान, न्याय-अन्याय); स्वर से पहले अन् (आदर-अनादर, उचित-अनुचित)।
- सु और दुर्: सुगम-दुर्गम, सुलभ-दुर्लभ, सुबोध-दुर्बोध, सुकर-दुष्कर।
- स और निर्: सजीव-निर्जीव, साकार-निराकार, साक्षर-निरक्षर, सक्रिय-निष्क्रिय।
- उपसर्ग वाले: अनुकूल-प्रतिकूल, अनुराग-विराग, संयोग-वियोग, उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति, आयात-निर्यात, आदान-प्रदान।
- अलग शब्द वाले: अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आस्तिक-नास्तिक, कृतज्ञ-कृतघ्न, अनुज-अग्रज, मितव्ययी-अपव्ययी, स्थावर-जंगम, मूक-वाचाल।
- शब्द-भेद मिलाएँ: उन्नति (संज्ञा) → अवनति; उन्नत (विशेषण) → अवनत; निर्मल (विशेषण) → मलिन।
- जाल: विज्ञान 'ज्ञान' का विलोम नहीं; विख्यात का विलोम कुख्यात; अमूल्य = अनमोल, बेकार नहीं।

> **त्वरित दोहराव:** पर्यायवाची के विकल्प में हर शब्द जाँचें, एक भी गलत तो पूरा विकल्प गलत; अनल (आग)-अनिल (हवा), अंबु (जल)-अंबर (आकाश, वस्त्र) में भ्रम न करें; -ज जन्मा (जलज = कमल), -द देने वाला (जलद = बादल), -धि भंडार (जलधि = समुद्र); दिनकर सूर्य, निशाकर चंद्रमा; विलोम उसी शब्द-भेद का हो; व्यंजन से पहले अ, स्वर से पहले अन्; सु-दुर्, स-निर्, स्व-पर, अनु-प्रति, सम्-वि, उत्-अप/अव; आयात-निर्यात, आदान-प्रदान; अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आस्तिक-नास्तिक, उत्कर्ष-अपकर्ष, सुगम-दुर्गम, कृतज्ञ-कृतघ्न, अनुज-अग्रज; विज्ञान, विख्यात, अमूल्य, प्रतिदिन उलटे अर्थ वाले नहीं हैं।

पर्यायवाची शब्द (1): प्रकृति से जुड़े शब्द

पर्यायवाची शब्द क्या हैं: जिन शब्दों का अर्थ समान हो, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं, जैसे 'जल' के लिए नीर, वारि, अंबु और सलिल। फिर भी हर पर्याय हर वाक्य में नहीं बैठता: 'पानी पीना' स्वाभाविक है, पर 'सलिल पीना' कोई नहीं बोलता, क्योंकि पर्यायों में प्रयोग और भाव का सूक्ष्म अंतर रहता है।

परीक्षा में पूछे जाने वाले अधिकतर पर्याय तत्सम (संस्कृत से ज्यों-के-त्यों आए) शब्द हैं, और उनमें बहुत-से दो हिस्सों से बने हैं: एक मूल शब्द और एक अंतिम अंश, जो उसका काम बताता है। 'दिनकर' दिन को बनाने वाला है, इसलिए सूर्य; 'निशाकर' रात को प्रकाशित करने वाला है, इसलिए चंद्रमा। इस पाठ में प्रकृति से जुड़े 17 शब्दों के पर्याय इसी ढंग से समूहों में दिए गए हैं, ताकि आप रटने के साथ-साथ पहचानना भी सीखें।

सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात: सूर्य के पर्याय हैं: सूरज, रवि, दिनकर, दिवाकर, दिनेश, दिनमणि, भानु, भास्कर, प्रभाकर, आदित्य, सविता, अर्क, मार्तंड, मिहिर, तरणि, अंशुमाली, सहस्रांशु और विवस्वान। चंद्रमा के पर्याय हैं: चाँद, चंद्र, शशि, शशांक, सोम, इंदु, विधु, राकेश, रजनीश, निशाकर, निशापति, सुधाकर, सुधांशु, हिमांशु, शीतांशु, मयंक, मृगांक, तारापति और कलानिधि। पहचान का सूत्र यह है कि 'दिन' या 'दिवा' के साथ 'कर', 'ईश' या 'मणि' जुड़ा हो तो शब्द सूर्य है (दिनकर, दिवाकर, दिनेश, दिनमणि), और 'निशा', 'रजनी' या 'राका' (पूर्णिमा की रात) के साथ 'कर', 'ईश' या 'पति' जुड़ा हो तो चंद्रमा (निशाकर, रजनीश, निशापति, राकेश)। 'अंशु' का अर्थ किरण है: हजार किरणों वाला 'सहस्रांशु' और किरणों की माला वाला 'अंशुमाली' सूर्य हैं, पर ठंडी किरणों वाले 'हिमांशु' और 'शीतांशु' तथा अमृत-किरणों वाला 'सुधांशु' चंद्रमा हैं। 'अंक' यहाँ चिह्न है: खरगोश (शश) के चिह्न वाला 'शशांक' और हिरन (मृग) के चिह्न वाला 'मृगांक' चंद्रमा हैं। दिन के पर्याय हैं: दिवस, दिवा, वासर, वार और अहन्; अहन् से ही पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न बने हैं, और 'अहर्निश' का अर्थ है दिन-रात। रात के पर्याय हैं: रात्रि, रैन, निशा, निशि, रजनी, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, क्षपा, तमी, तमिस्रा और त्रियामा।

पृथ्वी, आकाश और पर्वत: पृथ्वी के पर्याय हैं: धरती, धरा, धरणी, धरित्री, भू, भूमि, मही, अवनि, वसुधा, वसुंधरा, उर्वी, इला, क्षिति, मेदिनी, अचला और विश्वंभरा; 'वसुधा' और 'वसुंधरा' का अर्थ है वसु (धन) को धारण करने वाली। आकाश के पर्याय हैं: आसमान, नभ, गगन, अंबर, व्योम, अंतरिक्ष, अनंत, शून्य और ख; 'ख' से ही खग (आकाश में चलने वाला, अर्थात पक्षी) और खगोल बने हैं। पर्वत के पर्याय हैं: पहाड़, गिरि, शैल, अचल, अद्रि, नग, भूधर, महीधर, धराधर और शिखरी। यहाँ सबसे बड़ा जाल 'धर' है: 'धरा' पृथ्वी है, पर 'भूधर', 'महीधर' और 'धराधर' का अर्थ है पृथ्वी को धारण करने वाला, अर्थात पर्वत। इसी तरह 'अचल' (न चलने वाला, पुल्लिंग) पर्वत है, जबकि 'अचला' (स्त्रीलिंग) पृथ्वी। रामचरितमानस में तुलसीदास की प्रसिद्ध पंक्ति 'छिति जल पावक गगन समीरा' में पाँचों तत्त्व इन्हीं पर्यायों से आए हैं: छिति (क्षिति, पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि), गगन (आकाश) और समीर (वायु)।

जल, बादल, समुद्र और नदी: जल के पर्याय हैं: पानी, नीर, वारि, अंबु, तोय, सलिल, उदक, जीवन और पय। इन मूल शब्दों को याद कर लें, तो बादल, समुद्र और कमल के दर्जनों पर्याय अपने-आप खुल जाते हैं। जल-वाचक शब्द के साथ 'द' (देने वाला) या 'धर' (धारण करने वाला) लगे तो बादल बनता है: जलद, नीरद, वारिद, अंबुद, तोयद, पयोद, जलधर और धाराधर; बादल के अन्य पर्याय हैं: मेघ, घन, जीमूत, बलाहक और अभ्र। 'धि' या 'निधि' (भंडार) लगे तो समुद्र बनता है: जलधि, उदधि, वारिधि, पयोधि, अंबुधि और नीरनिधि; समुद्र के अन्य पर्याय हैं: सागर, सिंधु, रत्नाकर (रत्नों की खान), अर्णव, पारावार और नदीश (नदियों का स्वामी)। 'ज' (जन्मा) लगे तो कमल बनता है, जिसकी बात आगे है। नदी के पर्याय हैं: सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा, निम्नगा, सरि, प्रवाहिनी, स्रोतस्विनी और दरिया। 'निम्नगा' का अर्थ है नीचे की ओर जाने वाली, 'तटिनी' तटों वाली और 'तरंगिणी' तरंगों वाली; 'आपगा' में 'आप' जल का वाचक है और 'गा' जाने वाली का।

वायु और अग्नि: वायु के पर्याय हैं: हवा, पवन, समीर, समीरण, अनिल, मारुत, वात, बयार, प्रभंजन और गंधवह। अग्नि के पर्याय हैं: आग, अनल, पावक, वह्नि, कृशानु, हुताशन, दहन, वैश्वानर और धूमकेतु। इस जोड़ी का सबसे अधिक पूछा जाने वाला भ्रम 'अनिल' (हवा) और 'अनल' (आग) का है; दोनों में केवल 'इ' की मात्रा का अंतर है, इसलिए विकल्प को अक्षर-अक्षर पढ़िए। कुछ नाम अपना अर्थ स्वयं बताते हैं: 'गंधवह' गंध को ढोने वाली वायु है, और 'हुताशन' (हुत अर्थात आहुति, अशन अर्थात खाने वाला) यज्ञ की आहुति ग्रहण करने वाली अग्नि। 'पावक' का अर्थ है पवित्र करने वाली; 'पावक' और 'पवन' की ध्वनि मिलती है, अर्थ नहीं। 'मारुत' हवा है, पर 'मारुति' (मारुत का पुत्र) हनुमान हैं। 'धूमकेतु' अनेकार्थी है: अग्नि भी और पुच्छल तारा भी।

वन, वृक्ष, फूल और कमल: वन के पर्याय हैं: जंगल, कानन, विपिन, अरण्य, अटवी और कांतार; 'अरण्य' से ही 'आरण्यक' (वनों में पढ़े जाने वाले वैदिक ग्रंथ) बना है। वृक्ष के पर्याय हैं: पेड़, तरु, विटप, पादप, द्रुम, रूख और शाखी; 'पादप' का अर्थ है पाद (जड़) से पानी पीने वाला। फूल के पर्याय हैं: पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून, पुहुप और गुल। कमल के पर्याय हैं: पंकज, जलज, नीरज, वारिज, अंबुज, सरोज, सरसिज, राजीव, अरविंद, पद्म, नलिन, शतदल, कंज, तामरस, उत्पल, इंदीवर और पुंडरीक। इनमें 'ज' वाले शब्द जन्म-स्थान बताते हैं: पंक (कीचड़) में, जल, नीर, वारि या अंबु में, अथवा सर (तालाब) में जन्मा; 'शतदल' सौ पंखुड़ियों वाला है। रंग का भेद भी पुस्तकों में मिलता है: इंदीवर और उत्पल प्रायः नीले कमल के लिए और पुंडरीक सफेद कमल के लिए आते हैं, पर परीक्षा में ये सब कमल के पर्याय ही माने जाते हैं।

इस पाठ के प्रमुख जाल: 'पर्यायवाची नहीं है' वाले प्रश्नों में परीक्षक ऐसा शब्द रखते हैं जो उसी मूल से बना हो, पर दूसरी वस्तु बताता हो। जलज (कमल), जलद (बादल), जलधि (समुद्र) और जलचर (मछली आदि जल-जीव) चारों 'जल' से बने हैं, पर एक-दूसरे के पर्याय नहीं। धराधर (पर्वत) और धाराधर (बादल) में केवल 'आ' की एक मात्रा का अंतर है। नदीश समुद्र है, नदी नहीं; कुसुमाकर (फूलों की खान) वसंत ऋतु है, फूल नहीं; रजनीचर और निशाचर (रात में घूमने वाले) राक्षस हैं, रात नहीं, जबकि रजनीश चंद्रमा है। 'यामिनी' रात है, पर मिलती-जुलती 'दामिनी' बिजली है और 'कामिनी' स्त्री। 'तरु' वृक्ष है, 'तरणि' सूर्य और 'तरंगिणी' नदी; 'अंबु' जल है और 'अंबर' आकाश; 'सरोज' कमल है और 'सरोवर' तालाब। विकल्प के हर शब्द को तोड़कर देखिए कि उसका अंतिम अंश क्या कहता है, तो अधिकतर प्रश्न बिना रटे हल हो जाते हैं।

उदाहरण

- सूर्य: रवि, दिनकर, दिवाकर, दिनेश, भानु, भास्कर, प्रभाकर, आदित्य, सविता, अर्क, मार्तंड, मिहिर, तरणि, अंशुमाली, सहस्रांशु, विवस्वान।
- चंद्रमा: शशि, शशांक, सोम, इंदु, विधु, राकेश, रजनीश, निशाकर, सुधाकर, सुधांशु, हिमांशु, शीतांशु, मयंक, मृगांक, कलानिधि।
- सूत्र: दिन या दिवा + कर, ईश, मणि = सूर्य; निशा, रजनी या राका + कर, ईश, पति = चंद्रमा (पर निशाचर, रजनीचर राक्षस); सहस्रांशु (हजार किरणें) सूर्य, हिमांशु और शीतांशु (ठंडी किरणें) चंद्रमा।
- पृथ्वी: धरा, धरणी, धरित्री, भू, भूमि, मही, अवनि, वसुधा, वसुंधरा, उर्वी, इला, क्षिति, मेदिनी, अचला; पर्वत: गिरि, शैल, अचल, अद्रि, नग, भूधर, महीधर, धराधर, शिखरी।

- आकाश: नभ, गगन, अंबर, व्योम, अंतरिक्ष, अनंत, शून्य, ख; रात: रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, क्षपा, तमिस्रा; दिन: दिवस, दिवा, वासर।
- जल + द या धर = बादल (जलद, नीरद, वारिद, अंबुद, तोयद, पयोद, जलधर); जल + धि या निधि = समुद्र (जलधि, उदधि, वारिधि, पयोधि, नीरनिधि); जल + ज = कमल (जलज, नीरज, वारिज, अंबुज)।
- नदी: सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा, निम्नगा, प्रवाहिनी, स्रोतस्विनी; पर नदीश (नदियों का स्वामी) समुद्र है, नदी नहीं।
- वायु: पवन, समीर, अनिल, मारुत, वात, बयार, प्रभंजन, गंधवह; अग्नि: अनल, पावक, वह्नि, कृशानु, हुताशन, वैश्वानर, धूमकेतु।
- वन: कानन, विपिन, अरण्य, अटवी, कांतार; वृक्ष: तरु, विटप, पादप, द्रुम, रूख, शाखी; फूल: पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून, पुहुप।
- कमल: पंकज, जलज, नीरज, सरोज, सरसिज, राजीव, अरविंद, पद्म, नलिन, शतदल, कंज, उत्पल, इंदीवर; जाल: धराधर पर्वत, धाराधर बादल; कुसुमाकर वसंत।

> **त्वरित दोहराव:** दिन या दिवा + कर, ईश सूर्य (दिनकर, दिवाकर, दिनेश), निशा, रजनी या राका + कर, ईश चंद्रमा (निशाकर, रजनीश, राकेश); अंशु = किरण: सहस्रांशु सूर्य, हिमांशु, शीतांशु, सुधांशु चंद्रमा; जल + ज कमल, जल + द या धर बादल, जल + धि समुद्र; भूधर, महीधर, धराधर पर्वत, धाराधर बादल; अचल पर्वत, अचला पृथ्वी; नदीश समुद्र; कुसुमाकर वसंत; रजनीचर राक्षस; अनिल हवा, अनल आग; अंबु जल, अंबर आकाश; यामिनी रात, दामिनी बिजली।

पर्यायवाची शब्द (2): देवता, पशु-पक्षी और मानव

देवताओं के नाम कैसे बने हैं: देवताओं के अधिकतर पर्याय उनकी किसी विशेषता से बने सामासिक शब्द हैं, और व्याकरण में इन्हें बहुव्रीहि समास के उदाहरण के रूप में भी पढ़ाया जाता है। 'चक्रपाणि' का अर्थ है जिसके हाथ (पाणि) में चक्र है, अर्थात विष्णु; 'नीलकंठ' जिसका कंठ नीला है, अर्थात शिव; 'लंबोदर' जिसका उदर लंबा (बड़ा) है, अर्थात गणेश। इसलिए नाम पढ़ते ही पूछिए कि इसमें कौन-सा अस्त्र, वाहन, पत्नी या अंग छिपा है। हाथ में शस्त्र या वाद्य: चक्रपाणि (विष्णु), शूलपाणि (शिव), वज्रपाणि और वज्रधर (इंद्र), वीणापाणि (सरस्वती)। मुख (आनन) की संख्या या रूप: चतुरानन (ब्रह्मा), पंचानन (शिव), षडानन (कार्तिकेय), गजानन (गणेश), दशानन (रावण)। पत्नी के नाम से पति: उमापति (शिव), रमापति और लक्ष्मीपति (विष्णु), शचीपति (इंद्र)।

ईश्वर, विष्णु और शिव: ईश्वर के पर्याय हैं: परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, भगवान, ईश, जगदीश, जगदीश्वर, सर्वेश्वर, अंतर्यामी और जगन्नाथ। विष्णु के पर्याय हैं: नारायण, हरि, चक्रपाणि, चक्रधर, लक्ष्मीपति, रमापति, रमेश, कमलापति, पीतांबर, चतुर्भुज, जनार्दन, केशव, माधव, अच्युत, मुकुंद, उपेंद्र और गरुड़ध्वज; केशव, माधव जैसे कई नाम कृष्ण के लिए भी आते हैं, क्योंकि कृष्ण विष्णु के अवतार माने जाते हैं। शिव के पर्याय हैं: शंकर, शंभु, महादेव, महेश, महेश्वर, रुद्र, हर, भोलेनाथ, पशुपति, नीलकंठ, त्रिलोचन, त्रिनेत्र, चंद्रशेखर, गंगाधर, कैलाशपति, उमापति, गिरीश, आशुतोष, त्रिपुरारि और विश्वनाथ। ध्यान दें कि 'उपेंद्र' (वामन अवतार में इंद्र के छोटे भाई) विष्णु हैं, इंद्र नहीं; 'चंद्रशेखर' (जिसके सिर पर चंद्रमा है) शिव हैं, चंद्रमा नहीं; 'गिरीश' (पर्वत के स्वामी) शिव हैं, जबकि 'गिरिजा' (पर्वत की पुत्री) पार्वती हैं और 'गिरिधर' (गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले) कृष्ण।

ब्रह्मा, इंद्र और गणेश: ब्रह्मा के पर्याय हैं: विधाता, विधि, चतुरानन, चतुर्मुख, प्रजापति, पितामह, स्वयंभू, विरंचि, कमलासन, हंसवाहन, स्रष्टा और लोकेश। इंद्र के पर्याय हैं: सुरेश, सुरेंद्र, सुरपति, देवराज, देवेंद्र, शचीपति, पुरंदर, शक्र, वासव, मघवा, वज्रधर और सहस्राक्ष। गणेश के पर्याय हैं: गणपति, गणनायक, गजानन, गजवदन, विनायक, लंबोदर, एकदंत, विघ्नेश, विघ्नहर्ता, मूषकवाहन, गौरीनंदन और हेरंब। 'सुर' देवता हैं, इसलिए सुरों के स्वामी (सुरेश, सुरपति, सुरेंद्र) इंद्र हैं। 'सहस्राक्ष' (हजार आँखों वाला) इंद्र है, जबकि 'सहस्रांशु' (हजार किरणों वाला) सूर्य; परीक्षक दोनों को एक ही प्रश्न में रखना पसंद करते हैं। 'षडानन' या 'षण्मुख' गणेश के भाई कार्तिकेय हैं, गणेश नहीं। 'विधि' अनेकार्थी है: ब्रह्मा, तरीका और भाग्य।

सरस्वती और लक्ष्मी: सरस्वती के पर्याय हैं: शारदा, वाणी, गिरा, भारती, वीणापाणि, वीणावादिनी, हंसवाहिनी, वागीश्वरी, महाश्वेता और ब्राह्मी। लक्ष्मी के पर्याय हैं: कमला, पद्मा, रमा, श्री, इंदिरा, हरिप्रिया, विष्णुप्रिया, सिंधुसुता और चंचला। लिंग पर ध्यान दीजिए: 'हंसवाहन' (पुल्लिंग) ब्रह्मा हैं और 'हंसवाहिनी' (स्त्रीलिंग) सरस्वती। 'रमा' और 'कमला' लक्ष्मी हैं, पर 'रमेश', 'रमापति' और 'कमलापति' उनके पति विष्णु। 'सिंधुसुता' (समुद्र की पुत्री) लक्ष्मी हैं, क्योंकि कथा के अनुसार वे समुद्र-मंथन से निकलीं; यह शब्द नदी या समुद्र का पर्याय नहीं है। 'चंचला' बिजली के लिए भी आता है, और 'वाणी' व 'गिरा' का सामान्य अर्थ बोली भी है, इसलिए ये अनेकार्थी हैं।

पशु-पक्षी: हाथी के पर्याय हैं: गज, हस्ती, कुंजर, करी, द्विप, द्विरद, दंती, मतंग, नाग, वारण, गयंद और सिंधुर; 'करी' (कर अर्थात सूँड़ वाला) और 'दंती' (दाँत वाला) नाम स्वयं अर्थ बताते हैं। घोड़ा: अश्व, हय, तुरंग, तुरंगम, घोटक, वाजि (बाजि) और सैंधव। सिंह: शेर, केसरी, केहरि, मृगराज, मृगेंद्र, मृगपति, वनराज, नाहर, पंचानन और हरि; 'शार्दूल' को कुछ पुस्तकें सिंह का और कुछ बाघ का पर्याय मानती हैं; अमरकोश में यह व्याघ्र (बाघ) का पर्याय है। सर्प: साँप, नाग, भुजंग, भुजंगम, भुजग, उरग, पन्नग, व्याल, अहि, फणी, विषधर और द्विजिह्व; 'उरग' का अर्थ है छाती (उर) के बल चलने वाला। हंस: मराल, कलहंस और सितपक्ष। कोयल: कोकिल, कोकिला, पिक, श्यामा, कलकंठ, वसंतदूत और परभृत; 'परभृत' का अर्थ है दूसरे द्वारा पाली गई, क्योंकि कोयल अपने अंडे कौए के घोंसले में देती है। मोर: मयूर, शिखी, केकी, कलापी, शिखंडी, सारंग और नीलकंठ; 'केकी' मोर की बोली 'केका' से बना है। 'नाग' हाथी और साँप दोनों है, 'सैंधव' घोड़ा और सेंधा नमक दोनों, और 'नीलकंठ' शिव भी है, मोर भी और एक अलग पक्षी भी।

राजा, स्त्री, पुत्र, मित्र और शत्रु: राजा के पर्याय हैं: नृप, नृपति, भूप, भूपति, भूपाल, महीप, महीपति, नरेश, नरेंद्र, नरपति, सम्राट और राव; पृथ्वी या मनुष्य के वाचक शब्द के साथ 'प', 'पति', 'पाल' या 'ईश' जुड़ा हो तो अर्थ राजा होता है। जाल यह है कि 'भूप' और 'महीप' राजा हैं, पर 'भूधर' और 'महीधर' पर्वत। स्त्री के पर्याय हैं: नारी, महिला, औरत, वनिता, ललना, कामिनी, रमणी, कांता, वामा, अंगना, भामिनी और अबला। पुत्र के पर्याय हैं: बेटा, सुत, तनय, तनुज, आत्मज, अंगज, नंदन, वत्स और पूत; पुत्री के पर्याय हैं: बेटी, सुता, तनया, तनुजा, आत्मजा, दुहिता और नंदिनी। 'तनुज' (शरीर से जन्मा) पुत्र है, पर 'अनुज' (बाद में जन्मा) छोटा भाई है और 'अग्रज' बड़ा भाई। मित्र के पर्याय हैं: सखा, सहचर, सुहृद, बंधु, मीत, साथी और दोस्त; 'मित्र' का एक अर्थ सूर्य भी है। शत्रु के पर्याय हैं: रिपु, अरि, अराति, बैरी, वैरी, दुश्मन, अमित्र और विपक्षी; 'अरि' से ही 'त्रिपुरारि' (त्रिपुर का शत्रु, शिव) और 'मुरारि' (मुर का शत्रु, कृष्ण) बने हैं।

आँख, हाथ और शरीर: आँख के पर्याय हैं: नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु, दृग, अक्षि और विलोचन। हाथ के पर्याय हैं: कर, हस्त, पाणि, बाहु और भुजा; सूक्ष्म अर्थ में बाहु और भुजा बाँह हैं, पर परीक्षा की सूचियाँ इन्हें हाथ में गिनती हैं। शरीर के पर्याय हैं: देह, तन, तनु, काया, कलेवर, गात, गात्र, वपु, बदन और जिस्म। 'पाणि' (हाथ)

को 'पानी' (जल) न समझें; 'पाणिग्रहण' का अर्थ है हाथ पकड़ना, अर्थात विवाह। 'तनु' अनेकार्थी है: शरीर भी और पतला भी, जैसे 'तनु अम्ल'। 'कर' के अर्थ हाथ, किरण, टैक्स और सूँड़ हैं, इसीलिए 'करी' हाथी है। आँख वाले शब्द देवताओं के नामों में भी आते हैं: त्रिलोचन और त्रिनेत्र शिव हैं, सहस्राक्ष इंद्र, और कमलनयन या राजीवलोचन राम और विष्णु के विशेषण हैं।

उदाहरण

- विष्णु: नारायण, हरि, चक्रपाणि, लक्ष्मीपति, रमापति, रमेश, कमलापति, पीतांबर, चतुर्भुज, जनार्दन, केशव, माधव, अच्युत, उपेंद्र, गरुड़ध्वज।
- शिव: शंकर, शंभु, महादेव, महेश, रुद्र, हर, पशुपति, नीलकंठ, त्रिलोचन, चंद्रशेखर, गंगाधर, उमापति, गिरीश, आशुतोष, त्रिपुरारि।
- ब्रह्मा: विधाता, विधि, चतुरानन, प्रजापति, पितामह, स्वयंभू, विरंचि, कमलासन, हंसवाहन; इंद्र: सुरेश, सुरपति, देवराज, शचीपति, पुरंदर, शक्र, वासव, मघवा, सहस्राक्ष।
- आनन (मुख) वाले नाम: चतुरानन ब्रह्मा, पंचानन शिव (और सिंह), षडानन कार्तिकेय, गजानन गणेश, दशानन रावण।
- सरस्वती: शारदा, वाणी, गिरा, भारती, वीणापाणि, हंसवाहिनी, वागीश्वरी; लक्ष्मी: कमला, पद्मा, रमा, श्री, इंदिरा, हरिप्रिया, सिंधुसुता, चंचला।
- हाथी: गज, हस्ती, कुंजर, करी, द्विप, दंती, मतंग, नाग; घोड़ा: अश्व, हय, तुरंग, घोटक, वाजि, सैंधव; सिंह: केसरी, मृगराज, मृगेंद्र, वनराज, पंचानन, हरि।
- सर्प: भुजंग, उरग, पन्नग, व्याल, अहि, फणी, विषधर; हंस: मराल; कोयल: कोकिल, पिक, श्यामा, परभृत; मोर: मयूर, शिखी, केकी, कलापी, सारंग।
- राजा: नृप, भूप, भूपाल, महीप, नरेश, नरपति (भूप राजा, भूधर पर्वत); स्त्री: नारी, वनिता, ललना, कामिनी, रमणी, अंगना, भामिनी।
- पुत्र: सुत, तनय, तनुज, आत्मज; पुत्री: सुता, तनया, दुहिता, आत्मजा; अनुज छोटा भाई, अग्रज बड़ा भाई; मित्र: सखा, सुहृद; शत्रु: रिपु, अरि, अराति।
- आँख: नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु, दृग, अक्षि; हाथ: कर, हस्त, पाणि; शरीर: देह, तन, काया, कलेवर, गात, वपु; पाणि हाथ है, पानी नहीं।

> **त्वरित दोहराव:** देवताओं के अधिकतर नाम विशेषता से बने बहुव्रीहि हैं: चक्रपाणि विष्णु, नीलकंठ, चंद्रशेखर, गंगाधर शिव, लंबोदर, गजानन गणेश; आनन: चतुरानन ब्रह्मा, षडानन कार्तिकेय, दशानन रावण; उमापति शिव, रमापति विष्णु, शचीपति इंद्र; उपेंद्र विष्णु; सहस्राक्ष इंद्र, सहस्रांशु सूर्य; हंसवाहन ब्रह्मा, हंसवाहिनी सरस्वती; सिंधुसुता लक्ष्मी; नाग हाथी और साँप; सैंधव घोड़ा और नमक; पंचानन, हरि सिंह भी; भूप राजा, भूधर पर्वत; तनुज पुत्र, अनुज छोटा भाई; पाणि हाथ।

पर्यायवाची शब्दों की पहचान: तत्सम पर्याय, भ्रामक विकल्प और अनेकार्थी शब्द

तीन तरह के शब्द: पर्यायवाची (समानार्थी) शब्दों में कई शब्दों का एक अर्थ होता है, जैसे कमल के लिए पंकज, जलज और सरोज। अनेकार्थी शब्द इसका उलटा है: एक शब्द के कई अर्थ, जैसे 'कर' के अर्थ हाथ, किरण, टैक्स और सूँड़। तीसरी श्रेणी श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्दों की है, जिन्हें कुछ पुस्तकें युग्म-शब्द या समोच्चरित शब्द कहती हैं: सुनने और लिखने में लगभग एक जैसे, पर अर्थ अलग, जैसे अनल (आग) और अनिल (हवा), कुल (वंश) और कूल (किनारा), दिन और दीन (गरीब), सुत (पुत्र) और सूत (धागा, सारथी)। पर्यायवाची के प्रश्नों में यही तीनों आपस में मिलाकर जाल बनाए जाते हैं: विकल्प में आया अनेकार्थी शब्द सही पर्याय हो सकता है, जबकि मिलता-जुलता श्रुतिसम शब्द प्रायः पर्याय नहीं होता, केवल भ्रम के लिए रखा जाता है।

तत्सम पर्याय कैसे बनते हैं: परीक्षा के कठिन पर्याय प्रायः तत्सम सामासिक शब्द होते हैं, जिनमें एक मूल शब्द और एक अंतिम पद होता है, और कुछ अंतिम पद बार-बार आते हैं। 'ज' या 'जा' (जन्मा, जन्मी): जलज, पंकज (कमल), तनुज (पुत्र), अनुज (छोटा भाई), गिरिजा (पार्वती), भूमिजा (सीता)। 'द' (देने वाला): जलद, नीरद, पयोद (बादल)। 'धि' या 'निधि' (भंडार): जलधि, उदधि (समुद्र), कलानिधि (चंद्रमा)। 'धर' (धारण करने वाला): जलधर (बादल), भूधर (पर्वत), विषधर (साँप), गंगाधर (शिव), गिरिधर (कृष्ण), वज्रधर (इंद्र), चक्रधर (विष्णु)। 'प' (पालक), 'पति', 'ईश', 'नाथ' (स्वामी): भूप, नृपति, नरेश (राजा), रजनीश (चंद्रमा), दिनेश (सूर्य), नदीश (समुद्र), कैलाशपति (शिव)। 'चर' (चलने वाला): खेचर और नभचर (पक्षी), जलचर (जल-जीव), निशाचर (राक्षस)। 'कर' या 'आकर' (करने वाला या खान): दिनकर (सूर्य), निशाकर (चंद्रमा), रत्नाकर (समुद्र), कुसुमाकर (वसंत)। कोई अपरिचित विकल्प दिखे, तो उसे इन दो पदों में तोड़िए और पूछिए कि यह किसका वर्णन है।

तत्सम, तद्भव और आगत शब्द साथ-साथ: एक ही अर्थ के लिए विकल्प में तत्सम, तद्भव, देशज और अरबी-फारसी से आए (आगत) शब्द एक साथ आ सकते हैं, और अर्थ एक हो तो सब सही पर्याय हैं। सूर्य-सूरज, चंद्र-चाँद, अग्नि-आग, रात्रि-रात, हस्ती-हाथी, घोटक-घोड़ा, सर्प-साँप, मयूर-मोर, कोकिल-कोयल, पुत्र-पूत, मित्र-मीत, वैरी-बैरी, हस्त-हाथ और अक्षि-आँख तत्सम और उनके तद्भव रूप हैं; आसमान, दरिया, दुश्मन, दोस्त, औरत, बदन और गुल आगत शब्द हैं। इसलिए 'पर्यायवाची नहीं है' वाले प्रश्न का उत्तर अर्थ से तय होता है, स्रोत से नहीं: 'अग्नि' के विकल्प 'आग, अनल, पावक, समीर' हों, तो 'आग' तद्भव होते हुए भी सही पर्याय है, और उत्तर 'समीर' (हवा) है। हाँ, यदि प्रश्न में स्पष्ट लिखा हो कि तत्सम पर्याय चुनिए, तब तद्भव रूप हटाने होंगे। एक बारीकी यह भी है कि एक ही रूप के दो स्रोत हो सकते हैं: संस्कृत का 'हस्ती' हाथी है, पर उर्दू का 'हस्ती' अस्तित्व या प्रतिष्ठित व्यक्ति।

एक जैसे दिखने वाले पर उत्तर न बनने वाले विकल्प: परीक्षक जानबूझकर ऐसा शब्द रखते हैं जो रूप या ध्वनि में सही उत्तर से बहुत मिलता-जुलता हो, कई बार केवल एक मात्रा या एक अक्षर भर अलग। इन जोड़ों को साथ-साथ याद कीजिए: अनिल हवा, अनल आग; अंबु जल, अंबर आकाश; जलज कमल, जलद बादल; धराधर पर्वत, धाराधर बादल; भूप राजा, भूधर पर्वत; सहस्रांशु सूर्य, सहस्राक्ष इंद्र; हंसवाहन ब्रह्मा, हंसवाहिनी सरस्वती; अचल पर्वत, अचला पृथ्वी; यामिनी रात, दामिनी बिजली, कामिनी स्त्री; मारुत हवा, मारुति हनुमान; तनुज पुत्र, अनुज छोटा भाई; काक कौआ, कोकिल कोयल; सरोज कमल, सरोवर तालाब। दूसरी तरह का जाल संबंध वाले नामों का है, जिनमें किसी वस्तु का शब्द हो पर अर्थ उससे जुड़े व्यक्ति का हो: 'गिरिजा' पार्वती है, पर्वत नहीं; 'भूमिजा' और 'महीसुता' सीता हैं, पृथ्वी नहीं; 'सिंधुसुता' लक्ष्मी है, समुद्र नहीं; 'चंद्रशेखर' शिव है, चंद्रमा नहीं।

अनेकार्थी शब्द और उनका अंतर: अनेकार्थी शब्द पर्यायवाची प्रश्न में दो तरह से आता है। पहला, वह सही उत्तर में हो सकता है: 'सिंह' के पर्यायों में 'हरि' सही है, भले ही आप हरि को विष्णु के रूप में जानते हों। दूसरा, प्रश्न सीधे पूछ सकता है कि किसी शब्द का कौन-सा अर्थ नहीं है। कनक के अर्थ सोना और धतूरा हैं, और बिहारी के दोहे की पंक्ति 'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' इसी पर टिकी है; कुछ पुस्तकें कनक का अर्थ गेहूँ और पलाश भी गिनाती हैं। अंबर के अर्थ आकाश और वस्त्र हैं; 'पीतांबर' (पीला वस्त्र) और 'दिगंबर' (दिशाएँ ही जिसके वस्त्र हों) में अंबर वस्त्र है। हरि के अर्थ बहुत हैं; अमरकोश में संज्ञा (पुल्लिंग) के रूप

में इसके ये 13 अर्थ हैं: विष्णु, इंद्र, सिंह, घोड़ा, बंदर, साँप, मेंढक, तोता, सूर्य, चंद्रमा, पवन, किरण और यम, और विशेषण के रूप में यह कपिल (भूरा-पीला) रंग है; कुछ हिंदी पुस्तकें इनमें और अर्थ भी जोड़ती हैं। अर्थ के अर्थ हैं मतलब, धन (अर्थशास्त्र), प्रयोजन या हेतु, और 'के लिए' (परीक्षार्थ, धर्मार्थ)।

और भी अनेकार्थी शब्द: कर (हाथ, किरण, टैक्स, सूँड़), घन (बादल, हथौड़ा, घना, और गणित में किसी संख्या का घन), पय (दूध, जल), द्विज (ब्राह्मण, पक्षी, दाँत), नाग (साँप, हाथी), पतंग (सूर्य, पक्षी, कागज की पतंग, पतंगा), गुरु (शिक्षक, भारी, बृहस्पति), तात (पिता, भाई, पूज्य व्यक्ति, प्रिय संबोधन), वर्ण (अक्षर, रंग, जाति), पत्र (चिट्ठी, पत्ता), कल (बीता या आने वाला दिन, मशीन, चैन), काल (समय, मृत्यु, यमराज), जीवन (जिंदगी, जल), हंस (पक्षी, सूर्य, आत्मा), मित्र (दोस्त, सूर्य), सारंग (मोर, हिरन, बादल, साँप, भौंरा आदि), गो (गाय, इंद्रिय, किरण, वाणी, पृथ्वी), विधि (तरीका, ब्रह्मा, भाग्य, कानून), सिंधु (समुद्र, सिंधु नदी), नग (पर्वत, रत्न) और धूमकेतु (अग्नि, पुच्छल तारा)। अनेकार्थी शब्द का एक अर्थ अकेले याद करने के बजाय उसकी पूरी अर्थ-सूची एक साथ याद कीजिए।

पर्याय जैसे दिखने वाले, पर अलग अर्थ वाले शब्द: कुछ शब्द रोज की बोली में एक-दूसरे की जगह बोले जाते हैं, पर व्याकरण की पुस्तकें उनमें अंतर करती हैं। अस्त्र वह हथियार है जो फेंककर चलाया जाए (बाण), शस्त्र वह जो हाथ में पकड़कर चलाया जाए (तलवार)। आधि मानसिक कष्ट है, व्याधि शारीरिक रोग। प्रेम बराबर वालों से, स्नेह छोटों से, श्रद्धा बड़ों से और भक्ति ईश्वर के प्रति होती है। अपराध कानून के विरुद्ध काम है, पाप धर्म या नैतिकता के विरुद्ध। ईर्ष्या दूसरे की उन्नति देखकर होने वाली जलन है, द्वेष शत्रुता का भाव। ऐसे शब्द पूर्ण पर्याय नहीं माने जाते।

प्रश्न हल करने का क्रम: पहला उदाहरण लीजिए, 'समुद्र' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है: जलधि, रत्नाकर, जलद, पयोधि? हर शब्द तोड़िए: जलधि और पयोधि जल के भंडार हैं, रत्नाकर रत्नों की खान, ये तीनों समुद्र हैं, पर जलद (जल देने वाला) बादल है, इसलिए उत्तर जलद है। दूसरा, 'सिंह' का पर्यायवाची चुनिए: हरि, हय, हस्ती, हंस? हय घोड़ा है, हस्ती हाथी, हंस पक्षी, और हरि अनेकार्थी होने से सिंह भी है, इसलिए उत्तर हरि। तीसरा, 'कमल' के पर्यायों का सही समूह चुनिए: पंकज-जलज-नीरद, सरोज-राजीव-अरविंद, नीरज-अंबुज-अंबुद, जलज-पयोद-सरसिज? पहले, तीसरे और चौथे समूह में एक-एक बादल (नीरद, अंबुद, पयोद) छिपा है, इसलिए सही समूह सरोज-राजीव-अरविंद है।

उदाहरण

- पर्यायवाची: कई शब्द, एक अर्थ (पंकज, जलज, सरोज = कमल); अनेकार्थी: एक शब्द, कई अर्थ (कर = हाथ, किरण, टैक्स, सूँड़)।
- श्रुतिसम-भिन्नार्थक: अनल (आग) और अनिल (हवा), कुल (वंश) और कूल (किनारा), दिन और दीन (गरीब), सुत (पुत्र) और सूत (धागा, सारथी)।
- अंतिम पद पहचानें: ज = जन्मा (जलज, तनुज), द = देने वाला (जलद), धि = भंडार (जलधि), धर = धारण करने वाला (भूधर, विषधर, गंगाधर), चर = चलने वाला (नभचर, निशाचर)।
- तद्भव और आगत रूप भी सही पर्याय हैं: आग (अग्नि), सूरज (सूर्य), हाथी (हस्ती), आसमान, दरिया; उत्तर अर्थ से तय होता है, स्रोत से नहीं।
- संबंध वाले नाम पर्याय नहीं: गिरिजा पार्वती (पर्वत नहीं), भूमिजा सीता (पृथ्वी नहीं), सिंधुसुता लक्ष्मी (समुद्र नहीं), चंद्रशेखर शिव (चंद्रमा नहीं)।
- कनक: सोना, धतूरा (कुछ पुस्तकें गेहूँ, पलाश भी); अंबर: आकाश, वस्त्र (पीतांबर, दिगंबर); अर्थ: मतलब, धन, प्रयोजन, के लिए (परीक्षार्थ)।
- हरि (अमरकोश में संज्ञा के 13 अर्थ): विष्णु, इंद्र, सिंह, घोड़ा, बंदर, साँप, मेंढक, तोता, सूर्य, चंद्रमा, पवन, किरण, यम; इसलिए सिंह के पर्यायों में हरि सही है।
- और अनेकार्थी: घन (बादल, हथौड़ा, घना), पय (दूध, जल), द्विज (ब्राह्मण, पक्षी, दाँत), नाग (साँप, हाथी), पतंग (सूर्य, पक्षी), तात (पिता, पूज्य)।
- पर्याय जैसे पर भिन्न: अस्त्र फेंककर, शस्त्र हाथ में; आधि मानसिक, व्याधि शारीरिक; प्रेम बराबर वालों से, स्नेह छोटों से, श्रद्धा बड़ों से, भक्ति ईश्वर से।
- 'समुद्र' का पर्याय नहीं: जलधि, रत्नाकर, जलद, पयोधि में से जलद (बादल); 'सिंह' का पर्याय: हरि, हय, हस्ती, हंस में से हरि।

> **त्वरित दोहराव:** पर्यायवाची = कई शब्द, एक अर्थ; अनेकार्थी = एक शब्द, कई अर्थ; श्रुतिसम = मिलते-जुलते रूप, भिन्न अर्थ; अंतिम पद पहचानें: ज जन्मा, द देने वाला, धि भंडार, धर धारण करने वाला, प पालक, पति और ईश स्वामी, चर चलने वाला; तद्भव और आगत रूप भी पर्याय हैं; गिरिजा, भूमिजा, सिंधुसुता, चंद्रशेखर संबंध वाले नाम हैं; कनक सोना और धतूरा, अंबर आकाश और वस्त्र, हरि विष्णु, सिंह, घोड़ा, बंदर आदि, अर्थ मतलब, धन, प्रयोजन; अस्त्र-शस्त्र, आधि-व्याधि पूर्ण पर्याय नहीं।

विलोम शब्द (1): विलोम बनाने के तरीके और प्रमुख युग्म

विलोम शब्द और उनकी शर्तें: जो शब्द किसी शब्द का उलटा अर्थ दे, उसे विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं, जैसे सत्य-असत्य, उदय-अस्त। सही विलोम की तीन शर्तें हैं। पहली, शब्द-भेद वही हो: संज्ञा का विलोम संज्ञा और विशेषण का विशेषण (उन्नति-अवनति, उन्नत-अवनत)। दूसरी, स्रोत वही हो: तत्सम का विलोम तत्सम और उर्दू का उर्दू (सम्मान-अपमान, पर इज्जत-बेइज्जती)। तीसरी, अर्थ उसी प्रसंग में उलटा हो: 'हलका बोझ' का उलटा 'भारी' है, पर 'हलका रंग' का उलटा 'गहरा'। विलोम बनाने के चार मुख्य ढंग हैं: शब्द से पहले उपसर्ग जोड़ना (ज्ञान-अज्ञान), एक उपसर्ग को दूसरे से बदलना (सुगम-दुर्गम), समास के एक पद या प्रत्यय को बदलना (कृतज्ञ-कृतघ्न, अग्रज-अनुज), और बिलकुल अलग शब्द रखना (दिन-रात)। नर-नारी जैसे लिंग-युग्म कई परीक्षा-पुस्तकों की विलोम-सूचियों में मिलते हैं, पर कुछ व्याकरण इन्हें विलोम नहीं, लिंग-परिवर्तन मानते हैं; प्रश्न में ऐसा जोड़ा आए तो बाकी विकल्प देखकर निर्णय कीजिए। ध्यान रहे कि 'राजा' का विलोम सूचियों में प्रायः 'रंक' दिया जाता है, 'रानी' नहीं।

'अ' और 'अन्' जोड़कर: संस्कृत का निषेधवाचक उपसर्ग व्यंजन से शुरू होने वाले शब्द से पहले 'अ' और स्वर से शुरू होने वाले शब्द से पहले 'अन्' बनता है। 'अ' वाले विलोम: ज्ञान-अज्ञान, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, शुभ-अशुभ, पूर्ण-अपूर्ण, स्थिर-अस्थिर, संभव-असंभव, साधारण-असाधारण, योग्य-अयोग्य, पवित्र-अपवित्र, मूर्त-अमूर्त, लौकिक-अलौकिक, ज्ञात-अज्ञात, हिंसा-अहिंसा, चल-अचल, मर्त्य-अमर्त्य। 'अन्' वाले विलोम: आदर-अनादर, उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक, उपस्थित-अनुपस्थित, अर्थ-अनर्थ, उदार-अनुदार, आसक्त-अनासक्त, इच्छा-अनिच्छा, एक-अनेक, आस्था-अनास्था, उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण, उपयुक्त-अनुपयुक्त, अधिकार-अनधिकार, आचार-अनाचार, इष्ट-अनिष्ट। दो बारीकियाँ याद रखिए। 'नश्वर-अनश्वर' में 'अन्' नहीं, 'अ' लगा है (अ + नश्वर), क्योंकि नश्वर व्यंजन से शुरू होता है। और हिंदी के तद्भव शब्दों में 'अन' व्यंजन से पहले भी आता है: अनपढ़, अनजान, अनमोल, अनगिनत; स्वर वाला नियम केवल तत्सम शब्दों पर लागू होता है। कहीं-कहीं 'न' भी निषेध देता है: आस्तिक-नास्तिक।

‘निर्’ और ‘दुर्’ से: ‘स’ (सहित) से शुरू होने वाले बहुत-से शब्दों का विलोम ‘निर्’ (रहित) से बनता है, और संधि के कारण ‘निर्’ कहीं ‘निस्’, ‘निष्’, ‘निः’ या ‘नी’ हो जाता है: सजीव-निर्जीव, सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार, साक्षर-निरक्षर, सार्थक-निरर्थक, सदोष-निर्दोष, सबल-निर्बल, सापेक्ष-निरपेक्ष, सापराध-निरपराध, सक्रिय-निष्क्रिय, सकाम-निष्काम, सशस्त्र-निःशस्त्र, सरस-नीरस। बिना ‘स’ वाले शब्दों के विलोम भी ‘निर्’ से बनते हैं: आशा-निराशा, आमिष-निरामिष, आश्रित-निराश्रित, और धनी-निर्धन (निर् + धन)। ‘सु’ (अच्छा, सरल) का उलटा ‘दुर्’ (बुरा, कठिन) है, जो संधि से ‘दुस्’, ‘दुष्’ या ‘दुः’ भी बनता है: सुगम-दुर्गम, सुलभ-दुर्लभ, सुबोध-दुर्बोध, सुगंध-दुर्गंध, सुदिन-दुर्दिन, सुकर-दुष्कर, सुकर्म-दुष्कर्म, सुपरिणाम-दुष्परिणाम, सुचरित्र-दुश्चरित्र, सौभाग्य-दुर्भाग्य; ‘सत्’ (संधि में सद् या सज्) वाले शब्दों का विलोम भी ‘दुर्’ से बनता है: सद्भावना-दुर्भावना, सज्जन-दुर्जन, सदाचार-दुराचार। ‘सु’ का दूसरा जोड़ा ‘कु’ है: सुपुत्र-कुपुत्र, सुमति-कुमति, सुपथ-कुपथ, सुरूप-कुरूप, सुपात्र-कुपात्र, सुसंगति-कुसंगति; और ‘विख्यात’ या ‘प्रख्यात’ का विलोम ‘कुख्यात’ है।

‘वि’ और दूसरे उपसर्ग-युग्म: ‘वि’ कई शब्दों में उलटा या अलगाव का अर्थ देता है: स्मरण-विस्मरण, पक्ष-विपक्ष, सम-विषम, देश-विदेश, सजातीय-विजातीय, सम्मुख-विमुख, संयोग-वियोग, अनुराग-विराग, आसक्ति-विरक्ति, आकर्षण-विकर्षण, क्रय-विक्रय। पर ‘वि’ हमेशा उलटा नहीं करता: विज्ञान, विख्यात, विशुद्ध और विनम्र में वह विशेषता का भाव देता है। दूसरे प्रमुख उपसर्ग-युग्म ये हैं। स्व और पर: स्वतंत्र-परतंत्र, स्वाधीन-पराधीन, स्वदेश-परदेश, स्वार्थ-परमार्थ। अनु और प्रति: अनुकूल-प्रतिकूल, अनुलोम-प्रतिलोम (कुछ सूचियों में अनुलोम-विलोम भी)। उत् और अव, अप या नि: उन्नति-अवनति, उन्नत-अवनत, उत्कर्ष-अपकर्ष, उत्कृष्ट-निकृष्ट। आ और निर्: आयात-निर्यात। आ और प्र: आदान-प्रदान। आ और अव: आरोह-अवरोह, आज्ञा-अवज्ञा। मूल शब्द में ‘अप’ या ‘अव’ जोड़कर भी विलोम बनते हैं: मान-अपमान, यश-अपयश, कीर्ति-अपकीर्ति, शकुन-अपशकुन, गुण-अवगुण; और उपसर्ग बदलकर उपकार-अपकार।

प्रत्यय या समास का एक पद बदलकर: कई विलोम पूरे शब्द को नहीं, उसके एक हिस्से को बदलकर बनते हैं। कृतज्ञ (किए उपकार को मानने वाला) का विलोम कृतघ्न (किए उपकार को भुला देने वाला) है। ऐसे ही: अग्रज-अनुज, पूर्वज-वंशज, पूर्वार्ध-उत्तरार्ध, पूर्ववर्ती-परवर्ती, पूर्वाह्न-अपराह्न, अधिकतम-न्यूनतम, अल्पज्ञ-बहुज्ञ या सर्वज्ञ, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक, दीर्घायु-अल्पायु, मितव्ययी-अपव्ययी, उत्तरायण-दक्षिणायन, अंतर्मुखी-बहिर्मुखी, अंतरंग-बहिरंग, आशावादी-निराशावादी, देशभक्त-देशद्रोही, सकारात्मक-नकारात्मक। इन्हें हल करने की कुंजी यह है कि साझा हिस्सा वैसा ही रहता है और केवल बदलने वाला हिस्सा उलटता है: ‘पूर्व’ का उलटा ‘उत्तर’, ‘पर’ या ‘अपर’, ‘अल्प’ का ‘बहु’, ‘अंतर्’ का ‘बहिर्’, ‘अधिक’ का ‘न्यून’।

बिलकुल अलग शब्द वाले विलोम: बहुत-से विलोम किसी उपसर्ग के नियम से नहीं बनते, इन्हें जोड़े के रूप में ही याद करना पड़ता है। सबसे अधिक पूछे जाने वाले ऐसे युग्म हैं: आदि-अंत, आय-व्यय, आकाश-पाताल, अमृत-विष, उदय-अस्त, उत्थान-पतन, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, कोमल-कठोर, गुरु-लघु, जड़-चेतन, जीवन-मरण, दिन-रात, दाता-याचक, धूप-छाँव, निंदा-स्तुति, पाप-पुण्य, प्रश्न-उत्तर, प्रकाश-अंधकार, मित्र-शत्रु, मौखिक-लिखित, विधि-निषेध, शीत-उष्ण, सुख-दुःख, स्वर्ग-नरक, हर्ष-विषाद, सृष्टि-प्रलय, स्थूल-सूक्ष्म, सामान्य-विशेष, ठोस-तरल, मूक-वाचाल, कृपण-उदार, नकद-उधार, खरा-खोटा। इन्हें याद करते समय अर्थ भी साथ रखिए: ‘गुरु’ यहाँ भारी या बड़ा है और ‘लघु’ हलका या छोटा; ‘विधि’ करने योग्य काम का विधान है और ‘निषेध’ मनाही; ‘दाता’ देने वाला है और ‘याचक’ माँगने वाला।

उर्दू-फारसी शब्दों के विलोम: उर्दू शब्दों के विलोम प्रायः ना, बे, गैर या बद जोड़कर बनते हैं, और विलोम भी उर्दू का ही होना चाहिए: पसंद-नापसंद, लायक-नालायक, खुश-नाखुश, ईमानदार-बेईमान, इज्जत-बेइज्जती, कसूरवार-बेकसूर, हाजिर-गैरहाजिर, कानूनी-गैरकानूनी, नेकी-बदी, खुशनसीब-बदनसीब। कुछ उर्दू विलोम अलग शब्द से बनते हैं: आबाद-बरबाद, आजाद-गुलाम, अमीर-गरीब, फायदा-नुकसान, इकरार-इनकार, हलाल-हराम। ‘उपस्थित’ का विलोम ‘अनुपस्थित’ लिखिए और ‘हाजिर’ का ‘गैरहाजिर’; ‘उपस्थित-गैरहाजिर’ जैसा मिश्रण विलोम का अच्छा उदाहरण नहीं माना जाता।

उदाहरण

- अ (व्यंजन से पहले): ज्ञान-अज्ञान, धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय, शुभ-अशुभ, संभव-असंभव, लौकिक-अलौकिक, हिंसा-अहिंसा, मर्त्य-अमर्त्य।
- अन् (स्वर से पहले): आदर-अनादर, उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक, उपस्थित-अनुपस्थित, अर्थ-अनर्थ, इच्छा-अनिच्छा, एक-अनेक, उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण, अधिकार-अनधिकार।
- बारीकी: नश्वर-अनश्वर में ‘अ’ लगा है (अ + नश्वर); अनपढ़, अनजान, अनमोल जैसे तद्भव शब्दों में ‘अन’ व्यंजन से पहले भी आता है।
- स और निर्: सजीव-निर्जीव, सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार, साक्षर-निरक्षर, सार्थक-निरर्थक, सक्रिय-निष्क्रिय, सकाम-निष्काम, सरस-नीरस, सापराध-निरपराध।
- सु (या सत्) और दुर्: सुगम-दुर्गम, सुलभ-दुर्लभ, सुबोध-दुर्बोध, सुकर-दुष्कर, सुचरित्र-दुश्चरित्र, सज्जन-दुर्जन, सदाचार-दुराचार, सौभाग्य-दुर्भाग्य; सु और कु: सुपुत्र-कुपुत्र, सुमति-कुमति, सुरूप-कुरूप।
- उपसर्ग-युग्म: स्वतंत्र-परतंत्र, स्वाधीन-पराधीन, अनुकूल-प्रतिकूल, संयोग-वियोग, अनुराग-विराग, उन्नति-अवनति, उत्कर्ष-अपकर्ष, आयात-निर्यात, आदान-प्रदान, आरोह-अवरोह, आज्ञा-अवज्ञा।
- अप या अव जोड़कर: मान-अपमान, यश-अपयश, कीर्ति-अपकीर्ति, शकुन-अपशकुन, गुण-अवगुण; उपसर्ग बदलकर उपकार-अपकार।
- पद बदलकर: कृतज्ञ-कृतघ्न, अग्रज-अनुज, पूर्वज-वंशज, पूर्वार्ध-उत्तरार्ध, पूर्वाह्न-अपराह्न, अधिकतम-न्यूनतम, अल्पज्ञ-सर्वज्ञ, दीर्घायु-अल्पायु, मितव्ययी-अपव्ययी, अंतर्मुखी-बहिर्मुखी।
- अलग शब्द: आदि-अंत, आय-व्यय, उदय-अस्त, उत्थान-पतन, कोमल-कठोर, गुरु-लघु, जड़-चेतन, दाता-याचक, निंदा-स्तुति, मौखिक-लिखित, शीत-उष्ण, स्थूल-सूक्ष्म, मूक-वाचाल।
- उर्दू के विलोम उर्दू में: पसंद-नापसंद, ईमानदार-बेईमान, हाजिर-गैरहाजिर, कानूनी-गैरकानूनी, खुशनसीब-बदनसीब, आबाद-बरबाद, इकरार-इनकार।

त्वरित दोहराव: विलोम का शब्द-भेद, स्रोत और प्रसंग वही हो; तत्सम में व्यंजन से पहले अ (ज्ञान-अज्ञान), स्वर से पहले अन् (आदर-अनादर), पर नश्वर-अनश्वर में अ; स और निर् (सजीव-निर्जीव, सरस-नीरस), सु और दुर् या कु (सुगम-दुर्गम, सुपुत्र-कुपुत्र), स्व-पर, अनु-प्रति, सम्-वि, उत्-अव या अप, आ-निर् (आयात-निर्यात), आ-प्र (आदान-प्रदान); मान-अपमान, गुण-अवगुण; पद बदलकर कृतज्ञ-कृतघ्न, अग्रज-अनुज; वि हमेशा उलटा नहीं (विज्ञान, विख्यात); उर्दू में ना, बे, गैर, बद।

विलोम शब्द (2): तत्सम विलोम, प्रश्नों के जाल और अभ्यास

तत्सम विलोमों को समूहों में याद करें: सामान्य हिंदी के प्रश्नपत्रों में विलोम के कठिन प्रश्न प्रायः तत्सम शब्दों पर आते हैं, क्योंकि इनके विकल्प मिलते-जुलते बनाए जा सकते हैं और अनुमान से उत्तर नहीं लगता। इन्हें याद करने का सबसे अच्छा तरीका अर्थ के आधार पर समूह बनाना है: उन्नति और पतन, आना-जाना, समय और दिशा, स्वभाव और व्यवहार, तथा शास्त्र और साहित्य के युग्म। हर जोड़े को दोनों ओर से याद कीजिए, क्योंकि प्रश्न 'प्राचीन' का विलोम भी पूछ सकता है और 'अर्वाचीन' का भी। जहाँ किसी जोड़े में उपसर्ग का नियम दिखे (उत् और अप, आ और निर्, अनु और वि), उसे पहचानिए; जहाँ नियम न हो (स्थावर-जंगम, ऋजु-वक्र, अथ-इति), उसका अर्थ समझकर याद कीजिए, क्योंकि अर्थ जानने से ही विकल्पों में छिपा पर्याय पकड़ में आता है।

उन्नति, पतन और आना-जाना: उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन, आरोह-अवरोह, आरोहण-अवरोहण, ह्रास-वृद्धि, उत्कृष्ट-निकृष्ट, उत्तम-अधम, सबल-निर्बल, संपन्न-विपन्न। आने-जाने और लेन-देन के युग्म: आदान-प्रदान, आयात-निर्यात, आगमन-प्रस्थान, आविर्भाव-तिरोभाव, आकर्षण-विकर्षण, क्रय-विक्रय, प्रवृत्ति-निवृत्ति, संयोग-वियोग, संक्षेप-विस्तार, संक्षिप्त-विस्तृत, संकीर्ण-विस्तीर्ण, संश्लेषण-विश्लेषण। 'आविर्भाव' का अर्थ है प्रकट होना और 'तिरोभाव' का छिप जाना या लुप्त होना; 'आदान' लेना है और 'प्रदान' देना; 'आयात' बाहर से देश में माल लाना है और 'निर्यात' देश से बाहर भेजना; 'प्रवृत्ति' किसी काम में लगना है और 'निवृत्ति' उससे हट जाना। 'ह्रास' (घटना) और 'वृद्धि' (बढ़ना) की जोड़ी में 'ह्रास' की वर्तनी पर भी ध्यान दीजिए: इसमें 'ह' के बाद 'र' है।

समय, दिशा और लोक: प्राचीन-अर्वाचीन, पुरातन-नूतन या अधुनातन, आदि-अंत, अथ-इति, पूर्वाह्न-अपराह्न, दिवा-रात्रि, क्षणिक-शाश्वत, नश्वर-अनश्वर, मर्त्य-अमर, प्राची-प्रतीची, पाश्चात्य-पौर्वात्य, उत्तरायण-दक्षिणायन, अवनि-अंबर, आकाश-पाताल, लौकिक-अलौकिक, अंतरंग-बहिरंग, स्थावर-जंगम, चर-अचर, ऋजु-वक्र। 'प्राची' पूर्व दिशा है और 'प्रतीची' पश्चिम दिशा। 'अथ' आरंभ का सूचक है और 'इति' समाप्ति का, इसीलिए 'अथ से इति तक' का अर्थ है आरंभ से अंत तक। 'अवनि' (पृथ्वी) का विलोम 'अंबर' (आकाश) है। 'स्थावर' वह है जो अपनी जगह से न हिले, जैसे वृक्ष और पर्वत, और 'जंगम' वह जो चल-फिर सके; 'ऋजु' का अर्थ सीधा है और 'वक्र' का टेढ़ा। 'मर्त्य' (मरणशील) का विलोम 'अमर' या 'अमर्त्य' है, और 'मर्त्य' से ही पृथ्वी को 'मर्त्यलोक' कहते हैं।

स्वभाव और व्यवहार: आस्तिक-नास्तिक, आस्था-अनास्था, कृतज्ञ-कृतघ्न, अनुराग-विराग, अनुरक्त-विरक्त, राग-द्वेष, हर्ष-विषाद, निंदा-स्तुति, आशीर्वाद-अभिशाप, धृष्ट-विनीत, मूक-वाचाल, उद्यमी-आलसी, कृपण-दानी, सदाचारी-दुराचारी, सात्त्विक-तामसिक, शोषक-शोषित, दाता-याचक, अभिज्ञ-अनभिज्ञ, इष्ट-अनिष्ट, सौभाग्य-दुर्भाग्य। 'धृष्ट' (ढीठ) का विलोम 'विनीत' (नम्र) है; 'कृपण' (कंजूस) का 'दानी' या 'उदार'; 'मूक' (गूँगा, चुप रहने वाला) का 'वाचाल' (बहुत बोलने वाला); 'शोषक' (शोषण करने वाला) का 'शोषित' (जिसका शोषण हो)। 'राग' के विलोम पुस्तकों में 'द्वेष' और 'विराग' दोनों मिलते हैं, जबकि 'अनुराग' का विलोम 'विराग' है।

शास्त्र, साहित्य और प्रकृति के युग्म: व्यष्टि-समष्टि, उपमेय-उपमान, गौण-मुख्य, ग्राह्य-त्याज्य, वादी-प्रतिवादी, अनिवार्य-ऐच्छिक, कृत्रिम-प्राकृतिक, आदर्श-यथार्थ, अपेक्षा-उपेक्षा, पुरस्कार-दंड, सृष्टि-प्रलय, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आर्द्र-शुष्क, उर्वर-ऊसर, सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार, स्वकीया-परकीया, गरिमा-लघिमा, मानव-दानव, सुर-असुर, जड़-चेतन। 'व्यष्टि' (एक व्यक्ति) का विलोम 'समष्टि' (पूरा समूह) है। 'उपमेय' वह है जिसकी तुलना की जाए और 'उपमान' वह जिससे तुलना की जाए: 'मुख चंद्रमा के समान सुंदर है' में मुख उपमेय है और चंद्रमा उपमान। 'ग्राह्य' (ग्रहण करने योग्य) का विलोम 'त्याज्य' (त्यागने योग्य) है, 'अतिवृष्टि' (बहुत अधिक वर्षा) का 'अनावृष्टि' (वर्षा न होना), और 'उर्वर' (उपजाऊ) का 'ऊसर' (बंजर)। 'स्वकीया' (अपनी) और 'परकीया' (पराई) साहित्य में नायिका के भेद हैं। 'गरिमा' (भारीपन) का विलोम 'लघिमा' (हलकापन) है; दोनों अष्ट सिद्धियों के नाम भी हैं।

विलोम के प्रश्नों के जाल: पहला जाल पर्याय का है: 'उत्कर्ष' के विकल्पों में 'उन्नति' और 'प्रगति' जैसे शब्द रखे जाते हैं, जो उसके पर्याय हैं, विलोम नहीं; उत्तर 'अपकर्ष' है। दूसरा जाल शब्द-भेद और रूप का है: 'उन्नति' (संज्ञा) का विलोम 'अवनति' है, 'अवनत' (विशेषण) नहीं; 'आस्तिक' का विलोम 'नास्तिक' है, पर 'आस्था' का 'अनास्था', और 'अनास्तिक' जैसा रूप प्रचलित नहीं। तीसरा जाल नकारात्मक दिखने वाले शब्दों का है: 'अभिज्ञ' का अर्थ जानकार है और उसका विलोम 'अनभिज्ञ' (अनजान) है; बहुत-से अभ्यर्थी 'अभिज्ञ' को ही अनजान समझ बैठते हैं। इसी तरह अमूल्य, अनुपम, अतुलनीय और अद्वितीय में 'अ' या 'अन्' होते हुए भी अर्थ प्रशंसा का है, और 'निर्मल' व 'निर्भय' में 'निर्' होते हुए भी अर्थ अच्छा है (निर्मल का विलोम मलिन)। चौथा जाल उपसर्ग का भ्रम है: 'वि', 'प्र' और 'अनु' हमेशा उलटा अर्थ नहीं देते; विज्ञान, विनम्र, प्रख्यात और अनुशासन अपने मूल शब्दों के विलोम नहीं हैं। पाँचवाँ जाल मिलते-जुलते रूपों का है: 'अनुज' का विलोम 'अग्रज' है, 'मनुज' (मनुष्य) नहीं; 'आदान' का 'प्रदान' है, 'निदान' (रोग की पहचान) नहीं।

जहाँ एक से अधिक विलोम मान्य हैं: कई शब्दों के दो या तीन विलोम पुस्तकों में मिलते हैं: प्राचीन-अर्वाचीन या नवीन, हर्ष-विषाद या शोक, जीवन-मरण या मृत्यु, निंदा-स्तुति या प्रशंसा, पुरस्कार-दंड या तिरस्कार, कृपण-दानी या उदार, लौकिक-अलौकिक या पारलौकिक, नश्वर-अनश्वर या शाश्वत। कुछ जोड़ों पर पुस्तकें सचमुच अलग राय रखती हैं: 'यथार्थ' का विलोम कोई पुस्तक 'आदर्श' देती है तो कोई 'कल्पित', और नर-नारी जैसे लिंग-युग्मों को कुछ पुस्तकें विलोम मानती हैं, कुछ नहीं। प्रश्न में प्रायः इनमें से एक ही विकल्प होता है, इसलिए जो विकल्प अर्थ में पूरा उलटा हो और उसी शब्द-भेद व स्रोत का हो, वही चुनिए; यदि दो मान्य विलोम साथ दिखें, तो उसी मूल या उपसर्ग-युग्म से बना शब्द अधिक सटीक है, जैसे 'उन्नति' के लिए 'पतन' से अधिक सटीक 'अवनति'।

अभ्यास: हर प्रश्न में पहले पर्याय हटाइए, फिर उपसर्ग या पद का जोड़ा खोजिए। पहला, 'आविर्भाव' का विलोम (प्रादुर्भाव, तिरोभाव, उद्भव, प्रभाव): उत्तर तिरोभाव, क्योंकि प्रादुर्भाव और उद्भव प्रकट होने के ही अर्थ के निकट हैं। दूसरा, 'व्यष्टि' (समष्टि, विशिष्ट, सृष्टि, दृष्टि): उत्तर समष्टि; बाकी केवल तुक मिलाने वाले शब्द हैं। तीसरा, 'ऋजु' (सरल, वक्र, कोमल, तीव्र): उत्तर वक्र, क्योंकि सरल तो ऋजु का पर्याय है। चौथा, 'अनुराग' (प्रेम, विराग, अनुरक्ति, राग): उत्तर विराग। पाँचवाँ, 'स्थावर' (अचल, जंगम, स्थिर, जड़): उत्तर जंगम। छठा, 'कृतज्ञ' (कृतार्थ, कृपालु, कृतघ्न, कृपण): उत्तर कृतघ्न; कृतार्थ (सफल) और कृपण (कंजूस) केवल मिलते-जुलते रूप हैं। सातवाँ, 'आदान' (निदान, प्रदान, अवदान, संधान): उत्तर प्रदान। आठवाँ, 'उन्नति' (उत्थान, अवनत, अवनति, प्रगति): उत्तर अवनति, क्योंकि अवनत विशेषण है और उत्थान व प्रगति पर्याय हैं। नौवाँ, 'अभिज्ञ' (विज्ञ, अनभिज्ञ, प्रज्ञ, सुविज्ञ): उत्तर अनभिज्ञ।

उदाहरण

- उन्नति और पतन: उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन, आरोह-अवरोह, ह्रास-वृद्धि, उत्कृष्ट-निकृष्ट, उत्तम-अधम, संपन्न-विपन्न।

- आना-जाना: आदान-प्रदान, आयात-निर्यात, आगमन-प्रस्थान, आविर्भाव-तिरोभाव, आकर्षण-विकर्षण, क्रय-विक्रय, प्रवृत्ति-निवृत्ति, संश्लेषण-विश्लेषण।
- समय और दिशा: प्राचीन-अर्वाचीन, पुरातन-नूतन, अथ-इति, प्राची-प्रतीची, पाश्चात्य-पौर्वात्य, उत्तरायण-दक्षिणायन, क्षणिक-शाश्वत, अवनि-अंबर।
- स्वभाव: आस्तिक-नास्तिक, कृतज्ञ-कृतघ्न, अनुराग-विराग, राग-द्वेष, धृष्ट-विनीत, मूक-वाचाल, कृपण-दानी, सात्त्विक-तामसिक, अभिज्ञ-अनभिज्ञ।
- शास्त्रीय युग्म: व्यष्टि-समष्टि, उपमेय-उपमान, स्थावर-जंगम, ऋजु-वक्र, गौण-मुख्य, ग्राह्य-त्याज्य, वादी-प्रतिवादी, स्वकीया-परकीया, गरिमा-लघिमा।
- पर्याय वाला जाल: 'उत्कर्ष' का विलोम अपकर्ष है; विकल्पों में रखे उन्नति और प्रगति उसके पर्याय हैं।
- शब्द-भेद मिलाइए: उन्नति-अवनति, उन्नत-अवनत; आस्तिक-नास्तिक, पर आस्था-अनास्था।
- नकारात्मक दिखने वाले शब्द: अभिज्ञ = जानकार, अनभिज्ञ = अनजान; अमूल्य, अनुपम, अतुलनीय प्रशंसा के शब्द हैं; विज्ञान, विनम्र, अनुशासन उलटे अर्थ वाले नहीं।
- एक से अधिक मान्य विलोम: प्राचीन-अर्वाचीन या नवीन, हर्ष-विषाद या शोक, पुरस्कार-दंड या तिरस्कार; यथार्थ-आदर्श या कल्पित (पुस्तकों में अंतर)।

> **त्वरित दोहराव:** उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति, आरोह-अवरोह, ह्रास-वृद्धि; आदान-प्रदान, आयात-निर्यात, आविर्भाव-तिरोभाव, संश्लेषण-विश्लेषण; प्राचीन-अर्वाचीन, अथ-इति, प्राची-प्रतीची, अवनि-अंबर, स्थावर-जंगम, ऋजु-वक्र; आस्तिक-नास्तिक, आस्था-अनास्था, कृतज्ञ-कृतघ्न, धृष्ट-विनीत, मूक-वाचाल, अभिज्ञ-अनभिज्ञ; व्यष्टि-समष्टि, उपमेय-उपमान, ग्राह्य-त्याज्य, अतिवृष्टि-अनावृष्टि; जाल: विकल्प में पर्याय, शब्द-भेद का मेल, अभिज्ञ जानकार है, विज्ञान और अनुशासन उलटे नहीं, अनुज का विलोम अग्रज।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-synonyms-antonyms/

हिंदी: उपयुक्त शब्द और रिक्त स्थान

उपयुक्त शब्द और रिक्त स्थान

परीक्षा में क्या पूछा जाता है: एक वाक्य दिया जाता है जिसमें या तो एक रिक्त स्थान होता है या कोई शब्द रेखांकित होता है। आपको चार विकल्पों में से वह शब्द चुनना होता है जो उस वाक्य में सबसे उपयुक्त हो। विकल्प प्रायः ऐसे होते हैं जो सुनने में एक जैसे लगते हैं पर अर्थ में अलग हैं, या अर्थ में मिलते-जुलते हैं पर प्रयोग में अलग। इसलिए यह भाग शब्दों के सूक्ष्म अंतर की परीक्षा है।

हल करने का क्रम: पहले पूरा वाक्य पढ़कर समझिए कि बात किसके बारे में है और रिक्त स्थान पर संज्ञा, विशेषण, क्रिया या अव्यय में से क्या चाहिए। फिर लिंग, वचन और कारक-चिह्न देखकर व्याकरण की दृष्टि से गलत विकल्प हटा दीजिए। अंत में बचे हुए विकल्पों में से वह चुनिए जिसका अर्थ प्रसंग में सबसे सटीक बैठे। हर विकल्प को वाक्य में रखकर मन में पढ़िए; जो स्वाभाविक लगे, वही प्रायः सही होता है। उदाहरण: 'युद्ध में उसकी ___ देखकर सब चकित रह गए।' विकल्प हैं वीर, वीरता, वीरों, वीरतापूर्वक। 'उसकी' के बाद स्त्रीलिंग संज्ञा चाहिए; 'वीर' व्यक्ति बताता है, गुण नहीं, इसलिए यहाँ नहीं बैठता; 'वीरों' बहुवचन है और 'वीरतापूर्वक' क्रियाविशेषण। इसलिए उत्तर 'वीरता' है।

श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द वे हैं जो सुनने में लगभग समान हैं पर जिनका अर्थ अलग है। इनमें प्रायः एक मात्रा, एक अक्षर या एक आधे अक्षर का अंतर होता है। प्रमुख जोड़े: अंश (हिस्सा) और अंस (कंधा); कुल (वंश, या सब) और कूल (किनारा); दिन (दिवस) और दीन (गरीब, दुखी); अन्न (अनाज) और अन्य (दूसरा); आदि (आरंभ, इत्यादि) और आदी (अभ्यस्त); ओर (तरफ़) और और (तथा); गृह (घर) और ग्रह (सूर्य की परिक्रमा करने वाला पिंड, जैसे मंगल); चिर (बहुत समय तक रहने वाला) और चीर (वस्त्र); नीर (जल) और नीड़ (घोंसला)।

और भी जोड़े: परिणाम (नतीजा) और परिमाण (मात्रा); प्रसाद (देवता का भोग, या कृपा) और प्रासाद (महल); भवन (घर) और भुवन (संसार); लक्ष (लाख) और लक्ष्य (उद्देश्य, निशाना); शर (बाण) और सर (तालाब); सुत (पुत्र) और सूत (धागा, या सारथी); अनल (आग) और अनिल (हवा); अवधि (समय-सीमा) और अवधी (अवध क्षेत्र की भाषा); आसन (बैठने का स्थान) और आसन्न (निकट आया हुआ); कृति (रचना) और कृती (कुशल, निपुण); पुरुष (आदमी) और परुष (कठोर); बलि (बलिदान) और बली (बलवान); द्विप (हाथी) और द्वीप (टापू); तरणी (नाव) और तरुणी (युवती); अभिराम (सुंदर) और अविराम (लगातार); ग्रंथ (पुस्तक) और ग्रंथि (गाँठ); संकर (मिश्रित) और शंकर (शिव); अपेक्षा (आशा, या तुलना में) और उपेक्षा (अनदेखी)। 'हंस' (पक्षी) और 'हँस' (हँसना) में केवल बिंदु और चंद्रबिंदु का अंतर है, पर अर्थ बिलकुल अलग है।

इन जोड़ों को वाक्य से पहचानिए: 'नदी के कूल पर मेला लगा था' (किनारा), पर 'वह अपने कुल का नाम रोशन करेगा' (वंश)। 'पक्षी शाम को अपने नीड़ में लौट आए' (घोंसला)। 'इस घोल में नमक का परिमाण अधिक है' (मात्रा), पर 'परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ' (नतीजा)। 'राजा का प्रासाद नगर के बीच में था' (महल), पर 'मंदिर में प्रसाद बँटा'। 'मंगल एक ग्रह है', पर 'गृह-प्रवेश' में घर।

समानार्थी पर अलग प्रयोग वाले शब्द: कुछ शब्द पर्यायवाची लगते हैं, पर उनके प्रयोग में सूक्ष्म अंतर होता है। अस्त्र वह हथियार है जो फेंककर चलाया जाए, जैसे बाण; शस्त्र वह जो हाथ में पकड़कर चलाया जाए, जैसे तलवार। अपराध कानून या समाज के नियम का उल्लंघन है; पाप धार्मिक या नैतिक नियम का उल्लंघन। आज्ञा बड़ों द्वारा छोटों को दी जाती है; अनुमति किसी काम की स्वीकृति है। अनुरोध प्रायः बराबर वालों से किया जाता है, प्रार्थना बड़ों या ईश्वर से। स्नेह छोटों के प्रति होता है, श्रद्धा बड़ों और पूज्य व्यक्तियों के प्रति।

कुछ और सूक्ष्म अंतर: गर्व उचित बात पर होता है ('हमें अपने देश पर गर्व है'), जबकि अहंकार या घमंड अनुचित, बढ़ा हुआ भाव है। ईर्ष्या दूसरे की उन्नति देखकर होने वाली जलन है, द्वेष शत्रुता का भाव। आधि मानसिक कष्ट है, व्याधि शारीरिक रोग। संदेह दो बातों में अनिश्चय है, भ्रम गलत को सही समझ लेना। आविष्कार किसी नई वस्तु को बनाना है (जैसे टेलीफ़ोन), खोज पहले से मौजूद चीज़ का पता लगाना (जैसे किसी नए द्वीप की)। शोक किसी प्रियजन की मृत्यु या बड़ी हानि पर होने वाला दुख है; दया दूसरों का दुख देखकर मन में उठने वाला भाव है, और कृपा बड़ों का छोटों पर अनुग्रह।

शब्द-संगति: कुछ संज्ञाओं के साथ कुछ विशेष क्रियाएँ और विशेषण ही स्वाभाविक लगते हैं। 'ध्यान देना', 'भाग लेना', 'शपथ लेना', 'आशीर्वाद देना', 'प्रश्न पूछना', 'प्रकाश डालना', 'आज्ञा का पालन करना', 'कदम उठाना', 'स्वागत करना'। विशेषणों में: 'कड़ी मेहनत', 'गहरी नींद', 'घोर अपराध', 'गंभीर रोग', 'तीव्र गति', 'प्रबल इच्छा', 'मूसलाधार वर्षा'। यदि कोई विकल्प अर्थ में ठीक हो पर जोड़ा अटपटा लगे, तो उसे संदेह से देखिए।

भाषा का स्तर (औपचारिक और अनौपचारिक): कार्यालय के पत्र, भाषण या समाचार जैसे औपचारिक वाक्यों में तत्सम या मानक शब्द उपयुक्त होते हैं: 'सविनय निवेदन है', 'आपका आभारी रहूँगा'। रोज़ की बातचीत वाले वाक्य में सरल शब्द ठीक लगते हैं। औपचारिक वाक्य में बोलचाल का शब्द या बोलचाल के वाक्य में बहुत भारी शब्द प्रायः उपयुक्त विकल्प नहीं होता।

रेखांकित शब्द वाले प्रश्न में दो बातें देखी जाती हैं: क्या रेखांकित शब्द का अर्थ प्रसंग से मेल खाता है, और क्या उसकी जगह कोई अधिक सटीक शब्द है। 'सैनिक ने अस्त्र से शत्रु का सिर काट दिया' में रेखांकित 'अस्त्र' के स्थान पर 'शस्त्र' अधिक उपयुक्त है, क्योंकि सिर काटने के लिए हाथ में पकड़ा हथियार चाहिए।

जाल: (1) एक मात्रा के अंतर को अनदेखा करना: कुल-कूल, दिन-दीन, चिर-चीर, सुत-सूत, आदि-आदी; (2) परिणाम और परिमाण, प्रसाद और प्रासाद, गृह और ग्रह को आपस में बदल देना; (3) अस्त्र-शस्त्र और अपराध-पाप जैसे जोड़ों को पूरी तरह समान मान लेना; (4) गर्व और अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष का अंतर भूल जाना; (5) अर्थ में ठीक पर व्याकरण में गलत विकल्प चुनना, जैसे विशेषण की जगह संज्ञा; (6) औपचारिक वाक्य में बोलचाल का शब्द चुन लेना; (7) केवल रिक्त स्थान के आसपास के दो शब्द पढ़कर उत्तर देना।

उदाहरण

- 'नदी के ___ पर मेला लगा था।' (कुल / कूल) → कूल (किनारा); 'वह अपने ___ का नाम रोशन करेगा।' → कुल (वंश)।
- 'पक्षी शाम को अपने ___ में लौट आए।' (नीर / नीड़) → नीड़ (घोंसला)।
- 'इस घोल में नमक का ___ अधिक है।' (परिणाम / परिमाण) → परिमाण (मात्रा)।
- 'राजा का ___ नगर के बीच में था।' (प्रसाद / प्रासाद) → प्रासाद (महल)।
- 'मंगल एक ___ है।' (गृह / ग्रह) → ग्रह; 'गृह-प्रवेश' में गृह = घर।
- '___-दुखियों की सहायता करो।' (दिन / दीन) → दीन (गरीब, दुखी)।
- 'वह सुबह जल्दी उठने का ___ है।' (आदि / आदी) → आदी (अभ्यस्त)।
- अस्त्र = फेंककर चलाया जाने वाला (बाण); शस्त्र = हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला (तलवार)।
- अपराध = कानून या समाज के नियम का उल्लंघन; पाप = धार्मिक या नैतिक नियम का उल्लंघन।
- 'हमें अपने देश पर ___ है।' (गर्व / घमंड) → गर्व; घमंड अनुचित भाव है।
- आविष्कार = नई वस्तु बनाना; खोज = पहले से मौजूद का पता लगाना।
- स्नेह छोटों के प्रति, श्रद्धा बड़ों के प्रति; अनुरोध बराबर वालों से, प्रार्थना बड़ों या ईश्वर से।
- संगति: कड़ी मेहनत, गहरी नींद, गंभीर रोग, प्रबल इच्छा; आज्ञा का पालन करना, विषय पर प्रकाश डालना।

> **त्वरित दोहराव:** पहले वाक्य का प्रसंग और रिक्त स्थान का शब्द-भेद पहचानें, फिर व्याकरण से गलत विकल्प हटाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ चुनें; श्रुतिसम-भिन्नार्थक: अंश-अंस, कुल-कूल, दिन-दीन, अन्न-अन्य, आदि-आदी, गृह-ग्रह, चिर-चीर, नीर-नीड़, परिणाम-परिमाण, प्रसाद-प्रासाद, शर-सर, सुत-सूत, अनल-अनिल, आसन-आसन्न, द्विप-द्वीप, हंस-हँस; प्रयोग-भेद: अस्त्र फेंककर, शस्त्र हाथ में; अपराध कानूनी, पाप नैतिक; स्नेह छोटों से, श्रद्धा बड़ों से; गर्व उचित, अहंकार अनुचित; आविष्कार नया बनाना, खोज पता लगाना; शब्द-संगति और औपचारिक भाषा का ध्यान रखें।

श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द (1): मात्रा, स्वर और श-स के अंतर वाले युग्म

श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द क्या हैं: 'श्रुति' का अर्थ है सुनना और 'सम' का अर्थ है समान। इसलिए श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द वे हैं जो सुनने में लगभग एक जैसे लगते हैं, पर जिनके अर्थ भिन्न होते हैं। कुछ पुस्तकें इन्हें समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्द या केवल युग्म शब्द कहती हैं; नाम अलग है, विषय एक ही है। इन शब्दों में प्रायः एक छोटा-सा अंतर होता है: कहीं ह्रस्व और दीर्घ मात्रा का (दिन-दीन), कहीं एक स्वर का (अनल-अनिल), कहीं 'श' और 'स' का (अंश-अंस), तो कहीं संयुक्त व्यंजन का (अन्न-अन्य)। बोलचाल में यह अंतर अक्सर सुनाई नहीं देता, इसलिए लिखते समय भूल होती है, और परीक्षक इसी भूल को पकड़ते हैं। इनमें से अधिकतर शब्द संस्कृत से आए तत्सम शब्द हैं, इसलिए इनका अर्थ प्रायः शब्द की बनावट से भी समझा जा सकता है। इस पाठ में मात्रा, स्वर और श-स के अंतर वाले युग्म हैं; ब-व, संयुक्ताक्षर, बिंदु और नुक्ता वाले युग्म अगले पाठ में हैं।

इ और ई की मात्रा का अंतर: सबसे अधिक युग्म इसी अंतर के हैं। दिन (दिवस) और दीन (गरीब, दुखी): 'आज का दिन शुभ है', पर 'दीन-दुखियों की सेवा करो'। आदि (आरंभ; इत्यादि) और आदी (अभ्यस्त): 'आदि काल से', पर 'वह देर से उठने का आदी है'। बलि (बलिदान, भेंट) और बली (बलवान): 'देश के लिए प्राणों की बलि', पर 'भीम बड़े बली थे'। कृति (रचना) और कृती (कुशल, निपुण): 'गोदान प्रेमचंद की प्रसिद्ध कृति है'। अवधि (समय-सीमा) और अवधी (अवध क्षेत्र की भाषा): 'आवेदन की अवधि बढ़ा दी गई', पर 'तुलसीदास ने रामचरितमानस अवधी में लिखा'। सुधि (याद, खबर) और सुधी (बुद्धिमान, विद्वान): 'परदेस गए बेटे की कोई सुधि नहीं मिली', पर 'सुधी पाठक'। चिर (बहुत समय तक रहने वाला) और चीर (वस्त्र): 'चिरकाल से', पर 'द्रौपदी का चीर-हरण'। हरि (भगवान विष्णु) और हरी (हरे रंग की): 'हरी घास'। गिरि (पर्वत) और गिरी (गिर पड़ी; बीज का गूदा): 'गिरिराज हिमालय', पर 'नारियल की गिरी'। कलि (कलियुग; कलह) और कली (फूल की कली)। पिक (कोयल) और पीक (पान का थूक)। नियत (निश्चित) और नीयत (इरादा): 'नियत समय पर पहुँचो', पर 'उसकी नीयत साफ़ नहीं है'।

उ और ऊ की मात्रा का अंतर: कुल (वंश; सब मिलाकर) और कूल (किनारा): 'वह अपने कुल का दीपक है', 'कुल पचास रुपये', पर 'नदी के कूल पर मेला लगा'। सुत (पुत्र) और सूत (धागा; सारथी): 'दशरथ-सुत राम', 'चरखे पर सूत काता जाता है'; कर्ण को सूत-पुत्र इसलिए कहा गया कि उसका पालन सारथी अधिरथ ने किया था। सुर (देवता; स्वर) और सूर (सूर्य; सूरदास): 'सुर और असुर', 'मधुर सुर में गाना'। पुरा (प्राचीन) और पूरा (संपूर्ण): 'पुरातत्त्व विभाग', पर 'काम पूरा हो गया'। कुजन (बुरे लोग) और कूजन (पक्षियों का मधुर कलरव): 'भोर में पक्षियों का कूजन'। शुचि (पवित्र) और सूची (तालिका; सुई): 'शुचि मन', 'मतदाता सूची'; इस युग्म में मात्रा के साथ श-स का अंतर भी है।

अ और आ का अंतर: इन युग्मों में एक शब्द में 'अ' है और दूसरे में दीर्घ 'आ'। अचार (मसाला डालकर रखा खाद्य पदार्थ) और आचार (आचरण, व्यवहार): 'आम का अचार', पर 'आचार-संहिता'। अगम (जहाँ पहुँचना कठिन हो) और आगम (आगमन; शास्त्र): 'अगम पर्वत', पर 'वसंत का आगम'। अपर (दूसरा, अतिरिक्त) और अपार (जिसका पार न हो): 'अपर जिलाधिकारी', पर 'अपार जनसमूह'। छत्र (छाता, राजछत्र) और छात्र (विद्यार्थी)। तप (तपस्या) और ताप (गर्मी; ज्वर)। प्रकार (भेद, तरह) और प्राकार (परकोटा, चारदीवारी): 'किले का ऊँचा प्राकार'। प्रसाद (देवता का भोग; कृपा) और प्रासाद (महल)। प्रहर (पहर, दिन-रात का आठवाँ भाग, यानी 3 घंटे) और प्रहार (चोट, आक्रमण)। प्रकृत (स्वाभाविक, असली) और प्राकृत (एक प्राचीन भारतीय भाषा)। समान (बराबर) और सामान (वस्तुएँ): 'कानून की दृष्टि में सब समान हैं', पर 'यात्रा का सामान'। हल (समाधान; खेत जोतने का औज़ार) और हाल (दशा): 'प्रश्न का हल', पर 'रोगी का हाल'।

एक स्वर के बदलने से: कुछ युग्मों में ह्रस्व-दीर्घ का नहीं, स्वर का ही अंतर होता है। अनल (आग) और अनिल (हवा): 'वन में अनल की लपटें उठ रही थीं', पर 'शीतल अनिल बह रहा है'। भवन (घर, इमारत) और भुवन (संसार, लोक): 'विद्यालय का नया भवन', पर 'त्रिभुवन' अर्थात् तीनों लोक। ओर (तरफ़) और और (तथा): 'नदी की ओर चलो', पर 'राम और श्याम'। अपेक्षा (आशा; तुलना में) और उपेक्षा (अनदेखी): 'माता-पिता को बच्चों से बहुत अपेक्षाएँ होती हैं', पर 'बुज़ुर्गों की उपेक्षा न करें'। तीन शब्दों का एक समूह भी याद रखिए: तरणि (सूर्य), तरणी (नाव) और तरुणी (युवती)।

श और स का अंतर: उत्तर भारत की बोलचाल में 'श' और 'स' का भेद प्रायः मिट जाता है, पर लिखित हिंदी में यह अर्थ बदल देता है। अंश (हिस्सा) और अंस (कंधा): 'लाभ में सबका अंश बराबर है', पर 'योद्धा ने धनुष अंस पर टाँग लिया'। शर (बाण) और सर (तालाब; सिर): 'अर्जुन के शर', पर 'सर में कमल खिले हैं'। शंकर (शिव) और संकर (मिश्रित): 'संकर बीज', 'संकर नस्ल की गाय'। शूर (वीर) और सूर (सूर्य; सूरदास): 'शूरवीर'। शीत (ठंडा) और सित (सफ़ेद): 'शीत ऋतु', पर 'सित कमल'। शप्त (शापित) और सप्त (सात): 'सप्तर्षि', पर 'गौतम ऋषि के शाप से शप्त अहल्या'। शम (शांति, मन का संयम) और सम (बराबर): 'सम संख्या'। श्वेत (सफ़ेद) और स्वेद (पसीना): 'श्वेत वस्त्र', पर 'माथे पर स्वेद-कण'।

परीक्षा में ये युग्म कैसे पूछे जाते हैं: पहला प्रकार रिक्त स्थान है: 'नदी के ..... पर मेला लगा' (कुल, कूल, कुली, कूप)। 'नदी के' बता रहा है कि किनारा चाहिए, इसलिए उत्तर कूल है। दूसरा प्रकार युग्म का सही अर्थ-जोड़ा पूछता है: 'अनल-अनिल' का सही अर्थ 'आग-हवा' है; विकल्पों में 'हवा-आग' भी दिया जाता है, इसलिए क्रम देखकर उत्तर दें। तीसरा प्रकार असंगत युग्म पूछता है: 'कौन-सा युग्म सही नहीं है: दिन-दिवस, दीन-गरीब, आदी-आरंभ, बली-बलवान'; उत्तर 'आदी-आरंभ' है, क्योंकि आरंभ का अर्थ 'आदि' देता है, आदी नहीं। चौथे प्रकार में व्याकरण भी संकेत देता है: 'भीम बहुत ..... थे' (बलि, बली) में भीम का गुण बताने वाला विशेषण चाहिए, इसलिए बली; जबकि 'प्राणों की .....' में संज्ञा चाहिए, इसलिए बलि। याद रखने का सबसे अच्छा उपाय हर युग्म को किसी परिचित शब्द से जोड़ना है: दीनबंधु (दीन), आदिवासी (आदि), गिरिराज (गिरि), सप्तर्षि (सप्त), पुरातत्त्व (पुरा), आचार-संहिता (आचार), सूत-पुत्र (सूत), त्रिभुवन (भुवन)।

उदाहरण

- दिन = दिवस; दीन = गरीब, दुखी: 'आज का दिन शुभ है', 'दीन-दुखियों की सेवा करो'।
- आदि = आरंभ, इत्यादि; आदी = अभ्यस्त: 'वह सुबह चाय पीने का ..... है' → आदी।
- कुल = वंश, सब; कूल = किनारा: 'नदी के ..... पर मंदिर है' → कूल; 'वह अपने ..... का नाम रोशन करेगा' → कुल।
- सुत = पुत्र; सूत = धागा, सारथी (कर्ण सूत-पुत्र कहलाया); सुर = देवता, स्वर; सूर = सूर्य, सूरदास।
- बलि = बलिदान, भेंट; बली = बलवान; कृति = रचना; कृती = कुशल; अवधि = समय-सीमा; अवधी = अवध की भाषा।
- नियत = निश्चित; नीयत = इरादा: 'परीक्षा ..... समय पर होगी' → नियत; 'उसकी ..... में खोट है' → नीयत।
- अचार = खाद्य पदार्थ; आचार = आचरण (आचार-संहिता); अपर = दूसरा; अपार = असीम; प्रहर = पहर (3 घंटे); प्रहार = चोट।
- प्रसाद = भोग, कृपा; प्रासाद = महल; प्रकार = भेद; प्राकार = परकोटा; समान = बराबर; सामान = वस्तुएँ।
- अनल = आग; अनिल = हवा; भवन = घर; भुवन = संसार (त्रिभुवन); ओर = तरफ़; और = तथा; तरणि = सूर्य, तरणी = नाव, तरुणी = युवती।
- अंश = हिस्सा; अंस = कंधा; शर = बाण; सर = तालाब; शंकर = शिव; संकर = मिश्रित; शीत = ठंडा; सित = सफ़ेद; श्वेत = सफ़ेद; स्वेद = पसीना।

> **त्वरित दोहराव:** श्रुतिसम-भिन्नार्थक = सुनने में समान, अर्थ में भिन्न; इ-ई: दिन-दीन, आदि-आदी, बलि-बली, कृति-कृती, अवधि-अवधी, सुधि-सुधी, चिर-चीर, गिरि-गिरी, नियत-नीयत; उ-ऊ: कुल-कूल, सुत-सूत, सुर-सूर, पुरा-पूरा, कुजन-कूजन; अ-आ: अचार-आचार, अगम-आगम, अपर-अपार, प्रकार-प्राकार, प्रसाद-प्रासाद, प्रहर-प्रहार, समान-सामान; स्वर: अनल-अनिल, भवन-भुवन, ओर-और, तरणी-तरुणी; श-स: अंश-अंस, शर-सर, शंकर-संकर, शीत-सित, शप्त-सप्त, श्वेत-स्वेद; प्रसंग और व्याकरण से चुनें।

श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द (2): ब-व, संयुक्ताक्षर, बिंदु-नुक्ता वाले युग्म और हल की विधि

ब और व का अंतर: हिंदी की कई बोलियों में 'व' को 'ब' बोला जाता है, पर मानक हिंदी में दोनों से अलग-अलग शब्द बनते हैं। बदन (शरीर) और वदन (मुख): 'चंद्रवदन' का अर्थ है चंद्रमा जैसे मुख वाला। बात (कथन) और वात (वायु): आयुर्वेद में वात, पित्त और कफ तीन दोष माने जाते हैं। बहन (भगिनी) और वहन (ढोना, उठाना): 'यात्रा का व्यय संस्था वहन करेगी'। बास (गंध, प्रायः दुर्गंध) और वास (निवास): 'राम को 14 वर्ष का वनवास मिला'। बाद (पश्चात) और वाद (बहस; सिद्धांत; मुकदमा): 'वाद-विवाद प्रतियोगिता', 'गांधीवाद'। बार (दफ़ा) और वार (आक्रमण; सप्ताह का दिन): 'शत्रु पर वार किया', 'सोमवार'। इन युग्मों में

'व' वाला शब्द प्रायः तत्सम है, जबकि 'ब' वाला शब्द तद्भव या विदेशी है: बात 'वार्ता' का और बहन 'भगिनी' का तद्भव है, जबकि बदन और बाद अरबी-फ़ारसी से आए हैं।

आधा अक्षर या संयुक्ताक्षर जुड़ने से: एक आधा वर्ण जुड़ते ही शब्द दूसरा हो जाता है। अन्न (अनाज) और अन्य (दूसरा)। लक्ष (लाख) और लक्ष्य (उद्देश्य, निशाना): 'अर्जुन का लक्ष्य चिड़िया की आँख थी'। आसन (बैठने का स्थान; योग की मुद्रा) और आसन्न (निकट आया हुआ): 'आसन्न संकट'। मद (नशा, घमंड) और मद्य (शराब): 'धन का मद', पर 'मद्य-निषेध'। पथ (रास्ता) और पथ्य (रोगी के लिए हितकर भोजन): 'वैद्य ने पथ्य में खिचड़ी बताई'। भीति (डर) और भित्ति (दीवार): 'अजंता के भित्ति-चित्र'। वसन (वस्त्र) और व्यसन (बुरी लत): 'जुआ एक व्यसन है'। विजन (सुनसान) और व्यजन (पंखा)। निधन (मृत्यु) और निर्धन (गरीब)। सर्ग (महाकाव्य का अध्याय) और स्वर्ग (देवलोक): 'कामायनी में 15 सर्ग हैं'। दीप (दीपक) और द्वीप (टापू); द्विप (हाथी) भी इसी का साथी है। इतर (दूसरा, भिन्न) और इत्र (सुगंध): 'पाठ्येतर गतिविधियाँ'। उपयुक्त (उचित) और उपर्युक्त (ऊपर कहा गया): 'उपर्युक्त नियम सब पर लागू होंगे'। ग्रंथ (पुस्तक) और ग्रंथि (गाँठ; शरीर की ग्रंथि) में अंतर अंत की 'इ' की मात्रा का है।

एक व्यंजन बदलने से: कुछ युग्मों में केवल एक व्यंजन बदलता है। अंक (गोद; संख्या) और अंग (शरीर का भाग): 'माँ ने शिशु को अंक में भर लिया'। मेघ (बादल) और मेध (यज्ञ): 'अश्वमेध यज्ञ'। दाम (मूल्य) और धाम (घर; तीर्थ): 'चार धाम की यात्रा'। उद्यत (तैयार) और उद्धत (उद्दंड, अक्खड़): 'वह सहायता के लिए उद्यत है', पर 'उसका उद्धत व्यवहार'। नीर (जल) और नीड़ (घोंसला)। पाणि (हाथ) और पानी (जल): 'पाणिग्रहण' का अर्थ विवाह है। कृपण (कंजूस) और कृपाण (तलवार) भी याद रखिए, यद्यपि इनमें व्यंजन नहीं, अ-आ का अंतर है। अभिराम (सुंदर) और अविराम (लगातार): 'अविराम वर्षा'। आभरण (गहना) और आमरण (मृत्यु तक): 'आमरण अनशन'। प्रणाम (नमस्कार) और प्रमाण (सबूत) में, तथा परिणाम (नतीजा) और परिमाण (मात्रा) में, 'ण' और 'म' ने आपस में स्थान बदल लिया है।

जलज-जलद जैसे शब्द-परिवार: इन्हें अलग से याद रखिए, क्योंकि परीक्षक इनके अर्थ उलटकर देते हैं। शब्द के अंत में 'ज' का अर्थ है 'जन्मा हुआ' और 'द' का अर्थ है 'देने वाला'। इसलिए जल से जन्मा जलज, नीरज, अंबुज और वारिज कमल है, और जल देने वाला जलद, नीरद, अंबुद और वारिद बादल है। इसी नियम से पंकज (कीचड़ में जन्मा) कमल है, अंडज अंडे से जन्मा प्राणी है और पयोद (जल देने वाला) बादल है। 'जलज-बादल' या 'नीरद-कमल' जैसा जोड़ा दिखे तो वही गलत विकल्प है।

अनुस्वार, चंद्रबिंदु और नुक्ता: केवल एक बिंदु से भी अर्थ बदल जाता है। हंस (एक पक्षी) और हँस (हँसना क्रिया): 'मानसरोवर के हंस', पर 'वह हँस पड़ा'। मास (महीना) और मांस (गोश्त)। गोद (अंक) और गोंद (चिपकाने का पदार्थ)। पूछ (प्रश्न करना) और पूँछ (दुम)। कहा (कहना का भूतकाल) और कहाँ (किस स्थान पर)। अरबी-फ़ारसी से आए शब्दों में नुक्ता भी अर्थ बदलता है; केंद्रीय हिंदी निदेशालय के वर्तनी-नियम कहते हैं कि हिंदी में घुल-मिल चुके शब्दों में नुक्ता अनिवा नहीं, पर जहाँ उच्चारण या अर्थ का भेद दिखाना हो वहाँ लगाया जाए। राज (शासन) और राज़ (रहस्य); जरा (बुढ़ापा) और ज़रा (थोड़ा); सजा (सजाया हुआ) और सज़ा (दंड); फन (साँप का फन) और फ़न (कला, हुनर); खाना (भोजन) और ख़ाना (घर, खंड, जैसे डाकख़ाना)।

जहाँ पुस्तकें भिन्न हैं: कुछ युग्मों के अर्थ अलग-अलग व्याकरण-पुस्तकों में थोड़े भिन्न मिलते हैं। कोश और कोष: कई पुस्तकें कोश को शब्दकोश और कोष को खज़ाना बताती हैं, पर संस्कृत में दोनों रूप दोनों अर्थों में मिलते हैं; व्यवहार में 'शब्दकोश', 'राजकोष' और 'कोषाध्यक्ष' रूप प्रचलित हैं। तरणि को कुछ पुस्तकें केवल सूर्य बताती हैं और कुछ सूर्य तथा नाव दोनों, पर तरणी (नाव) और तरुणी (युवती) पर सब एकमत हैं। अलि का अर्थ भौंरा है, पर सखी के अर्थ में कोई पुस्तक 'अली' लिखती है और कोई 'आली'। ऐसे युग्मों पर प्रश्न आए तो वह विकल्प चुनिए जिस पर सब पुस्तकें सहमत हैं।

हल करने की विधि: पहला चरण है पूरा वाक्य पढ़कर प्रसंग पहचानना: नदी, तट या जल की बात हो तो कूल, वंश या परिवार की बात हो तो कुल। दूसरा चरण है रिक्त स्थान के आसपास के व्याकरण-संकेत देखना: 'भीम बहुत ..... थे' में गुण बताने वाला विशेषण चाहिए, 'प्राणों की .....' में स्त्रीलिंग संज्ञा। तीसरा चरण है शब्द को तोड़कर अर्थ निकालना: आ + मरण = मरने तक, नीर + द = जल देने वाला, निर् + धन = धनहीन। चौथा चरण है परिचित यौगिक शब्द से जाँचना: अश्वमेध (मेध = यज्ञ), भित्ति-चित्र (भित्ति = दीवार), वनवास (वास = निवास), पाणिग्रहण (पाणि = हाथ), मद्य-निषेध (मद्य = शराब)। अंत में चुना हुआ शब्द वाक्य में रखकर पढ़िए। उदाहरण: 'धूप में मज़दूर के माथे पर ..... की बूँदें थीं' (श्वेत, स्वेद); प्रसंग पसीने का है, इसलिए स्वेद। 'अनशनकारी ने ..... अनशन की घोषणा की' (आभरण, आमरण); उत्तर आमरण। 'नौकरी के लिए ..... व्यक्ति चुना जाएगा' (उपयुक्त, उपर्युक्त); उत्तर उपयुक्त। 'कौन-सा युग्म सही नहीं है' वाले प्रश्न में हर युग्म के दोनों अर्थ अलग-अलग जाँचिए, क्योंकि गलत विकल्प में प्रायः केवल अर्थों का क्रम उलटा होता है।

उदाहरण

- बदन = शरीर; वदन = मुख (चंद्रवदन); बात = कथन; वात = वायु; बहन = भगिनी; वहन = ढोना; बास = गंध; वास = निवास (वनवास)।
- बाद = पश्चात; वाद = बहस, सिद्धांत (वाद-विवाद, गांधीवाद); बार = दफ़ा; वार = आक्रमण, दिन (सोमवार)।
- अन्न = अनाज; अन्य = दूसरा; लक्ष = लाख; लक्ष्य = उद्देश्य; आसन = बैठने का स्थान; आसन्न = निकट आया हुआ।
- भीति = डर; भित्ति = दीवार (भित्ति-चित्र); वसन = वस्त्र; व्यसन = बुरी लत; विजन = सुनसान; व्यजन = पंखा; निधन = मृत्यु; निर्धन = गरीब।
- उपयुक्त = उचित; उपर्युक्त = ऊपर कहा गया: '..... गद्यांश का सबसे उचित शीर्षक चुनिए' → उपर्युक्त (ऊपर दिया गया); 'नौकरी के लिए ..... व्यक्ति चुना जाएगा' → उपयुक्त।
- शब्द के अंत में ज = जन्मा, द = देने वाला: जलज, नीरज, अंबुज, वारिज, पंकज = कमल; जलद, नीरद, अंबुद, वारिद, पयोद = बादल।
- मेघ = बादल; मेध = यज्ञ (अश्वमेध); दाम = मूल्य; धाम = तीर्थ; उद्यत = तैयार; उद्धत = उद्दंड; कृपण = कंजूस; कृपाण = तलवार।
- आभरण = गहना; आमरण = मृत्यु तक (आमरण अनशन); अभिराम = सुंदर; अविराम = लगातार; प्रणाम = नमस्कार; प्रमाण = सबूत।
- हंस = पक्षी, हँस = हँसना; गोद = अंक, गोंद = चिपकाने का पदार्थ; पूछ = प्रश्न करना, पूँछ = दुम; राज = शासन, राज़ = रहस्य; जरा = बुढ़ापा, ज़रा = थोड़ा।
- 'धूप में मज़दूर के माथे पर ..... की बूँदें थीं' (श्वेत / स्वेद) → स्वेद (पसीना); 'धन का मद' में मद = घमंड, 'मद्य-निषेध' में मद्य = शराब।

त्वरित दोहराव: ब-व: बदन-वदन, बात-वात, बहन-वहन, बास-वास, बाद-वाद, बार-वार; संयुक्ताक्षर: अन्न-अन्य, लक्ष-लक्ष्य, आसन-आसन्न, मद-मद्य, पथ-पथ्य, भीति-भित्ति, वसन-व्यसन, विजन-व्यजन, निधन-निर्धन, सर्ग-स्वर्ग, दीप-द्वीप, इतर-इत्र, उपयुक्त-उपर्युक्त; व्यंजन: अंक-अंग, मेघ-मेध, दाम-धाम, उद्यत-उद्धत, पाणि-पानी, आभरण-आमरण, अभिराम-अविराम; अ-आ: कृपण-कृपाण; -ज कमल, -द बादल; बिंदु-नुक्ता: हंस-हँस, मास-मांस, गोद-गोंद, राज-राज़, जरा-ज़रा; विधि: प्रसंग, व्याकरण-संकेत, शब्द-विग्रह, परिचित शब्द।

समानार्थी लगने वाले शब्दों में सूक्ष्म अंतर: दुख-शोक-खेद, प्रेम-स्नेह-श्रद्धा, सलाह-परामर्श

पर्यायवाची पूरी तरह समान नहीं होते: किसी भाषा में दो शब्द हर प्रसंग में एक-दूसरे की जगह शायद ही ले पाते हैं। दुख, शोक और खेद तीनों पीड़ा बताते हैं, पर 'मुझे खेद है कि मैं समय पर नहीं पहुँच सका' में 'शोक' रखना हास्यास्पद होगा। ऐसे शब्दों का अंतर पाँच कसौटियों पर परखा जाता है: भाव किसके प्रति है (बड़ों, छोटों या बराबर वालों के), कष्ट शरीर का है या मन का, भाव कितना गहरा या तीव्र है, बात औपचारिक है या सामान्य, और भाव उचित है या अनुचित। परीक्षा में ऐसे प्रश्न दो रूपों में आते हैं: रिक्त स्थान के चारों विकल्प प्रायः एक ही पर्याय-समूह से होते हैं, या दो शब्द देकर पूछा जाता है कि उनमें क्या अंतर है।

दुख, शोक, खेद, क्षोभ और विषाद: दुख (तत्सम रूप दुःख) सबसे सामान्य शब्द है, किसी भी प्रतिकूल स्थिति में मन की पीड़ा: 'परीक्षा में कम अंक आने का दुख'। शोक किसी प्रियजन की मृत्यु या बड़ी हानि पर होने वाला गहरा दुख है: 'शोक-सभा', 'शोक-संदेश', 'महापुरुष के निधन पर देश ने शोक मनाया'। खेद अपनी भूल या किसी अनचाही बात पर होने वाला हल्का दुख है, जो औपचारिक भाषा और पत्रों में आता है: 'असुविधा के लिए खेद है'। क्षोभ वह दुख है जिसमें विफलता, अपमान या अन्याय के कारण क्रोध भी मिला हो: 'अन्यायपूर्ण निर्णय से जनता में क्षोभ फैल गया'। विषाद अत्यधिक दुख से उपजी निराशा है, जिसमें व्यक्ति कुछ करने का निर्णय नहीं कर पाता; गीता के पहले अध्याय का नाम 'अर्जुनविषादयोग' इसी अर्थ में है। इसी से जुड़ा युग्म आधि-व्याधि है: आधि मानसिक कष्ट (चिंता) है और व्याधि शारीरिक रोग: 'बुढ़ापे में आधि और व्याधि दोनों घेर लेती हैं'।

प्रेम, स्नेह, श्रद्धा, भक्ति और दया के रूप: प्रेम सबसे व्यापक शब्द है, किसी के प्रति भी लगाव (देश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम)। स्नेह छोटों के प्रति होने वाला प्रेम है: 'बड़े भाई का छोटी बहन पर स्नेह'। श्रद्धा बड़ों, गुरुजनों या महापुरुषों के प्रति आदर से मिला प्रेम है: 'गुरु के प्रति श्रद्धा'। भक्ति ईश्वर या इष्टदेव के प्रति अनन्य प्रेम है: 'मीरा की कृष्ण-भक्ति'। वात्सल्य माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम है; सूरदास का बाल-वर्णन वात्सल्य रस का श्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। प्रणय पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम है, और अनुराग किसी व्यक्ति, वस्तु या विषय से गहरा लगाव: 'संगीत के प्रति अनुराग'। कुछ पुस्तकें स्नेह को बराबर वालों (मित्रों) के लिए भी स्वीकार करती हैं, पर परीक्षा का मानक उत्तर 'छोटों के प्रति स्नेह, बड़ों के प्रति श्रद्धा' ही है। दया, करुणा, कृपा और सहानुभूति भी अलग हैं: दया दूसरे का दुख देखकर उसे दूर करने की इच्छा है; करुणा दूसरे के दुख से मन का द्रवित हो जाना है, जो दया से गहरा भाव है; कृपा बड़ों का छोटों पर अनुग्रह है ('ईश्वर की कृपा'); और सहानुभूति दूसरे के दुख को अपना-सा अनुभव करना है।

सलाह, परामर्श, मंत्रणा और आज्ञा-आदेश: सलाह रोज़ की बातचीत का सामान्य शब्द है: 'मित्र की सलाह'। परामर्श किसी विशेषज्ञ या अधिकारी से विधिवत ली गई राय है, इसलिए 'चिकित्सक का परामर्श', 'कानूनी परामर्श' और 'परामर्शदाता' जैसे औपचारिक प्रयोग बनते हैं। मंत्रणा किसी गंभीर विषय पर गुप्त विचार-विमर्श है: 'युद्ध से पहले राजा ने मंत्रियों से मंत्रणा की'। सुझाव विचार के लिए रखी गई बात है, जिसे मानना या न मानना सुनने वाले पर निर्भर है: 'सुझाव-पेटी'। इसी तरह आज्ञा बड़ों द्वारा छोटों को दी जाती है ('पिता की आज्ञा'), आदेश अधिकारी या शासन का औपचारिक और बाध्यकारी निर्देश है ('जिलाधिकारी का आदेश'), अनुमति किसी काम की स्वीकृति है जो प्रायः छोटा बड़े से माँगता है ('अवकाश की अनुमति'), और निर्देश काम करने के ढंग का मार्गदर्शन है ('परीक्षा-भवन के निर्देश')। प्रार्थना बड़ों या ईश्वर से की जाती है, अनुरोध बराबर वालों से, आग्रह ज़ोर देकर किया गया अनुरोध है, और निवेदन विनम्रता से अपनी बात रखना है: 'सविनय निवेदन है'।

अस्त्र-शस्त्र, गर्व-अहंकार और ईर्ष्या-द्वेष: अस्त्र वह हथियार है जो फेंककर या छोड़कर चलाया जाए (बाण, ब्रह्मास्त्र), और शस्त्र वह जो हाथ में पकड़कर चलाया जाए (तलवार, गदा); 'अस्त्र-शस्त्र' एक साथ बोलने पर सब हथियार आ जाते हैं। गर्व उचित बात पर होने वाला गौरव का भाव है: 'हमें अपनी सेना पर गर्व है'। स्वाभिमान अपने सम्मान की रक्षा का उचित भाव है; अहंकार या घमंड स्वयं को दूसरों से बड़ा मानने का अनुचित भाव है; और दंभ झूठा दिखावा या पाखंड है। 'अभिमान' पर पुस्तकें बँटी हुई हैं: कुछ इसे घमंड का पर्याय मानती हैं, तो कुछ उचित गौरव के लिए भी स्वीकार करती हैं ('मुझे अपने देश पर अभिमान है'); इसलिए जहाँ 'गर्व' विकल्प में हो, वहाँ उचित भाव के लिए 'गर्व' ही सबसे सुरक्षित उत्तर है। ईर्ष्या दूसरे की उन्नति देखकर होने वाली जलन है, द्वेष किसी के प्रति शत्रुता का स्थायी भाव, और स्पर्धा दूसरों से आगे निकलने की स्वस्थ होड़: 'विद्यार्थियों में स्पर्धा अच्छी है, ईर्ष्या नहीं'।

शिष्टाचार और मूल्य के शब्द: बधाई किसी हो चुकी सफलता या शुभ अवसर पर दी जाती है ('परीक्षा में सफल होने पर बधाई'), जबकि शुभकामना आने वाले काम की सफलता के लिए दी जाती है ('परीक्षा के लिए शुभकामनाएँ'); अभिनंदन किसी का सम्मानपूर्वक स्वागत है ('अभिनंदन-पत्र')। धन्यवाद सामान्य शिष्टाचार का शब्द है, आभार किसी उपकार को औपचारिक रूप से स्वीकारना है ('मैं आपका आभारी हूँ'), और कृतज्ञता उपकार को मन से मानने का भाव है, जिसका विलोम कृतघ्नता है। अमूल्य वह है जिसका मूल्य आँका ही न जा सके ('अमूल्य समय', 'अमूल्य जीवन'), जबकि बहुमूल्य वह है जिसका मूल्य बहुत अधिक हो ('बहुमूल्य हीरा')। सेवा सामान्य शब्द है, पर शुश्रूषा विशेष रूप से रोगी की सेवा है। विद्वान वह है जिसके पास विद्या हो, बुद्धिमान वह जो समझदारी से काम ले; अनपढ़ व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है।

सही शब्द कब चुनें: प्रश्न हल करते समय पहले देखिए कि वाक्य में भाव किसके प्रति है और कौन किससे कह रहा है; फिर देखिए कि भाव कितना गहरा है और भाषा औपचारिक है या सामान्य। 'पिता की मृत्यु पर पूरा परिवार ..... में डूब गया' (खेद, शोक, क्षोभ, ईर्ष्या): मृत्यु पर गहरा दुख है, इसलिए शोक। 'रेलगाड़ी के विलंब से हुई असुविधा के लिए हमें ..... है' (शोक, खेद, विषाद, क्षोभ): औपचारिक सूचना और हल्का दुख है, इसलिए खेद। 'शिष्य के मन में गुरु के प्रति अपार ..... थी' (स्नेह, श्रद्धा, वात्सल्य, ईर्ष्या): भाव बड़ों के प्रति है, इसलिए श्रद्धा। 'घायल पक्षी को देखकर बालक का मन ..... से भर गया' (कृपा, करुणा, अनुमति, गर्व): दूसरे के दुख से मन का द्रवित होना करुणा है। परीक्षक कभी-कभी दो सही लगने वाले विकल्प रखते हैं; तब वह शब्द चुनिए जो प्रसंग को सबसे सटीक बताए, केवल 'चल जाने वाला' शब्द नहीं।

उदाहरण

- दुख = सामान्य पीड़ा; शोक = प्रियजन की मृत्यु पर; खेद = भूल या असुविधा पर ('असुविधा के लिए खेद है'); क्षोभ = अपमान या अन्याय पर दुख और क्रोध; विषाद = घोर निराशा।
- आधि = मानसिक कष्ट; व्याधि = शारीरिक रोग; अस्त्र = फेंककर चलाया जाने वाला हथियार (बाण); शस्त्र = हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला (तलवार)।
- स्नेह छोटों के प्रति, श्रद्धा बड़ों के प्रति, भक्ति ईश्वर के प्रति, वात्सल्य संतान के प्रति, प्रणय पति-पत्नी में, अनुराग किसी विषय या वस्तु से।
- दया = दुख दूर करने की इच्छा; करुणा = दूसरे के दुख से द्रवित होना; कृपा = बड़ों का अनुग्रह; सहानुभूति = दूसरे का दुख अपना-सा अनुभव करना।
- सलाह = सामान्य राय; परामर्श = विशेषज्ञ की विधिवत राय (चिकित्सक का परामर्श); मंत्रणा = गुप्त, गंभीर विचार-विमर्श; सुझाव = विचार के लिए रखी गई बात।
- आज्ञा = बड़ों की, छोटों को; आदेश = अधिकारी का, बाध्यकारी; अनुमति = स्वीकृति; प्रार्थना बड़ों या ईश्वर से, अनुरोध बराबर वालों से, आग्रह ज़ोर देकर।
- गर्व = उचित गौरव; स्वाभिमान = अपने सम्मान की रक्षा; अहंकार, घमंड = अनुचित; दंभ = पाखंड; ईर्ष्या = जलन; द्वेष = शत्रुता; स्पर्धा = स्वस्थ होड़।
- बधाई = सफलता के बाद; शुभकामना = आने वाले काम के लिए: 'परीक्षा के लिए .....' → शुभकामनाएँ; 'अच्छे परिणाम पर .....' → बधाई।
- अमूल्य = जिसका मूल्य आँका न जा सके (अमूल्य समय); बहुमूल्य = बहुत मूल्य वाला (बहुमूल्य हीरा); शुश्रूषा = रोगी की सेवा।
- 'पिता की मृत्यु पर परिवार ..... में डूब गया' (खेद, शोक, क्षोभ) → शोक; 'शिष्य के मन में गुरु के प्रति अपार ..... थी' (स्नेह, श्रद्धा, वात्सल्य) → श्रद्धा; 'युद्ध से पहले राजा ने मंत्रियों से गुप्त ..... की' (सुझाव, मंत्रणा, आज्ञा) → मंत्रणा।

> **त्वरित दोहराव:** पर्यायवाची पूर्ण समान नहीं; कसौटी: किसके प्रति, तन या मन, तीव्रता, औपचारिकता, उचित-अनुचित; दुख सामान्य, शोक मृत्यु पर, खेद भूल पर, क्षोभ अपमान पर, विषाद निराशा; आधि मन, व्याधि तन; स्नेह छोटों, श्रद्धा बड़ों, भक्ति ईश्वर, वात्सल्य संतान के प्रति; करुणा दया से गहरी, कृपा बड़ों की; सलाह सामान्य, परामर्श विशेषज्ञ का, मंत्रणा गुप्त; आज्ञा बड़ों की, आदेश अधिकारी का; अस्त्र फेंककर, शस्त्र हाथ में; गर्व उचित, अहंकार अनुचित; बधाई बाद में, शुभकामना पहले; अमूल्य-बहुमूल्य।

तत्सम-तद्भव शब्द: पहचान के नियम, प्रमुख युग्म और प्रश्नों के जाल

तत्सम और तद्भव का अर्थ: उत्पत्ति (स्रोत) के आधार पर हिंदी के शब्द तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी और संकर माने जाते हैं। 'तत्' का अर्थ है 'उस' (यहाँ संस्कृत), 'सम' का अर्थ है 'समान' और 'भव' का अर्थ है 'उत्पन्न'। इसलिए तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत से बिना बदले हिंदी में आ गए (अग्नि, कर्म, दुग्ध, हस्त), और तद्भव वे जो संस्कृत से चलकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के रास्ते बदलते हुए हिंदी तक पहुँचे (आग, काम, दूध, हाथ)। तद्भव शब्द बोलचाल के हैं, जबकि तत्सम शब्द शिक्षा, शास्त्र और औपचारिक लेखन में अधिक आते हैं। कुछ व्याकरण-ग्रंथ इन दोनों के बीच एक तीसरा वर्ग अर्धतत्सम भी मानते हैं: वे शब्द जो थोड़े बदले हैं पर तद्भव जितने नहीं, जैसे अग्नि से अगिन, कर्म से करम, जन्म से जनम, कृपा से किरपा। अधिकतर परीक्षाएँ केवल तत्सम-तद्भव पूछती हैं; यदि विकल्प में 'अगिन' और 'आग' दोनों हों, तो तद्भव के रूप में 'आग' चुनिए।

पहचान के नियम (व्यंजनों का बदलना): तत्सम से तद्भव बनते समय कुछ व्यंजन नियमित रूप से बदलते हैं। 'क्ष' प्रायः 'ख' या 'छ' हो जाता है: क्षेत्र-खेत, क्षीर-खीर, अक्षि-आँख, इक्षु-ईख, भिक्षा-भीख, शिक्षा-सीख, लक्ष-लाख, कुक्षि-कोख, पक्ष-पंख, क्षण-छिन। 'श' और 'ष' प्रायः 'स' हो जाते हैं: शत-सौ, शाक-साग, शय्या-सेज, श्वसुर-ससुर, शृगाल-सियार, वर्ष-बरस, मनुष्य-मानुस। 'व' प्रायः 'ब' हो जाता है: वन-बन, वधू-बहू, वानर-बंदर, विवाह-ब्याह, वट-बड़, वाणी-बानी, वायु-बयार। 'य' प्रायः 'ज' हो जाता है: यव-जौ, यमुना-जमुना, यश-जस, योगी-जोगी, यजमान-जजमान, यज्ञोपवीत-जनेऊ। 'ण' प्रायः 'न' हो जाता है: कर्ण-कान, स्वर्ण-सोना, तृण-तिनका। इसी कारण 'ऋ', 'ष', 'ज्ञ', 'क्ष' और विसर्ग वाले शब्द प्रायः तत्सम होते हैं (कृपा, विष, यज्ञ, क्षमा, दुःख), क्योंकि तद्भव बनते समय ये ध्वनियाँ बदल जाती हैं।

पहचान के नियम (ऋ, संयुक्ताक्षर और अनुनासिकता): तत्सम शब्द में 'ऋ' की मात्रा हो तो तद्भव में वह 'इ', 'ई', 'अ', 'आ' या 'ऊ' जैसे किसी सामान्य स्वर में बदल जाती है: घृत-घी, गृह-घर, पृष्ठ-पीठ, नृत्य-नाच, कृषक-किसान, शृंगार-सिंगार, वृश्चिक-बिच्छू, वृद्ध-बूढ़ा। रेफ (र्) और संयुक्त व्यंजन तद्भव में सरल हो जाते हैं और उनसे पहले का स्वर प्रायः दीर्घ हो जाता है: कर्म-काम, हस्त-हाथ, सप्त-सात, अष्ट-आठ, दुग्ध-दूध, सर्प-साँप, उष्ट्र-ऊँट, काष्ठ-काठ, अर्ध-आधा, मस्तक-माथा। तद्भव में नाक से बोला जाने वाला स्वर (चंद्रबिंदु) अक्सर जुड़ जाता है: दंत-दाँत, चंद्र-चाँद, ग्राम-गाँव, अश्रु-आँसू, कूप-कुआँ, अंगुष्ठ-अँगूठा। ध्यान रहे कि ये नियम प्रवृत्तियाँ हैं, गणित के सूत्र नहीं; इसलिए अंतिम निर्णय प्रचलित युग्म याद करके ही करें।

सबसे अधिक पूछे जाने वाले युग्म: शरीर से जुड़े युग्म हैं मुख-मुँह, कर्ण-कान, दंत-दाँत, जिह्वा-जीभ, ओष्ठ-होंठ, नासिका-नाक, अक्षि-आँख, हस्त-हाथ, अंगुली-उँगली, पृष्ठ-पीठ, मस्तक-माथा। प्रकृति और खेती से: अग्नि-आग, सूर्य-सूरज, चंद्र-चाँद, रात्रि-रात, संध्या-साँझ, वर्षा-बरखा, प्रस्तर-पत्थर, मृत्तिका-मिट्टी, गोधूम-गेहूँ, सर्षप-सरसों, आम्र-आम, हरिद्रा-हल्दी। पशु-पक्षी: हस्ती-हाथी, उष्ट्र-ऊँट, घोटक-घोड़ा, गर्दभ-गधा, मयूर-मोर, काक-कौआ, कोकिल-कोयल, उलूक-उल्लू, मक्षिका-मक्खी। घर की वस्तुएँ: दुग्ध-दूध, दधि-दही, घृत-घी, तैल-तेल, दीपक-दीया, सूची-सुई, सूत्र-सूत, घट-घड़ा, पर्यंक-पलंग, कर्पूर-कपूर, चर्म-चमड़ा, लौह-लोहा, ताम्र-ताँबा। संबंध और अन्य: भ्राता-भाई, भगिनी-बहन, पुत्र-पूत, पौत्र-पोता, स्वप्न-सपना, आश्चर्य-अचरज, उज्ज्वल-उजला, शुष्क-सूखा, बधिर-बहरा, वाष्प-भाप, अद्य-आज। महीनों के नाम भी पूछे जाते हैं: श्रावण-सावन, फाल्गुन-फागुन, ज्येष्ठ-जेठ, भाद्रपद-भादों, कार्तिक-कातिक, पौष-पूस।

वाक्य में तत्सम या तद्भव: रिक्त स्थान के प्रश्नों में यह चुनाव भाषा के स्तर से तय होता है। संस्कृत की संधि, संस्कृत प्रत्यय और संस्कृत ढंग के समास तत्सम शब्द के साथ ही बनते हैं: अग्निशमन, दुग्धशाला, हस्तलिखित, कर्मयोगी, ग्रामीण, दंत-चिकित्सक; 'आगशमन' या 'गाँवीण' जैसे रूप नहीं बनते (तद्भव शब्दों के अपने समास अलग होते हैं, जैसे पनघट, हथकड़ी, घुड़दौड़)। इसके उलट मुहावरे और लोकोक्तियाँ प्रायः तद्भव शब्दों में चलती हैं ('अग्नि-परीक्षा देना' जैसे कुछ अपवाद हैं): 'आग बबूला होना', 'हाथ पीले करना', 'दूध का दूध, पानी का पानी', 'घी के दीये जलाना', 'दाँत खट्टे करना'; इनमें 'अग्नि बबूला होना' या 'हस्त पीले करना' गलत है। औपचारिक वाक्य ('ग्राम पंचायत ने प्रस्ताव पारित किया') में तत्सम और बोलचाल के वाक्य ('वह गाँव गया है') में तद्भव स्वाभाविक लगता है।

तत्सम-तद्भव के प्रश्नों के जाल: पहला जाल पर्यायवाची को तद्भव मान लेना है। तद्भव वही है जो उसी तत्सम से बना हो: पानी जल का नहीं, 'पानीय' का तद्भव है; घोड़ा अश्व का नहीं, 'घोटक' का; आँख नेत्र का नहीं, 'अक्षि' का; हाथ कर का नहीं, 'हस्त' का; सूरज रवि का नहीं, 'सूर्य' का। दूसरा जाल विदेशी शब्द को तद्भव मान लेना है: मौत अरबी शब्द है, इसलिए 'मृत्यु-मौत' तत्सम-तद्भव युग्म नहीं है; इसी तरह बारिश और गर्दन फ़ारसी से आए हैं, ये वर्षा और ग्रीवा के तद्भव नहीं हैं। गरम भी उष्ण का तद्भव नहीं है; कोश इसे प्रायः फ़ारसी 'गर्म' से जोड़ते हैं (कुछ संस्कृत 'घर्म' से भी), जबकि घर्म का प्रचलित तद्भव 'घाम' है। तीसरा जाल यह मान लेना है कि छोटा या सरल शब्द तद्भव ही होगा: जल, कमल, फल, वन, नदी, पिता, माता, गुरु, कवि और पुस्तक सब तत्सम हैं। चौथा जाल एक तत्सम के अनेक तद्भव हैं: पक्ष से पंख और पाख (पखवाड़ा), पत्र से पत्ता और पाती, स्थान से थान और थाना, चक्र से चाक और चक्का; विकल्प में इनमें से कोई भी आ सकता है। पाँचवाँ जाल दिशा उलटने का है: प्रश्न 'आग' का तत्सम पूछे तो उत्तर 'अग्नि' होगा, 'अगिन' नहीं। कुछ युग्मों पर पुस्तकें भिन्न हैं: कृष्ण का तद्भव कोई पुस्तक कान्ह (कान्हा) देती है और कोई किसन; जो पुस्तकें अर्धतत्सम वर्ग मानती हैं, वे किसन को अर्धतत्सम गिनती हैं। इसी तरह फूल का तत्सम अधिकतर परीक्षा-पुस्तकें पुष्प देती हैं, पर व्युत्पत्ति-कोश फूल को फुल्ल (खिला हुआ) से जोड़ते हैं और पुष्प का तद्भव पुहुप मानते हैं।

उदाहरण

- तत्सम = संस्कृत से बिना बदले आए शब्द (अग्नि, कर्म, दुग्ध, हस्त); तद्भव = संस्कृत से बदलकर आए शब्द (आग, काम, दूध, हाथ)।
- क्ष से ख या छ: क्षेत्र-खेत, क्षीर-खीर, अक्षि-आँख, इक्षु-ईख, भिक्षा-भीख, शिक्षा-सीख, लक्ष-लाख, क्षण-छिन।
- श, ष से स: शत-सौ, शाक-साग, शय्या-सेज, श्वसुर-ससुर, वर्ष-बरस; व से ब: वन-बन, वधू-बहू, विवाह-ब्याह, वानर-बंदर।
- य से ज: यव-जौ, यमुना-जमुना, यश-जस, योगी-जोगी, यज्ञोपवीत-जनेऊ; ऋ बदलती है: घृत-घी, गृह-घर, नृत्य-नाच, पृष्ठ-पीठ।
- संयुक्ताक्षर सरल, स्वर दीर्घ: कर्म-काम, हस्त-हाथ, सप्त-सात, अष्ट-आठ, सर्प-साँप, उष्ट्र-ऊँट; चंद्रबिंदु जुड़ता है: दंत-दाँत, ग्राम-गाँव, अश्रु-आँसू।
- पशु-पक्षी: हस्ती-हाथी, घोटक-घोड़ा, गर्दभ-गधा, मयूर-मोर, काक-कौआ, कोकिल-कोयल, उलूक-उल्लू, शृगाल-सियार, मक्षिका-मक्खी।
- पर्यायवाची तद्भव नहीं: पानी 'पानीय' से, घोड़ा 'घोटक' से, आँख 'अक्षि' से बना; जल-पानी, अश्व-घोड़ा, नेत्र-आँख तत्सम-तद्भव युग्म नहीं हैं।
- विदेशी शब्द तद्भव नहीं: मौत (अरबी), बारिश, गर्दन (फ़ारसी); इसलिए 'मृत्यु-मौत' और 'वर्षा-बारिश' गलत युग्म हैं; गरम भी उष्ण का तद्भव नहीं।
- जल, कमल, फल, वन, नदी, पिता, माता, गुरु, कवि, पुस्तक छोटे होकर भी तत्सम हैं; संस्कृत ढंग के समास तत्सम से बनते हैं (अग्निशमन, दुग्धशाला), मुहावरे प्रायः तद्भव में चलते हैं (आग बबूला होना)।
- महीने: श्रावण-सावन, फाल्गुन-फागुन, ज्येष्ठ-जेठ, भाद्रपद-भादों, कार्तिक-कातिक, पौष-पूस; और सूत्र-सूत, सूची-सुई, दीपक-दीया।

> **त्वरित दोहराव:** तत्सम = संस्कृत के समान, तद्भव = संस्कृत से उत्पन्न (पालि-प्राकृत-अपभ्रंश होकर); कुछ ग्रंथ अर्धतत्सम (अगिन, करम) भी मानते हैं; नियम: क्ष से ख/छ, श-ष से स, व से ब, य से ज, ण से न, ऋ बदलती, संयुक्ताक्षर सरल, स्वर दीर्घ, चंद्रबिंदु जुड़ता; प्रमुख: अग्नि-आग, कर्म-काम, दुग्ध-दूध, हस्त-हाथ, मुख-मुँह, क्षेत्र-खेत, घृत-घी, गृह-घर, उष्ट्र-ऊँट, हस्ती-हाथी; जाल: पर्याय तद्भव नहीं (जल-पानी), विदेशी तद्भव नहीं (मौत, बारिश), सरल शब्द भी तत्सम (जल, कमल)।

रिक्त स्थान भरने की विधि: अर्थ, लिंग-वचन-कारक, परसर्ग और मुहावरेदार प्रयोग

रिक्त स्थान भरने के चरण: इस प्रश्न में चार विकल्पों में से प्रायः दो-तीन किसी न किसी कसौटी पर गलत होते हैं, इसलिए सही उत्तर ढूँढ़ने से अधिक काम गलत विकल्प हटाने का है। पहला चरण: पूरा वाक्य, रिक्त स्थान के बाद वाला भाग भी, पढ़कर समझिए कि बात क्या है। दूसरा चरण: पहचानिए कि रिक्त स्थान पर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, परसर्ग या समुच्चयबोधक में से क्या चाहिए। तीसरा चरण: लिंग, वचन और कारक का मेल देखकर व्याकरण की दृष्टि से गलत विकल्प हटाइए। चौथा चरण: बचे विकल्पों में अर्थ, भाव और भाषा-स्तर देखकर सबसे सटीक शब्द चुनिए। पाँचवाँ चरण: चुना हुआ शब्द रखकर पूरा वाक्य फिर पढ़िए। कई अभ्यर्थी रिक्त स्थान के आगे-पीछे के दो शब्द पढ़कर ही उत्तर दे देते हैं, जबकि वाक्य का अंतिम भाग अक्सर निर्णायक संकेत देता है; जैसे '..... के कारण वह परीक्षा में नहीं बैठ सका' में 'के कारण' बताता है कि यहाँ संज्ञा चाहिए।

शब्द-भेद और शब्द-रूप का मेल: एक ही मूल से बने संज्ञा, विशेषण और क्रियाविशेषण अक्सर साथ-साथ विकल्प बनते हैं। 'वह एक ..... व्यक्ति है' (ईमानदार, ईमानदारी, ईमानदारी से) में 'व्यक्ति' से पहले विशेषण चाहिए, इसलिए ईमानदार। '..... सबसे अच्छी नीति है' में कर्ता के रूप में संज्ञा चाहिए, इसलिए ईमानदारी। 'उसने ..... काम किया' में क्रिया की विशेषता बतानी है, इसलिए 'ईमानदारी से'। इसी तरह 'अच्छा ..... ही सबसे बड़ा धन है' (स्वस्थ, स्वास्थ्य, स्वस्थता) में 'अच्छा' के बाद पुल्लिंग संज्ञा चाहिए: स्वस्थ विशेषण है और स्वस्थता स्त्रीलिंग होने से 'अच्छी' माँगती, इसलिए उत्तर स्वास्थ्य है। 'व्यायाम करने वाला व्यक्ति ..... रहता है' में विशेषण स्वस्थ आएगा। 'मैं आपका ..... हूँ' (आभार, आभारी) में आभारी, क्योंकि 'हूँ' से पहले व्यक्ति का गुण बताने वाला विशेषण चाहिए।

लिंग और वचन का मेल: क्रिया, विशेषण और का-के-की संज्ञा के लिंग-वचन के अनुसार बदलते हैं, इसलिए संज्ञा का लिंग जानना ज़रूरी है। मानक हिंदी में दही, पानी, घी, मोती, हाथी और व्यक्ति पुल्लिंग हैं: 'दही खट्टा है', 'वह एक अच्छा व्यक्ति है' ('अच्छी व्यक्ति' गलत; कुछ बोलियों में दही स्त्रीलिंग बोला जाता है, पर परीक्षा मानक हिंदी की होती है)। आत्मा, चाय, सरसों, जनता, आग और प्रतीक्षा स्त्रीलिंग हैं: 'जनता आ गई', 'मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ'; पर इसी अर्थ का 'इंतज़ार' पुल्लिंग है: 'मैं आपका इंतज़ार कर रहा हूँ'। प्राण, दर्शन (भेंट के अर्थ में), हस्ताक्षर और होश सदा बहुवचन में चलते हैं: 'उसके प्राण निकल गए', 'आपके दर्शन हुए', 'उसने हस्ताक्षर कर दिए'। आदरणीय व्यक्ति के लिए एक होने पर भी बहुवचन क्रिया आती है: 'पिताजी आ गए हैं'। 'ने' वाले वाक्य में सकर्मक क्रिया कर्ता के नहीं, कर्म के अनुसार चलती है: 'सीता ने आम खाया', 'राम ने रोटी खाई'; और कर्म के साथ 'को' लगा हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन रहती है: 'सीता ने बच्चों को बुलाया'।

कारक और परसर्ग का सही चुनाव: परसर्ग वाले रिक्त स्थान में क्रिया देखकर कारक पहचानिए। 'मुझे घर जाना है' सही है, 'मैं घर जाना है' या 'मैंने घर जाना है' नहीं। 'वह मुझसे दो वर्ष बड़ा है' में तुलना के लिए से; 'मैंने उससे रास्ता पूछा' में पूछना के साथ से ('उसको पूछा' गलत); 'पेड़ से पत्ते गिरते हैं' में अलग होने का भाव (अपादान); 'कलम से लिखो' में साधन (करण); 'रावण राम द्वारा मारा गया' में कर्मवाच्य का द्वारा; 'बच्चों के लिए मिठाई लाओ' में संप्रदान; 'मेज़ पर पुस्तक रखी है' और 'घड़े में पानी है' में अधिकरण; 'वह शाम को आएगा' में समय के साथ को। 'ने' सामान्यतः सकर्मक क्रिया के भूतकाल में ही आता है (खाया, खाया

है, खाया था; पर ‘खा रहा था’ में नहीं), इसलिए ‘वह हँसा’ और ‘वह आया’ सही हैं, ‘उसने हँसा’ गलत; और ‘लाना’ सकर्मक होते हुए भी ‘ने’ नहीं लेता: ‘वह फल लाया’ सही है, ‘उसने फल लाया’ गलत। मानक व्याकरण-ग्रंथ छींकना, खाँसना और थूकना जैसी कुछ अकर्मक क्रियाओं के साथ भी ‘ने’ का प्रयोग बताते हैं (‘उसने छींका’); यह अपवाद है, नियम नहीं।

मुहावरेदार प्रयोग और शब्द-संगति: कई रिक्त स्थान किसी मुहावरे का एक शब्द माँगते हैं, और मुहावरे का शब्द पर्यायवाची से भी नहीं बदला जा सकता। ‘चोर पुलिस को देखते ही नौ दो ..... हो गया’ में ग्यारह; ‘सैनिकों ने शत्रु के दाँत ..... कर दिए’ में खट्टे; ‘इकलौता बेटा माँ की आँखों का ..... है’ में तारा; ‘राम के लौटने पर अयोध्या में घी के ..... जलाए गए’ में दीये; ‘परीक्षा के लिए उसने ..... कस ली’ में कमर; ‘भूखे हाथी को दो केले देना ऊँट के मुँह में ..... है’ में जीरा। ‘आँखों का सितारा’ या ‘नौ दो बारह’ जैसा बदला रूप गलत है। संज्ञा और विशेषण की संगति भी देखी जाती है: मूसलाधार वर्षा, कट्टर शत्रु, घनिष्ठ मित्र, गहरी नींद, घना अंधकार; और संज्ञा-क्रिया की भी: शपथ लेना, भाषण देना, निर्णय लेना, आज्ञा का पालन करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना। ‘शपथ देना’ के बजाय दूसरे को शपथ ग्रहण कराने के लिए ‘शपथ दिलाना’ आता है।

भाषा का स्तर और जोड़ीदार अव्यय: एक ही अर्थ के शब्द अलग प्रसंग में अलग उपयुक्त होते हैं। ‘युद्ध में सैनिक ने देश के लिए ..... पाई’ में वीरगति; ‘प्रसिद्ध कवि का कल ..... हो गया’ में सम्मानसूचक निधन या देहावसान; सामान्य प्रसंग में मृत्यु। औपचारिक पत्र में ‘सविनय निवेदन है’ और ‘आपका आभारी रहूँगा’ जैसे वाक्यांश आते हैं। कई रिक्त स्थान जोड़ीदार समुच्चयबोधक का दूसरा भाग माँगते हैं: यद्यपि के साथ तथापि (या तो भी, फिर भी), जैसे के साथ वैसे, ज्यों ही के साथ त्यों ही, जब के साथ तब, यदि के साथ तो, और न के साथ न। ‘यद्यपि वह गरीब है, ... ईमानदार है’ (तथापि, इसलिए, अन्यथा) में तथापि; ‘ज्यों ही घंटी बजी, ... बच्चे दौड़ पड़े’ में त्यों ही। कारण बताने के लिए क्योंकि, परिणाम के लिए इसलिए और चेतावनी के लिए अन्यथा आता है: ‘परिश्रम करो, अन्यथा पछताओगे’।

मिश्रित अभ्यास और हल: ‘नदी के ..... पर बैठकर साधु ध्यान कर रहे थे’ (कुल, कूल, कुली, कूप): प्रसंग किनारे का है, उत्तर कूल। ‘मुझे ..... है कि मैं आपके समारोह में नहीं आ सका’ (शोक, खेद, क्षोभ, विषाद): औपचारिक प्रसंग और हल्का दुख, उत्तर खेद। ‘बच्चे ..... दूध पी लिया’ (ने, को, से, का): सकर्मक क्रिया का भूतकाल है, उत्तर ने। ‘उसने मुझ ..... सौ रुपये उधार लिए’ (को, से, पर, में): जिससे कुछ लिया जाए उसके साथ से, उत्तर से। ‘मंदिर में ..... बँट रहा था’ (प्रसाद, प्रासाद): भोग की बात है, उत्तर प्रसाद। ‘गुरु के प्रति शिष्य की ..... देखकर सब प्रभावित हुए’ (स्नेह, श्रद्धा, वात्सल्य, ईर्ष्या): भाव बड़ों के प्रति है, उत्तर श्रद्धा। ‘ज्यों ही बिजली गई, ... पूरा मोहल्ला अँधेरे में डूब गया’ (तब, त्यों ही, तो, वैसे): ज्यों ही का जोड़ा, उत्तर त्यों ही। ‘शेर को सामने देखकर उसके होश .....’ (उड़ गया, उड़ गई, उड़ गए): होश सदा बहुवचन में चलता है, इसलिए उत्तर ‘उड़ गए’।

उदाहरण

- चरण: पूरा वाक्य पढ़ें, शब्द-भेद पहचानें, लिंग-वचन-कारक से गलत विकल्प हटाएँ, अर्थ और भाषा-स्तर से सटीक शब्द चुनें, फिर वाक्य दोबारा पढ़ें।
- ‘वह एक ..... व्यक्ति है’ → ईमानदार (विशेषण); ‘..... सबसे अच्छी नीति है’ → ईमानदारी (संज्ञा); ‘अच्छा ..... ही सबसे बड़ा धन है’ → स्वास्थ्य।
- पुल्लिंग: दही, पानी, घी, मोती, हाथी, व्यक्ति; स्त्रीलिंग: आत्मा, चाय, सरसों, जनता, आग, प्रतीक्षा (पर इंतज़ार पुल्लिंग)।
- सदा बहुवचन: प्राण, दर्शन (भेंट के अर्थ में), हस्ताक्षर, होश: ‘उसके प्राण निकल गए’, ‘आपके दर्शन हुए’, ‘उसके होश उड़ गए’।
- ‘ने’ वाले वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार: ‘राम ने रोटी खाई’, ‘सीता ने आम खाया’; कर्म के साथ ‘को’ हो तो पुल्लिंग एकवचन: ‘सीता ने बच्चों को बुलाया’।
- परसर्ग: ‘मुझे घर जाना है’, ‘वह मुझसे बड़ा है’, ‘मैंने उससे पूछा’, ‘पेड़ से पत्ते गिरते हैं’, ‘वह फल लाया’ (लाना के साथ ने नहीं)।
- मुहावरे का शब्द नहीं बदलता: नौ दो ग्यारह होना, दाँत खट्टे करना, आँखों का तारा, घी के दीये जलाना, कमर कसना, ऊँट के मुँह में जीरा।
- संगति: मूसलाधार वर्षा, कट्टर शत्रु, घनिष्ठ मित्र, गहरी नींद; शपथ लेना, शपथ दिलाना, निर्णय लेना, आज्ञा का पालन करना।
- जोड़ीदार अव्यय: यद्यपि-तथापि, जैसे-वैसे, ज्यों ही-त्यों ही, जब-तब, यदि-तो, न-न: ‘यद्यपि वह गरीब है, ... ईमानदार है’ (तथापि, इसलिए, अन्यथा) → तथापि।
- भाषा-स्तर: युद्ध में वीरगति, प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन या देहावसान, सामान्य प्रसंग में मृत्यु; औपचारिक पत्र में ‘सविनय निवेदन है’।

> **त्वरित दोहराव:** रिक्त स्थान: पूरा वाक्य पढ़ें, शब्द-भेद पहचानें, लिंग-वचन-कारक मिलाएँ, अर्थ और भाषा-स्तर देखें; ईमानदार-ईमानदारी, स्वस्थ-स्वास्थ्य; दही, व्यक्ति पुल्लिंग; आत्मा, जनता, प्रतीक्षा स्त्रीलिंग; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश बहुवचन; ने वाले वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार; मुझे जाना है, मुझसे बड़ा, उससे पूछा, वह फल लाया; मुहावरे का शब्द नहीं बदलता; यद्यपि-तथापि, ज्यों ही-त्यों ही; वीरगति, निधन, मृत्यु का प्रसंग।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/hindi-word-choice/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

हिंदी व्याकरण: मुख्य नियम	विकारी शब्द: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया; अव्यय: क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात; सर्वनाम छह, विशेषण चार भेद; सकर्मक की पहचान 'क्या/किसे' से; कारक आठ: ने, को, से, को/के लिए, से (अलगाव), का/की/के, में/पर, हे; करण 'से' साधन, अपादान 'से' अलगाव; वाच्य तीन; स्वर संधि पाँच: दीर्घ, गुण (ए, ओ, अर्), वृद्धि (ऐ, औ), यण, अयादि; समास छह: अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व, बहुव्रीहि (तीसरे का बोध); विग्रह से समास बदलता है (नीलकंठ); पानी, घी, मोती पुल्लिंग; तत्सम-तद्भव: अग्नि-आग, हस्त-हाथ, क्षेत्र-खेत।
वर्ण-विचार: स्वर, व्यंजन, उच्चारण स्थान, अनुस्वार-अनुनासिक और संयुक्त व्यंजन	वर्ण सबसे छोटी ध्वनि; 11 स्वर और 33 मूल व्यंजन (44), अयोगवाह अं-अः, उत्क्षिप्त ड़-ढ़, संयुक्त क्ष-त्र-ज्ञ-श्र (कुल गिनती 44/46/48/52, पुस्तक अनुसार); ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ; ए-ऐ कंठ-तालव्य, ओ-औ कंठोष्ठ्य, व दंतोष्ठ्य; महाप्राण वर्ग के 2, 4 वर्ण और श, ष, स, ह; अघोष वर्ग के 1, 2 वर्ण और श, ष, स; अनुस्वार व्यंजन, अनुनासिक स्वर-गुण (हंस-हँस); ड़, ढ़, ङ, ञ से शब्द आरंभ नहीं होता।
शब्द-भेद: तत्सम-तद्भव, देशज-विदेशज, रूढ़-यौगिक-योगरूढ़ और विकारी-अविकारी	उत्पत्ति से: तत्सम (संस्कृत ज्यों का त्यों: अग्नि, क्षेत्र), तद्भव (बदला रूप: आग, खेत), देशज (लोटा, पगड़ी, खिड़की), विदेशज (अरबी कलम, फ़ारसी चश्मा, तुर्की तोप, पुर्तगाली अलमारी, अंग्रेज़ी स्टेशन), संकर (रेलगाड़ी); रचना से: रूढ़ (घर), यौगिक (विद्यालय), योगरूढ़ (पंकज, दशानन); प्रयोग से: विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया), अविकारी (अव्यय); भेद वाक्य में प्रयोग से तय होता है।
संधि: स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि के नियम, अपवाद और संधि-विच्छेद	संधि वर्णों का मेल, समास शब्दों का; स्वर संधि पाँच: दीर्घ (आ, ई, ऊ), गुण (ए, ओ, अर्: नरेंद्र, महर्षि), वृद्धि (ऐ, औ: सदैव, वनौषधि), यण (य्, व्, र्: इत्यादि, स्वागत), अयादि (अय्, आय्, अव्, आव्: नयन, नायक, पवन, पावक); व्यंजन: वाक् + ईश = वागीश, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, सम् + राट = सम्राट; विसर्ग: मनोयोग, निराशा, निश्चय, नीरस, नमस्कार, अतएव; पुनः-अंतः में र्।
समास: छह भेद, समास-विग्रह और कर्मधारय-बहुव्रीहि का अंतर	समास में विभक्ति लुप्त, विग्रह में लौटती है; छह भेद (कुछ पुस्तकें कर्मधारय और द्विगु को तत्पुरुष में रखकर चार गिनती हैं); अव्ययीभाव: पहला पद अव्यय (यथाशक्ति, प्रतिदिन); तत्पुरुष: कारक-चिह्न लुप्त (हस्तलिखित, देशनिकाला, राजपुत्र); कर्मधारय: विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय (नीलकमल, चंद्रमुख); द्विगु: संख्या + समूह (त्रिभुवन, चौराहा); द्वंद्व: दोनों प्रधान (माता-पिता); बहुव्रीहि: तीसरे का बोध (दशानन, लंबोदर); नीलकंठ, पीतांबर विग्रह से कर्मधारय या बहुव्रीहि।
संज्ञा और सर्वनाम: भेद, भाववाचक संज्ञा की रचना और सर्वनाम के छह भेद	संज्ञा तीन (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक) या पाँच (समूहवाचक, द्रव्यवाचक सहित); भाववाचक जातिवाचक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से (मित्रता, ममता, माधुर्य, उड़ान, दूरी); हरिश्चंद्रों (व्यक्ति से जाति), गोस्वामी जी (जाति से व्यक्ति), चढ़ाइयाँ (भाव से जाति); 11 मूल सर्वनाम; छह भेद: पुरुष, निश्चय, अनिश्चय (कोई प्राणी, कुछ वस्तु), संबंध (जो-सो), प्रश्न (कौन, क्या), निज (आप, स्वयं); संज्ञा से पहले सर्वनाम = सार्वनामिक विशेषण।
विशेषण और क्रियाविशेषण: भेद, विशेष्य, तुलना की अवस्थाएँ और पहचान	विशेषण संज्ञा-सर्वनाम की विशेषता, विशेष्य वह जिसकी विशेषता, प्रविशेषण विशेषण की विशेषता (बहुत); चार भेद: गुणवाचक, संख्यावाचक (निश्चित-अनिश्चित), परिमाणवाचक (निश्चित-अनिश्चित), सार्वनामिक (मौलिक-यौगिक); अवस्थाएँ: मूल, उत्तर (-तर), उत्तम (-तम); 'सबसे श्रेष्ठतम' अशुद्ध; '-इक' से वृद्धि (सामाजिक); क्रियाविशेषण चार: काल, स्थान, परिमाण, रीति; 'के' के साथ आए तो संबंधबोधक।
लिंग और वचन: लिंग निर्धारण, स्त्रीलिंग प्रत्यय, बहुवचन के नियम और अपवाद	हिंदी में दो लिंग, दो वचन; -पन, -पा, -त्व, -आव पुल्लिंग; -ता, -आई, -आवट, -आहट, -इमा, -ति स्त्रीलिंग; पानी, घी, दही, मोती, हाथी पुल्लिंग; चाँदी, पृथ्वी, चाय, इमली, मणि अपवाद में स्त्रीलिंग; ब्रह्मपुत्र, सोन पुल्लिंग; नित्य लिंग: कौआ, कोयल; कवयित्री, विदुषी, सम्राज्ञी; बहुवचन -ए, -एँ, -इयाँ, विभक्ति के साथ -ओं; पिता, राजा, चाचा नहीं बदलते; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर सदा बहुवचन; जनता एकवचन; अनेकों अशुद्ध; भाइयो-बहनो।
कारक: आठ कारक, विभक्तियाँ, 'ने' का प्रयोग और 'को' तथा 'से' का भेद	आठ कारक: कर्ता ने, कर्म को, करण से/के द्वारा, संप्रदान को/के लिए, अपादान से (अलगाव), संबंध का-की-के, अधिकरण में-पर, संबोधन हे-अरे; 'ने' सकर्मक के सामान्य, आसन्न, पूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद् भूत में, अपूर्ण भूत में नहीं; लाना, भूलना, बकना बिना 'ने'; कर्म पर 'को' हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन; करण साधन-कारण, अपादान अलगाव-तुलना-डर-सीखना; समय का 'को' अधिकरण; संबोधन बहुवचन में अनुस्वार नहीं।
क्रिया, काल और वाच्य: सकर्मक-अकर्मक, प्रेरणार्थक, काल के भेद और वाच्य परिवर्तन	धातु + ना = सामान्य रूप; सकर्मक की पहचान 'क्या/किसे'; द्विकर्मक देना, पढ़ाना, पूछना; प्रेरणार्थक -आ (प्रथम), -वा (द्वितीय), आना-जाना-सकना-होना के नहीं; नामधातु हथियाना, बतियाना; संयुक्त क्रिया खा चुका; भूत के छह भेद: सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद्; वाच्य तीन: कर्तृ, कर्म (सकर्मक, 'द्वारा'), भाव (अकर्मक, 'से', पुल्लिंग एकवचन, असमर्थता); उपभेदों की गिनती पुस्तकों में अलग।
उपसर्ग और प्रत्यय: संस्कृत, हिंदी, उर्दू उपसर्ग तथा कृत् और तद्धित प्रत्यय	उपसर्ग आरंभ में, प्रत्यय अंत में; संस्कृत के 22 उपसर्ग (दुर्-दुस्, निर्-निस् अलग गिनकर); अ, अन, स, सह, पुनर् उपसर्गवत् शब्दांश; हिंदी: अन, अध, उन, भर, नि, कु; उर्दू: बे, ना, ग़ैर, ला, बद, हम; कृत् धातु से (पढ़ाई, लिखावट, लुटेरा, पठनीय), तद्धित संज्ञा-विशेषण से (भलाई, मिठास, सामाजिक, दयालु); -इक से वृद्धि (ऐतिहासिक, साप्ताहिक); अपत्यवाचक: दाशरथि, पार्थ, कौंतेय, राघव।
वाक्य-विचार और विराम-चिह्न: वाक्य के अंग, भेद, रूपांतरण और चिह्नों का प्रयोग	वाक्य के तत्त्व: सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति, पदक्रम, अन्वय; अंग: उद्देश्य और विधेय; रचना से: सरल (एक समापिका क्रिया), संयुक्त (स्वतंत्र उपवाक्य; और, परंतु, इसलिए), मिश्र (प्रधान + आश्रित; कि, जो, क्योंकि, यदि); आश्रित उपवाक्य: संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण; अर्थ से आठ भेद; रूपांतरण में अर्थ न बदले; विराम: । , ; ? ! - — " " ( ) ़; 'रोको, मत जाने दो' बनाम 'रोको मत, जाने दो'।

अलंकार, रस और छंद: अनुप्रास से अतिशयोक्ति, नौ रस और दोहा-चौपाई-सोरठा की मात्राएँ	शब्दालंकार (अनुप्रास: वर्ण-आवृत्ति; यमक: शब्द दोहराया, अर्थ अलग; श्लेष: शब्द एक, अर्थ अनेक) और अर्थालंकार (उपमा: सा, सम, सरिस; रूपक: अभेद; उत्प्रेक्षा: मनु, मानो, जनु; अतिशयोक्ति; विभावना); रस के अंग: स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, 33 संचारी; नौ रस, भरत के आठ, वात्सल्य-भक्ति मिलाकर ग्यारह; वीर-उत्साह, करुण-शोक, शांत-निर्वेद; दोहा 13-11, सोरठा 11-13, चौपाई 16 प्रति चरण; यमाताराजभानसलगा।
मुहावरे और लोकोक्तियाँ	मुहावरा वाक्यांश है, वाक्य के भीतर आता है और उसकी क्रिया काल, लिंग, वचन से बदलती है; लोकोक्ति पूरा, स्वतंत्र वाक्य है और उसका रूप नहीं बदलता; मुहावरे के शब्द नहीं बदलते; अर्थ लाक्षणिक होता है, शब्दशः नहीं; पहले वाक्य का भाव पहचानें, फिर उलटे भाव वाले विकल्प हटाएँ; आग बबूला होना क्रोध, फूला न समाना प्रसन्नता, पानी-पानी होना लज्जा, दिन में तारे दिखाई देना घबराहट, आँखों में धूल झोंकना धोखा, नौ-दो ग्यारह होना भागना, टेढ़ी खीर कठिन काम, गागर में सागर थोड़े में बहुत; अधजल गगरी और थोथा चना दिखावा, आम के आम गुठलियों के दाम दोहरा लाभ।
मुहावरा और लोकोक्ति: परिभाषा, अंतर और प्रयोग के नियम	मुहावरा अरबी शब्द (अर्थ 'बातचीत' या 'अभ्यास'), वाक्यांश, अर्थ लाक्षणिक (लक्षणा), शब्द नहीं बदलते, क्रिया काल-लिंग-वचन से बदलती है, 'ने' के साथ क्रिया कर्म से मिलती है (धूल झोंकी, हाथ पीले कर दिए); लोकोक्ति = लोक + उक्ति, कहावत, पूर्ण वाक्य, अनुभव का निचोड़, रूप नहीं बदलता; 'ना' की परख अधूरी: आँख का तारा मुहावरा, आम के आम गुठलियों के दाम लोकोक्ति; अंधे की लकड़ी मुहावरा, अंधों में काना राजा लोकोक्ति; ऊँट के मुँह में जीरा का वर्गीकरण पुस्तकों में भिन्न।
शरीर के अंगों से जुड़े मुहावरे: अर्थ और वाक्य-प्रयोग	आँख लगना नींद, आँखें खुलना सचेत होना, आँखें फेरना उपेक्षा, आँख का काँटा खटकने वाला; नाक कटना/रखना प्रतिष्ठा जाना/बचाना, नाक का बाल प्रिय; कान खड़े होना सावधान, कान खाना तंग करना, कान का कच्चा; मुँह की खाना हारना, दाँत खट्टे करना हराना, दाँत काटी रोटी मित्रता; हाथ मलना पछताना, बाएँ हाथ का खेल सरल, हाथ-पाँव फूलना घबराना; सिर उठाना विद्रोह, सिर नीचा होना लज्जा; कलेजा ठंडा होना संतोष; पेट में दाढ़ी चतुर; छाती पर साँप लोटना ईर्ष्या, छाती पर मूँग दलना पास रहकर दुख देना।
पशु-पक्षी, खान-पान, रंग, संख्या और प्रकृति से जुड़े मुहावरे	भीगी बिल्ली सहमना, गीदड़ भभकी झूठी धमकी, कोल्हू का बैल कठोर परिश्रमी, घड़ियाली आँसू दिखावटी दुख; हाथों के तोते उड़ना घबराना, बगुला भगत ढोंगी; दाल में काला संदेह, गुड़ गोबर काम बिगाड़ना, खिचड़ी पकाना गुप्त योजना, पापड़ बेलना कष्ट उठाना; लाल-पीला क्रोध, रंग उड़ना घबराना, सब्ज़ बाग झूठी आशा; छत्तीस का आँकड़ा विरोध, उन्नीस-बीस थोड़ा अंतर, तीन-तेरह बिखरना, चार चाँद शोभा, छठी का दूध कठिनाई; आकाश-पाताल एक करना प्रयत्न, ज़मीन-आसमान का अंतर बहुत अंतर, पत्थर की लकीर अटल, गूलर का फूल दुर्लभ।
प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ (भाग 1): अर्थ और वाक्य-प्रयोग सहित	अधजल गगरी छलकत जाय, थोथा चना बाजे घना = दिखावा; ऊँची दुकान फीका पकवान, नाम बड़े दर्शन छोटे = बाहर चमक भीतर खोखला; हाथी के दाँत = कथनी-करनी में अंतर; आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ; एक पंथ दो काज = एक प्रयत्न दो काम; नौ नकद न तेरह उधार; उलटा चोर कोतवाल को डाँटे; चोर की दाढ़ी में तिनका; नाच न जाने आँगन टेढ़ा; खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे; अंगूर खट्टे हैं; जिसकी लाठी उसकी भैंस; घर का भेदी लंका ढाए; अंधों में काना राजा; का बरखा जब कृषि सुखाने (मानस); मन चंगा तो कठौती में गंगा (रैदास)।
प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ (भाग 2) और अर्थ वाले प्रश्न हल करने की विधि	आसमान से गिरा खजूर में अटका = एक संकट से दूसरे में; कंगाली में आटा गीला = संकट पर संकट; सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े = आरंभ में विघ्न; डूबते को तिनके का सहारा; दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है; घर की मुर्गी दाल बराबर बनाम घर का जोगी जोगड़ा; चिराग तले अँधेरा; तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर = आय के अनुसार व्यय; जैसी करनी वैसी भरनी बनाम करे कोई भरे कोई; जाल: शब्दशः अर्थ, शब्दों का अनुवाद, उलटा भाव, एक शब्द का पीछा; विधि: स्थिति सोचें, भाव तय करें, जाल काटें, बारीक अंतर से चुनें।
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	वाक्यांश का मुख्य विचार पहचानें, फिर उपसर्ग-प्रत्यय जोड़ें; 'न' हो तो अ/अन्, 'रहित' हो तो निर्/निस्; योग्य के लिए -नीय (पूजनीय, दर्शनीय, अखंडनीय, अकथनीय); जानने वाला -ज्ञ (सर्वज्ञ, अल्पज्ञ, कृतज्ञ, उलटा कृतघ्न); करने वाला -कार/-क; जीविका -जीवी; रहने/घूमने वाला -चर (जलचर, नभचर, उभयचर, निशाचर); इच्छा: जिज्ञासा, पिपासा, बुभुक्षा, जिजीविषा, मुमुक्षु; पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न (ह्न); अजेय-अपराजित, अभूतपूर्व-भूतपूर्व, अग्रज-अनुज, विधवा-विधुर-सधवा का अंतर याद रखें; मितव्ययी कंजूस नहीं, सोच-समझकर खर्च करने वाला।
व्यक्ति, स्वभाव और गुण बताने वाले शब्द (आस्तिक, मितभाषी, अजातशत्रु)	व्यक्ति-वाचक शब्द प्रत्यय (-ई, -इक, -वान/-मान, -शील, -आलु, -इष्णु, -वी), उपसर्ग या उपसर्ग-जैसे शब्द (सत्, दुर्, निर्) और बहुव्रीहि से बनते हैं; आस्तिक-नास्तिक (अस्ति + इक); मितभाषी/अल्पभाषी, वाचाल, मृदुभाषी, कटुभाषी, स्पष्टवक्ता, वाक्पटु, आत्मश्लाघी; कुशाग्रबुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति, स्थितप्रज्ञ, जितेंद्रिय, वीतराग, अन्यमनस्क, आजानुबाहु, अजातशत्रु (शत्रु जन्मा ही न हो); छिद्रान्वेषी, ईर्ष्यालु, सहिष्णु, निर्भीक, भीरु; कृपण कंजूस है, मितव्ययी नहीं; पितामह, मातामह, विमाता, दत्तक, विदुषी।
काम, स्थान और समय से जुड़े शब्द (पुस्तकालय, अपरिहार्य, अभूतपूर्व)	स्थान: -आलय (पुस्तकालय, औषधालय, संग्रहालय, हिमालय), -शाला (प्रयोगशाला, अश्वशाला, पाकशाला), -आगार (शस्त्रागार, कारागार), श्मशान, टकसाल; उपत्यका-अधित्यका, दोआब, मुहाना, प्रायद्वीप, जलडमरूमध्य, अभयारण्य; प्रवासी-आप्रवासी, शरणार्थी-शरणागत, अतिथि; -इत (अनूदित, निर्वासित), -य/-नीय (अपरिहार्य, अविभाज्य), -तव्य (कर्तव्य, गंतव्य); त्रैमासिक, षाण्मासिक, त्रैवार्षिक, सहस्राब्दी; रजत 25, स्वर्ण 50, हीरक 60 (अधिकतर पुस्तकें; कुछ 75); अभूतपूर्व, अदृष्टपूर्व, अश्रुतपूर्व; तत्कालीन-तात्कालिक।
इच्छा, ज्ञान और भाव से जुड़े शब्द तथा प्रत्ययों के पैटर्न (-ज्ञ, -दर्शी, -भोगी, -हीन)	इच्छा = सन् प्रत्यय (प्रायः धातु का पहला अक्षर दोहरा, -सा/-षा; लिप्सा में दोहराव नहीं): जिज्ञासा, पिपासा, बुभुक्षा, जिजीविषा, मुमुक्षा, युयुत्सा, जिगीषा, चिकीर्षा, दिदृक्षा, मुमूर्षा, लिप्सा; -आ इच्छा, -उ इच्छुक; जुगुप्सा, चिकित्सा, तितिक्षा, मीमांसा भी सन् से बने पर इच्छा-वाचक नहीं; शुश्रूषा = सेवा; -ज्ञ (विशेषज्ञ, नीतिज्ञ), अज्ञ, अनभिज्ञ, बहुश्रुत; वात्सल्य, स्नेह, श्रद्धा, भक्ति, प्रणय; पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त; -दर्शी, -भोगी, -गामी, -भक्षी, -जीवी, -ज; -हीन = निर्- (निरर्थक, निराधार); सर्वव्यापी, सर्वसम्मत।

मिलते-जुलते शब्दों में अंतर और प्रश्न हल करने की विधि (अज्ञ, अज्ञात, अज्ञेय)	-ज्ञ/ज्ञाता करने वाला, ज्ञात जाना हुआ, ज्ञेय जो जाना जा सके; अज्ञ, अज्ञात, अज्ञेय, अनभिज्ञ अलग; अजेय-अजित-अपराजित-विजित; दुर्लभ-अलभ्य; साध्य-दुःसाध्य-असाध्य; अक्षम-अक्षम्य; अमूल्य मूल्यहीन नहीं; अदृश्य-अगोचर; इहलौकिक-पारलौकिक-अलौकिक; निष्पक्ष-तटस्थ; विधि: मुख्य शब्द, अर्थ का प्रकार, निषेध, काल, वापस रखकर जाँच, वर्तनी; उपर्युक्त, अपराह्न, अभयारण्य, श्मशान, अंतर्धान, पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त, अनूदित शुद्ध।
गद्यांश: रिक्त स्थान और बोध	पहले पूरा गद्यांश पढ़कर विषय और लेखक का स्वर समझें; हर रिक्त स्थान को अर्थ, व्याकरण (लिंग, वचन, कारक, शब्द-भेद) और शब्द-संगति, तीनों पर परखें; 'ने' वाले भूतकाल में (कर्म के साथ 'को' न हो तो) सकर्मक क्रिया कर्म के अनुसार; जोड़ी वाले शब्द: यद्यपि-तथापि, यदि-तो, जब-तब, न केवल-बल्कि भी; संगति: ध्यान देना, भाग लेना, प्रकाश डालना, कड़ी मेहनत, गहरी नींद; केंद्रीय भाव पूरे गद्यांश पर लागू हो; शीर्षक छोटा, सटीक और सब कुछ समेटने वाला; शब्द का प्रसंग वाला अर्थ चुनें; निष्कर्ष केवल गद्यांश के आधार पर; 'नहीं' वाले प्रश्नों और 'हमेशा, सभी' जैसे पक्के दावों से सावधान।
अपठित गद्यांश हल करने की विधि: मुख्य विचार, शीर्षक, कथन और निष्कर्ष	अपठित = पहले न पढ़ा गया गद्यांश, बोध की परीक्षा; पहले प्रश्न पढ़ें, विकल्प नहीं; विषय और मुख्य विचार अलग; मुख्य विचार प्रायः पहले या अंतिम वाक्य में, 'अतः, इसलिए, वास्तव में' के बाद; शीर्षक: बाहरी, संकुचित और व्यापक विकल्प हटाकर स्वर से मेल खाने वाला; कथन को सत्य, निष्कर्ष या आधारहीन में बाँटें; 'सभी, हमेशा, केवल' वाले अति-कथन से सावधान; निष्कर्ष वही जो गद्यांश से अनिवार्य रूप से निकले।
गद्यांश पर आधारित शब्दार्थ और व्याकरण के प्रश्न: पर्यायवाची, विलोम, संधि, समास, उपसर्ग-प्रत्यय	गद्यांश के शब्द का उत्तर उसके प्रसंग और शब्द-भेद से दें; अनेकार्थी (कर, पत्र, हार, अर्थ) का प्रसंग वाला अर्थ लें; अनिल-अनल, सविता-सरिता, नीरज-नीरद का जाल; विलोम उसी शब्द-भेद का (उन्नति-अवनति, ज्ञान-अज्ञान), मानक रूप (आस्तिक-नास्तिक, सुगम-दुर्गम); संधि-विच्छेद के दोनों खंड सार्थक; पीतांबर, त्रिलोचन में समास प्रसंग से तय; 'इक' से स्वर-वृद्धि (समाज-सामाजिक); उपसर्ग के साथ संधि (अति + अधिक)।
क्लोज़ टेस्ट (रिक्त स्थान वाला गद्यांश): संदर्भ, लिंग-वचन-कारक और संयोजक शब्द	क्लोज़ टेस्ट: पूरा गद्यांश पढ़कर पहले अपना शब्द सोचें; व्याकरण, फिर अर्थ-स्वर, फिर संगति से विकल्प हटाएँ; संकेत उसी वाक्य, पड़ोसी वाक्य और पूरे विषय में; लिंग पक्का करें (दही पुल्लिंग, सरकार और जनता स्त्रीलिंग); परसर्ग से पहले '-ओं' और '-ए' रूप; 'ने' सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत रूपों (खाया, खाया था) में, अपूर्ण भूत में नहीं, अपवाद लाना और छींकना; 'ने' और 'को' दोनों हों तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन; क्योंकि के बाद कारण, इसलिए के बाद परिणाम; चूँकि...इसलिए, यद्यपि...तथापि; बल्कि निषेध के बाद।
काव्यांश और तथ्यात्मक गद्यांश: भाव, अलंकार, शब्दार्थ, समय-प्रबंधन और आम गलतियाँ	काव्यांश: पहले गद्य की तरह अर्थ समझें, फिर भाव, शीर्षक, शब्दार्थ, अलंकार; अनुप्रास वर्ण-आवृत्ति, यमक में एक शब्द बार-बार भिन्न अर्थ में, श्लेष में एक बार अनेक अर्थ, उपमा में वाचक शब्द (सा, सी, समान), रूपक में अभेद, उत्प्रेक्षा में मानो-जनु, मानवीकरण में प्रकृति मनुष्य जैसी; तथ्यात्मक गद्यांश में मुख्य शब्द से पंक्ति खोजें, उत्तर गद्यांश के अनुसार; पहले छोटे प्रश्न, फिर गद्यांश; 'नहीं', 'केवल', 'लगभग' पर ध्यान।
वाक्य शुद्धि और वर्तनी	क्रिया और विशेषण अपनी संज्ञा से, का/की/के बाद वाली संज्ञा से लिंग-वचन में मिलें; आग, पुस्तक, सड़क, बर्फ़ स्त्रीलिंग, आँसू, पानी, मोती, हस्ताक्षर पुल्लिंग; प्राण, दर्शन, होश बहुवचन; 'अनेकों' अशुद्ध; 'ने' भूतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ, 'मुझे जाना है', 'वह लाया', 'मुझसे कहा', 'मुझ पर उपकार'; समय-सूचक शब्द काल तय करते हैं; पुनरुक्ति हटाएँ: सज्जन पुरुष, प्रातःकाल के समय, कृपया करके, सबसे श्रेष्ठतम; विशेषण विशेष्य के ठीक पहले; शुद्ध वर्तनी: परीक्षा, श्रीमती, गुरु, शुरू, हृदय, अनुगृहीत, शृंगार, आशीर्वाद, प्रशंसा, शुश्रूषा, उपर्युक्त, अत्यधिक, संन्यासी, महत्त्व, उज्ज्वल।
वर्तनी की अशुद्धियाँ (1): मात्रा, अनुस्वार-अनुनासिक और मानक वर्तनी के नियम	तत्सम इकारांत स्त्रीलिंग में छोटी इ (शक्ति, रात्रि, श्रद्धांजलि); परीक्षा, प्रतीक्षा, प्रदर्शनी में ई; निः + र से नीरोग, नीरस; बहुवचन-समास में ई-ऊ छोटी (नदियाँ, मंत्रिमंडल, डाकुओं); तत्सम उकारांत में उ (वायु, गुरु), तद्भव में ऊ (आलू), अपवाद वधू; रुपया, पुरुष पर रूप, शुरू, मुहूर्त; 'इक' से वृद्धि (सामाजिक, व्यावहारिक, नैतिक, भौगोलिक, पारलौकिक); और/ओर, बैर/बेर, हंस/हँस; ऊपर मात्रा पर बिंदु (मैं, नहीं); सवर्गी पंचमाक्षर का अनुस्वार (गंगा, हिंदी) पर अन्य, सम्मान; गए, नई, किए, चाहिए।
वर्तनी की अशुद्धियाँ (2): र के रूप, श-ष-स, ण-न, ब-व, क्ष-छ, हलंत और संयुक्ताक्षर	रेफ उच्चारण-क्रम से: आशीर्वाद, अंतर्धान, सौहार्द; पदेन र: प्रकाश, राष्ट्र; ऋ स्वर: कृपा, गृह, हृदय, शृंगार; गृह/ग्रह, हृदय/ह्रास; स्रोत, सहस्र (स्त्रोत नहीं); ट/ठ से पहले ष, च/छ से पहले श, त/थ से पहले स; ऋ, र, ष के बाद ण (कारण, प्रमाण, आदरणीय), बीच में च/ट/त-वर्ग, श, स, ल हो तो न (दर्शन, प्रार्थना); वात/बात, वाद/बाद, वहन/बहन; क्षमा, क्षेत्र; ज्ञान पर योग्य; चिह्न, ब्राह्मण, आह्वान, मध्याह्न; सदुपदेश, उज्ज्वल, पुनरुक्ति; पुरस्कार, आगामी, महत्त्व।
लिंग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ	का/की/के बाद वाली संज्ञा से मेल खाते हैं; आग, आत्मा, आयु, वायु, पुलिस, सरकार, जनता, सुबह, भूख स्त्रीलिंग; दही, मोती, आँसू, सवेरा, व्यक्ति पुल्लिंग; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश बहुवचन; जनता, भीड़, सामान एकवचन; प्रत्येक के साथ एकवचन; संख्या के बाद बहुवचन (दस रुपये); 'ने' केवल सकर्मक के भूतकालिक कृदंत वाले रूपों में, लाना, भूलना, सकना, चुकना के साथ नहीं; मुझे जाना चाहिए; मुझसे कहा, कुत्ते से डरना, मुझ पर दया, पेड़ पर चढ़ना।
क्रिया, काल और पद-क्रम की अशुद्धियाँ	कर्ता बिना परसर्ग: क्रिया कर्ता से (कर्तरि); कर्ता के साथ ने, कर्म बिना परसर्ग: क्रिया कर्म से (कर्मणि); ने और कर्म के साथ को: क्रिया पुल्लिंग एकवचन (भावे), रानी ने दासियों को बुलाया; मुझे पुस्तक पढ़नी है; या से जुड़े कर्ता में अंतिम कर्ता से; के साथ वाला कर्ता नहीं; राम और मैं जाएँगे; प्रतिदिन जाता हूँ, अभी-अभी आया है, दो घंटे से कर रहा हूँ; यदि होती तो होती; मत केवल आज्ञा में; आप बैठिए; एक कप गरम चाय; जितना-उतना, न केवल-बल्कि, चूँकि-इसलिए।
शब्द-चयन और पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ: सर्वनाम और विशेषण की भूलें सहित	पुनरुक्ति हटाएँ: आपस में परस्पर, पुनः दोबारा, हर प्रत्येक, केवल... ही, सकुशलपूर्वक, सादरपूर्वक, कृपया... कृपा करें, सारे भारत भर में; दोहरे प्रत्यय अशुद्ध: माधुर्यता, धैर्यता, सौजन्यता, आवश्यकीय, पूज्यनीय, सबसे श्रेष्ठतम; 'महानता' पर मतभेद, 'महत्ता' सुरक्षित; स्नेह-श्रद्धा-वात्सल्य-भक्ति, दया-कृपा, शंका-आशंका, आविष्कार-खोज, अस्त्र-शस्त्र; परिणाम-परिमाण, उपयुक्त-उपर्युक्त, प्रसाद-प्रासाद, आदि-आदी; कर्ता की वस्तु के लिए 'अपना'; उन्होंने; बहुत-सी पुस्तकें।

वाक्य शुद्धि के प्रश्न कैसे हल करें: क्रमबद्ध जाँच और हल किए गए अभ्यास	चार रूप: त्रुटि वाला भाग, शुद्ध या अशुद्ध वाक्य, रेखांकित अंश का शुद्ध रूप, शुद्ध वर्तनी; जाँच का क्रम: क्रिया का मेल (कर्ता बिना परसर्ग तो कर्ता से, ने हो तो कर्म से, ने और कर्म के साथ को हो तो पुल्लिंग एकवचन), परसर्ग (ने, को, से, पर), काल और योजक, शब्द-चयन और पुनरुक्ति, वर्तनी; 'कोई त्रुटि नहीं' भी उत्तर हो सकता है; बोलचाल के रूप प्रायः त्रुटि होते हैं; विवादित रूपों में मानक व्याकरण वाला रूप; संदेह में निश्चित नियम तोड़ने वाले विकल्प पहले हटाइए।
पर्यायवाची और विलोम शब्द	पर्यायवाची के विकल्प में हर शब्द जाँचें, एक भी गलत तो पूरा विकल्प गलत; अनल (आग)-अनिल (हवा), अंबु (जल)-अंबर (आकाश, वस्त्र) में भ्रम न करें; -ज जन्मा (जलज = कमल), -द देने वाला (जलद = बादल), -धि भंडार (जलधि = समुद्र); दिनकर सूर्य, निशाकर चंद्रमा; विलोम उसी शब्द-भेद का हो; व्यंजन से पहले अ, स्वर से पहले अन्; सु-दुर्, स-निर्, स्व-पर, अनु-प्रति, सम्-वि, उत्-अप/अव; आयात-निर्यात, आदान-प्रदान; अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आस्तिक-नास्तिक, उत्कर्ष-अपकर्ष, सुगम-दुर्गम, कृतज्ञ-कृतघ्न, अनुज-अग्रज; विज्ञान, विख्यात, अमूल्य, प्रतिदिन उलटे अर्थ वाले नहीं हैं।
पर्यायवाची शब्द (1): प्रकृति से जुड़े शब्द	दिन या दिवा + कर, ईश सूर्य (दिनकर, दिवाकर, दिनेश), निशा, रजनी या राका + कर, ईश चंद्रमा (निशाकर, रजनीश, राकेश); अंशु = किरण: सहस्रांशु सूर्य, हिमांशु, शीतांशु, सुधांशु चंद्रमा; जल + ज कमल, जल + द या धर बादल, जल + धि समुद्र; भूधर, महीधर, धराधर पर्वत, धाराधर बादल; अचल पर्वत, अचला पृथ्वी; नदीश समुद्र; कुसुमाकर वसंत; रजनीचर राक्षस; अनिल हवा, अनल आग; अंबु जल, अंबर आकाश; यामिनी रात, दामिनी बिजली।
पर्यायवाची शब्द (2): देवता, पशु-पक्षी और मानव	देवताओं के अधिकतर नाम विशेषता से बने बहुव्रीहि हैं: चक्रपाणि विष्णु, नीलकंठ, चंद्रशेखर, गंगाधर शिव, लंबोदर, गजानन गणेश; आनन: चतुरानन ब्रह्मा, षडानन कार्तिकेय, दशानन रावण; उमापति शिव, रमापति विष्णु, शचीपति इंद्र; उपेंद्र विष्णु; सहस्राक्ष इंद्र, सहस्रांशु सूर्य; हंसवाहन ब्रह्मा, हंसवाहिनी सरस्वती; सिंधुसुता लक्ष्मी; नाग हाथी और साँप; सैंधव घोड़ा और नमक; पंचानन, हरि सिंह भी; भूप राजा, भूधर पर्वत; तनुज पुत्र, अनुज छोटा भाई; पाणि हाथ।
पर्यायवाची शब्दों की पहचान: तत्सम पर्याय, भ्रामक विकल्प और अनेकार्थी शब्द	पर्यायवाची = कई शब्द, एक अर्थ; अनेकार्थी = एक शब्द, कई अर्थ; श्रुतिसम = मिलते-जुलते रूप, भिन्न अर्थ; अंतिम पद पहचानें: ज जन्मा, द देने वाला, धि भंडार, धर धारण करने वाला, प पालक, पति और ईश स्वामी, चर चलने वाला; तद्भव और आगत रूप भी पर्याय हैं; गिरिजा, भूमिजा, सिंधुसुता, चंद्रशेखर संबंध वाले नाम हैं; कनक सोना और धतूरा, अंबर आकाश और वस्त्र, हरि विष्णु, सिंह, घोड़ा, बंदर आदि, अर्थ मतलब, धन, प्रयोजन; अस्त्र-शस्त्र, आधि-व्याधि पूर्ण पर्याय नहीं।
विलोम शब्द (1): विलोम बनाने के तरीके और प्रमुख युग्म	विलोम का शब्द-भेद, स्रोत और प्रसंग वही हो; तत्सम में व्यंजन से पहले अ (ज्ञान-अज्ञान), स्वर से पहले अन् (आदर-अनादर), पर नश्वर-अनश्वर में अ; स और निर् (सजीव-निर्जीव, सरस-नीरस), सु और दुर् या कु (सुगम-दुर्गम, सुपुत्र-कुपुत्र), स्व-पर, अनु-प्रति, सम्-वि, उत्-अव या अप, आ-निर् (आयात-निर्यात), आ-प्र (आदान-प्रदान); मान-अपमान, गुण-अवगुण; पद बदलकर कृतज्ञ-कृतघ्न, अग्रज-अनुज; वि हमेशा उलटा नहीं (विज्ञान, विख्यात); उर्दू में ना, बे, गैर, बद।
विलोम शब्द (2): तत्सम विलोम, प्रश्नों के जाल और अभ्यास	उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति, आरोह-अवरोह, ह्रास-वृद्धि; आदान-प्रदान, आयात-निर्यात, आविर्भाव-तिरोभाव, संश्लेषण-विश्लेषण; प्राचीन-अर्वाचीन, अथ-इति, प्राची-प्रतीची, अवनि-अंबर, स्थावर-जंगम, ऋजु-वक्र; आस्तिक-नास्तिक, आस्था-अनास्था, कृतज्ञ-कृतघ्न, धृष्ट-विनीत, मूक-वाचाल, अभिज्ञ-अनभिज्ञ; व्यष्टि-समष्टि, उपमेय-उपमान, ग्राह्य-त्याज्य, अतिवृष्टि-अनावृष्टि; जाल: विकल्प में पर्याय, शब्द-भेद का मेल, अभिज्ञ जानकार है, विज्ञान और अनुशासन उलटे नहीं, अनुज का विलोम अग्रज।
उपयुक्त शब्द और रिक्त स्थान	पहले वाक्य का प्रसंग और रिक्त स्थान का शब्द-भेद पहचानें, फिर व्याकरण से गलत विकल्प हटाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ चुनें; श्रुतिसम-भिन्नार्थक: अंश-अंस, कुल-कूल, दिन-दीन, अन्न-अन्य, आदि-आदी, गृह-ग्रह, चिर-चीर, नीर-नीड़, परिणाम-परिमाण, प्रसाद-प्रासाद, शर-सर, सुत-सूत, अनल-अनिल, आसन-आसन्न, द्विप-द्वीप, हंस-हँस; प्रयोग-भेद: अस्त्र फेंककर, शस्त्र हाथ में; अपराध कानूनी, पाप नैतिक; स्नेह छोटों से, श्रद्धा बड़ों से; गर्व उचित, अहंकार अनुचित; आविष्कार नया बनाना, खोज पता लगाना; शब्द-संगति और औपचारिक भाषा का ध्यान रखें।
श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द (1): मात्रा, स्वर और श-स के अंतर वाले युग्म	श्रुतिसम-भिन्नार्थक = सुनने में समान, अर्थ में भिन्न; इ-ई: दिन-दीन, आदि-आदी, बलि-बली, कृति-कृती, अवधि-अवधी, सुधि-सुधी, चिर-चीर, गिरि-गिरी, नियत-नीयत; उ-ऊ: कुल-कूल, सुत-सूत, सुर-सूर, पुरा-पूरा, कुजन-कूजन; अ-आ: अचार-आचार, अगम-आगम, अपर-अपार, प्रकार-प्राकार, प्रसाद-प्रासाद, प्रहर-प्रहार, समान-सामान; स्वर: अनल-अनिल, भवन-भुवन, ओर-और, तरणी-तरुणी; श-स: अंश-अंस, शर-सर, शंकर-संकर, शीत-सित, शप्त-सप्त, श्वेत-स्वेद; प्रसंग और व्याकरण से चुनें।
श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द (2): ब-व, संयुक्ताक्षर, बिंदु-नुक्ता वाले युग्म और हल की विधि	ब-व: बदन-वदन, बात-वात, बहन-वहन, बास-वास, बाद-वाद, बार-वार; संयुक्ताक्षर: अन्न-अन्य, लक्ष-लक्ष्य, आसन-आसन्न, मद-मद्य, पथ-पथ्य, भीति-भित्ति, वसन-व्यसन, विजन-व्यजन, निधन-निर्धन, सर्ग-स्वर्ग, दीप-द्वीप, इतर-इत्र, उपयुक्त-उपर्युक्त; व्यंजन: अंक-अंग, मेघ-मेध, दाम-धाम, उद्यत-उद्धत, पाणि-पानी, आभरण-आमरण, अभिराम-अविराम; अ-आ: कृपण-कृपाण; -ज कमल, -द बादल; बिंदु-नुक्ता: हंस-हँस, मास-मांस, गोद-गोंद, राज-राज़, जरा-ज़रा; विधि: प्रसंग, व्याकरण-संकेत, शब्द-विग्रह, परिचित शब्द।
समानार्थी लगने वाले शब्दों में सूक्ष्म अंतर: दुख-शोक-खेद, प्रेम-स्नेह-श्रद्धा, सलाह-परामर्श	पर्यायवाची पूर्ण समान नहीं; कसौटी: किसके प्रति, तन या मन, तीव्रता, औपचारिकता, उचित-अनुचित; दुख सामान्य, शोक मृत्यु पर, खेद भूल पर, क्षोभ अपमान पर, विषाद निराशा; आधि मन, व्याधि तन; स्नेह छोटों, श्रद्धा बड़ों, भक्ति ईश्वर, वात्सल्य संतान के प्रति; करुणा दया से गहरी, कृपा बड़ों की; सलाह सामान्य, परामर्श विशेषज्ञ का, मंत्रणा गुप्त; आज्ञा बड़ों की, आदेश अधिकारी का; अस्त्र फेंककर, शस्त्र हाथ में; गर्व उचित, अहंकार अनुचित; बधाई बाद में, शुभकामना पहले; अमूल्य-बहुमूल्य।
तत्सम-तद्भव शब्द: पहचान के नियम, प्रमुख युग्म और प्रश्नों के जाल	तत्सम = संस्कृत के समान, तद्भव = संस्कृत से उत्पन्न (पालि-प्राकृत-अपभ्रंश होकर); कुछ ग्रंथ अर्धतत्सम (अगिन, करम) भी मानते हैं; नियम: क्ष से ख/छ, श-ष से स, व से ब, य से ज, ण से न, ऋ बदलती, संयुक्ताक्षर सरल, स्वर दीर्घ, चंद्रबिंदु जुड़ता; प्रमुख: अग्नि-आग, कर्म-काम, दुग्ध-दूध, हस्त-हाथ, मुख-मुँह, क्षेत्र-खेत, घृत-घी, गृह-घर, उष्ट्र-ऊँट, हस्ती-हाथी; जाल: पर्याय तद्भव नहीं (जल-पानी), विदेशी तद्भव नहीं (मौत, बारिश), सरल शब्द भी तत्सम (जल, कमल)।

रिक्त स्थान भरने की विधि: अर्थ, लिंग-वचन-कारक, परसर्ग और मुहावरेदार प्रयोग	रिक्त स्थान: पूरा वाक्य पढ़ें, शब्द-भेद पहचानें, लिंग-वचन-कारक मिलाएँ, अर्थ और भाषा-स्तर देखें; ईमानदार-ईमानदारी, स्वस्थ-स्वास्थ्य; दही, व्यक्ति पुल्लिंग; आत्मा, जनता, प्रतीक्षा स्त्रीलिंग; प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, होश बहुवचन; ने वाले वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार; मुझे जाना है, मुझसे बड़ा, उससे पूछा, वह फल लाया; मुहावरे का शब्द नहीं बदलता; यद्यपि-तथापि, ज्यों ही-त्यों ही; वीरगति, निधन, मृत्यु का प्रसंग।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/